Pt. Kashmiri Lal & Sons

THANK

Their Customers

FOR

Their Kind Patronage.

Printed by Pt Kashmiri Lal
at Bombay Machine Press, Jullundur City
and
Published by Pt Kashmiri Lal & Sons,
Mai Hiran Gate, Jullundur City.

विषय-सूची

गौतम बुद्ध

अकबर महान

MOGHUL EMPERORS
BABAR 1526-1530
HUMAYUN 1530-1540
1555-1556
AKBAR 1556-1605
JEHANGIR 1605-1627
SHAHJEHAN – 1627-1658
AURANGZEB 1658-1707

मुगल बादशाह

महाराणा प्रताप

प्रसिद्ध तिथियाँ

Some Well-known Dates

तिथि		घटनायें
326	ई० पू०	*सिकन्दर महान् का आक्रमण।*
322	,, ,,	चन्द्रगुप्त मौर्य का सिंहासनारोहण।
305	,, ,,	सल्यूकस का आक्रमण तथा पराजय।
273	,, ,,	अशोक का सिंहासनारोहण।
261	,, ,,	*कलिंग विजय।*
120	ई०	कनिष्क का सिंहासनारोहण।
320	,,	गुप्त वंश का आरम्भ।
570	,,	हज़रत मुहम्मद साहिब का जन्म।
606	,,	हर्ष का सिंहासनारोहण।
622	,,	हिजरी संवत् का आरम्भ।
632	,,	हज़रत मुहम्मद साहिब की मृत्यु।
712	,,	*मुहम्मद बिन कासिम का सिंध पर आक्रमण।*
997	,,	महमूद का सिंहासनारोहण।
1025	,,	सोमनाथ के मन्दिर पर आक्रमण।
1030	,,	महमूद की मृत्यु।
1191	,,	*तराईं की पहली लड़ाई।*
1192	,,	*तराईं की दूसरी लड़ाई।*
1398	,,	*तैमूर का आक्रमण।*
1526	,,	*पानीपत की पहली लड़ाई।*
1527	,,	*कनवाहा की लड़ाई।*
1556	,,	*पानीपत की दूसरी लड़ाई।*
1565	,,	*तलीकोट की लड़ाई।*
1576	,,	हल्दीघाटी का संग्राम।
1657	,,	*शाहजहाँ का रोगी होना तथा सिंहासनारोहण के लिये युद्ध।*

तिथि		घटनायें
1658	ई०	सामूगढ़ की लड़ाई।
1672	,,	सतनामियों का विद्रोह।
1674	,,	शिवाजी का राजतिलक।
1680	,,	शिवाजी की मृत्यु।
1707	,,	औरङ्गज़ेब की मृत्यु।
1739	,,	नादिरशाह का आक्रमण।
1761	,,	पानीपत की तीसरी लड़ाई।
1498	,,	वास्को-ड-गामा का कालीकट में आगमन।
1600	,,	अङ्गरेजी ईस्ट इन्डिया कम्पनी की संस्थापना।
1639-40	,,	मद्रास की नींव पड़ना।
1668	,,	बम्बई का कम्पनी को मिलना।
1690	,,	कलकत्ते की नींव पड़ना।
1751	,,	अर्काट का घेरा।
1757	,,	प्लासी की लड़ाई।
1760	,,	बन्दिवाश की लड़ाई।
1764	,,	बक्सर की लड़ाई।
1765	,,	बङ्गाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी अङ्गरेज़ों को मिलना।
1773	,,	रेग्युलेटिंग-ऐक्ट।
1782	,,	सालबाई का सन्धि-पत्र।
1784	,,	पिट्स इन्डिया ऐक्ट।
1793	,,	बङ्गाल का स्थायी प्रबन्ध।
1795	,,	कुर्दला (या खारदा) की लड़ाई।
1799	,,	मैसूर का चौथा युद्ध, टीपू की मृत्यु।
1802	,,	बसीन का सन्धि-पत्र।
1809	,,	अमृतसर का सन्धि-पत्र।
1816	,,	सगौली का सन्धि-पत्र।
1826	,,	यन्दबू का सन्धि-पत्र।
1829	,,	सती प्रथा की रोक।

तिथि		घटनायें
1839	ई०	महाराजा रणजीतसिंह की मृत्यु।
1843	"	सिन्ध विजय।
1846	"	लाहौर का सन्धि-पत्र।
1857	"	भारतीय विद्रोह (Mutiny)।
1858	"	साम्राज्ञी विक्टोरिया की घोषणा।
1861	"	इण्डियन कौंसिल्ज़ ऐक्ट।
1877	"	महारानी विक्टोरिया का कैसरा-इ-हिन्द की उपाधि धारण करना।
1882	"	पंजाब यूनिवर्सिटी की स्थापना, लोकल सैल्फ़ गवर्नमेंट ऐक्ट।
1885	"	इंडियन नैशनल काँग्रेस की स्थापना।
1892	"	इण्डियन कौंसिल्ज़ ऐक्ट।
1901	"	महारानी विक्टोरिया की मृत्यु।
1905	"	बंग भंग
1909	"	मिन्टो-मार्ले सुधार।
1911	"	राजतिलक सम्बन्धी राज-दरबार।
1914	"	प्रथम महायुद्ध का आरम्भ।
1918	"	महायुद्ध की समाप्ति।
1919	"	माण्ट फ़ोर्ड रिफ़ार्म्स।
1935	"	गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया ऐक्ट।
1936	"	जार्ज पंजम की मृत्यु, ऐडवर्ड अष्टम का सिंहासन त्याग, जार्ज षष्टम का सिंहासनारोहण।
1939	"	दूसरे महायुद्ध का आरम्भ होना।
1943	"	बंगाल में भीषण अकाल।
1945	"	दूसरे महायुद्ध की समाप्ति।
1947	"	भारत को डोमिनियन स्टेटस की प्राप्ति।
1948	"	महात्मा गाँधी की मृत्यु।
1950	"	भारत रीपब्लिक की स्थापना।
1952	"	स्वतन्त्र भारत में पहला चुनाव।

THE PUNJAB UNIVERSITY SYLLABUS

IN

HISTORY OF INDIA

1. The Aryans—their Advent, their Civilization, Society, Government and Religion—their Sacred Books, the Vedas; Upanishads and the Epics

2. Buddhism and Jainism—lives of Buddha and Mahavira—main doctrines of Buddhism and Jainism

3. Alexander's invasion—battle with Poros.

4. The Maurya Dynasty—Chandragupta, his Government; Megasthenes and his account of India

5. Ashoka—his conquest of Kalinga—his conversion to Buddhism—Propagation of Buddhism; his Edicts.

6. Kanishka—The extent of his empire—his zeal for Buddhism—Mahayana Buddhism

7. The Gupta Empire—Chandra Gupta I, Samudra Gupta, his conquests—Chandra Gupta II (Vikramaditya), Fahien's account of India

8 Revival of Brahmanism—Progress of Art and Literature in the Gupta period—the Golden age of Hinduism.

9. Harsha—The extent of his Empire—Hieun Tsang's account of India

10. The Rajputs—their origin—a brief reference to the principal kingdoms of the Rajputs

11. A brief account of the spread of Hindu culture abroad Chinese Turkistan, and Hindu colonies in Champa, Cambodia, Java, Sumatra, etc

12. The rise of Islam—Its spread in Arabia and Persia—The invasion of Sind under Mohammad Bin Qasim.

13 Mahmud of Ghazni—invasion of Lahore, Kangra and Somnath.

14. Muhammad Ghori—The First and Second battles of Tarain

15 Slave Kings · Qutub-ud-din, Altamash, Razia Begum, Nasir-ud-din, Balban.

16 Khilji Kings . Ala-ud-din, his conquests, methods of Government—Malik Kafur and his South Indian Campaign.

17. The Tughlaks : Muhammed Tughlak–Feroze Tughlak—The invasion of Timur and its consequences.

18. Ibrahim Lodhi, 1517-26—Break up of the Sultanate of Delhi.

19. The Bahmani Kingdom and its break up—Vijayanagar Empire and the battle of Talikota.

20 Contact of Hinduism and Islam—Fusion of Hindu-Muslim culture — Bhakti movement — Ramanand—Kabir—Chaitanya—Guru Nanak.

21. The Mughals·

Baber—First battle of Panipat—Rana Sangram Singh—Humayun, his wars with Sher Shah—Sher Shah's administration.

22. Akbar— Second battle of Panipat—his religious policy —his conquests—his dealings with the Rajputs (Rana Partap) —his administration—The Din-I-Ilahi—Important personages at his Court.

23. Jahangir—Khusro's rebellion—Nur Jahan and Prince Khurram's revolt—Sir Thomas Roe

24. Shah Jahan—his buildings—Wars in Southern India—The War of Succession

25. Aurangzeb—his war with Rajputs—The rise of the Marathas under Sivaji—Sivaji's administration—Aurangzeb's Deccan campaigns—his character and religious policy

26. The Decline of the Mughal Empire—rise of the Sikhs under Guru Govind Singh and Banda—the invasions by Nadir Shah and Ahmed Shah Abdali—Causes of the decline of the Mughal Empire—the rise of the Sikhs as political power in the Punjab—The rise of the Peshwas

27. The coming of the Europeans — Vasco-da-Gama—Struggle between the English and the French in the Deccan—the causes of the success of the English—Dupleix, Clive and the conquest of Bengal—Mir Jafar and Mir Qasim—Haider Ali.

28. Warren Hastings—Rohilla War—Regulating Act—

Nand Kumar—the Begums of Oudh—Raja Chet Singh—Pitt's India Bill

29. Cornwallis—Permanent Settlement of Bengal—Sir John Shore and the non-intervention Policy

30. Lord Wellesley—War with Mysore—Subsidiary System of Alliances—Nana Farnavis--Treaty of Bassein—Anglo-Maratha Wars

31 Lord Minto—Rise of Maharaja Ranjit Singh—Metcalfe's mission to the court of Ranjit Singh

32 Marquis of Hastings—The Nepal War—The extirpation of the Pindaries—The last Maratha War

33 Lord Amherst—The First Burmese War

34. Lord William Bentinck—his reforms , Social, Administrative and Educational

35 Lord Auckland and Ellenborough—First Afghan War—Annexation of Sind

36 Lord Hardinge—First Sikh War.

37 Lord Dalhousie—Second Sikh War—Annexation of the Punjab—Second Burmese War—Doctrine of Lapse—his Reforms.

38 Lord Canning—The Indian Mutiny—Its causes, events and consequences—Queen Victoria's Proclamation

39 India under the Crown—Lord Canning.

40. Lord Lytton—Second Afghan War

41 Lord Dufferin—Third Burmese War—The Indian National Congress.

42. Lord Curzon—his internal administration—Partition of Bengal—Creation of N. W. F Province—Reforms of various Departments—Indian Universities Act—Ancient Monuments Act—Punjab Land Alienation Act

43 Lord Minto—Minto Morley Reforms.

44 Lord Hardinge—The Coronation Durbar—The Great War and India's share in it

45 Lord Chelmsford—The Declaration of August 1917—Rowlatt Act—Satyagraha Movement—Government of India Act, 1919.

————

गोल्डन इतिहास भारतवर्ष

भूगोल का इतिहास पर प्रभाव

(EFFECT OF GEOGRAPHY ON HISTORY)

कहते हैं कि *भूगोल इतिहास की नींव है,* और यह बात बहुत अंश तक सत्य है क्योंकि किसी देश की बनावट अर्थात् प्राकृतिक सीमायें, पर्वत, मैदान, पठार समुद्रीतट, मरुस्थल, जलवायु इत्यादि उस देश के निवासियों के रहन-सहन, रीति-रिवाज तथा स्वभाव पर पर्याप्त प्रभाव डालते हैं। अतएव सब से पहले यह जानना आवश्यक है कि भारतवर्ष की भौगोलिक अवस्था ने इस देश के इतिहास पर क्या प्रभाव डाला है।

भूगोल का इतिहास पर प्रभाव

Q. How have the physical features of India influenced her history? (P. U 1939)

प्रश्न—*भारतवर्ष की प्राकृतिक अवस्था का देश के इतिहास पर क्या प्रभाव पड़ा है?*

प्राकृतिक अवस्था के विचार से भारतवर्ष तीन बड़े प्राकृतिक भागों में बाँटा जा सकता है:—

भारतवर्ष का प्राकृतिक विभाग और उसका प्रभाव

(१) हिमालय और उसकी पूर्वी तथा पश्चिमी शाखाएँ।

(२) उत्तरी भारतवर्ष का मैदान।

(३) दक्षिण की उच्च समभूमि (पठार)।

१. हिमालय पर्वत का प्रभाव (The Himalayas)

(१) हिमालय पर्वत भारतवर्ष के उत्तर में काश्मीर से लेकर आसाम तक फैला हुआ है और बहुत ऊँचा होने के कारण इसके इस पार से

उस पार जाना अत्यन्त कठिन है। *यही कारण है कि उत्तर की ओर से भारतवर्ष पर बहुत थोड़े आक्रमण हुए हैं।*

(२) हिमालय की पूर्वी शाखाएँ जैसे गारो, खासी, जैन्तिया इत्यादि बहुत ऊँची नहीं हैं तो भी अधिक वर्षा होने के कारण घने जङ्गलो से ढकी हुई हैं, इस लिये ये भी प्रायः अलंघ्य हैं। यही कारण है कि *पूर्व की ओर से भी कम आक्रमण हुए हैं।*

(३) १५ अगस्त १९४७ ई० से पहले के भारतवर्ष के उत्तर-पश्चिम में सफेद पर्वत, सुलेमान पर्वत और कीरथार पर्वत हैं। ये बहुत ऊँचे नहीं हैं और न इन पर कोई घने बन हो हैं। इनमें खैबर, कुर्रम, टोची, गोमल, बोलान आदि प्रसिद्ध दर्रे हैं। यही कारण है कि अधिकांश *आक्रमणकारी स्थल की ओर से आये।* क्या आर्य्य, क्या ईरानी, यूनानी, सिथियन, हूण, तुर्क, अफगान, मुग़ल आदि सब इन्ही *दर्रों के मार्ग से भारतवर्ष में आये* और इसी कारण से पश्चिमोत्तरी सीमा पर बहुत सी छावनियाँ हैं किन्तु हिमालय के साथ साथ बहुत कम छावनियाँ हैं।

(४) हिमालय पर्वत तथा उसकी पूर्वी और पश्चिमी शाखाओं ने उत्तरी भारतवर्ष को शेष संसार से लगभग सर्वथा पृथक् कर रखा है। इसका प्रभाव यह हुआ है कि भारतीय सभ्यता पर विदेशी सभ्यता का बहुत कम प्रभाव पड़ा है और *भारत की आधुनिक सभ्यता प्राचीन सभ्यता से मौलिक रूप से भिन्न नहीं।*

२. उत्तरी मैदान का प्रभाव (Northern Plain)

(१) उत्तरी मैदान संसार के प्रसिद्ध मैदानो में गिना जाता है। इसका उपजाऊपन तथा धन विदेशी आक्रमणकारियों के लिए आकर्षण का कारण बने रहे हैं और क्योंकि यहाँ के निवासी उपज की अधिकता तथा गर्म जलवायु के कारण सुखासीन तथा आलसी बन जाते थे, इसलिए वे नये आक्रमणकारियों से परास्त हो जाते थे। यही कारण है *कि भारतवर्ष अनगिणत आक्रमणों का शिकार बना रहा।*

(२) इस मैदान के उपजाऊपन के कारण यहाँ के निवासियों को आजीविका के लिये अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता था और उन्हें

पर्याप्त अवकाश मिल जाता था। इस अवकाश का परिणाम यह हुआ *कि लोग मानसिक तथा आत्मिक उन्नति और साहित्य की ओर अधिक संलग्न रहे और यहाँ भारतीय दर्शन (फ़िलासफी) ने अधिक उन्नति की।*

(३) इस उपजाऊपन का एक परिणाम यह हुआ कि यहाँ के निवासियों की जीवन की सब आवश्यकताएँ सुगमता से पूरी हो जाती थीं *इसलिये उनमें दूसरे देशों को जीतने का विचार उत्पन्न न हुआ।* हिन्दुओं ने दूसरे देशों में अपनी सभ्यता फैलाई और बस्तियाँ बसाईं, परन्तु वे विजेता (Imperial) नहीं बने।

(४) क्योंकि पंजाब इस मैदान के पश्चिम में और बंगाल पूर्व में स्थित है, *इसलिए पंजाब आक्रमणकारियों की लूट का अधिक लक्ष्य बना रहा और बंगाल प्रायः सुरक्षित रहा।* इसलिए पंजाब विद्या तथा सभ्यता के विचार से चिरकाल तक अन्य प्रान्तों से पीछे रहा है। परन्तु यहाँ के निवासी अधिक वीर और युद्ध-प्रिय रहे हैं।

(५) इसके अतिरिक्त क्योंकि पंजाब के दक्षिण में राजस्थान का ऊसर तथा सूखा मरुस्थल है, इस कारण आक्रमणकारियों को पंजाब से आगे बढ़ने के लिये देहली के पास से गुज़रना पड़ता था। *यही कारण है कि देहली के समीप के नगर पानीपत, करनाल, तरावड़ी और कुरुक्षेत्र रणभूमियाँ बने।*

(६) राजस्थान के मरुस्थल ने भी भारतवर्ष के इतिहास में एक विशेष भाग लिया है। आक्रमणकर्ता इस ऊसर भूमि को विजय करना व्यर्थ समझते थे और यदि किसी विदेशी आक्रमणकर्ता ने इसके किसी भाग पर अधिकार कर भी लिया तो वह देर तक न रहा। *अतः यहाँ राजपूतों ने कई स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिये जिनमें से कई अब तक विद्यमान हैं और अपनी प्राचीन सभ्यता को स्थिर रखे हुए हैं।*

३. दक्षिण का प्रभाव (The Deccan)

(१) दक्षिण (दक्खन) के उत्तर में विन्ध्याचल और सतपुड़ा के पर्वत हैं, जो जंगलों से ढके हुए हैं। इनको पार करना बहुत कठिन था। यही कारण है कि दक्षिण, उत्तरी भारत से पृथक रहा और उसने

भारतवर्ष के इतिहास में कोई विशेष भाग नहीं लिया। केवल कुछ अवसरों पर उत्तरी भारत के शासकों ने उसे जीता परन्तु पूर्णरूप से अधिकार न जमा सके।

(२) दक्षिण के उत्तरी भारतवर्ष से पृथक् रहने का एक प्रभाव यह पड़ा है कि जब मुसलमानो ने उत्तरी भारत पर अपना अधिकार जमाया तो पण्डित लोग और कई लोग दक्षिण में जा बसे। इस लिये दक्षिण अब तक भी हिन्दुओं की प्राचीन सभ्यता का केन्द्र बना हुआ है।

(३) दक्षिण के पहाड़ों में दुर्गों की रक्षा करना आसान था। अतः मराठों ने उन्हीं पहाड़ों में दुर्ग बनाये और मुग़लों की बड़ी भारी सेना का सामना किया।

(४) दक्षिण के पहाड़ी भाग में आजीविका कमाना बड़ा कठिन है इसलिये वहाँ के निवासियों को बड़ा परिश्रम करना पड़ता था। यही कारण है कि वहाँ के निवासी विशेषकर मराठे बड़े वीर तथा साहसी हैं।

(५) दक्षिण के तीन ओर समुद्र है। इसलिये प्राचीनकाल से ही इस देश की बन्दरगाहे अन्य देशों के साथ व्यापार करती रही हैं।

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

(SOURCES OF EARLY INDIAN HISTORY)

Q. What are the sources of the early history of India ? Clearly discuss the importance of each.

प्रश्न—*प्राचीन भारतवर्ष के ऐतिहासिक स्रोतों का वर्णन करो और प्रत्येक का महत्त्व प्रकट करो।*

भारतवर्ष के ऐतिहासिक स्रोत

ऐतिहासिक स्रोत से *अभिप्राय वे साधन हैं जो प्राचीन इतिहास के जानने में सहायता देते है।* प्राचीन भारतवर्ष के ऐतिहासिक स्रोत निम्नलिखित छः बड़ी श्रेणियों में विभक्त हो सकते हैं :—

(१) मान्य ग्रन्थ (Religious Books)—मान्य ग्रन्थ जैसे वेद, *ब्राह्मण ग्रन्थ*, *उपनिषद्*, *रामायण*, *महाभारत*, *पुराण* आदि और *जैनियों तथा बौद्धों की पुस्तकें* उस समय की अवस्था पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं। वेद प्राचीन आर्यों की सभ्यता के सबसे बड़े स्रोत हैं और रामायण तथा महाभारत वीरकाल की सभ्यता का पता देते हैं। जैनियों तथा बौद्धों की पुस्तकें अपने समय की अवस्था बताती हैं।

(२) ऐतिहासिक ग्रन्थ (Historical Books)—प्राचीन राजाओं को अपने राज्य-काल की घटनायें लिखवाने में रुचि थी। इनमें से बहुत सी पुस्तकें तो समय के परिवर्तन के कारण नष्ट हो चुकी हैं, परन्तु फिर भी कुछ पुस्तकें मिलती हैं जिनसे कई राजाओं के ऐतिहासिक समाचारों का पता चलता है। जैसे, *बाण का हर्ष-चरित्र*—इससे राजा हर्ष के समय का वृत्तान्त ज्ञात होता है, *कलहन की राजतरंगिणी*—इसमें काश्मीर का वृत्तान्त वर्णन किया हुआ है, *चान्दबरदाई का पृथ्वीराजरासो*—इसमें महाराज पृथ्वीराज चौहान का वृत्तान्त लिखा है। ऐसी ही बीसियों और पुस्तकें है।

(३) शिलालेख (Inscriptions)—कई शिलालेख (पत्थर पर खुदे हुये लेख) मिलते है, जिनमें प्राचीन राजाओं के काल की विशेष तथा सुप्रसिद्ध घटनाओं का वर्णन है। *महाराज अशोक के शिलालेख* इन सब में अधिक प्रसिद्ध हैं। इन शिलालेखों से उस समय के इतिहास का पर्याप्त पता चलता है। समुद्रगुप्त के समय का भी शिलालेख इलाहबाद के दुर्ग में विद्यमान है।

(४) मुद्रा (Coins)—प्राचीन समय की मुद्राओं ने जो अब तक प्राप्त हो सकी हैं, उस समय के ऐतिहासिक समाचार जानने में बड़ी सहायता दी है। विशेषकर उन्होंने कई एक वंशों की संदिग्ध तिथियों को स्पष्ट कर दिया है। *बाख्तरिया* (Bactria) *तथा हिन्दू-यूनानी* (Indo-Greek) *वंशों के इतिहास को बताने वाली तो केवल मुद्रायें ही हैं*। मुद्राएँ अब भी मिल रही है और उनसे इतिहास के

ज्ञान में वृद्धि हो रही है।

(५) प्राचीन खण्डहर (Old Ruins)—प्राचीन समय के ऐतिहासिक मकानों, स्मारक चिह्नों (यादगारों) तथा शिल्पविद्या से भी उस समय की सामाजिक तथा धार्मिक अवस्था का पर्याप्त पता चलता है। कई प्राचीन स्थानों की खुदाई की गई है और उनसे ऐतिहासिक महत्व की बहुत-सी बातें ज्ञात हुई हैं। जैसे—*तक्षशिला* (टैक्सला) की खुदाई से कुशान वंश के समय का वृत्तान्त बहुत अच्छी तरह से मालूम हो गया है। *पाटलिपुत्र की खुदाई* ने मौर्यवंश संबन्धी जानकारी में पर्याप्त वृद्धि तथा सहायता दी है। सिन्धु स्थित *महेजोदरो* तथा ज़िला मिण्टगुमरी स्थित *हड़प्पा की खुदाई* ने सिन्धु की घाटी की प्राचीन सभ्यता पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। कुछ समय बीता *सर आरल स्टाइन* (Sir Aurel Stein) ने मध्य एशिया में कई पुराने खण्डहरों का पता लगाया जिस से सिद्ध होता है कि भारतीय सभ्यता भारत से बाहर भी पहुँची हुई थी।

(६) यात्रियों के यात्रा-वृत्तान्त (Accounts of Travellers)—समय-समय पर विदेशी यात्री भारतवर्ष में आते रहे हैं। जो घटनाएँ उन्होंने देखीं या सुनीं, वे अपने लेखों में लिख दीं। इन लेखों से कई राजाओं के राज्य-काल का पता चलता है। *मैगस्थनीज़* (Megasthenes) ने चन्द्रगुप्त मौर्य के समय का, *फ़ाह्यान* (Fahien) ने चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय का, और *ह्यूनसांग* (Hieun Tsang) ने महाराजा हर्ष के समय का वृत्तान्त लिखा है। *अल्बैरूनी* (Alberuni) ने भी, जो महमूद के समय का एक सुप्रसिद्ध विद्वान था, भारतवर्ष का वृत्तान्त अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक "*तहक़ीक़-इ-हिन्द*" में वर्णन किया है।

सिन्धु-घाटी की सभ्यता

(INDUS VALLEY CIVILIZATION)

Q. What do you know about the Indus Valley Civilization ?

प्रश्न—*सिंधु की घाटी की सभ्यता के बारे में तुम क्या जानते हो ?*

सिन्धु की घाटी की सभ्यता

आज से लगभग तीस वर्ष पहले अर्थात् 1920-22 में भारत के पुरातत्व-विभाग (Archaeological Department) की देख-रेख में सिंधु नदी की घाटी में खुदाई का काम किया गया और दो प्राचीन नगरों के खण्डहर मिले। इनमें से एक नगर का नाम *मुहेंजोदरो* (Mohenjodaro) है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'मृतकों का टीला'। यह नगर सिंध प्रान्त के ज़िला लड़काना में स्थित है। दूसरा नगर पाकिस्तान पंजाब के ज़िला मिण्टगुमरी में स्थित है और उसका नाम है *हड़प्पा* (Harappa)। इन दो नगरों की खुदाई से बहुत सी वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। बड़े-बड़े भवन, युद्ध के शस्त्र, खिलौने, मिट्टी और पत्थर की मूर्तियाँ, आभूषण, बहुत-सी मुद्राएँ और कई अन्य वस्तुएँ भूमि के नीचे से मिली हैं।

ये सब वस्तुएँ ऐसी सुन्दर और उत्तम कारीगरी का नमूना हैं और भवन इतने सुन्दर और पक्के हैं कि इनको देख कर अनुमान किया जा सकता है कि उस समय मानव सभ्यता पर्याप्त रूप से विकसित हो चुकी थी। इस सभ्यता को सिन्धु-घाटी की सभ्यता कहते हैं।

यह सभ्यता नागरिक (शहरी) सभ्यता थी। इतिहासकार इस सभ्यता का समय आज से लगभग छः *हज़ार* वर्ष पहले का मानते हैं। इससे यह अनुमान किया जाता है कि भारतीय सभ्यता सम्भवतः मिश्र

सीरिया और चीन की सभ्यताओं से भी पुरातन है। परन्तु यह ठीक प्रकार से नहीं कहा जा सकता कि इस सभ्यता के निर्माता कौन लोग थे। कई इतिहासकारों का मत है कि यह आर्यन सभ्यता ही थी, परन्तु कई एक का विचार है कि यह सभ्यता द्राविडियन या सुमेरियन (दक्षिणी मैसोपोटेमिया की) थी। ऐसा विचार है कि यह सभ्यता सैंकड़ों वर्षो तक रही होगी और फिर इसका अन्त हो गया होगा परन्तु यह कोई नहीं जानता कि इस सभ्यता का विनाश कब और कैसे हुआ। हो सकता है कि सिन्धु नदी की बाढ़ों से नगर नष्ट हो गये हों।

लोगों का जीवन

इन दो नगरो की खुदाई से उस समय के लोगो के जीवन के संबंध में विचार किया जाता है कि वे बड़े सभ्य लोग थे। उनका भोजन सादा था। वे गेहूँ, जौ तथा खजूरों का प्रयोग करते थे और मांस, मछली तथा अण्डे भी खाते थे। उनके कई व्यवसाय थे, वे खेतीबाडी करते और पशु पालते थे। गाय भैंस और बकरियाँ दूध के लिये पाली जाती थीं। ये लोग सूत कातना और कपड़े बुनना भी जानते थे। मिट्टी के बर्तन बनाने का काम बहुत होता था, कई लोग बड़े धनाढ्य व्यापारी थे। प्रायः लोग छोटी दाढ़ी रखते थे। पुरुष तथा स्त्रियां दोनो ही आभूषणों के शौकीन थे। आभूषण सोने-चाँदी तथा हाथी-दाँत के होते थे। ये लोग लिखना पढ़ना भी जानते थे। यहाँ से कई मुद्राएँ (seals) भी मिली हैं जिन पर जन्तुओ के चित्र और अक्षर खुदे हुए हैं परन्तु अभी तक ये अक्षर पढ़े नहीं जाते।

इन लोगो के मकान पक्की ईंटों के और बड़े साफ-सुथरे होते थे। वे योजना के अनुसार बनाये जाते थे। प्रत्येक घर में कुआँ, स्नानागार और अग्निकुण्ड होते थे और पानी के बाहर जाने के लिये नालियाँ होती थीं। अचम्भे की बात है कि घरो में शौचागार नहीं होते थे। गलियाँ और बाज़ार सीधे और काफी लम्बे चौड़े होते थे। शहर के पानी के निकास के लिये नालियाँ बनी हुई थीं जिससे ज्ञात होता है कि म्युनिसिपल प्रबन्ध उच्च कोटि का था। नगरों में पक्के

स्नानागार होते थे, जिससे प्रीतत होता है कि लोग स्नान के बड़े शौकीन थे और साफ-सुथरे रहते थे। ये लोग खेल-कूद में भी बहुत चतुर थे।

परन्तु इन लोगों के धर्म के बारे में विश्वस्त रूपसे कुछ नहीं कहा जा सकता। प्रतीत होता है कि ये लोग देवी-देवताओं की पूजा करते थे। इनके एक देवता की आकृति आजकल के शिव से मिलती है। सम्भवतः ये लोग वृक्ष तथा पशु की पूजा भी करते थे और यज्ञ का भी रिवाज था। इस समय की एक अद्भुत बात यह है कि यद्यपि ये लोग धातुओ का प्रयोग करते थे और पशु भी पालते थे परन्तु न तो लोहे के और न घोड़ों के प्रयोग का ही कोई विशेष सबूत मिलता है।

———————

हिन्दू-युग

आर्यों का वृत्तान्त

THE ARYANS

Q. Who were the Aryans ? What was their original home ? When and why did they come into India ?

प्रश्न—आर्य लोग कौन थे ? उनके मूल निवास-स्थान के विषय में तुम क्या जानते हो ? वे भारतवर्ष में कब और क्यों आये ?

आर्य लोग (The Aryans)—आर्य संसार की एक विख्यात जाति का नाम है और आर्य शब्द के अर्थ 'श्रेष्ठ पुरुष' के हैं। इस जाति के लोगों का रंग गोरा और डील-डौल लम्बा था। ये लोग आज से कोई चार पाँच हज़ार वर्ष पूर्व पंजाब में रहा करते थे। वे पशु पालते और खेती-बाड़ी करते थे। आज भी भारतवर्ष की जन-संख्या का अधिक भाग, ईरान के निवासी और योरुप की बहुत-सी जातियाँ जैसे अंग्रेज़, जर्मन, फ्राँसीसी, इत्यादि इसी आर्य जाति के वंशज हैं।

आर्य लोग

आर्यों का मूल निवास-स्थान (Original Home)—आर्यों के मूल निवास-स्थान के विषय में विश्वस्त रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। इस विषय में इतिहासकारों में बड़ा मतभेद है।

(१) योरुप के कई इतिहासकार *मध्य योरुप* को उनका मूल निवास स्थान मानते हैं। (२) कई इतिहासकार उन्हें *उत्तरी ध्रुव* के निकट के रहने वाले बताते हैं। (३) एक यह विचार भी है कि आर्य लोग भारतवर्ष के मूल *निवासी* हैं और वे कहीं बाहर से नहीं आये वरन पंजाब में ही, जिसे उन दिनों *सप्तसिन्धु* कहते थे, रहा करते थे और वहीं से वे दूसरे देशों में गये। (४) कई इतिहासकार *तिब्बत* को

उनका मूल निवास-स्थान मानते हैं। (५) परन्तु आजकल सब से प्रभावशाली विचार यह है कि *आर्यों का मूल निवास-स्थान* **मध्य एशिया** (Central Asia) *में कैस्पियन सागर के आस-पास का प्रदेश था*। यहाँ से निकल कर आर्य लोग अति प्राचीन-काल में योरुप, ईरान और भारतवर्ष में बस गये। परन्तु आजकल यह विचार भी बल पकड़ रहा है कि आर्य लोग बाहर से नहीं आये क्योंकि हिन्दुओं के प्राचीनतम ग्रंथों में भी इस बात का कोई संकेत नहीं मिलता।

देश-त्याग (Leaving Home)—आर्यों के देश-त्याग करने के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता (१) सम्भव है, उनकी संख्या अधिक हो गई हो और उनका मूल देश उनके जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये अपर्याप्त सिद्ध हुआ हो, या (२) उनके पशुओं के चरने के स्थान हरे और उपजाऊ न रहे हों, या (३) यह भी सम्भव है कि किसी अन्य शक्तिशाली जाति ने उन्हें देश छोड़ने के लिये बाधित किया हो। परन्तु इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिलता।

अपना निजी देश छोड़ने के उपरान्त उनमें से कुछ लोग *योरुप* चले गये, कुछ लोग दक्षिण की ओर जाते हुए *ईरान* में जाकर बस गये और कुछ हिन्दूकुश पर्वत को लांघ कर खैबर आदि दर्रों से *भारतवर्ष* में चले आये। *जो आर्य लोग भारत मे आ गये उन्हें* **हिन्दी आर्य** (Indo Aryans) कहते हैं।

आर्यों का आगमन (Their Advent)—आर्य लोग भारतवर्ष में कब आये, इस विषय में इतिहासकारों का मत-भेद है। हाँ इतना निश्चित है कि वे सब एक ही बार भारतवर्ष में नहीं चले आये वरन् उनके भिन्न-भिन्न दलो ने विभिन्न समयों में भारतवर्ष में प्रवेश किया। *योरुप के इतिहासकार उनके आगमन का समय* **2000** *ई० पूर्व* *से* **1500** *ई० पूर्व बताते* हैं। परन्तु भारतीय विद्वान् जैसे स्वर्गीय *लोकमान्य तिलक* इसको बहुत पहले की घटना मानते हैं। उनका

विचार है कि आर्यों का पहला दल आज से *लगभग ६ हजार वर्ष पूर्व* *या इससे भी कुछ पहले* भारतवर्ष में प्रविष्ट हुआ।

आर्यों का विस्तार (Their Spread)—आर्य लोगों ने पहले पहल वर्तमान पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत तथा पंजाब में जिन्हें उन दिनों *सप्तसिंधु* कहते थे, डेरे डाल दिये और वहाँ कई वर्ष तक बसे रहे। इस काल को *वैदिक काल* (Vedic Age) कहते हैं। फिर वहाँ से धीरे-धीरे बढ़ते हुए *गंगा के मैदान* में जा पहुँचे और वहाँ उन्होंने कई राज्य स्थापित कर लिये। इस समय को *वीरकाल* (Epic Age) कहते हैं। धीरे-धीरे आर्य लोग *समस्त उत्तरी भारत* में फैल गये। इस सारे समय में उन्हें यहाँ के निवासियों अर्थात् द्राविड़ो से युद्ध करना पड़ा, परन्तु क्योंकि वे शीत देश से आने के कारण इन लोगों की अपेक्षा वीर तथा युद्ध-कुशल थे, इसलिये उन्हें परास्त करने में सफल हुए और इन्हें दक्षिण की ओर भगा दिया। कई द्राविड़ो ने आर्यों की अधीनता स्वीकार कर ली और उनके दास बन कर आर्य सोसाइटी में रहने लगे। इसके बहुत समय उपरान्त आर्य सभ्यता दक्षिण में भी फैल गई। *इस सभ्यता को वहा फैलाने वाला अगस्त ऋषि माना जाता है।*

☞ Q. Give a brief account of the civilization, *i.e.* Government, religion and social life of the early Aryans. (P.U. 1938-41-44-47-49-52) (V. Important)

प्रश्न—*प्राचीन आर्यों की सभ्यता अर्थात् शासन-विधान, धर्म और रहन-सहन का संक्षिप्त वर्णन करो।*

आर्यों का शासन-विधान (Government)

आर्य लोग जब भारतवर्ष में आये तो बहुत से *जनों* (Tribes) में बटे हुये थे। प्रत्येक जन का एक **राजा** होता था, जिसका कभी कभी चुनाव भी होता था, प्रायः राजा का पद पैतृक ही था। परन्तु इतना अवश्य है कि राजा पैतृक हो अथवा चुना हुआ वह निरंकुश नहीं होता था, उसके अधिकार सीमित थे। राजा अपनी प्रजा की रक्षा तथा पालन-पोषण करना अपना

कर्तव्य समझता था। वह अभियोगों का निर्णय भी स्वयं करता था और युद्ध में भी भाग लेता था।

राज्य-प्रबन्ध में राजा की सहायता के लिये प्रजा से निर्वाचित दो कौंसिलें होती थीं। एक कौंसिल को **सभा** (Sabha) तथा दूसरी को **समिति** (Samiti) कहते थे। प्रजा पर कोई *टैक्स* या लगान न था परन्तु लोग अपनी इच्छा से राजा को उपहार देते थे। विजित जातियाँ भी कर देती थीं। *कानून और दण्ड* बड़े कठोर थे। गाँव का प्रबन्ध पंचायतें करती थीं। गाँव के मुखिया को *ग्रामणी कहते थे*।

राजा की सहायता के लिये कई और **कर्मचारी** होते थे, जिनमें से प्रसिद्ध *पुरोहित*, *सेनानी* (सेनापति) और *ग्रामणी थे*। पुरोहित का विशेष महत्त्व था। वह राजा को राज्य कार्य में परामर्श देता था और राजा के साथ युद्ध क्षेत्र में जाता और उसकी विजय के लिये प्रार्थना करता था।

आर्यों का युद्ध विधान—*आर्यों का युद्ध विधान बड़ा उत्तम था*। वे किसी निःशस्त्र, सोये हुए, अथवा घायल शत्रु पर वार न करते थे और जनसाधारण को जो युद्ध में सम्मिलित न हों, कोई हानि नहीं पहुँचाते थे। लड़ाई बड़ी स्वच्छ होती थी। विषैले बाणों का प्रयोग वर्जित था और छुपकर वार करना पाप समझा जाता था। *युद्ध के शस्त्र* धनुष, बरछी, तलवार, कुल्हाड़ी, भाले, इत्यादि थे। *रक्षा के लिये* कवच और ढाल का प्रयोग होता था। युद्ध में राजा तथा बड़े नेता रथों में बैठ कर लड़ते थे, परन्तु साधारण लोग पैदल ही होते थे। ढाल, शंख, तूतियाँ *सैनिक* बैंड का काम देती थीं। युद्ध प्रायः नदियों के किनारे के पास हुआ करते थे।

आर्यों का धर्म
(Religion)

प्राचीन आर्यों का धर्म बड़ा सरल था। वे *प्रकृति की विभिन्न शक्तियाँ* जैसे सूर्य, वायु, वरुण, अग्नि आदि से प्रभावित होते थे, और उनको देवता मान कर उनकी स्तुति करते थे, जिससे कि वे प्रसन्न होकर धन-धान्य और सुख की प्राप्ति में उनकी सहायता

करें। इन्द्र और अग्नि की पूजा विशेष रूप से की जाती थी। अर्थात् आर्यों का धर्म (Nature Worship) था। समस्त देवता सख्या में ३३ थे। परन्तु आर्य यह भी अनुभव करते थे कि इन शक्तियो से भी उच्चतर कोई शक्ति है जो इन सब को नियम में रखती है। इस प्रकार वे एक मात्र ईश्वर को भी मानते थे। उन दिनो मे न तो कोई मंदिर थे और न ही मूर्ति पूजा की रीति थी, वरन् ईश्वर की उपासना खुली वायु में की जाती थी। यज्ञ तथा हवन आर्यों के धर्म का एक मुख्य अंग था और वेद उनकी धार्मिक पुस्तक थी।

आर्यों का रहन-सहन (Social Life)

आर्यो के रहन-सहन का ढंग भी बहुत ही सरल तथा उत्तम था। वे धार्मिक जीवन व्यतीत करते थे और उस समय की आर्य सोसाइटी में आज कल की भाँति जात-पात न थी।

(१) घरेलू जीवन—घर में पिता सारे कटुम्ब का शिरोमणि होता था और उसे प्रत्येक बात में पूरा अधिकार होता था। जब वह बूढा हो जाता था तो अपने घर का प्रबन्ध बड़े बेटे और बहू को सौंप कर स्वय ईश्वर के भजन-पूजन में लग जाता था। आर्यों के घर बड़े स्वच्छ खुले और हवादार होते थे और वे प्रायः मिट्टी तथा फूस के बने होते थे।

(२) स्त्री की पदवी—वैदिक समाज में स्त्रियों का बड़ा आदर किया जाता था। उन्हे पुरुषों के समान पूर्ण स्वतन्त्रता थी। धर्मपत्नी की उपस्थिति के बिना कोई भी यज्ञ पूरा नहीं माना जाता था। स्त्रियों में पर्दे की रीति न थी। वे पुरुषो की भाँति शिक्षा प्राप्त करती थीं और कई उनमें से बडी विदुषी होती थीं। साधारणतया पुरुष केवल एक स्त्री से विवाह करता था। परन्तु राजो, महाराजो और बड़े बड़े सरदारो के यहाँ एक से अधिक स्त्रियाँ होती थीं। विधवा स्त्रियों को पुनः विवाह करने की आज्ञा थी। बचपन के विवाह तथा सती होने की प्रथा न थी। स्त्रियों का चरित्र बहुत ऊँचा होता था।

(३) खान-पान तथा पहरावा—आर्यों का भोजन बहुत सादा

परन्तु बलवर्द्धक था। वे दूध और घी का बड़ा प्रयोग करते थे और अधिकतर अनाज, शहद, तरकारी और फल खाते थे। वे *सोमरस* भी पीते थे, जिस के वे बहुत अनुरागी थे। आर्यों का पहरावा भी बहुत सादा था। वे अपने शरीर को तीन सूती या ऊनी वस्त्रों से ढकते थे। वे सोने और चाँदी के आभूषणों का प्रयोग करते थे। प्रायः लोग दाढ़ी रखते थे।

(४) आर्यों के व्यवसाय—*आर्य लोगों का प्रधान कार्य कृषि (खेतीबाड़ी) था।* बड़े-बड़े खेत गेहूँ-जौ के थे। परन्तु कपास और तेल के बीजों की खेती भी होती थी। जल-सिंचाई नहरों और कुओं द्वारा की जाती थी। *आर्यों का दूसरा बड़ा व्यवसाय पशु पालना था।* उन का सबसे बड़ा धन पशु ही थे। वे गाय का बड़ा मान करते थे। परन्तु उन्हें *शिल्प मे भी पर्याप्त निपुणता प्राप्त थी।* वे कपड़ा बुनने, चमड़ा रंगने और आभूषण बनाने में निपुण थे और बढ़ई, लोहार तथा दूसरे कारीगरों का काम भी जानते थे। व्यापार चीज़ों की अदला-बदली से होता था। परन्तु सुवर्ण मुद्रा भी प्रयोग में लाई जाती थी। इस मुद्रा को निष्क कहते थे।

(५) आमोद-प्रमोद—आर्यों के आमोद-प्रमोद कई प्रकार के थे। वे नाचना और गाना जानते थे और विभिन्न प्रकार के वाद्य (साज़) बड़ी अच्छी तरह से बजा सकते थे। प्रत्येक गाँव का अपना-अपना रागी होता था। ये लोग शिकार भी खेलते थे। एक दूसरे के मुकाबले में रथ दौड़ाते थे। अपने उत्सवों को बड़े आनन्द से मनाते थे। सच *तो यह है कि वे बड़ा आनन्दमय जीवन व्यतीत करते थे।*

वीर काल

(THE EPIC AGE)

Q. What do you understand by the Epic Age? Write a short note on the Epics.

प्रश्न—*वीर काल से क्या अभिप्राय है ?* Epics *पर एक संक्षिप्त नोट लिखो।*

वीर काल से अभिप्राय वीरता का वह समय है, जब कि वे घटनायें जिनका वर्णन रामायण और महाभारत में आता है, हुई थीं। उस समय आर्य लोग पंजाब से बढ़ते हुये *गंगा और यमुना की घाटी* मे पहुँच चुके थे।

वीर काल (Epic Age)

शब्द Epic का अर्थ *युद्ध की कविता* के है, अर्थात् वीरता के कर्त्तव्यो का ऐसा वृत्तान्त जो कविता मे लिखा गया हो। प्रसिद्ध वीर-काव्य संख्या में दो हैं—*रामायण* और *महाभारत*, और ये संस्कृत में लिखे हुये है। इनमें प्राचीन भारतवर्ष के युद्धो का वर्णन है।

Epics

रामायण—इसको *ऋषि बाल्मीकि जी* ने संस्कृत में लिखा था। इसमें अयोध्या के सूर्यवंशी राजा रामचन्द्र जी के जीवन का वृत्तान्त है।

इसके अतिरिक्त भारतवर्ष में और भी प्रचलित रामायणें है जिन में से सब से प्रसिद्ध *रामचरितमानस* या तुलसी रामायण है, जो हिन्दी भाषा में है। उसके लेखक *गोस्वामी तुलसीदास जी* है जो अकबर के समय में हिन्दी के बड़े उच्चकोटि के कवि थे।

महाभारत—इसकी रचना *ऋषि व्यास जी* ने की थी। इस में कौरवो और पांडवो की लड़ाई का वृत्तान्त वर्णन किया गया है।

यह यथार्थ रूप से कहना कठिन है कि ये ग्रन्थ कब लिखे गये और न ही निश्चय से यह कह सकते हैं कि वे अपने मूल रूप में वैसे ही हैं। परन्तु यह बात सत्य है कि रामायण की रचना महाभारत से पहले हुई है, क्योंकि महाभारत में रामायण की सारी कथा का वर्णन है और रामायण में महाभारत के व्यक्तियों का वर्णन नहीं आता। हिन्दुओं का विचार है कि महाभारत की लड़ाई *ईसा मसीह से लगभग तीन हजार वर्ष पहले हुई थी*, परन्तु यूरोपीय विद्वान् इस विचार से सहमत नहीं हैं। इनका विचार है कि यह युद्ध ईसा मसीह से कोई डेढ हजार वर्ष पहले हुआ।

Q. Briefly describe the stories of the Ramayana

and the Mahabharata.

प्रश्न—*रामायण तथा महाभारत की कथा का संक्षिप्त वर्णन करो।*

अत्यन्त प्राचीन काल में उत्तरी भारतवर्ष में कोशल नाम का एक राज्य था जिसकी राजधानी *अयोध्या* नगरी थी। वहाँ सूर्यवंशी कुल के एक राजा दशरथ राज्य करते थे। उनकी तीन रानियाँ थीं—*कौशल्या, सुमित्रा* और कैकई। इन रानियों के चार पुत्र थे। कौशल्या के पुत्र रामचन्द्र, सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण और शत्रुघ्न और कैकेई के पुत्र भरत थे। इनमें से रामचन्द्र जी सबसे बड़े थे और सर्वगुण युक्त होने के कारण लोगों को प्रिय थे।

रामायण की कथा

रामचन्द्र जी का विवाह *विदेह* (वर्तमान उत्तर बिहार) के राजा जनक की रूपवती कन्या *सीता* से हुआ। जब राजा दशरथ वृद्ध हो गये, तो उन्होंने रामचन्द्र जी को अपना युवराज बनाना चाहा। परन्तु यह समाचार पाकर रानी कैकेयी को बहुत दुःख हुआ, क्योंकि वह चाहती थी कि राज्य उसके पुत्र भरत को मिले। इसलिये उसने राजा को अपने दो वर जो उसने किसी समय रानी को दिये थे, पूर्ण करने को कहा। एक वर के बदले तो उसने रामचन्द्र जी के लिये चौदह वर्ष का बनवास माँगा और दूसरे वर की पूर्ति में भरत के लिये सिंहासन। दशरथ के लिये अपने प्रिय पुत्र राम को बनों में भेजना अति कठिन था, परन्तु रामचन्द्र जी स्वयं ही अपने पिता के वचन को पूरा करने के लिये बनवास के लिये तैयार हो गये। उनका भाई लक्ष्मण और धर्मपत्नी सीता भी उनके साथ हो लिये और तीनों दण्डक बन को चले गये। राजा दशरथ अपने प्रिय पुत्र के वियोग से दुःखित होकर परलोक सिधार गये।

भरत उन दिनों अपने नाना के यहाँ थे। जब वह अयोध्या को लौट आये तो उन्होंने सारा समाचार सुन कर अपनी माता को बहुत बुरा-भला कहा और राज्य लेने से इन्कार कर दिया। तत्पश्चात् भरत अपने मन्त्रियों को साथ लेकर रामचन्द्र जी के पास पहुँचे और उनसे

बड़ा आग्रह किया कि वह वापस चलकर राज-काज संभाल लें। परन्तु रामचन्द्र जी ने एक न मानी। तब भरत उनकी खड़ाऊँ ले आये और उन्हें सिंहासन पर रख कर स्वयं रामचन्द्र जी की ओर से राज्य करने लगे।

वनवास के १३ वर्ष तो रामचन्द्रजी ने सुखपूर्वक ही व्यतीत किये, परन्तु चौदहवें वर्ष लंका का राजा रावण उनकी धर्मपत्नी सीता जी को दण्डक वन में स्थित पंचवटी के स्थान से रामचन्द्र तथा लक्ष्मण की अनुपस्थिति में बलपूर्वक धोके से उठा कर ले गया। रामचन्द्रजी ने किष्किन्धा (वर्तमान ज़िला बलारी, आन्ध्रा राज्य) के राजा सुग्रीव और उनके सेनापति हनुमान की सहायता से लंका पर आक्रमण किया। रावण युद्ध में मारा गया। रामचन्द्र जी ने लंका का राज्य रावण के भाई विभीषण को सौंप दिया। चौदह वर्ष की समाप्ति के पश्चात् रामचन्द्र जी, सीताजी और लक्ष्मण जी अयोध्या लौट आये। जनता ने उनका सप्रेम स्वागत किया और बड़ा हर्ष मनाया। इसके पश्चात् रामचन्द्र जी चिरकाल तक बड़ी उत्तम रीति से राज्य करते रहे। उनके दो पुत्र लव और कुश हुए जिन्होंने क्रमशः लाहौर तथा कसूर की नींव डाली।

श्री रामचन्द्र जी

महाभारत की कथा

महाभारत में कौरवों तथा पाण्डवों के पारस्परिक युद्ध का वर्णन है। प्राचीन काल में वर्तमान देहली नगर से कोई ६० मील उत्तर-पूर्व की ओर वर्तमान मेरठ ज़िला में हस्तिनापुर नाम की एक राजधानी थी। यहाँ चंद्र-वंशी कुल का एक राजा शान्तनु राज्य करता था।

उसका राज्य यमुना नदी के पूर्व तथा पश्चिम दोनों ओर था। उसके दो पुत्र भीष्म और विचित्रवीर्य थे। भीष्म बड़ा था परन्तु उसने प्रण कर रखा था कि वह न तो राजगद्दी पर बैठेगा और न विवाह ही करेगा। वह जीवन पर्यन्त ब्रह्मचारी रहा और महाभारत के युद्ध में उस ने बड़ी वीरता दिखाई। शान्तनु की मृत्यु पर उसका छोटा पुत्र विचित्रवीर्य सिंहासन पर बैठा।

विचित्रवीर्य के भी दो पुत्र थे—बड़े का नाम *धृतराष्ट्र* और छोटे का नाम *पाण्डु* था। धृतराष्ट्र जन्म से ही नेत्रहीन था अतः विचित्रवीर्य की मृत्यु पर पाण्डु हस्तिनापुर के सिंहासन पर बैठा। उसके पाँच पुत्र थे, जिनके नाम *युधिष्ठिर*, *भीम*, *अर्जुन*, *नकुल* और *सहदेव* थे और सब पाण्डव कहलाते थे। पाण्डु की मृत्यु के उपरान्त धृतराष्ट्र राजा बना। उसके सौ पुत्र थे जिनमें *दुर्योधन* सबसे बड़ा था। इन सब भाइयों को कौरव कहते थे। इन पाण्डवों तथा कौरवों में आरम्भ से ही बड़ी ईर्षा तथा शत्रुता रहती थी।

धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को अपना युवराज नियत किया। इस पर दुर्योधन और उसके भाईयों को बहुत दुःख हुआ और उन्होंने अपने पिता को कह-सुन कर पाण्डवों को देश से निकलवा दिया। इस देश-निर्वासन के समय में पाण्डव पांचाल देश में पहुँचे। वहाँ पांचाल नरेश द्रुपद की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर हो रहा था। अर्जुन ने स्वयंवर की शर्त को पूरा कर दिया और द्रौपदी से उसका विवाह हो गया।

पांचाल-नरेश से सम्बन्ध हो जाने के कारण पाण्डवों की शक्ति बढ़ गई और उन्होंने कौरवों से अपना आधा राज्य माँगा। कौरवों ने अपने राज्य का ऊसर भाग उन्हे दे दिया। पाण्डवों ने उसे साफ करके वहाँ वर्तमान देहली के निकट *इन्द्रप्रस्थ* नाम का नगर बसाया और शीघ्र पर्याप्त उन्नति कर ली।

पाण्डवों को इस प्रकार उन्नति करते देख दुर्योधन और उसके भाई जलने लगे और उनके नाश करने का उपाय सोचने लगे। फलतः दुर्योधन ने युधिष्ठिर को जुआ खेलने के लिये उद्यत कर लिया। इस जुए में युधिष्ठिर ने राजपाट तथा द्रौपदी को भी हार दिया और

एक शर्त के अनुसार पाण्डवो को १३ वर्ष के लिये बनों को जाना पड़ा। इस समय की समाप्ति के पश्चात् पाण्डवों ने वापस आकर दुर्योधन से अपना राज्य लौटा देने की प्रार्थना की, परन्तु दुर्योधन ने साफ इन्कार कर दिया। इस इन्कार पर कौरवों तथा पाण्डवो में कुरुक्षेत्र में एक रक्तपूर्ण युद्ध हुआ जिसमे भारतवर्ष के समस्त राजा किसी न किसी ओर सम्मिलित हुये। द्वारकापुरी के राजा श्रीकृष्णजी पाण्डवों की ओर थे। यह भयानक युद्ध निरन्तर १८ दिन तक रहा। इसी युद्ध के आरम्भ में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को वह उपदेश दिया था जो गीता में लिखा है। अन्ततः कौरवों की हार हुई और पाण्डव जीत गये। इसके पश्चात् महाराज युधिष्ठिर कई वर्षों तक हस्तिनापुर में उत्तम रीति से राज्य करते रहे और फिर अर्जुन के पोते परीक्षित को राज्य देकर आप अपने भाइयो सहित स्वर्ग पुरी को चले गये।

Q. Write a short note on Lord Krishna and the Bhagwad Gita

प्रश्न—*श्रीकृष्ण और भगवद्गीता पर संक्षिप्त नोट लिखो।*

श्रीकृष्ण महाभारत काल में हिन्दुओं के एक बड़े कर्मयोगी, उच्च-कोटि के फिलासफर, राजनीतिज्ञ और प्रतापी राजा

श्री कृष्ण

हो गुज़रे हैं। वह यादव वंश से थे और मथुरा में उत्पन्न हुए थे। उनकी माता का नाम देवकी और पिता का नाम वसुदेव था। इन्होने वीरता के कई काम किये और फिर सौराष्ट्र में द्वारिकापुरी के राजा बन गये। महाभारत के युद्ध में वह अर्जुन के रथवान बने। उस युद्ध में पाण्डवों की विजय अधिकतर उन्हीं की नीति से हुई थी। सनातनधर्मी उन्हें परमात्मा का अवतार मानते हैं।

श्रीकृष्ण

भगवद्‌गीता का शाब्दिक अर्थ है *'भगवान्‌ का गीत'*। यह महाभारत का एक भाग है, और इसमें वह उच्चकोटि का उपदेश लिखा है, जो श्रीकृष्ण ने महाभारत का युद्ध आरम्भ होने के समय अर्जुन को दिया था, जबकि उसने इस बात पर लड़ने से इन्कार किया कि मैं अपने भाइयों के विरुद्ध कैसे लड़ूं। इस उपदेश का सार यह है कि *आत्मा अमर है, केवल शरीर नश्वर है, प्रत्येक मनुष्य को निष्काम भाव से अपने सभी कर्तव्यो का पालन करना चाहिये।* गीता का महत्व इस बात से प्रकट है कि संसार में शायद ही ऐसी कोई सभ्य भाषा होगी जिस में उसका अनुवाद विद्यमान न हो।

भगवद्‌गीता

Q. What light do the Ramayana and the Mahabharata throw on the religious, social and political life of the ancient Hindus? (P.U. 1917-24-30-35-52)

प्रश्न—*रामायण और महाभारत से प्राचीन भारतवर्ष की धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक अवस्था के विषय मे क्या पता चलता है?*

रामायण और महाभारत वीरकाल की सभ्यता पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं। इनसे पता चलता है कि जब आर्य लोग पंजाब से आगे बढ़ कर गङ्गा और यमुना की घाटी में बस गये थे तो उनकी सभ्यता में बहुत कुछ परिवर्तन हो गया था।

उस समय के *धर्म में वैदिक काल की सी उत्तम सरलता न थी।* एक तो प्राकृतिक दृश्यों की पूजा (Nature Worship) के स्थान कई नवीन देवी-देवताओं, जैसे *विष्णु, शिव* आदि की पूजा आरम्भ हो गई थी। *दूसरे संस्कार इतने कठिन और पेचीदा हो चुके थे कि* केवल बड़े सुयोग्य पुरोहित ही उन्हें करवा सकते थे। *यही कारण था कि* पुरोहितो और *ब्राह्मणों का मान बढ़ गया था।* तीसरे पशु-हत्या बहुत बढ़ गई थी। वैदिक काल की भाँति लोग कर्म और पुनर्जन्म को मानते थे।

१—धार्मिक अवस्था (Religion)

जात-पात बड़ी दृढ़ता से स्थापित हो चुकी थी और ब्राह्मणों

का बड़ा आदर किया जाता था। लोग बड़ा पवित्र और सरल जीवन व्यतीत करते थे। मनुष्य का जीवन चार आश्रमो में बाँटा गया था। स्त्रियो को स्वतन्त्रता प्राप्त थी। छोटी आयु में विवाह करने और पर्दे की प्रथा न थी और वे शिक्षा भी प्राप्त करती थीं। उच्च राजवंशो की लड़कियाँ विवाह के समय अपना वर स्वयं चुनती थीं। इस रीति को 'स्वयंवर' कहते थे। *परन्तु स्त्रियों के मान में वैदिक समय की अपेक्षा कुछ कमी हो गई थी।* राजे और धनी पुरुष अब भी प्रायः एक से अधिक विवाह करते थे। यद्यपि साधारण लोग गाँवों में रहते थे परन्तु बड़े-बड़े नगर जैसे अयोध्या, मिथिला, इन्द्रप्रस्थ, हस्तिनापुर, मथुरा, इत्यादि स्थापित हो चुके थे।

२—सामाजिक अवस्था (Society)

वैदिक काल के जनों (Tribes) का स्थान अब बड़े-बड़े राज्यो ने ले लिया था। रामायण और महाभारत में ऐसे कई राज्यों का वर्णन आता है, जैसे कुरु, *पांचाल*, *कोशल*, *विदेह*, *मगध*, *काशी*, *अंग*, इत्यादि। इन राज्यों के साथ-साथ कई छोटे छोटे प्रजातन्त्र राज्य भी स्थापित थे। *राजा का पद पैतृक हो गया था।* अर्थात् वैदिक काल की भाँति राजा का चुनाव नहीं होता था, वरन् पिता के पश्चात् राजगद्दी बड़े लड़के को मिल जाती थी। अपने राज्य-काल में ही राजा अपने पुत्र को राज्य कार्य में सम्मिलित कर लेता था। उस पुत्र को युवराज कहते थे। *राजा का प्रभुत्व और शक्ति बहुत बढ गये थे और सभा और समिति का प्रभुत्व बहुत घट गया था।* फिर भी युवराज को राजसिंहासन देने से पहले प्रजा की सम्मति अवश्य ली जाती थी और यदि उसमें कोई त्रुटि हो तो उसे राज्य नहीं मिलता था। राज्याभिषेक के समय राजा को शपथ लेनी पड़ती थी कि वह अपने देश और प्रजा की भलाई का सदा ध्यान रक्खेगा और नियमो का पालन करेगा। *राजा अपनी शक्ति बनाने और राज्य विस्तार के लिये अश्वमेध यज्ञ करते थे और सम्राट बनने के इच्छुक थे।* उस समय आय का मुख्य स्रोत

राजनैतिक अवस्था (Government)

लगान था जो समस्त उपज का $\frac{1}{6}$ भाग होता था और प्रायः अन्न के रूप में लिया जाता था। इसके अतिरिक्त और भी कई टैक्स थे। युद्ध के लिए सेना होती थी।

जातपात

(CASTE SYSTEM)

Q. What do you know about the caste system of the Hindus ? Discuss its merits and demerits.

(P. U. 1922-26)

प्रश्न—*हिन्दुओं के "जातपात के विचार" से तुम क्या समझते हो? इसके लाभ तथा हानियों का वर्णन करो?*

जातपात क्या है?

हिन्दू सोसाइटी प्राचीन काल से चार बड़े-बड़े दलों (समूहो) अर्थात (१) *ब्राह्मण*, (२) *क्षत्रिय*, (३) *वैश्य* और (४) *शूद्र* में बटी हुई है। ऐसे दलो को जातियाँ कहते हैं। आरम्भ मे यह विभाग केवल व्यवसाओं (पेशों) के विचार से किया गया था और एक जाति से दूसरी जाति में जाना और आपस में विवाह-सम्बन्ध करना वर्जित न था, परन्तु ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, जातपात पैतृक बन गई, अर्थात् जन्म से मानी जाने लगी और एक जाति से दूसरी जाति में जाना असम्भव हो गया। आजकल अंग्रेज़ी शिक्षा तथा समय की आवश्यकताओं के कारण जातपात के बन्धन बहुत ढीले पड़ गये हैं तथा शनैः शनैः उसकी शक्ति कम हो रही है।

जातपात का आरम्भ

यह विश्वस्त रूप से नहीं कहा जा सकता कि जात-पात का आरम्भ कब और किन दशाओ में हुआ। साधारण विचार यह है कि वैदिक काल में अर्थात् जब *आर्य लोग पंजाब मे रहते थे जातपात का कोई विशेष भेद न था।* केवल इतना था कि गोरे रंग के आक्रमणकारी अपने आप को *आर्य* और मूल निवासियों को जिनका रङ्ग काला था,

'दस्यु' कहते थे। परन्तु बाद में जब आर्य लोग पंजाब से बढ़ते हुए *गंगा की घाटी में पहुँचे तो जात-पात दृढता से स्थापित हो गई और आर्य लोग* भिन्न भिन्न व्यवसाय (पेशे) ग्रहण करने के कारण चार दलों में विभक्त हो गये:—

(१) ब्राह्मण—ये लोग बड़े विद्वान् और तपस्वी होते थे। इनका काम धार्मिक कर्मकाण्डों को पूरा करना था। इनका विशेष मान किया जाता था। राजाओं के मन्त्री प्रायः ब्राह्मण ही होते थे।

(२) क्षत्रिय—इनका काम लड़ना और देश की रक्षा करना था। राजा प्रायः इसी जाति के होते थे।

(३) वैश्य—ये लोग व्यापार और खेती बाड़ी करते थे।

(४) शूद्र—इस जाति में छोटे दर्जे के लोग सम्मिलित थे और उनका काम शेष जातियों की सेवा करना था।

नोट—इन जातियों में से पहली तीन जातियों के लोग उच्च माने जाते थे और क्योंकि वे विद्या प्राप्त करके एक नया जन्म पाते थे इसलिये उन्हें द्विज कहते थे।

इसके पश्चात् जातियों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ती चली गई।

जातियों में वृद्धि — जातियों की संख्या में वृद्धि होने के कई कारण हैं। जैसे:—

(१) भारतवर्ष की मूल जातियों ने हिन्दू धर्म में प्रवेश करके अलग जातियाँ बना लीं। जैसे:—*मध्य भारत के गोंड और बंगाल के राजवंशी।*

(२) विदेशी आक्रमणकारियों ने भी इसी प्रकार अलग जातियाँ बना लीं। जैसे:—*गुज्जर और हूण।*

(३) बिरादरी से पृथक् हुए लोगों की अलग जातियाँ बन गईं।

(४) एक जाति के लोगों के भिन्न-भिन्न स्थानों पर निवास करने से उनके रहन-सहन में भेद पड़ गया और उन्होंने एक दूसरे से विवाह और खानपान का सम्बन्ध तोड़ दिया और अलग जातियाँ बन गईं। जैसे:—*काश्मीरी ब्राह्मण, गुजराती और पंजाबी ब्राह्मण।*

(५) कई लोगों ने भिन्न-भिन्न व्यवसाय ग्रहण करने से नई जातियाँ बना लीं जैसेः—*लोहार, तरखान, मोची, धोबी, जुलाहे, सुनार।*

जातपात के लाभ (Merits)

(१) कला-कौशल में उन्नति—जातपात का एक लाभ यह हुआ कि प्रत्येक मनुष्य अपने बाप-दादा का व्यवसाय (पेशा) ग्रहण करने लगा। अतः बहुत सारे कला-कौशल विशेष विशेष वंशों और जातियों के अधिकार में आ गये, जिससे कला-कौशल ने बड़ी उन्नति की।

(२) शुद्ध चरित्र—जातपात के कारण लोगों का आचार-व्यवहार और चाल-चलन विशेष कर ऊँची जातियो का बहुत कुछ सुधरा रहा क्योकि उन्हें भय था कि कहीं बुरे कर्मों के कारण वे बिरादरी से न निकाल दिये जायें या बिरादरी की दृष्टि से गिर न जायें।

(३) बिरादरी का अनुभव—एक ही जाति के लोगों में घनिष्ट प्रेम और सहानुभूति हो गई, और बिरादरी का अनुभव भी हो गया जिससे धनाढ्य लोगों ने निर्धनों की सहायता करनी आरम्भ कर दी।

(४) रक्त की पवित्रता—अपनी अपनी जाति में रहने के कारण रक्त की पवित्रता बनी रह सकी।

जातपात की हानियाँ (Demerits)

(१) जातीय उन्नति में बाधा—जातियों के कारण हिन्दू सोसाइटी असंख्य भागो में बँट गई है जो परस्पर ईर्ष्या द्वेष रखते हैं। यही कारण है कि हिन्दू एक सुदृढ़ तथा संयुक्त (संगठित) जाति नहीं बन सके हैं।

(२) व्यक्तिगत उन्नति में बाधा—जो मनुष्य जिस जाति में उत्पन्न हुआ है वह उस जाति के बन्धनों में बन्धा है और यह बात भी व्यक्तिगत उन्नति के मार्ग में एक बाधा है।

(३) छूत-छात का आरम्भ—ऊँची जाति के लोगों का वर्ताव शूद्रों और नीची जातियों के लोगों से अच्छा नहीं था, वे इन लोगों

को पतित मानते थे और उन से छूना पाप समझते थे। उनके इस व्यवहार से छूतछात की समस्या खड़ी हो गई और यह हिन्दू सोसाइयटी को रोग की भाँति अन्दर ही अन्दर खाये जा रही थी। परन्तु *अब स्वतन्त्र भारत में हमारी सरकार ने छूत-छात को समाप्त कर दिया है।*

(४) विवाह में बाधा—जातपात की व्यवस्था ने हिन्दुओ में विवाह के क्षेत्र को बहुत ही संकुचित कर रखा है और कई हिन्दू विवाह न होने के कारण दूसरे धर्म को ग्रहण कर लेते हैं।

(५) उच्च शिक्षा में बाधा—बहुत से लोग जाति के नियमों के बन्धन के कारण दूसरे देशों में नाना प्रकार की विद्याओं को प्राप्त करने के लिये नहीं जा सकते थे।

(६) हिन्दू धर्म की उन्नति में बाधा—वर्तमान समय में जाति व्यवस्था में यह भी बुराई उत्पन्न हो गई है कि अन्य लोगो के लिये हिन्दू धर्म में सम्मिलित होना कठिन हो जाता है, क्योंकि उन्हें किसी जाति में भी बराबरी का दर्जा नहीं दिया जाता।

(७) ऊँची जातियों को हानि—ऊँची जातियों के लोग अत्यन्त निर्धन होने पर भी नीची जातियो के धन्धे ग्रहण नहीं कर सकते थे क्योंकि वे इसे अपना अपमान समझते थे।

आर्य्यों के प्राचीन मान्य ग्रन्थ

(RELIGIOUS BOOKS OF THE ARYANS)

आर्य्यों के मान्य ग्रन्थ दो प्रकार के हैं:—

(१) श्रुति।

(२) स्मृति।

(१) श्रुति—श्रुति शब्द के अर्थ हैं 'सुनी हुई'। श्रुति से तात्पर्य वे ग्रन्थ हैं जिनका विषय सीधा परमात्मा से सुना गया हो। वस्तुतः वेदों के ज्ञान को ही श्रुति कहते हैं, क्योकि हिन्दुओ के विचार के

अनुसार इनका ज्ञान सीधा परमात्मा की ओर से ऋषियों पर प्रकट हुआ। परन्तु *ब्राह्मण ग्रन्थ* और *उपनिषद्* आदि ग्रन्थ भी श्रुति ही समझे जाते हैं, क्योंकि इनका आधार वेद पर ही है।

(२) स्मृति—स्मृति शब्द का अर्थ 'स्मरण' है। अतः स्मृति से उन ग्रन्थों का अभिप्राय है, जिनका विषय मनुष्य के विचार की उपज है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्मृति के आधार पर ही पहुँचता रहा है। *मनुस्मृति* सब स्मृतियों में अधिक विख्यात है।

श्रुति ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण बदल नहीं सकती, परन्तु स्मृति देश और काल के अनुसार बदल जाती है।

नोट—रामायण और महाभारत को इतिहास कहते हैं।

Q. Write short notes on :—

The Vedas, the Upanishadas, the Six Schools of Hindu Philosophy, Manu and his Code, the Puranas.

प्रश्न—*निम्नलिखित पर संक्षिप्त नोट लिखो :—*

वेद, उपनिषद्, षट् दर्शन, मनु और उसका धर्मशास्त्र, पुराण।

वेद—हिन्दुओं के सबसे अधिक मान्य ग्रन्थ हैं। हिन्दू उन्हें ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं। उनका विश्वास है कि वेद अनादि काल से चले आते हैं। परन्तु योरुप के विद्वानों का इस के विषय में हिन्दुओं से मतभेद है। उनका मत है कि वेद ईसा मसीह से अढ़ाई-तीन हज़ार वर्ष पूर्व रचे गये और ऋग्वेद इन सब में पुराना है।

वेद

वेद संख्या में चार हैं—*(१) ऋग्वेद, (२) यजुर्वेद, (३) सामवेद और (४) अथर्ववेद*।

(१) ऋग्वेद—इस वेद में एक हज़ार से कुछ अधिक मन्त्र हैं। इन मन्त्रों में प्रायः इन्द्र, वरुण, अग्नि आदि प्राकृतिक देवताओं की स्तुति की गई है। *यह वेद संसार में प्राचीनतम पुस्तक मानी जाती है।*

(२) यजुर्वेद—इसमें अधिकांश यज्ञ के लिये मन्त्र हैं।

(३) **सामवेद**—इसके अधिकाँश मन्त्र ऋग्वेद से लिये गये हैं। यह वेद हिन्दुओं की संगीत कला का स्रोत है।

(४) **अथर्ववेद**—इसमें रोगों को दूर करने के लिये, शत्रुओं को हानि पहुँचाने के लिये और अन्य कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिये मन्त्र लिखे हुये हैं। लोगों ने चिरकाल तक इसकी गणना वेदों में नहीं की।

उपनिषद्

उपनिषद् वैदिक साहित्य में अध्यात्मिक विद्या की पुस्तकें हैं। उनमें इन विषयों पर तर्क किया गया है कि ईश्वर क्या है? प्रकृति क्या है? आत्मा क्या है? परमात्मा और आत्मा का क्या सम्बन्ध है? मृत्यु के पश्चात् क्या होता है? इत्यादि। उपनिषदों की संख्या तो लगभग २०० है, *परन्तु उनमें से १० या १२ मुख्य मानी जाती हैं।* उपनिषदों का आदर केवल हिन्दुओं तक ही सीमित नहीं वरन् कई अहिन्दू भी इनका बड़ा मान करते है। जर्मनी का एक बड़ा प्रसिद्ध फ़िलासफर *शोपन-हायर* (Schopenhauer) भी इन पर मुग्ध था। शाहजहान के बेटे दाराशिकोह ने इनकी बड़ी प्रशंसा की है।

षट् दर्शन

हिन्दुओं की फिलासफी को छः भागों में विभक्त किया गया है जिन्हे **छः शास्त्र** या दर्शन कहते हैं। इन दर्शनों के नाम ये हैं।

(१) **कपिल का साँख्य शास्त्र**—इस दर्शन में यह बताया गया है कि प्रकृति और आत्मा अनादि हैं और उनके मेल से संसार बना है। कपिल ने परमात्मा के अस्तित्व को नहीं माना है।

(२) **पतंजलि का योग-शास्त्र**—योग का अर्थ है जोड़ना। इस शास्त्र में प्रकृति और आत्मा के अतिरिक्त परमात्मा को भी अनादि माना गया है और बतलाया गया है कि आत्मा का परमात्मा से मिलाप कैसे हो सकता है।

(३) **गौतम का न्यायशास्त्र**—यह गौतम, गौतमबुद्ध नहीं, वरन

यह एक और ऋषि का नाम है। इस शास्त्र में हिन्दुओं की तर्क विद्या का वर्णन है।

(४) कणाद का वैशेषिक-शास्त्र—इस शास्त्र में बतलाया गया है कि यह संसार परमाणुओं से बना हुआ है। परमात्मा के अस्तित्व को नहीं मानो गया है।

(५) जैमिनि का पूर्व-मीमांसा—इसमें कर्मकाण्ड का वर्णन है और यह भी बतलाया गया है कि कर्मकाण्ड मुक्ति के लिये आवश्यक है।

(६) व्यास का उत्तर-मीमांसा—इसे वेदान्त भी कहते हैं। इस में परमात्मा को एक सर्वव्यापक शक्ति माना गया है अर्थात् इस समस्त संसार को परमात्मा का ही चमत्कार माना गया है। सब कुछ उसी से उत्पन्न हुआ और उसी में मिल जायगा।

मनु और उसका धर्मशास्त्र

मनु आर्यों का एक सुप्रसिद्ध शास्त्रकार था। उसने मनुस्मृति नामक ग्रन्थ रचा। यह हिन्दू कानून का ग्रन्थ है। इसमें प्रत्येक जाति के कर्तव्य दिये हैं और मनुष्य के जीवन को निम्नलिखित चार आश्रमों या भागों में विभक्त किया गया है।

(१) ब्रह्मचर्य आश्रम—यह आश्रम पहले २५ वर्ष तक है। इस में मनुष्य का कर्तव्य शिक्षा प्राप्त करना है।

(२) गृहस्थ आश्रम—यह २५ से ५० वर्ष तक है। इसमें विवाह कर के सन्तान उत्पन्न करने तथा उसके पालन-पोषण करने का आदेश है।

(३) वानप्रस्थ आश्रम—यह ५० से ७५ वर्ष तक है। इसमें वनों और जङ्गलों में रह कर ईश्वर का चिंतन करने का आदेश है।

(४) सन्यास आश्रम—यह ७५ से १०० वर्ष तक है। इसमें यह आदेश है कि मनुष्य साम्प्रदायिक बन्धनों तथा पाबन्दियों से स्वतन्त्र होकर प्रचार का काम करे।

इन आश्रमो में हिन्दुओ की दृष्टि में गृहस्थ आश्रम को सब से

अधिक महत्व दिया गया है क्योंकि इसी आश्रम के आश्रय पर शेष आश्रम निर्भर हैं।

योरुप के विद्वान् वर्तमान मनुस्मृति के लिखे जाने का समय ईसा मसीह की दूसरी शताब्दी मानते हैं, परन्तु हिन्दू इसे बहुत प्राचीन समय की मानते हैं।

पुराण

पुराण शब्द का अर्थ है 'पुराना'। ये हिन्दुओ के प्राचीन ग्रन्थ हैं और इनमें संसार की उत्पत्ति, देवताओं के पराक्रम और प्राचीन वंशो के ऐतिहासिक वृत्तान्त लिखे हैं। यद्यपि इनमें कई बड़ी-बड़ी विचित्र तथा अविश्वासनीय कथा कहानियाँ भी लिखी हैं, तथापि इन से प्राचीन हिन्दू इतिहास के विषय में पर्याप्त परिचय प्राप्त होता है। पुराण संख्या में अठारह हैं, जिनमें से अधिक प्रसिद्ध श्रीमद्भागवत और विष्णु-पुराण हैं। भागवत् पुराण में श्रीकृष्ण जी के जीवन के प्रारम्भिक वृत्तान्त लिखे हैं। कई विद्वानो का विचार है कि पुराण अपने वर्तमान रूप में गुप्त काल में लिखे गये थे।

बौद्धमत तथा जैनमत

(BUDDHISM AND JAINISM)

(6th Century B. C.)

बौद्धमत तथा जैनमत का आरम्भ

जब हिन्दू आर्य्य भारतवर्ष में प्रविष्ट हुए, तो उनका समय अधिकतर मूल निवासियों से लड़ने-भिड़ने में व्यतीत हुआ। परन्तु जब उन्होने गंगा तथा यमुना का मैदान अपने अधिकार में कर लिया और वहाँ रहने लगे, तो उनका ध्यान अधिकतर धर्म की ओर हो गया। अब ब्राह्मणो का दर्जा ऊँचा हो गया और यज्ञ तथा हवन आदि का महत्व बढ़ गया। ये यज्ञ हवन के रीति-रिवाज

धीरे-धीरे न केवल कठिन तथा गूढ़ हो गये वरन् इन पर बहुत सा धन भी व्यय होने लगा और पशुओं की बलि दी जाने लगी। कई यज्ञ तो बारह-बारह वर्ष चलते रहते थे और उन पर बड़ा व्यय उठता था। इसके अतिरिक्त छोटी जातियों से घृणा का भाव बढ़ गया और कई लोगों को अछूत समझा जाने लगा। इन सब दोषों के विरुद्ध कई लोगों ने आन्दोलन किया और ईसा से छः सौ वर्ष पूर्व भारतवर्ष में कई साम्प्रदायिक मत उठ खड़े हुए। उनमें से केवल दो मत अभी तक जीवित हैं, जिनकी नींव दो राजकुमारों ने डाली। इनमें से एक बौद्धमत है, जिसके संचालक सिद्धार्थ थे और दूसरा जैनमत जिसके सञ्चालक वर्द्धमान महावीर थे। इन दोनों का उद्देश्य हिन्दू धर्म की बुराइयों को दूर करके उसका सुधार करना था।

☞ Q. Give a short sketch of the life of Buddha and state the chief doctrines which he preached. Also compare and contrast Buddhism and Hinduism. (P. U. 1946-48-50-52) (V. Important)

प्रश्न—बुद्ध के जीवन तथा शिक्षा का संक्षिप्त वर्णन करो और बताओ कि बौद्धमत और हिंदुमत में क्या भेद है ?

बाल्यावस्था—बुद्ध एक क्षत्रियवंशीय राजकुमार थे। वह नैपाल की तराई में स्थित कपिलवस्तु के राजा शुद्धोदन के पुत्र थे। वह 623* ई० पू० कपिलवस्तु से कुछ मील दूर लुम्बिनी ग्राम में उत्पन्न हुये।

गौतम बुद्ध

बचपन में उनका नाम सिद्धार्थ था। बाद में यही सिद्धार्थ बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुये। उन्हें अपने वंश के नाम पर गौतम भी कहा जाता है और क्योंकि वह शाक्य जाति से थे इसलिये उन्हें 'शाक्य मुनि' भी कहते हैं। उनके जन्म के थोड़े दिन बाद उनकी माता माया देवी का देहान्त हो गया।

---

*कई इतिहासकार 567 ई० पू० और कई 563 ई० पू० भी मानते हैं।

विवाह—गौतम बुद्ध का पालन-पोषण बड़े-लाड-प्यार से हुआ और उन्हें क्षत्रिय कुमारों की भाँति बड़ी उत्तम शिक्षा दिलाई गई, परन्तु वह आरम्भ से ही बड़े उदासीन रहते थे और किसी को दुःख में देख कर बहुत उदास और व्याकुल हो जाते थे। उनके पिता ने राजकुमार की यह दशा देख कर उनके विचारों को बदलना चाहा। अतः अठारह वर्ष की आयु में उनका विवाह एक रूपवती राजकुमारी *यशोधरा* के साथ कर दिया गया परन्तु इससे राजकुमार के सोच विचार में कुछ कमी न हुई।

गौतम बुद्ध

महान् त्याग—भिन्न-भिन्न अवसरों पर गौतम को *बुढ़ापा, रोग* और मृत्यु के हृदय-विदारक दृश्यों के देखने का संयोग प्राप्त हुआ, जिस से उनका मन संसार से उचाट हो गया और उन्होंने समझ लिया कि संसार दुःखों तथा आपत्तियों से भरा हुआ है। अतः उन्होंने इस संसार के कष्टों से छुटकारा पाने का उपाय ढूँढ़ना चाहा। एक बार उन्होंने एक साधु को देखा जो सत्य की खोज में फिर रहा था। उससे प्रभावित होकर उन्होंने भी साधु बन जाने का विचार किया। विवाह से दस वर्ष पश्चात् उनके यहाँ एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम *राहुल* रखा गया। अब उन्होंने देखा कि *एक और बन्धन पड़ गया* है। इसलिये उन्होंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि घर छोड़ जाऊँ। अतः अठाईस वर्ष की आयु में एक रात वह घर छोड़ वनों को चले गये। बौद्ध इस घटना को *महान् त्याग* कहते हैं।

बुद्ध बनना—पहले पहल गौतम ने एक के बाद दूसरे दो ब्राह्मण गुरुओं से शिक्षा प्राप्त की परन्तु उन्हें शान्ति प्राप्त न हुई। फिर उन्होंने

छः वर्ष तक गया नगर के पास उरुवेल नामक बन में घोर तपस्या की, यहाँ तक कि सूख कर काँटा हो गये, परन्तु कुछ भी लाभ न हुआ। अतः इन्होंने तपस्या करनी बन्द कर दी। अन्त में वह **गया** नगर के निकट एक पीपल के वृक्ष के नीचे समाधि लगाकर बैठ गये। यहाँ उन्हे एक विशेष प्रकाश दृष्टिगोचर हुआ और उन्होंने अपने विचार के अनुसार संसार के दुःखों से बचने और सच्चा आनन्द प्राप्त करने का उपाय ढूंढ़ लिया। वह यह था कि मनुष्य को अपनी वासनाओं को दमन करना चाहिये और उस के कर्म शुभ होने चाहियें। उस समय से वह बुद्ध कहलाने लगे। उस समय उनकी आयु पैंतीस वर्ष की थी।

महात्मा बुद्ध

धर्म प्रचार – इसके पश्चात् महात्मा बुद्ध ने अपने धर्म का प्रचार करना आरम्भ किया और बनारस के निकट **सारनाथ** के स्थान पर जो उन दिनों ऋषियों का एक नगर था, अपना पहला उपदेश दिया जो उनकी शिक्षा का सारांश था। वहाँ पाँच साधु उनके शिष्य बन गये। इसके पश्चात् उनके अनुयायियों की संख्या बढ़ती गई और बुद्ध ने भिक्षुओं के एक सुदृढ़ **संघ** की नीव डाली, जिसने इस धर्म को दूर-दूर तक फैला दिया। बुद्ध अपनी आयु के शेष पैंतालीस वर्ष मगध देश और उसके आस-पास के प्रदेश में अपने धर्म का प्रचार करते रहे। उनका उपदेश यह था कि बलिदान
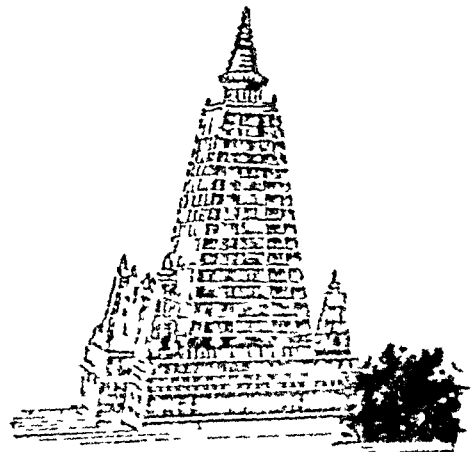
बुद्ध गया मंदिर

और धार्मिक रीति रिवाज सब व्यर्थ है; शुद्ध जीवन के बिना मुक्ति नहीं मिल सकती। वे अपने नगर कपिलवस्तु में भी गये जहाँ उनके पिता और सारे वंश ने भी इस धर्म को स्वीकार कर लिया।

देहान्त—निदान अस्सी वर्ष की आयु में अर्थात् 543 * ई० पूर्व वर्तमान ज़िला गोरखपुर के कुशीनगर (वर्तमान कासिया) नामक स्थान पर महात्मा बुद्ध का देहान्त हुआ।

(१) चार मौलिक सिद्धान्त—बुद्ध की शिक्षा बड़ी सरल थी। उनकी शिक्षा के चार मौलिक सिद्धान्त थे। *(१) संसार दुःखों का घर है। (२) इस दुःख का कारण वासनायें हैं। (३) इन वासनाओं को मार देने से दुःख दूर हो सकते हैं और सच्चा आनन्द प्राप्त होता है। (४) इन वासनाओं को मार देने के लिये मनुष्य को अष्ट मार्ग* (Eightfold Path) पर चलना चाहिये।

बुद्ध की शिक्षा

(२) अष्ट मार्ग—बुद्ध का अष्टमार्ग निम्नलिखित बातों पर सम्मिलित है :—

(क) शुद्ध ज्ञान; (ख) शुद्ध संकल्प; (ग) शुद्ध वार्तालाप; (घ) शुद्ध आचरण; (ङ) शुद्ध जीवन; (च) शुद्ध प्रयत्न; (छ) शुद्ध विचार; (ज) शुद्ध समाधि।

इस मार्ग को *मध्य मार्ग* (Middle Path) भी कहते हैं, क्योंकि बुद्ध भोग-विलासमय जीवन से भी घृणा करते थे और घोर तपस्या के जीवन से भी। वह इन दोनों के मध्य के मार्ग अर्थात् शुद्ध जीवन व्यतीत करने की शिक्षा देते थे।

(३) निर्वाण—बुद्ध के विचार में मानुषिक जीवन का मुख्य आदर्श यह है कि निर्वाण प्राप्त किया जाय और यह पवित्र-जीवन व्यतीत करने अर्थात् अष्ट मार्ग पर चलने से ही हो सकता है।

---

* कई इतिहासकार 487 ई० पू० और कई 483 ई० पू० भी मानते हैं।

(४) **अहिंसा**—बुद्ध ने अहिंसा अर्थात् जीवों को कष्ट न पहुँचाने पर ज़ोर दिया है। वह बलिदानों तथा मांस भक्षण के विरुद्ध थे। *अहिंसा बुद्ध धर्म का सबसे बड़ा नियम है।*

(५) **कर्म**—वह कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मानते थे। उनका मत है कि जो जैसा कर्म करता है वैसा फल भोगता है। इस फल को प्रार्थनाओं या देवी देवताओं की पूजा द्वारा बदला नहीं जा सकता। मनुष्य इन कर्मों के अनुसार बार बार जन्म लेता और मरता है।

(६) **ईश्वर विषय**—वह ईश्वर के अस्तित्व के विषय में चुप थे अर्थात् न तो वह उसके अस्तित्व से इनकारी ही थे और न वह उसके अस्तित्व को मुक्ति की प्राप्ति के लिये आवश्यक ही समझते थे। वह वेदों तथा बलिदानों को भी नहीं मानते थे।

(७) **जात पात में अविश्वास**—वह जात पात को भी नहीं मानते थे वरन् सब मनुष्यों को समान समझते थे।

(८) **शुद्धाचार**—बुद्ध ने शुद्धाचार पर बहुत बल दिया है। वह अपने अनुयायियों को कहते थे कि *वे झूठ न बोलें, चोरी न करें, मदिरा न पीयें, किसी की हत्या न करें,* इत्यादि। उनका विश्वास था कि अच्छे कर्म करने से अच्छा जन्म मिलता है और निर्वाण प्राप्ति का काम आसान हो जाता है।

बुद्धमत तथा हिन्दूमत

बुद्धमत और हिन्दूमत कई बातों में परस्पर मिलते-जुलते हैं और कई बातों में एक दूसरे से भिन्न हैं।

समानता (Resemblance)—

(१) दोनों मतों का 'जीवन लक्ष्य' एक ही है अर्थात् निर्वाण या मुक्ति प्राप्त करना, यद्यपि निर्वाण प्राप्त करने के साधन भिन्न-भिन्न हैं।

(२) दोनों मत पुनर्जन्म, कर्म तथा शुद्धाचार के सिद्धान्तों को मानते हैं।

(३) दोनों धर्म सहनशीलता में विश्वास रखते हैं।

भिन्नता (Difference)—

(१) बुद्ध मत वेदों को नहीं मानता और न हिन्दुओं के बलिदानों, यज्ञों तथा अन्य धार्मिक रीति-रिवाजों को ही मानता है। वह पवित्र और शुद्ध जीवन को मुक्ति का साधन मानता है।

(२) बुद्धमत जात-पात के भेद-भाव को नहीं मानता, जोकि हिन्दू-मत का एक बड़ा अंग है।

(३) बुद्ध धर्म प्रचारक धर्म है, परन्तु हिन्दू धर्म इस विचार से बहुत पीछे है।

(४) बुद्धमत ईश्वर के अस्तित्व के विषय में चुप है, परन्तु हिन्दू-मत एक ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखता है और उसे इस संसार का रचयिता मानता है।

(५) बुद्धमत में हिन्दूमत की अपेक्षा अहिंसा पर अधिक बल दिया गया है।

नोट—आगे चलकर बुद्धमत के दो सम्प्रदाय हो गये। पुराने बुद्ध-धर्म को **हीनयान** और नये बुद्ध धर्म को **महायान** कहने लगे। हीनयान वाले बुद्ध को एक गुरु मानते हैं, शुद्धाचार को निर्वाण के लिये *आवश्यक* समझते हैं और उनकी धार्मिक पुस्तकें पाली भाषा में हैं। महायान वाले बुद्ध को देवता मानते हैं, उनकी मूर्ति पूजा करते हैं, शुद्धाचार के स्थान मूर्तिपूजा और बुद्ध की भक्ति को निर्वाण का साधन मानते हैं और उनकी धार्मिक पुस्तकें संस्कृत भाषा में हैं। आजकल बुद्धमत के अनेक सम्प्रदाय बन गये हैं।

☞Q What were the causes of the rapid spread of Buddhism? What factors led to its decline in India later on? (Important)

प्रश्न—*बुद्धमत के इतनी शीघ्र उन्नति कर जाने के क्या कारण थे? बाद में इसकी भारतवर्ष में अवनति क्यों हुई?*

बुद्धमत बहुत ही शीघ्र भारतवर्ष तथा दूर-दूर के देशों में फैल गया। इसके कारण निम्नलिखित थे:—

(१) बुद्ध का पवित्र जीवन—बुद्धमत के संचालक महात्मा

बुद्ध का अपना जीवन बड़ा शुद्ध तथा पवित्र था और उनके जीवन की पवित्रता में विशेष आकर्षण था। उनकी वाणी दया और करुणा से भरी हुई थी। इसलिये लोग स्वयं उनकी ओर खिच आये। इसके अतिरिक्त बुद्ध ने इस धर्म को फैलाने के लिये ४५ वर्षों तक अथक परिश्रम किया।

बुद्धमत की उन्नति के कारण

(२) साधारण शिक्षा—बुद्धमत के सिद्धान्त हिन्दू धर्म की गूढ़ फ़िलासफ़ी के मुक़ाबले में बड़े सरल तथा आसान थे और साधारण लोग उन्हे बड़ी सुगमता से समझ सकते थे।

(३) सर्व साधारण भाषा—बुद्धमत का प्रचार प्रतिदिन बोली जाने वाली पाली भाषा में किया गया न कि संस्कृत में जो केवल सुशिक्षित लोगों की ही भाषा थी और जिसे साधारण लोग बहुत कम समझते थे।

(४) ज़ात-पात का न होना—बुद्धधर्म में ज़ात-पात का कोई भेद भाव न था। सब लोग बराबर थे और उनमें ऊँच-नीच न थी। एक अछूत भी अष्ट मार्ग पर चलकर मुक्ति प्राप्त कर सकता था। इसलिये नीच जातियों के लोग जिन्हें उच्च जातियों के लोग घृणा से देखते थे धड़ाधड़ बुद्ध धर्म में दीक्षित हो गये।

(५) हिन्दूमत से घृणा—सर्व साधारण जनता हिन्दुओं के पशु बलिदान तथा बहुमूल्य यज्ञों से तंग आ गई थी। इसीलिये बुद्ध मत, जो शुभ कर्मो को मोक्ष प्राप्त करने का साधन बतलाता था, और अहिंसा पर ज़ोर देता था उनके लिये अधिक स्वीकार करने योग्य था।

(६) भिक्षुओं का प्रयत्न—बुद्ध ने भिक्षुओं का जो संघ स्थापित किया वह बुद्ध धर्म को फैलाने में एक भारी साधन सिद्ध हुआ। भिक्षुओं ने जो बड़े विद्वान् और सदाचारी थे और जिन्हें अपने धर्म से बहुत लगन थी, न केवल अपने देश में ही अपितु दूर-दूर के देशों में अपने धर्म को फैलाया। बुद्धधर्म के विहार भी इस धर्म के फैलाने में बड़े अच्छे सहायक सिद्ध हुये।

(७) बुद्धमत की सभायें—बुद्धमत के बड़े बड़े नेताओं ने समय-समय पर बुद्धमत की चार सभायें बुलाईं। इन सभाओं ने उन समस्त दोषों को जो बुद्धधर्म में आ गये थे दूर करने की कोशिश की ताकि बुद्ध धर्म शुद्ध और पवित्र रह कर अधिक फैल सके। इनमें से तीसरी सभा अशोक के समय में और चौथी कनिष्क के समय में हुई।

(८) राजकीय सहायता—बुद्धमत की उन्नति का सब से बड़ा कारण यह था कि *मौर्य सम्राट् महाराजा* अशोक ने स्वयं इस धर्म को स्वीकार कर लिया और उन्होंने अपना सारा यत्न इसके प्रचार में लगा दिया जिस से यह धर्म न केवल भारत में बल्कि उससे बाहर के कई देशों में भी फैल गया। इसके पश्चात् कनिष्क ने भी इस धर्म को फैलाने में बड़ा यत्न किया जिससे इस धर्म की बड़ी ही उन्नति हुई।

(९) विपक्षी मतों का न होना—बुद्ध धर्म के अधिक फैल जाने का एक कारण यह भी था कि उस समय इसके मुकाबले में कोई प्रचारक धर्म न था। हिंदू धर्म तो मिशनरी धर्म ही न था, और इसलाम और ईसाई धर्म अभी आरम्भ नहीं हुये थे।

बुद्ध धर्म सत्रह शताब्दियों तक भारतवर्ष में रहा, परन्तु इस काल में कई कारणों से यह धर्म शिथिल होता चला गया और अपनी जन्मभूमि अर्थात् भारतवर्ष से सर्वथा मिट गया। इसकी अवनति के निम्नलिखित कारण थे :—

बुद्धमत की अवनति के कारण

(१) हिन्दू धर्म का पसन्द आना—हिन्दू धर्म ने समय के अनुसार अपने अन्दर कुछ परिवर्तन कर लिये। उसने बुद्ध को भी अवतार मान लिया और अहिंसा के सिद्धान्त को अपना लिया, जिससे यह लोगों को फिर से पसन्द आने लगा और बुद्धमत शिथिल होने लगा और अन्त में हिन्दू धर्म में ही मिल गया।

(२) बुद्धमत का विभाग—कनिष्क के समय से पहले ही बुद्ध-मत के दो सम्प्रदाय बन गये थे। एक हीनयान और दूसरा महायान। महायान तो बहुत कुछ हिन्दू धर्म से मिलता-जुलता था और अन्त में

यह हिन्दू धर्म में ही मिल गया। इससे भी बुद्धमत में शिथिलता आनी आरम्भ हो गई।

(३) राजकीय सहायता का बन्द हो जाना—कनिष्क के देहान्त के पश्चात् राजकीय सहायता, जो बुद्धमत की पोषक और उसके विस्तार का भारी कारण थी, बन्द हो गई। इसके विपरीत गुप्त वंश के राजाओं की अध्यक्षता में हिन्दू धर्म ने फिर उन्नति प्राप्त करनी आरम्भ की।

(४) बौद्धमत में रीति-रिवाज—बौद्धों ने हिन्दू फ़िलासफ़ी के कई सिद्धान्त अपने धर्म में सम्मिलित कर लिये, जिससे उनका मत गूढ़ और रीति-रिवाज वाला हो गया।

(५) संस्कृत भाषा—गुप्त काल में बौद्धों ने भी अपनी पुस्तकें संस्कृत में लिखनी आरम्भ कर दीं। इस प्रकार से इस धर्म का समझना सर्व-साधारण जनता के लिये कठिन हो गया।

(६) भिक्षुओं का आचरणहीन होना—समय बीतने पर बुद्ध के स्थापित किए हुए संघ में कई बुराइयाँ उत्पन्न हो गई थीं। विहारों में मूर्ति पूजा होने लगी और वहाँ बड़ा धन एकत्र हो गया। इस धन की वृद्धि के कारण भिक्षु लोग विषयी तथा दुराचारी हो गये। इसके अतिरिक्त बहुत से आचारहीन लोग संघ में सम्मिलित हो गये। इसलिये लोगों का विश्वास बुद्धधर्म पर कम हो गया।

(७) राजपूतों का बल पकड़ना—बुद्धमत अहिंसा पर बड़ा ज़ोर देता था, परन्तु राजपूत लोग जो स्वभाव से ही लड़ाके तथा वीर थे, भला इस सिद्धान्त को कब मानने लगे थे? अतः उनके ज़ोर पकड़ते ही बुद्धमत की अवनति आरम्भ हो गई।

(८) हिन्दू प्रचारक—आठवीं और नवीं शताब्दी में हिंदू धर्म के दो प्रकाण्ड विद्वान् कुमारिल भट्ट और शंकराचार्य ने बड़े उत्साह से बुद्धमत का खण्डन किया। बुद्धमत इस मुक़ाबले में न डट सका और धीरे-धीरे हिन्दूमत में लीन हो गया।

(६) **इस्लामी आक्रमण**—बारहवीं शताब्दी में इस्लामी आक्रमणों ने बुद्धमत को बहुत हानि पहुँचाई। मुसलमानों ने बुद्ध विहारों में भिक्षुओं का सर्वनाश कर दिया। अन्त में, बुद्धमत का भारतवर्ष में लगभग अन्त हो गया।

नोट—वर्तमान समय में यद्यपि बुद्धमत भारतवर्ष से मिट चुका है तो भी संसार की जन-संख्या का चौथा भाग अर्थात् लगभग पचास करोड़ लोग इसके अनुयायी हैं। तिब्बत, चीन, मंगोलिया, स्याम, जापान, लंका, नैपाल, ब्रह्मा हिन्दचीनी आदि देशों में यह मत प्रचलित है।

Q. Write a short note on the career and teachings of Mahavira. Also draw a comparison between Jainism and Buddhism. (P.U. 1953)

प्रश्न—*महावीर के जीवन तथा उनकी शिक्षा पर संक्षिप्त नोट लिखो और जैनमत तथा बुद्धमत की तुलना करो।*

वर्द्धमान महावीर

वर्द्धमान महावीर जैनमत के संचालक* और चौबीसवें तीर्थङ्कर माने जाते हैं। वह बिहार प्रान्त के एक क्षत्रिय वंश के राजकुमार थे। उनका जन्म 599 ई० पू० पटना के निकट **वैशाली** नगर में हुआ। वह पर्याप्त समय बुद्ध के समकालीन रहे। उनका बचपन सर्वथा गौतम बुद्ध की भाँति ही व्यतीत हुआ। तीस वर्ष की आयु में अपने माता पिता के देहान्त पर उन्होंने घर-बार त्याग दिया और *पार्श्वनाथ* के स्थापित किये हुये साधुओं के सम्प्रदाय में सम्मिलित हो गये, परन्तु इससे उनके मन को विशेष शान्ति प्राप्त न हुई। इसलिये उन्होंने लगभग

---

*जैनी लोगों का सिद्धान्त है कि उनका धर्म बहुत पुराना है। समय २ पर उनके धर्म के २४ तीर्थंकर हुए हैं। सब से प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जी और अन्तिम वर्द्धमान जी थे। २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी थे। वह आठवीं शताब्दी ई० पू० वर्द्धमान महावीर जी से कोई २५० वर्ष पहले हुए। जैनियों का विचार है कि महाराज ऋषभदेव जी ही इस धर्म के प्रवर्तक थे।

एक वर्ष पश्चात इस सम्प्रदाय को छोड़ दिया। फिर उन्होंने १२ वर्ष घोर तपस्या की। अन्त में उन्हे अपने विचार के अनुसार सच्चा ज्ञान प्राप्त हो गया और वह महावीर तथा जिन (महा विजेता) कहलाने लगे। तब उनकी आयु ४३ वर्ष की थी। इसके उपरान्त उन्होंने इस सम्प्रदाय का नये सिरे से संशोधन किया और इसका नाम जैनमत रक्खा। तब महावीर ने अपनी आयु के शेष तीस वर्ष मगध तथा उसके आस-पास के प्रदेश मे प्रचार किया। क्योंकि कई राज-घरानों से उनका सम्बन्ध था, इसलिये उन्हें अपने धर्म के प्रचार में बड़ी सहायता मिल गई। परन्तु फिर भी यह मत बुद्ध धर्म की भाँति न फैल सका और न ही भारतवर्ष से बाहर उसका प्रचार हुआ। निदान 527 ई० पूर्व महावीर जी का वर्तमान जिला पटना में पावा नामक स्थान पर देहान्त हुआ। उनके देहान्त के समय उनके अनुयायियों की संख्या लगभग १४००० थी।

जैनमत के सिद्धान्त बहुत कुछ बुद्धमत से मिलते-जुलते हैं:—

जैनमत की शिक्षा

(१) जैनमत का सिद्धान्त है कि आवागमन अर्थात् बार बार जन्म लेना तथा मरना बड़ा दुःखदायी है अतः मनुष्य के जीवन का अभिप्राय निर्वाण प्राप्त करना है, जो कि निम्नलिखित तीन सिद्धान्तों पर आचरण करने से प्राप्त हो सकता है:—

(क) सत्य विश्वास—अर्थात् तीर्थंङ्करों में पूर्ण विश्वास और उनमें पूरी श्रद्धा रखना।

(ख) सत्य ज्ञान—अर्थात् तीर्थंङ्करों के उपदेशों के अध्ययन से सच्चा ज्ञान प्राप्त करना।

(ग) सत्य कर्म—अर्थात् सदाचारमय जीवन व्यतीत करना, विशेष-कर अहिंसा पर आचरण करना।

इन सिद्धान्तों को '**त्रिरत्न**' कहते है।

(२) इस धर्म का सबसे बड़ा सिद्धान्त अहिंसा अर्थात् जीवों को कष्ट न पहुँचाना है। जैनियो ने इस सिद्धान्त पर विशेष ज़ोर दिया है। यही

कारण है कि कई जैनी साधू नंगे पाँव चलते हैं और मुंह पर पट्टी बाँधे रखते हैं ताकि कोई कीड़ा-मकौड़ा न मर जाये अथवा कोई कीटाणु श्वास के साथ भीतर न चला जाये। कई तो पानी छान कर पीते हैं।

(३) जैनी लोग किसी सृष्टिकर्ता ईश्वर को नहीं मानते परन्तु वे प्रत्येक वस्तु में चाहे वह सजीव हो अथवा बेजान जैसे अग्नि, वायु, पत्थर आदि में भी आत्मा का होना मानते हैं।

(४) जैनी लोग भी बौद्धों की भाँति, यज्ञों, बलिदानों तथा देवी देवताओं में विश्वास नहीं रखते।

(५) जैनी लोग भी हिन्दुओं और बौद्धों की भाँति पुनर्जन्म तथा कर्म के सिद्धान्तों को मानते हैं।

(६) जैनी लोग तीर्थङ्करों (पवित्र आत्माओं) की, जिनकी संख्या २४ है, पूजा करते हैं और यह उनके धर्म की एक विशेष बात है।

(७) जैनी लोग भूखे रह कर मर जाने और घोर तपस्या करने को शुभ मानते हैं और शुद्धाचार पर भी बहुत जोर देते हैं।

समानता (Resemblance)

जैनमत और बुद्धमत की तुलना

(१) ये दोनों मत यज्ञों और बलिदानों के विरोधी हैं इसलिये ये दोनों अहिंसा का प्रचार करते हैं।

(२) दोनों मत परमात्मा की सत्ता, वेदों के महत्व तथा ब्राह्मणों की श्रेष्ठता को नहीं मानते।

(३) पुनर्जन्म, कर्म और निर्वाण के सिद्धान्त में दोनों विश्वास रखते हैं।

(४) दोनों मत गूढ़ फिलासफी के स्थान शुद्ध आचरण पर जोर देते हैं।

(५) दोनों ने प्रारम्भ में अपने मत का प्रचार सर्वसाधारण की भाषा में किया, न कि संस्कृत में।

(६) दोनों इस संसार को एक बुरी वस्तु समझते हैं।

(७) दोनों भिक्षुओं और भिक्षुणियों के संघ स्थापित करने के पक्ष में हैं।

असमानता (Difference)—

(१) दोनों मत अपने अपने पूर्वजों की पूजा करते हैं। बौद्ध अपने बोधिसत्वों की और जैनी तीर्थंकरों की।

(२) दोनों के माननीय ग्रन्थ भिन्न-भिन्न हैं।

(३) बुद्धमत वाले निर्वाण का मार्ग 'अष्ट मार्ग' बताते हैं और जैनी 'त्रिरत्न'।

(४) बुद्धमत वाले ईश्वर के अस्तित्व के विषय में चुप हैं और जैनी उसे सृष्टिकर्ता नहीं मानते।

(५) बुद्धमत वाले घोर तपस्या के विरुद्ध हैं पर जैनी इसे शुभ कर्म समझते हैं और भूखा रहकर मर जाने को उत्तम समझते हैं।

(६) जैनी बौद्धों की अपेक्षा अहिंसा पर अधिक बल देते हैं और कीड़ों तक को मारना भी पाप समझते हैं।

(७) कई जैन साधु (दिगम्बर) नंगे भी रहते हैं परन्तु बुद्धमत वाले ऐसा नहीं करते।

(८) बुद्धमत वाले केवल जंतुओं में आत्मा मानते हैं। परन्तु जैनी प्रत्येक वस्तु में आत्मा मानते हैं।

नोट—महावीर जी की मृत्यु के लगभग दो सौ वर्ष पश्चात जैनमत के दो सम्प्रदाय हो गये।

(१) **श्वेताम्बर**—ये लोग सफेद कपड़े पहनते हैं और अपनी मूर्तियों को भी सफेद कपड़े पहनाते हैं।

(२) **दिगम्बर**—ये लोग नंगी मूर्तियों की पूजा करते हैं और इनके साधु भी नंगे रहते हैं।

नोट—जैनियों की संख्या आजकल बारह लाख के लगभग है। ये लोग प्रायः धनवान और सुखी हैं और अधिकतर व्यापार करते हैं। ये अधिकतर

मालवा, राजपूताना और गुजरात काठियावाड़ में रहते हैं। जैनियों के मन्दिर बड़े शानदार होते हैं। बड़े-बड़े नगरों में जैनियों ने धर्मशालायें, हस्पताल, स्कूल और कालिज बनवा रखे हैं और ये उनकी दानवृति का प्रमाण है।

सिकन्दर महान् का आक्रमण

(ALEXANDER'S INVASION)
326 B. C.

सिकन्दर यूनान देश की रियासत मकदूनिया (Macedonia) के राजा फ़िलिप (Philip) सिकन्दर महान् का बेटा था। वह बड़ा उत्साही तथा वीर था। उसकी गणना संसार के महान् विजेताओं में होती है। वह 356 ई० पूर्व उत्पन्न हुआ। यूनान का प्रसिद्ध विद्वान् अरस्तु (Aristotle) उसका गुरु था। सिकन्दर ने बाल्यावस्था से ही अपने जीवन का यह लक्ष्य बना लिया था कि समस्त संसार को विजय करूँगा।

सिकन्दर

वह बीस वर्ष की अवस्था में सिंहासन पर बैठा और उसने थोड़े ही समय में एशिया माईनर (Asia Minor) से अफ़ग़ानिस्तान तक का सारा प्रदेश जीत लिया और फिर 326 ई० पू० उसने भारतवर्ष पर आक्रमण किया।

☞ Q. Describe the political condition of India at the time of Alexander's invasion. Give a brief account of his campaign in the Punjab and state its effects (V. Important) (P.U. 1928-37-42-46-53)

प्रश्न—सिकन्दर के आक्रमण के समय भारतवर्ष की राजनैतिक (पोलिटिकल) अवस्था क्या थी? पंजाब में उसके आक्रमण का संक्षिप्त वर्णन करो और बताओ कि उसके आक्रमण का क्या प्रभाव पड़ा?

सिकन्दर ने 326 ई० पूर्व भारतवर्ष पर आक्रमण किया। उस समय भारतवर्ष में कई स्वतन्त्र राज्य और साम्राज्य थे, जिनमें से कई प्रजातन्त्र तथा कई किसी राजा के अधीन थे। *उत्तरी भारत में सब से प्रसिद्ध राज्य* **मगध** (Magadha) *था*, जिस की राजधानी पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना) थी। यह राज्य सतलुज नदी के पूर्व में गङ्गा की घाटी में फैला हुआ था और यहाँ नन्द वंश का राज्य था, जिसके पास एक बड़ी विशाल और शक्तिशाली सेना थी।

सिकन्दर के आक्रमण के समय भारतवर्ष की राजनैतिक अवस्था

वर्तमान पंजाब में कई छोटे छोटे राज्य थे जो एक दूसरे के साथ लड़ते रहते थे। सिकन्दर की सफलता का एक बड़ा कारण इनका पारस्परिक विरोध था। इनमें से प्रसिद्ध निम्नलिखित थेः—

(१) *एक तक्षशिला* (Taxila) का राज्य था जो सिन्ध नदी से लेकर जेहलम तक फैला हुआ था। यहाँ *राजा* **आम्भी** राज्य करता था और वह अपने पड़ोसी राजा पोरस का शत्रु था।

(२) दूसरा *राज्य* राजा **पोरस** (Poros) *का था* जो जेहलम तथा चनाब नदियों के मध्यवर्ती प्रदेश में था। उसके पास बड़ी भारी सेना थी जिससे उसने सिकन्दर का सामना किया।

(३) चनाब और रावी नदी के बीच के प्रदेश पर राजा पोरस का एक सम्बन्धी राजा राज्य करता था जिसे *छोटा पोरस* कहते थे।

(४) रावी नदी के पूर्व में कई स्वतन्त्र जातियाँ बसती थीं जिनमें सबसे प्रसिद्ध *कठोई* (Kathoi) जाति थी। उनकी राजधानी *सांगला* थी जो वर्तमान गुरुदासपुर ज़िले में कहीं स्थित थी।

(५) पंजाब के दक्षिण पश्चिम में कई प्रबल जातियाँ थीं जिन में *शिवि* और *मलोई* जातियाँ अति प्रसिद्ध थीं। मलोई जाति मुलतान के आसपास बसी हुई थी और उसी के नाम पर मुलतान नाम पड़ा है।

326 ई० पूर्व सिकन्दर ने ओहिन्द (Ohind) के स्थान पर (जो वर्तमान अटक नगर से कोई सोलह मील उत्तर में था) नावों का पुल

बना कर सिंध नदी को पार किया और *तक्षशिला* (Taxila) की ओर बढ़ा। उन दिनों तक्षशिला में राजा **आम्भी** राज्य करता था। क्योंकि वह अपने शक्तिमान पड़ोसी *राजा* पोरस का शत्रु था इसलिये उसने सिकन्दर का स्वागत किया और सेना तथा रुपये से उसकी सहायता की *और इस प्रकार वह देश द्रोही सिद्ध हुआ।*

सिकन्दर का आक्रमण
326 ई० पू०

कुछ दिन तक्षशिला में रहने के बाद सिकन्दर आगे बढ़ा और जेहलम तथा चनाब के मध्यवर्ती प्रदेश के राजा **पोरस** को अधीनता स्वीकार करने के लिये संदेश भेजा। परन्तु उसने अधीनता स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और जेहलम नदी के पूर्वी तट पर अपनी सेना लेकर सामना करने के लिये तैयार हो गया।

पोरस से युद्ध (Battle with Poros)—जेहलम नदी में बाढ़ आई हुई थी और सामने पोरस की सेना यूनानियों का मुकाबला करने के लिये खड़ी थी, इसलिये नदी को पार करना बड़ा कठिन था, परन्तु कई दिनों के बाद सिकन्दर ने पर्याप्त सेना के साथ एक रात घोर अन्धकार में जब जोर की वर्षा हो रही थी कुछ मील ऊपर जाकर एक कम चौड़े स्थान से नदी को पार कर लिया। पोरस ने अपने बेटे को कुछ सेना देकर सिकन्दर को रोकने के लिये भेजा, परन्तु इस सेना की हार हुई और पोरस का वीर पुत्र मारा गया। इसी बीच में सिकन्दर की शेष सेना नदी को पार कर आई और अचानक ही पोरस की सेना पर टूट पड़ी। **कर्री** (Karri) के मैदान में घोर युद्ध हुआ; जिसमें यद्यपि पोरस की सेना ने बड़े उत्साह से सामना किया परन्तु विजय सिकन्दर की हुई। पोरस जो 6½ फुट ऊँचा एक वीर योद्धा था, अन्तिम समय तक लड़ता रहा और अन्त में घायल होकर पकड़ा गया। सिकन्दर ने पोरस से पूछा, "*तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाय?*" इस पर पोरस ने बड़ी वीरता तथा निर्भीकता से उत्तर दिया—"*जैसा एक राजा दूसरे राजा से करता है।*" इस उत्तर से सिकन्दर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसका राज्य उसे ही वापस लौटा दिया।

ALEXANDER'S ROUTE
JALALABAD
OHIND
KHYBER P.
TAXILA
JHELUM
R. JHELUM
MULTAN
R. INDUS
PATALA
ARABIAN SEA
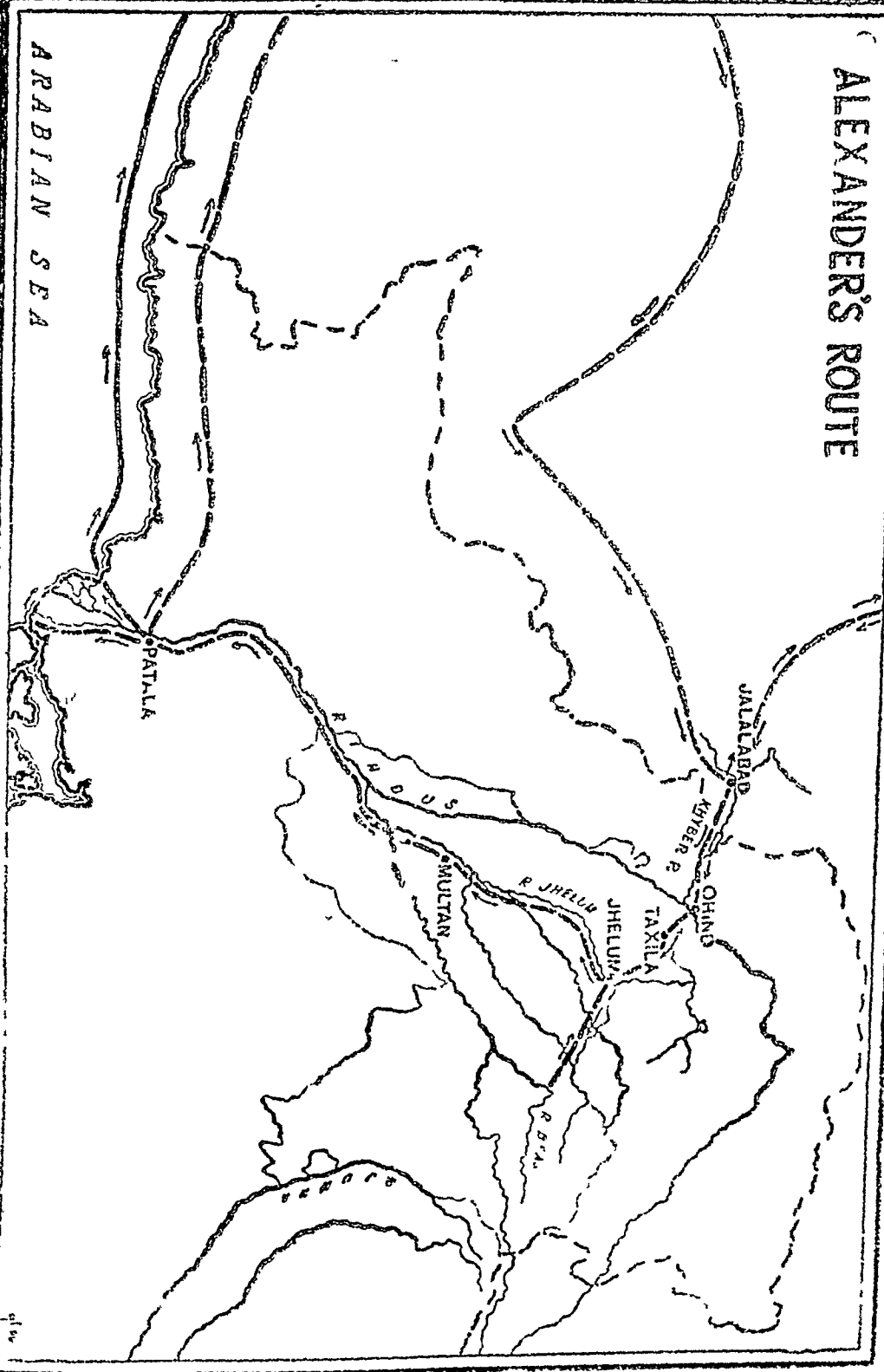
भारतीय सेना की हार के कारण—इस युद्ध में भारतीय सेना की हार के निम्नलिखित कारण थे :—

(१) सबसे बड़ा कारण यह था कि सिकन्दर युद्ध-कला में पूर्ण रूप से दक्ष था और उसकी सेना युद्ध के दाव-पेच भली-भान्ति जानती थी।

(२) यूनानी सेना का नियन्त्रण भी भारतीय सेना से बहुत अच्छा था।

(३) वर्षा के कारण युद्ध-भूमि फिसलनी हो रही थी, जिससे पोरस के धनुषधारी अपने लम्बे धनुषों को भूमि पर भली भान्ति टिका न सके। इसके अतिरिक्त भारी रथ भी कीचड़ में धँस जाते थे।

(४) पोरस के हाथी यूनानी सैनिकों के नेज़ों से घायल होकर बड़े वेग से भागे और उन्होने अपनी ही सेना को पैरों तले कुचल डाला।

(५) आम्भी देश द्रोही सिद्ध हुआ और उसने सेना तथा धन से सिकन्दर की सहायता की।

ब्यास तक बढ़ना—पोरस से युद्ध के बाद सिकन्दर आगे बढ़ा और उसने चनाब तथा रावी के मध्यवर्ती प्रदेश को विजय किया। रावी के पार कठोई जाति ने उसका सामना किया, परन्तु हार खाई। इसके पश्चात् सिकन्दर आगे बढ़ता हुआ **ब्यास नदी** तक जा पहुँचा। वहाँ पहुँचने पर उसकी सेना ने आगे जाने से इन्कार कर दिया। इसका एक कारण तो यह था कि उसकी सेना बहुत थक गई थी, दूसरा यह भी माना जा सकता है कि मगध के नंद राजाओं की सैन्य शक्ति का समाचार सुन कर वह भयभीत हो गई हो। अतः सिकन्दर ने विवश होकर वापस लौट चलने की आज्ञा दी।

सिकन्दर का लौटना—सिकन्दर जिस मार्ग से आया था उसी मार्ग से वापस जेहलम पहुँचा, जहाँ उसने लगभग दो हज़ार नावों का एक बेड़ा तैयार करवाया और जेहलम नदी के मार्ग से सेना सहित वापस हुआ। जाते हुए सिकन्दर को कई जातियों से लड़ना पड़ा, जिन में से मलोई अथवा माली जाति ने जो वर्तमान मुल्तान प्रदेश में बसी हुई थी, उसे बहुत कष्ट दिया। परन्तु सिकन्दर ने सब को परास्त कर

दिया। इसके पश्चात् उसने सिंध प्रदेश को विजय किया और समुद्र
तक जा पहुँचा।

वहाँ उसने अपनी सेना के दो भाग कर दिये। एक भाग नो
न्यारकस (Nearchos) की संरक्षता में समुद्र के मार्ग से चल पड़ा
और दूसरे भाग को सिकन्दर स्वयं अपने साथ लेकर बलोचिस्तान
और ईरान होता हुआ बाबल पहुँचा। परन्तु अपनी जन्म-भूमि तक
पहुँचना उसके भाग्य में न था। वह **बाबल** (Babylon) के स्थान पर
(जो इराक में फ़रात नदी के तीर पर था) बत्तीस वर्ष की आयु में ज्वर
से मर गया।

विजित प्रदेश का प्रबन्ध—सिकन्दर अपने विजित भारतीय
प्रदेश में अपना स्थायी राज्य स्थापित करना चाहता था। अतः उसने
इसे तीन सूबों में बाँट दिया (i) *गंधार प्रान्त* (ii) *सिंध प्रान्त* और (iii)
पंजाब प्रान्त। पहले दो प्रांतों में यूनानी गवर्नर नियत किये और पंजाब
(जेहलम से व्यास तक) में पोरस को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया।
इस के अतिरिक्त वह स्थान स्थान पर यूनानी सैनिकों की छावनियाँ
भी स्थापित कर गया। परन्तु यह सारा प्रबन्ध उसकी मृत्यु के दो ही
वर्ष पश्चात छिन्न-भिन्न हो गया।

**(क) सिकन्दर के आक्रमण का भारतवर्ष की सभ्यता पर
कुछ विशेष प्रभाव न पड़ा।** इसके कई कारण हैं।

आक्रमण का प्रभाव (Effect)

(१) सिकन्दर पंजाब से लौट गया और देश के भीतरी भाग में
पहुँचने ही नहीं पाया। उसका आक्रमण तो
केवल सीमान्त प्रदेश पर एक डाके की नाईं था
जिसका एशिया की किसी भी पुस्तक में वर्णन
तक नहीं मिलता। वह तो आन्धी की भाँति
आया और बगोले की भाँति चला गया।

(२) सिकन्दर केवल उन्नीस मास तक यहाँ रहा और इस काल में

भी वह युद्ध में संलग्न रहा। उसके लौटते ही विद्रोह हुआ और यूनानी सेना नष्ट कर दी गई।

(३) जब तक सिकन्दर भारत में रहा, हिन्दू उसे घोर शत्रु समझते रहे। इसलिये न तो उन्होंने यूनानियों से कुछ सीखा और न ही उन्हें कुछ सिखाया।

(ख) परन्तु इस आक्रमण का राजनैतिक प्रभाव यह हुआ कि—

(१) पंजाब तथा सिंध की स्वतन्त्र रियासतें तथा राज्य इतने दुर्बल हो गये कि चन्द्र गुप्त मौर्य के लिये उत्तर-पश्चिमी भारत को विजय करना अत्यन्त सुगम हो गया। इस प्रकार चन्द्रगुप्त की उन्नति का मार्ग खुल गया और भारत में एक विशाल साम्राज्य स्थापित होना सुगम हो गया।

(२) भारतवर्ष और योरुप के बीच चार नये मार्गों का पता लग गया जिससे कुछ काल बाद भारतवर्ष और योरुप के मध्य व्यापारिक सम्बन्ध और भी दृढ़ हो गया।

(३) कई यूनानी विद्वानों ने जो सिकन्दर के साथ भारतवर्ष आये थे भारतवर्ष के सम्बन्ध में पुस्तकें लिखी हैं। इन पुस्तकों से उस समय के भारत की अवस्था का कुछ ज्ञान होता है।

(ग) सिकन्दर के आक्रमण का कुछ प्रभाव और प्रकार भी हुआ—

सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात् पश्चिमोत्तर सीमा पर कई यूनानी रियासतें स्थापित हो गईं, जिससे यूनानियों और हिन्दुस्तानियों में मेल जोल हो गया और दोनों ने एक-दूसरे से कुछ सीखा और सिखाया।

इस मेल जोल से हिन्दोस्तानियों ने यूनानियों से अच्छे सिक्के बनाने, ज्योतिष और यूनानी शिल्पकला की कई बातें सीखीं और यूनानियों पर भारतियों के दर्शन (Philosophy) तथा धर्म का कुछ प्रभाव पड़ा। कई यूनानियों ने हिन्दू धर्म और हिन्दू नाम ग्रहण कर लिये।

मौर्य वंश

(THE MAURYA DYNASTY)

322 B. C.—185 B. C.

भारतवर्ष में मौर्य वंश ही सबसे पहला ऐतिहासिक वंश है, जिसने लगभग सारे भारतवर्ष को एक राज्य के अधीन किया और एक प्रशंसनीय राज्य प्रणाली स्थापित की। इस वंश का संचालक चन्द्रगुप्त मौर्य था। सम्भवतः उसकी माता 'मुरा' के नाम पर इस वंश का नाम मौर्य पड़ा। चन्द्रगुप्त एक प्रतापी शासक था, उसने भारत से विदेशी राज्य का अंत किया और भारतवर्ष का राज्य हिन्दुकुश पर्वत तक फैला दिया। परन्तु *उसका पोता अशोक इस वंश का सबसे बड़ा सम्राट् माना जाता है।*

चन्द्रगुप्त मौर्य

322 B. C.—298 B. C.

Q. What are the sources of knowledge of the reign of Chandragupta Maurya? (P. U. 1939)

प्रश्न—*चन्द्रगुप्त मौर्य के समय के स्रोत कौन से हैं?*

ऐतिहासिक स्रोत

चन्द्रगुप्त के राज्य काल के ऐतिहासिक स्रोत (Sources of Information) निम्नलिखित हैं :—

(१) **मेगस्थनीज़ का वृत्तान्त**—मेगस्थनीज़ चन्द्रगुप्त की राजसभा में एक यूनानी राजदूत था। उसने चन्द्रगुप्त के राज्य का वृत्तान्त एक पुस्तक में लिखा है। वह पुस्तक 'इण्डिका' (Indica) तो खोई जा चुकी है, परन्तु उसके अगणित लेख अन्य यूनानी इतिहासकारों की पुस्तकों में पाये जाते हैं। उनसे चन्द्रगुप्त के समय का पर्याप्त पता चलता है।

(२) **कौटिल्य का अर्थशास्त्र**—चन्द्रगुप्त के मन्त्री कौटिल्य अर्थात् चाणक्य ने शासन करने के नियमों पर 'अर्थशास्त्र'

(Arthashastra) नामक एक पुस्तक लिखी थी। यह भी उसके राज्य का एक बड़ा भारी स्रोत है।

(३) मुद्राराक्षस—यह एक राजनैतिक नाटक (ड्रामा) है, जो ईसा संवत की पाँचवीं शताब्दी में लिखा गया था। इससे नन्द वंश के नाश का वृत्तान्त ज्ञात होता है।

(४) जैन पुस्तकें—चन्द्रगुप्त का कुछ वृत्तान्त जैन पुस्तकों से भी मिलता है। परन्तु चन्द्रगुप्त के समय के विश्वासनीय स्रोत पहले दो ही हैं।

☞ Q Describe the career, conquests and administration of Chandragupta Maurya.
(P U 1948-50-52-53) (V. Important)

प्रश्न—चन्द्रगुप्त मौर्य के जीवन, विजयों, तथा राज्य प्रबन्ध का वृत्तान्त लिखो।

आरम्भक जीवन (Early Career)—चन्द्रगुप्त मौर्य वंश का संचालक और एक बड़ा प्रतापी राजा था। उसके बाल्यकाल का वृत्तान्त भली प्रकार ज्ञात नहीं, परन्तु एक विचार यह है कि वह *मगध के नन्द वंश का एक राजकुमार था,* और उसकी माँ *मुरा* किसी नीच जाति की स्त्री थी। अन्तिम नन्द राजा के समय में चन्द्रगुप्त किसी उच्च सैनिक पद पर सम्भवतः सेनापति के पद पर नियुक्त था। ऐसा विचार है कि उसने नन्दराज को हथियाने के लिये एक षड्यंत्र रचा परन्तु असफल रहा और उसे भाग कर अपने प्राण बचाने पड़े। वह पंजाब में आ गया। कहते हैं कि वह तक्षशिला में सिकन्दर को मिला और उसे मगध पर आक्रमण करने की सम्मति दी। परन्तु उसने अपने कठोर व्यवहार से सिकन्दर को रुष्ट कर लिया। सिकन्दर ने उसके बध की आज्ञा दी। इस पर चन्द्रगुप्त उसके कैम्प से भाग गया। तक्षशिला में उसकी भेंट एक सुयोग्य ब्राह्मण चाणक्य से हुई जिसकी सहायता से उसने उत्तरी

चन्द्रगुप्त मौर्य
322 ई० पू० से
298 ई० पू०
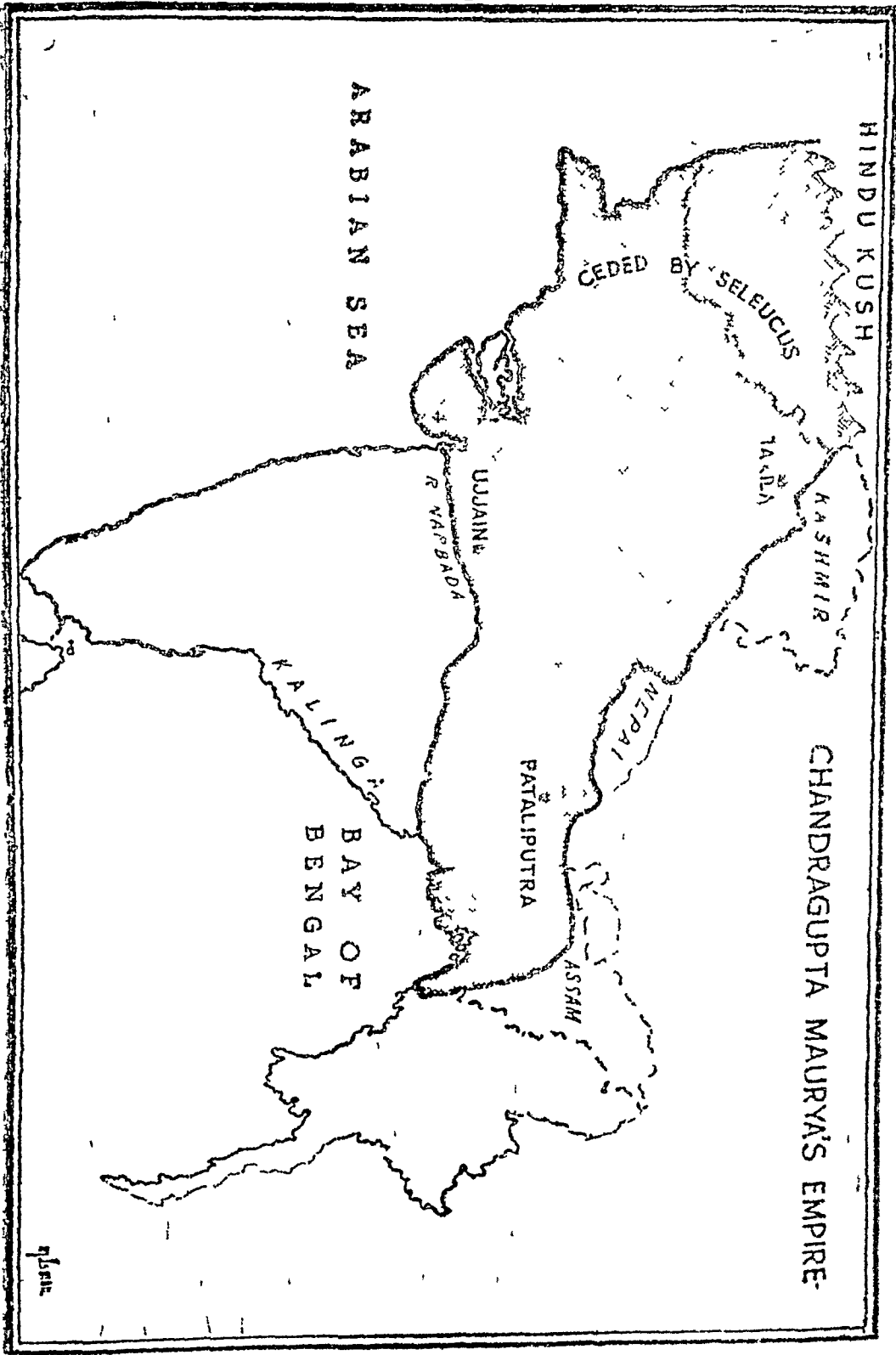
CHANDRAGUPTA MAURYA'S EMPIRE
HINDU KUSH
KASHMIR
CEDED BY SELEUCUS
NEPAL
ASSAM
PATALIPUTRA
UJJAIN
ARABIAN SEA
KALINGA
BAY OF BENGAL

भारत में अपना राज्य स्थापित किया।

विजयें (Conquests)—चन्द्रगुप्त एक महान् विजेता था। उसने कई विजयें प्राप्त करके उत्तरी भारत को अपने अधिकार में कर लिया।

(१) पंजाब विजय—सिकन्दर के लौट जाने तथा देहान्त के पश्चात् पजाब में यूनानी राज्य के विरुद्ध एक प्रबल विद्रोह हुआ। चन्द्रगुप्त ने इस विद्रोह से पूरा पूरा लाभ उठाया और अपने सुयोग्य गुरु तथा मन्त्री *चाणक्य* की सहायता से उसने एक भारी सेना एकत्र की और पजाब में स्थित यूनानी सेना को नष्ट करके पजाब पर अपना अधिकार जमा लिया।

(२) मगध विजय—इस के पश्चात् उसने *मगध* पर आक्रमण किया, और नन्द वंश के अन्तिम राजा को सिंहासन से उतार कर स्वयं राजा बन बैठा। *पाटलिपुत्र* उसकी राजधानी थी।

(३) अन्य विजयें—धीरे धीरे उसने उत्तरी भारतवर्ष के समस्त राज्यों (सुराष्ट्र, मालवा, सिंध, आदि) को भी जीत लिया और उस के राज्य की सीमा नर्बदा नदी तक जा पहुँची। कई इतिहासकारों का मत है कि उसने दक्षिण देश को भी विजय किया परन्तु इस सम्बन्ध में विश्वस्त रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।

(४) सेल्यूकस का आक्रमण, 305 ई० पू०—सेल्यूकस (Seleucus) जिसे यूनानी लोग *सेल्यूकस निकेटोर* (विजयिता) कहते थे, सिकन्दर का सेनापति था और उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके राज्य के एशिया वाले भाग को दबा बैठा था। सिंध नदी उसके राज्य की पूर्वी सीमा थी। 305 ई० पूर्व उसने सिंध नदी को पार कर के भारतवर्ष पर आक्रमण किया। परन्तु चन्द्रगुप्त ने उसे परास्त कर दिया और आपस में सन्धि हो गई। सेल्यूकस ने अपनी लड़की का विवाह चन्द्रगुप्त के साथ कर दिया और वर्तमान *बिलोचिस्तान* और *दक्षिणी अफ़ग़ानिस्तान* का प्रदेश भी उसको दे दिया। चंद्रगुप्त ने इसके

बदले में उसे ५०० हाथी भेंट किये। सेल्यूकस ने एक यूनानी राजदूत मेगस्थनीज़ को भी पाटलिपुत्र में उसके दरबार में भेजा। *इस विजय से भारत की सीमा हिन्दुकुश पर्वत तक जा पहुँची।*

राज्य विस्तार—इस प्रकार से चन्द्रगुप्त का राज्य बंगाल से हिन्दुकुश पर्वत तक और हिमालय से नर्बदा नदी तक फैल गया। इसमें वर्तमान अफ़ग़ानिस्तान का अधिकांश भाग, बलोचिस्तान, पंजाब, यू० पी०, बिहार (मगध), बंगाल तथा सौराष्ट्र के प्रदेश सम्मिलित थे। कई एक इतिहासज्ञों का विचार है कि चन्द्रगुप्त ने दक्षिण का कुछ प्रदेश भी विजय किया परन्तु इस विषय में विश्वस्तरूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।

चन्द्रगुप्त मौर्य भारतवर्ष का एक महान् सम्राट् था। वह वीर योद्धा था। *परन्तु उसकी प्रशंसा का सबसे बड़ा कारण उसका राज्य प्रबन्ध है जो उसने बड़ी योग्यता से किया। उसके समय में सब प्रकार से सुख शान्ति रही। कौटिल्य उसका मन्त्री था।*

चन्द्रगुप्त का राज्य प्रबन्ध

(१) केन्द्रीय शासन (Central Government)—चन्द्रगुप्त मौर्य साम्राज्य का सबसे बड़ा अधिकारी था और पाटलिपुत्र उसकी राजधानी थी। वह *निरंकुश* राजा था। उसके अधिकार असीमित थे। राज्य प्रबन्ध में उसे परामर्श देने के लिये एक सभा थी जिसे *मन्त्री परिषद* कहते थे। *चाणक्य* (Chanakya) उसका सबसे बड़ा *मन्त्री* था। प्रार्थी राजसभा में आ सकते थे और राजा स्वयं उनकी प्रार्थना को सुना करता था। साम्राज्य की समस्त बातों से अपने आपको परिचित रखने के लिये उसने सारे देश में बड़े योग्य और विश्वासी *गुप्तचर* छोड़े रखे थे। स्त्रियाँ भी गुप्तचरों में सम्मिलित थीं। युद्ध के समय राजा स्वयं सेना का नेतृत्व करता था।

(२) आय के साधन—आय का सबसे बड़ा साधन *भूमिकर* था जो समस्त उपज का एक *चौथाई* भाग होता था। इसके अतिरिक्त और भी कई टैक्स थे जिनमें सबसे प्रसिद्ध *बिक्री हुई वस्तुओं पर टैक्स* था।

खानों, वनों, चुँगी, इत्यादि से भी आय होती थी। जल सिंचाई की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था क्योंकि इसके बिना कृषि की उन्नति असम्भव थी और कृषि की उन्नति के बिना आय नहीं हो सकती थी।

(३) **प्रजा हितार्थ काम**—प्रजा हितार्थ कामों में राजा की विशेष रुचि थी। जल सिंचाई के लिये तालाब और नहरें बनाई गई थीं और उनकी देख-रेख के लिये एक *सिंचाई विभाग* था। आने जाने के लिये देश में कई उत्तम सड़कें थीं जिनके कारण व्यापार को बहुत उन्नति प्राप्त थी। इन सड़कों के किनारे मीलों के चिह्न लगे हुये थे। एक सड़क पाटलिपुत्र से टैक्सिला तक जाती थी। एक और प्रसिद्ध सड़क पाटलिपुत्र को पश्चिमी भारत की बन्दरगाहों के साथ मिलाती थी। इन सड़कों का प्रबन्ध एक विशेष विभाग करता था।

(४) **कानून और न्याय विभाग** (Law and Justice)—फौजदारी कानून बड़ा कठोर था और दण्ड बहुत सख्त थे। साधारण अपराधों (जैसे झूठी गवाही देने, टैक्स न देने, पवित्र वृक्षों के काटने, इत्यादि) पर भी अपराधियों के हाथ पाँव काट दिये जाते थे। अधिक अपराध वालों को प्राणदण्ड दिया जाता था और अपराध को स्वीकार करवाने के लिये अपराधियों को बड़े कष्ट भी दिये जाते थे। सारे देश में न्यायालय बने हुए थे और अन्तिम अपील राजा के पास होती थी जो सब से बड़ा न्यायाधीश था। कठोर दण्डों के कारण अपराध कम थे।

(५) **प्रान्तीय शासन** (Provincial Government)—राज्य कई प्रान्तों में विभक्त था। प्रत्येक प्रान्त एक गवर्नर के अधीन था, जो प्रायः राजघराने से सम्बन्ध रखता था। इन गवर्नरों को 'कुमार' कहते थे। प्रान्त जनपदों (जिलों) तथा गाँवों में विभक्त थे। जिलों के उच्च अधिकारी को 'स्थानिक' और गाँवों के मुखिया को 'ग्रामिक' कहते थे। ग्रामिक पंचायतों की सहायता से ग्राम का प्रबन्ध करते थे। पाँच से दस ग्रामों तक के प्रबन्धक को *'गोप'* कहते थे। नगर का बड़ा अफसर *'नागरिक'* होता था।

(६) पाटलिपुत्र और उसका प्रबन्ध—मगध की राजधानी पाटलिपुत्र थी, जो वर्तमान पटना नगर के समीप बसी हुई थी। यह नगर अत्यन्त शोभाशाली था और गंगा तथा सोन नदियों के संगम पर स्थित था। इसकी लम्बाई नौ मील और चौड़ाई लगभग डेढ़ मील थी। उसके चारो ओर लकड़ी की एक सुदृढ़ दीवार थी, जिसमें ६४ दरवाज़े और ५७० बुर्ज थे। नगर की जन-संख्या चार लाख के लगभग थी। नगर के चारों ओर एक छः सौ फुट चौड़ी और तीस हाथ गहरी खाई थी जिसमें सोन नदी का पानी भरा रहता था। राजभवन लकड़ी का बना हुआ था। परन्तु सुन्दरता तथा सजधज में अद्वितीय था। इसमें कई बाग़ और कृत्रिम झीलें थीं।

पाटलिपुत्र नगर का म्युनिसिपल प्रबन्ध (Municipal Administration)—इसके लिये तीस मेम्बरों की एक कमेटी थी जो छः बोर्डों में विभक्त थी। उन बोर्डों के कर्तव्य निम्नलिखित थे—

(१) नगर के कलाकौशल की देख भाल करना।

(२) अतिथि लोगों के सुख तथा सुविधा का प्रबन्ध करना।

(३) जन्म तथा मृत्यु का हिसाब रखना।

(४) व्यापार का प्रबन्ध, तोल के बाटों और माप के पैमानों की जाँच पड़ताल करना।

(५) शिल्पालयो की देखभाल करना।

(६) वस्तुओं के बिकने पर दस प्रति सैंकड़ा टैक्स उगाहना।

नगर के सर्वसाधारण प्रबन्ध जैसे सफाई, सड़कों की देखभाल और पानी के पहुँचाने के लिये म्युनिसिपल कमिश्नर सामूहिक रूप से उत्तरदायी थे। सम्भव है कि शेष बड़े-बड़े नगरों का प्रबन्ध भी म्युनिसिपल कमेटियाँ ही करती हों। ग्रामो का प्रबन्ध पंचायतें करती थीं।

(७) सैनिक प्रबन्ध (Military Administration)—चन्द्रगुप्त का सैनिक प्रबन्ध भी बहुत प्रशंसनीय था। सारी सेना शस्त्रों से सुसज्जित और बड़ी वीर थी। समस्त सेना लगभग सात लाख थी। इसमें छः लाख प्यादा, तीस हज़ार घुड़सवार, नौ हज़ार हाथी

और लगभग आठ हज़ार रथ थे। सैनिकों, घोड़ों तथा हाथियों के लिये कवच होते थे। समस्त सेना को नकद वेतन मिलता था। सेना के प्रबन्ध के लिये तीस सदस्यों का एक पृथक् *सेना विभाग* (Army Department) था, जिस के छः विभाग थे। इनके अधिकार में (१) पैदल सेना, (२) घुड़सवार सेना, (३) सामुद्रिक बेड़ा, (४) रथों, (५) हाथियो और (६) सामग्री पहुँचाने का प्रबन्ध था।

सामाजिक अवस्था

चन्द्रगुप्त के समय के लोग स्वस्थ तथा वीर थे। उनका भोजन सादा था और वे प्रायः सत्यवादी थे। एक दूसरे पर विश्वास करते थे। समस्त लेन-देन तथा व्यापार मौखिक होते थे। गवाह तथा रसीद की आवश्यकता न थी। मुकद्दमाबाज़ी का नाम तक भी न था। चोरी की घटनायें बहुत कम थीं और मकानों को ताला लगाने की विशेष आवश्यकता न होती थी। स्त्रियाँ पतिव्रता होती थीं और प्रजा सुखी थी। लोग अपने त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाते थे। हिन्दू समाज सात श्रेणियो में विभक्त था—*(१) फ़िलासफ़र और नीतिज्ञ, (२) परामर्शदाता, (३) सैनिक लोग, (४) कृषक, (५) गुप्तचर पुलिस, (६) व्यापारी तथा शिल्पकार, (७) गडरिये तथा शिकारी।*

चन्द्रगुप्त की मृत्यु

चौबीस वर्ष राज्य करने के बाद चन्द्रगुप्त की मृत्यु हो गई अथवा उसने सिंहासन का त्याग कर दिया। सम्भवतः वह जैनमत का अनुयायी था। जैनमत की पुस्तकों में उसकी मृत्यु की कथा इस प्रकार लिखी है कि उसके शासन के अंतिय वर्षों में उत्तरी भारत में एक भयानक अकाल पड़ गया। चंद्रगुप्त अपना सिंहासन अपने बेटे बिंदुसार* को सौंप कर आप एक जैनी महात्मा

*चन्द्रगुप्त की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र बिंदुसार ने लगभग २५ वर्ष राज्य किया। परन्तु उसके राज्य काल का पर्याप्त वृत्तान्त ज्ञात नहीं। सम्भव है कि उसने दक्षिण का प्रदेश विजय किया हो।

के साथ मैसूर को चला गया जहाँ उसने जैन सिद्धान्तों के अनुसार उपवास करके 298 ई० पू० में प्राण-त्याग दिये।

Q. Write short notes on (a) Megasthenes (b) Chanakya.

प्रश्न—*निम्नलिखित पर नोट लिखोः—(क) मेगस्थनीज़ (ख) चाणक्य।*

मेगस्थनीज़

मेगस्थनीज़ *एक यूनानी राजदूत था, जिसे* सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त मौर्य की राजसभा में भेजा था। वह कोई पाँच वर्ष तक (302 से 298 ई० पू०) पाटलिपुत्र में रहा उसने चन्द्रगुप्त के राज्य काल का वृत्तान्त लिखा है, जो उस समय के इतिहास का उत्तम स्रोत समझा जाता है। दुर्भाग्य-वश उसकी मूल पुस्तक तो खोई जा चुकी है परन्तु उसके कई लेख अन्य यूनानी इतिहास लेखकों की पुस्तकों में मिलते हैं। ये सब लेख एकत्र किये जा चुके हैं और उनका अंग्रेजी में अनुवाद मिलता है। उनके पढ़ने से उस समय का पर्याप्त वृत्तान्त ज्ञात होता है।

चाणक्य

चाणक्य *चन्द्रगुप्त मौर्य का गुरु तथा मन्त्री था।* वह तक्षशिला का रहने वाला तथा जाति का ब्राह्मण था और बड़ा धुरन्धर विद्वान् तथा उच्च कोटि का नीतिज्ञ था। उसने चन्द्रगुप्त की बड़ी सेवा की। उसके दो और नाम *कौटिल्य* और *विष्णुगुप्त* भी हैं। कहते हैं कि राजा नन्द ने एक बार उसका अपमान कर दिया, उसने तत्काल बदला लेने की शपथ खाई। चन्द्रगुप्त ने उसकी सहायता से पंजाब विजय किया और फिर मगध के राजा नन्द को पराजित करके सिंहासन प्राप्त किया था। *चाणक्य अपनी धुन का बड़ा पक्का था और षड़यन्त्र रचने मे बड़ा निपुण था।* यद्यपि उसे सुख ऐश्वर्य के सभी साधन प्राप्त थे, तो भी वह दरिद्र का सा जीवन व्यतीत करता था और राजा के भवन के पास एक मिट्टी की झोंपड़ी में रहा करता था। उसने नीति विद्या पर एक ग्रन्थ भी लिखा है जिसका नाम अर्थशास्त्र है, इससे चन्द्रगुप्त के शासनकाल का पता चलता है। सत्य तो यह है कि *चन्द्रगुप्त की उन्नति अधिकतर चाणक्य के कारण ही हुई थी।*

महाराजा अशोक

273 B C—232 B.C.

Q. Give a brief account of the reign of Asoka and describe the measures adopted by him for the spread of Buddhism.

(P. U. 1933, 37, 41, 44, 49, 51, 52) (V. Important)

प्रश्न—महाराजा अशोक के राज्य-काल का संक्षिप्त वर्णन करो और बताओ कि उसने बुद्ध-धर्म के प्रचार के लिए क्या साधन बर्ते ?

अशोक 273 ई० पू० से 232 ई० पू०

महाराजा अशोक *मौर्य वंश का सबसे प्रसिद्ध सम्राट् था।* वह चन्द्रगुप्त का पोता और बिन्दुसार का पुत्र था। उसने लगभग चालीस वर्ष तक राज्य किया। सम्राट् बनने से पहले वह *तक्षशिला और उज्जैन के प्रान्तो का गवर्नर भी* रह चुका था और उसने अपनी प्रबन्ध चातुरी तथा योग्यता का सिक्का जमा दिया था। यही कारण है कि यद्यपि वह अपने पिता का ज्येष्ठ पुत्र न था, तो भी बिन्दुसार ने उसको सबसे योग्य समझ कर अपना युवराज बनाया था। उसका राज्याभिषेक किसी कारण से, सिंहासन पर बैठने के चार वर्ष पश्चात् हुआ।

आरम्भ में अशोक सम्भवतः शिव का उपासक था। उसे शिकार खेलने और मांस खाने का बड़ा चाव था, परन्तु बाद में वह बुद्ध धर्म का अनुयायी बन गया था। उसके समय की सबसे प्रसिद्ध घटना कलिंग *का युद्ध है,* परन्तु अशोक का नाम *इतिहास में बुद्धमत के प्रचार के लिये सदा प्रसिद्ध रहेगा, क्योंकि उसी के यत्नो से यह मत दूर-दूर देशों में फैल गया।*

कलिंग की विजय 261 ई० पू०

अशोक के सिंहासनारोहण के समय लगभग समस्त भारतवर्ष पर मौर्यवंश का राज्य था, परन्तु **कलिंग** (उड़ीसा) का प्रदेश, जो खाड़ी बंगाल के तट के साथ महानदी और गोदावरी नदी के मध्य स्थित था, अशोक के राज्य में सम्मिलित नहीं था।

अशोक ने इसे विजय करने के लिये 261 ई० पू० इस पर चढ़ाई की और एक भयंकर युद्ध के पश्चात्—जिसमे लगभग एक लाख मनुष्य मारे गये, डेढ़ लाख कैद हुए और उससे कई गुना बीमारी से मर गये—वह इस देश को विजय करने में सफल हो गया। इस रक्तपूर्ण दृश्य को देख कर अशोक के हृदय पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि आगे के लिये उसने युद्ध से सर्वथा मुख मोड़ लिया और वह बुद्ध-मत का अनुयायी बन गया। इस विचार से कलिंग की लड़ाई संसार की प्रसिद्धतम लड़ाइयों में गिनी जाती है। उस युद्ध का एक प्रभाव यह भी हुआ कि उसके राज्य प्रबन्ध में बड़ी नर्मी आ गई।

राज्य विस्तार

अशोक का राज्य बहुत विस्तृत था। हिन्दुकुश पर्वत से लेकर बंगाल तक सारा प्रदेश उसके अधीन था और दक्षिण में उसकी सीमा मैसूर तक विस्तृत थी। संक्षेपतः थोड़े से दक्षिणी भाग को छोड़कर समस्त भारतवर्ष तथा वर्तमान अफ़ग़ानिस्तान और बलोचिस्तान का लगभग समस्त भाग उसके राज्य मे सम्मिलित था। अशोक का यह राज्य बाद के समस्त भारतीय राज्यो से बड़ा था।

अशोक का राज्य प्रबन्ध

अशोक का राज्य प्रबन्ध अपने दादा चन्द्रगुप्त के शासन के ढंग पर ही था। वह समस्त देश का सबसे बड़ा शासक था और उसके परामर्श के लिये एक मन्त्री परिषद था। कानून और दण्ड तो पहले की भाँति कठोर ही थे परन्तु बुद्ध धर्म को अपनाने के कारण उसके राज्य कार्य के ढंग से नर्मी और दयालुता अधिक आ गई थी। उसके राज्य का मुख्य उद्देश्य उसकी प्रजा का ही हित था।

१. प्रान्तीय शासन—अशोक ने राज्य प्रबन्ध के लिये अपने साम्राज्य को पाँच प्रान्तो मे बाँटा हुआ था *(१)* उत्तरी प्रान्त, राजधानी तक्षशिला *(२)* पश्चिमी प्रान्त, राजधानी उज्जैन *(३)* दक्षिणी प्रान्त, राजधानी स्वर्णगिरी *(४)* पूर्वी प्रान्त, राजधानी टोसाली *(५)* केन्द्रीय प्रान्त, राजधानी पाटलिपुत्र। इन सब प्रान्तो के सूबेदार राजकीय वंश
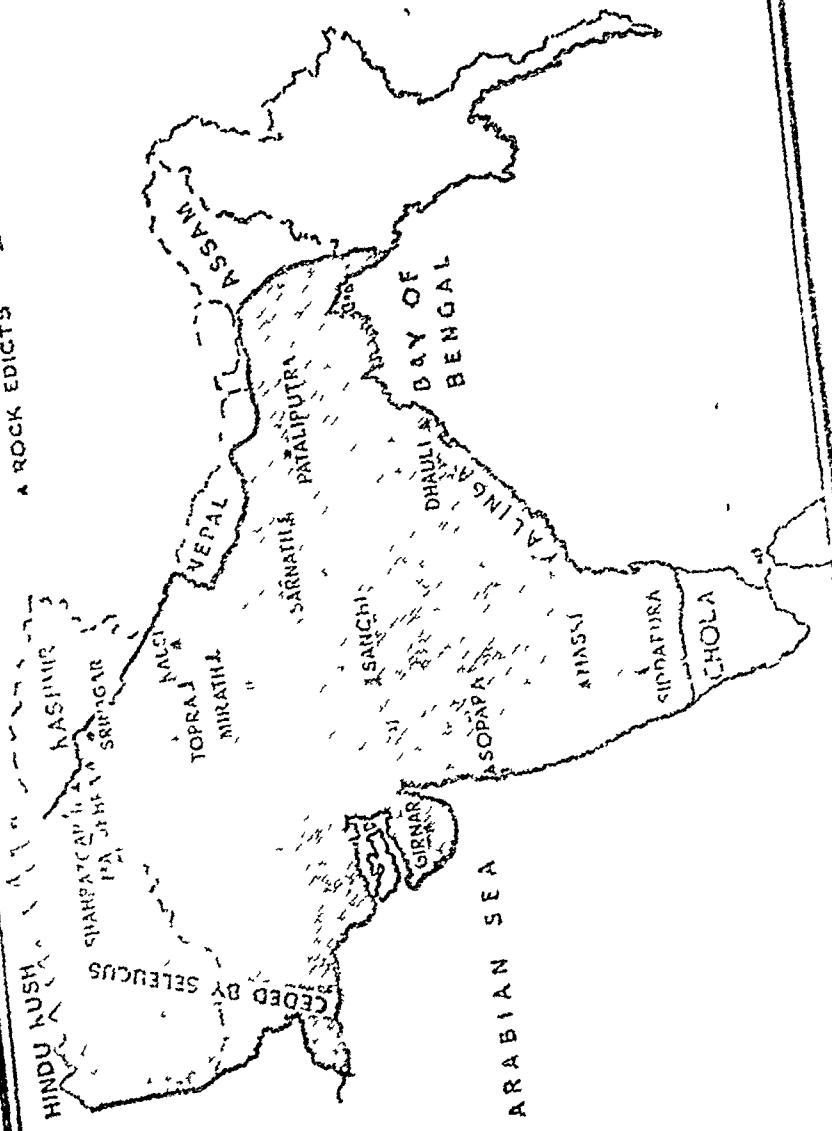
ASOKA'S EMPIRE
ROCK EDICTS
PILLAR EDICTS
HINDU KUSH
CEDED BY SELEUCUS
SRINAGAR
TOPRA
NEPAL
ASSAM
SARNATH
PATALIPUTRA
SANCHI
GIRNAR
DHAULI
KALINGA
BAY OF BENGAL
ARABIAN SEA
CHOLA

के थे, परन्तु केन्द्रीय प्रान्त सीधा राजा के अधीन था। सूबेदार राज्य का प्रबन्ध बड़ी उत्तम रीति से करते थे। वे अपनी प्रजा की भलाई की ओर विशेष ध्यान देते थे। इसी कारण वे अपने-अपने सूबों का दौरा भी करते थे। सूबेदारों के अतिरिक्त और भी कई कर्मचारी थे।

२. प्रजा से व्यवहार—अशोक अपनी प्रजा के साथ अति उत्तम व्यवहार करता था। वह उन्हें अपने बच्चों के समान समझता था और सदा उनका हित चिन्तक रहता था। वह कहा करता था कि जिस प्रकार मैं अपने बच्चों के लिये लोक तथा परलोक में सुख चाहता हूँ उसी प्रकार मैं अपनी प्रजा के सुख का इच्छुक हूं। निर्धनों, अनाथों, बूढ़ों तथा विधवाओं का पालन राजकीय कोष से होता था। अशोक अपनी प्रजा के दुःखों को सुनने और उन्हें दूर करने के लिये सदा तैयार रहता था। उसने आदेश दे रखा था कि राज्य के कर्मचारी हर समय और हर स्थान पर चाहे वह खाना खा रहा हो, चाहे अपने प्राइवेट कमरे में हो, या कहीं बाहर जा रहा हो, दिन हो अथवा रात हो, प्रजा की शिकायतें उसके पास पहुँचा सकते हैं। इससे पता लगता है कि अशोक बड़ा दयालु राजा था।

३. देश भ्रमण—अशोक सूबेदारों के काम-काज की देख-रेख के लिये देश भ्रमण भी किया करता था। उसका यह काम बड़ा लाभदायक था। इससे राजा और प्रजा में परस्पर सम्बन्ध घनिष्ट हो जाता था और सूबेदार तथा अन्य कर्मचारी भी चौकन्ने रहते थे और वे प्रजा पर अत्याचार नहीं कर सकते थे।

४. प्रजा हितार्थ कार्य—अशोक ने कई प्रजा हितार्थ कार्य भी किये। यात्रियों की सुविधा के लिये कुएँ खुदवाये गये, धर्मशालाये और सरायें बनवाई गई, सड़कों पर छायादार वृक्ष लगवाये गये और असंख्य स्थानों पर पानी पिलाने का प्रबन्ध किया गया। अशोक सारे संसार में पहिला सम्राट् हुआ है जिसने सरकारी व्यय पर न केवल मनुष्यों के लिये अपितु पशुओं के लिये भी आतुरालय (हस्पताल) बनवाये। इस भान्ति मूक पशु भी उसकी दया से वंचित न रहने पाये।

५. धर्म महामात्रों की नियुक्ति—अशोक ने अपनी प्रजा के आचार को उत्तम बनाने के लिये अधिकारी नियुक्त कर रखे थे जिन्हें *धर्म महामात्र* कहते थे। वे लोग देश में भ्रमण करके प्रजा को उनके कर्तव्य का ज्ञान कराते और उनके आचार विचार का ध्यान रखते थे।

सारांश यह कि अशोक का राज्य प्रत्येक प्रकार से सराहनीय था। उसने देश में सुख और शान्ति स्थापित की। सच तो यह है कि संसार में अशोक जैसा और कोई राजा हुआ ही नहीं। *उस का राज्य सचमुच धर्म का राज्य था।*

अशोक का धर्म
Law of Piety

अशोक बड़ा धर्मात्मा था और उसकी यह प्रबल इच्छा थी कि उसकी प्रजा भी धर्म पर चले। अशोक के विचार में धर्म नीचे लिखी चार बातों पर निर्भर था :—

(१) बड़ों का आदर और छोटों पर दया—मनुष्य को चाहिये कि वह अपने माता-पिता और गुरुओं का आदर करे तथा अपने आधीन नौकरों और सेवकों आदि के साथ दया तथा सहानुभूति का बर्ताव करे।

(२) अहिंसा—अर्थात् किसी प्राणी को कष्ट न पहुँचाया जाय।

(३) सत्य—अर्थात् सर्वदा सत्य बोलना चाहिये।

(४) अन्य बातें—उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त अशोक ने दूसरों सम्प्रदायों का सत्कार करने, दान देने, दया करने, परोपकार और शुद्धाचरण पर भी बड़ा बल दिया।

बुद्धमत का प्रचार

अशोक ने कलिंग-विजय के पश्चात् बुद्धधर्म की शरण ली और इसका प्रचार करने में अपनी पूर्ण शक्ति लगा दी। उसने इसके प्रचार के लिये निम्नलिखित साधनों का उपयोग किया :—

(१) बुद्धमत राजधर्म—अशोक ने बुद्धमत को राजधर्म घोषित किया, जिससे उसकी प्रजा को उस मत के स्वीकार करने में प्रोत्साहन मिल गया।

(२) **राज-आदेशों को शिलाओं पर खुदवाना**—अशोक ने धर्म के नियमों को स्तम्भों तथा पर्वतों की चट्टानों पर खुदवा दिया और उन स्तम्भों को अपने राज्य की प्रसिद्ध सड़कों तथा विशेष स्थानों पर गड़वा दिया कि जो लोग वहाँ आएँ उन्हे पढ़ सकें।

(३) **धर्म-महामात्रों की नियुक्ति**—उसने राजकीय अधिकारियों की एक श्रेणी बनाई, जिन का काम जनता में बुद्धधर्म का प्रचार करना और उनके आचरण का ध्यान रखना था। इन अधिकारियों को धर्म महामात्र कहते थे।

(४) **आदर्श**—अशोक ने अपना आदर्श उपस्थित किया, उसने स्वयं भी अहिंसा के नियम की पुष्टि करने के लिये युद्ध बन्द कर दिये। राजकीय मृगया-विभाग (शिकार का महकमा) तोड़ दिया, पशुवध को नियम के विरुद्ध ठहराया और पशुओं की रक्षा के लिये कई नियम (कानून) बना दिये और मांस खाना छोड़ दिया।

(५) **अशोक का भिक्षु बनना**—कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक स्वयं भी कुछ समय के लिये भिक्षु रहा। अपने गुरु *उपगुप्त* के साथ जो उस समय का सबसे बड़ा बौद्ध महात्मा था उसने बुद्धधर्म के तीर्थ-स्थानों की यात्रा की और मार्ग में बुद्धधर्म का प्रचार करता गया। उसने *पाटलिपुत्र* से प्रस्थान किया और *लुम्बनी* (जो बुद्ध का जन्म स्थान है) *कपिलवस्तु* (जहाँ बुद्ध ने बाल्यकाल बिताया था) *सारनाथ*, (जहाँ बुद्ध ने प्रथम उपदेश दिया), *गया* (जहाँ बुद्ध को ज्ञान हुआ था), और *कुशी नगर* (जहाँ बुद्ध ने प्राण-त्यागे) की यात्रा की और इन स्थानों पर यादगारें स्थापित कीं।

(६) **विहार निर्माण**—अशोक ने बुद्धभिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिये देश में विशेष कर मगध प्रान्त में स्थान-स्थान पर विहार बनवाये जो बुद्धमत के प्रचार में भारी सहायक सिद्ध हुये।

(७) **बुद्धमत की सभा**—बुद्धमत में जो मतभेद आ गये थे, उनका निर्णय करने के लिये उसने बौद्ध विद्वानों की सभा पाटलिपुत्र में बुलाई, इसमें लगभग एक हज़ार बौद्ध सम्मिलित हुए। यह बुद्धमत

की तीसरी सभा थी।

(८) विदेशों में प्रचार—अशोक ने बुद्धमत के प्रचार के लिये विदेशों में भी अपने प्रचारक भेजे, अर्थात् ब्रह्मा, लंका, मिस्र, स्याम और मकदूनिया में जाकर भिक्षुओं ने प्रचार किया। अशोक के पुत्र महेन्द्र (जिसे कई इतिहास-लेखक अशोक का भाई भी कहते हैं) और उसके कुछ समय पश्चात् उसकी लड़की या (बहिन) संघमित्रा* ने लंका में बुद्ध धर्म का प्रचार किया और वहां के राजा ने बुद्धधर्म की दीक्षा ली। *अशोक के प्रयत्नों से बुद्धमत एशिया, अफ्रीका और योरुप के तीनों ज्ञात महाद्वीपों में फैल गया।*

अशोक के भवन (इमारतें)

अशोक को भवन (इमारतें) बनवाने का बड़ा चाव था, उसने नगर, स्तूप, विहार और स्तम्भ बनवाए। उसने काश्मीर की राजधानी *श्रीनगर* की नींव रखी, और एक नगर *देवपाटन* नेपाल में बसाया। पाटलिपुत्र में अशोक का राजभवन बहुत ही सुन्दर था।

अशोक का इतिहास में स्थान

अशोक इतिहास में बहुत ऊँचा स्थान पा गया है। वह यथार्थ में महान् अशोक था। वह बहुत श्रेष्ठ, सदाचारी और प्रजापालक था। उसके विचार में धर्म की विजय सबसे उत्तम विजय थी। वह विशाल हृदय था और *अन्य धर्मों को भी सम्मान की दृष्टि से देखता था। उसका कथन था कि मनुष्य अन्य धर्मों का मान कर के अपने धर्म को ऊँचा करता है और दूसरे धर्म को लाभ पहुँचाता है।* जहां उसने अपनी प्रजा के हित के लिये प्रत्येक सम्भव यत्न किया, वहाँ अनाथ और मूक पशु भी उसकी कृपा से वंचित न रहे। उनके लिये भी आतुरालय बनवाये। *अशोक सत्य और अहिंसा का देवता था। वह संसार में एक मात्र ऐसा राजा हुआ है जिसने युद्ध को जीतने*

*संघमित्रा अपने साथ उस पीपल के वृक्ष की एक शाखा ले गई थी जिस के नीचे बैठकर बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया था।

के बाद युद्ध को सदा के लिये त्याग दिया। सच तो यह है कि अशोक का स्थान इतिहास में अनुपम है, इस विचार से कि किसी दूसरे शासक ने अपनी प्रजा के लिये इतना काम नहीं किया। हमारी वर्तमान सरकार ने भी अशोक के धर्म चक्र को ही अपने झण्डे में सम्मिलित किया है। *उसका सबसे बड़ा काम यह है कि उसने बुद्धमत को सार्वभौम धर्म बना दिया।* परन्तु कई इतिहासकारों का मत है कि अशोक की धार्मिक नीति ने सैनिक भावना को हानि पहुँचाई, जिससे मौर्यवंश का पतन निकट आ गया। आधुनिक समय का प्रसिद्ध इतिहासकार H. G. Wells *अशोक को इतिहास का सर्वोत्तम राजा मानता है।*

अशोक का देहान्त होते ही मौर्यवंश का पतन आरम्भ हो गया और अन्त में 185 ई० पूर्व में मौर्यवंश के अन्तिम शासक बृहद्रथ का अपने सेनापति पुष्यमित्र के हाथों बध किया गया और इस प्रकार मौर्यवंश का सूर्य अस्त हो गया।

☞ Q. Write a short note on the Edicts of Asoka and discuss their historical importance.

(P. U. 1940-44) (Important)

प्रश्न—*अशोक के आदेशों के सम्बन्ध में नोट लिखो और बताओ कि इतिहास में उनका क्या स्थान है?*

अशोक के आदेश

अशोक ने बुद्धमत ग्रहण करने के बाद अपनी प्रजा में बुद्धधर्म फैलाने के लिये कई धार्मिक आदेश प्रकाशित किये और उन्हें चट्टानों तथा स्तम्भों पर खुदवा दिया। उनमें उसका जीवन वृत्तान्त, धार्मिक विवरण और शासन काल के पराक्रम वर्णित किये गये हैं और उन साधनों का उल्लेख है, जो उसने बुद्धमत के प्रचार के लिये अपनाये। ये आदेश अशोक के विशाल साम्राज्य के भिन्न-भिन्न भागों में राज मार्गों पर तथा प्रसिद्ध स्थानों पर मिलते हैं और उनमें से तीस से अधिक अब तक मिल चुके है। *उत्तर दक्षिण सीमा मे यह स्तम्भ हिमालय से मैसूर तक और पूर्व-पश्चिम सीमा में बङ्गाल की खाड़ी से अरब सागर तक पाये जाते* हैं और भिन्न-भिन्न प्रान्तो की स्थानीय भाषा में लिखे हुए हैं, इसलिये

कि लोग इन्हें सुगमता से समझ सकें।

अशोक के ये लेख कई स्थानों पर मिलते हैं, जैसे शाहबाजगढ़ी पेशावर जिले में, मानसेहरा हजारा जिले मे, कालसी देहरादून जिले में, गिरनार गुजरात काठियावाड़ में, धौली पुरी ज़िले मे, साँची भूपाल रियासत मे, सारनाथ बनारस के निकट. मैसूर मे, इत्यादि।

ऐतिहासिक दृष्टि से ये आदेश अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इनसे

ऐतिहासिक महत्व

(१) अशोक के राज्य विस्तार का पता चलता है, क्योंकि ऐसा विचार है कि जिन-जिन स्थानों पर ये लेख मिले हैं वे अवश्यमेव अशोक के राज्य में होंगे।

(२) इन से अशोक की शासन प्रणाली और जीवन का भी पता चलता है क्योंकि इन लेखों में उसके राज्यकाल की बड़ी-बड़ी घटनायें खुदी हुई हैं।

(३) इनसे यह भी पता चलता है कि अशोक का धर्म क्या था और उसने बुद्ध धर्म को फैलाने के लिये क्या-क्या उपाय वर्ते। इनसे यह भी ज्ञात होता है कि अशोक का सम्बन्ध अपने राज्य-कालीन राजाओं के साथ मित्रता-पूर्ण था।

(४) इनसे यह भी परिणाम निकलता है कि अशोक के राज्यकाल में शिक्षा का प्रचार बहुत था। बहुधा लोग पढ़े-लिखे थे। क्योकि यदि लोग पढ़े-लिखे न होते तो शिलाओं और स्तम्भों पर लेखों के लिखवाने का क्या लाभ था?

(५) ये आदेश ऊँचे स्तम्भो पर खुदे हुए हैं। ये स्तम्भ रेत के पत्थर के बने हुये हैं और इन पर सुन्दर पालिश (पानी) किया हुआ है। ये मौर्यकाल की कला-कौशल का एक उच्च नमूना हैं। इन पर बहुधा शेरों की प्रतिमायें बनाई हुई है। जिस सारनाथ स्तम्भ का शीर्ष भाग
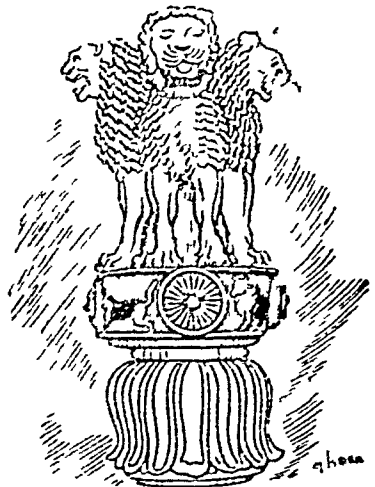
सुन्दरता से ये प्रतिमायें बनाई हुई हैं उनसे पता चलता है कि पाषाण निर्माण और पालिश करने में उस समय के लोगों ने कितनी उन्नति की थी। सारनाथ के स्तम्भ के ऊपरी भाग पर चार शेरों की जो मूर्ति बनाई गई थी वह संसार में अद्वितीय है। यह मूर्ति अब भी सारनाथ के अजायब घर में पड़ी है।

(६) इन आदेशों से इस बात का भी ज्ञान होता है कि उस काल में भारत के भिन्न-भिन्न भागों में कौन-कौन सी भाषायें प्रचलित थीं।

संक्षेपतः ये आदेश अशोक के राज्यकाल के विषय में हमारे ज्ञान का अमूल्य स्रोत है।

कुशान वंश तथा कनिष्क

(KUSHAN DYNASTY AND KANISHKA)

☞ Q. Who were the Kushans? When and how did they come to establish their power in India? Give a detailed account of the reign of Kanishka.
(P. U. 1932, 36, 38, 40, 53) (V. Important)

***प्रश्न**—कुशन कौन थे, वे कब और किस प्रकार भारतवर्ष में आये? कनिष्क के राज्यकाल का विस्तृत वर्णन करो।*

दो हजार वर्ष से कुछ अधिक समय बीता, कि पश्चिमी चीन में

कुशन
Kushan

यूची (Yeuh-chi) नामक एक यायावर (निघरी) और योद्धा जाति बसी हुई थी। ईसा से दूसरी शताब्दी पूर्व इस जाति को चीनियों ने अपने देश से निकाल दिया, और ये लोग बाखतरिया और काबुल के मार्ग से भारत में चले आये। इस जाति की सुप्रसिद्ध शाखा का नाम **कुशन** या **कुशान** था। ईसा की पहली शताब्दी के आरम्भ में कुशन जाति ने भारत की उत्तर पश्चिमी सीमा पर अधिकार जमा लिया और शक जाति को जो पहले यहाँ बसी हुई थी, निकाल दिया। इस वंश का सबसे प्रसिद्ध सम्राट कनिष्क था।

कनिष्क—कुशान वंश का तीसरा और सबसे अधिक प्रतापी राजा था। *उसमें चन्द्रगुप्त की वीरता तथा अशोक का धार्मिक जोश पाया जाता था।* यह निश्चित-रूप से नहीं कहा जा सकता कि वह कब सिंहासन पर बैठा, परन्तु ऐसा कहा जाता है कि वह 120 ई० से सिंहासन पर बैठा और लगभग बयालीस वर्ष तक शासक रहा। उसने पुरुषपुर (पेशावर) को राजधानी बनाया।

Kanishka
120 ई० से 162 ई०

कनिष्क

कनिष्क की विजयें (Conquests)—कनिष्क को राज्य विस्तार का बड़ा चाव था अतः उसने अपना अधिकांश जीवन युद्ध में ही बिताया। उसकी बड़ी-बड़ी विजयें निम्नलिखित थीं।

(१) सब से प्रथम उस ने **पंजाब** (Panjab) और **मथुरा** (Mathura) के शक सरदारों को पराजित किया और उत्तरी भारतवर्ष के अधिक भाग पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया, सम्भवतः उसका राज्य पाटलिपुत्र तक था।

(२) फिर उसने **काश्मीर** (Kashmir) को विजय किया और यहाँ कई यादगारें बनवाईं, जिनमें से कनिसपुरा नाम का एक गाँव श्रीनगर के समीप विद्यमान है।

(३) परन्तु कनिष्क *की सबसे प्रसिद्ध विजय चीनियों के विरुद्ध थी।* उसने एक बड़ी प्रबल सेना के साथ पामीर के पर्वतों को लाँघ कर चीन पर आक्रमण किया और **खुतन** (Khotan), **काशगर** (Kashgar) और **यारकंद** (Yarkand) के राजाओं को पराजित करके अपने अधीन कर लिया। इन विजयों से भारत और चीन में मेल-जोल आरम्भ हो गया।
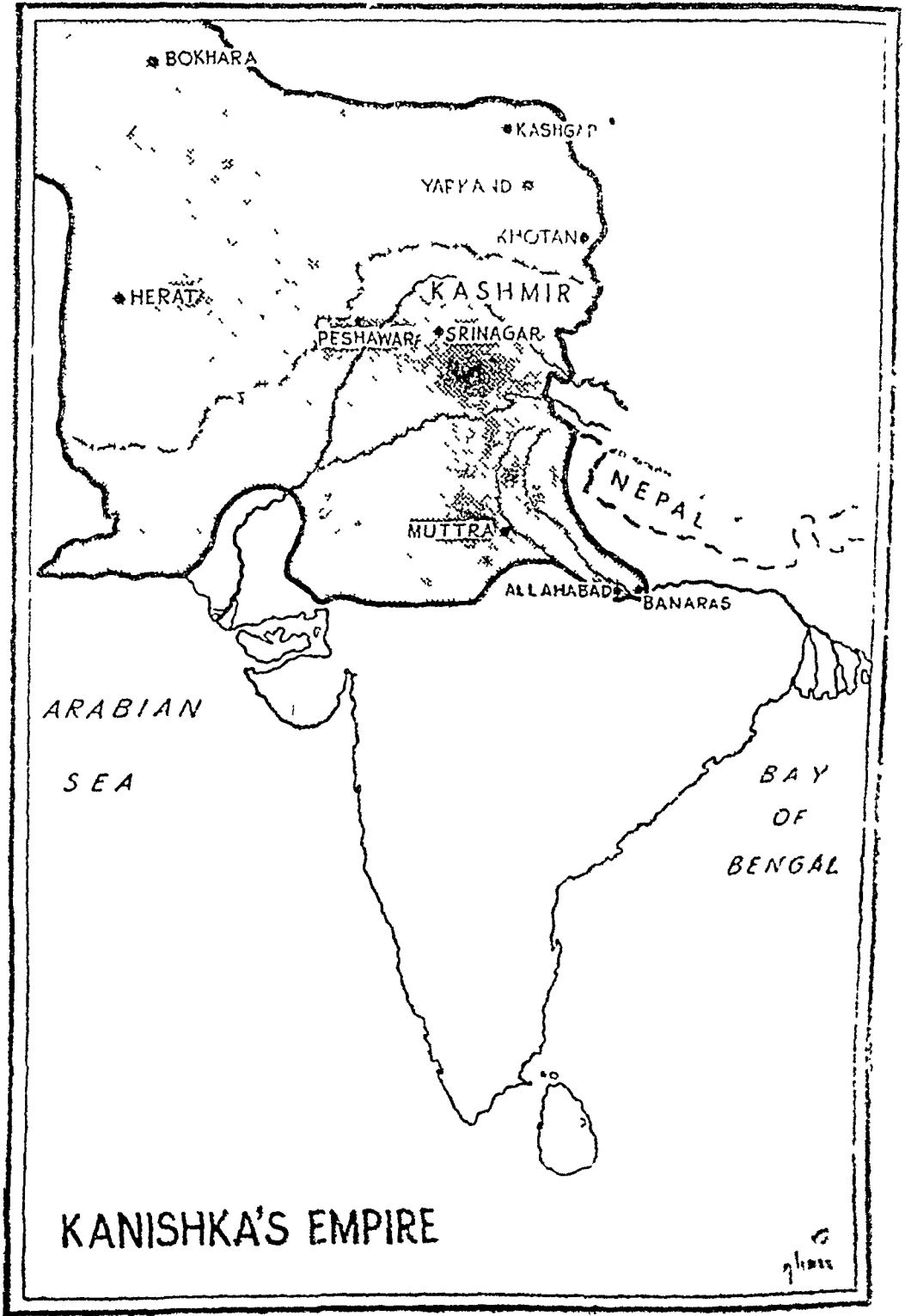
KANISHKA'S EMPIRE

(४) इसके अतिरिक्त पंजाब के दक्षिण में बहुत सी रियासतें उसके अधीन थीं। उसने मालवा और गुजरात के शक सरदारो के विरुद्ध भी सफल युद्ध किये।

राज्य-विस्तार—इस प्रकार उसके राज्य की सीमा उत्तर में काश्गर और बुखारा से लेकर दक्षिण में उज्जैन तक और पूर्व में बनारस से लेकर पश्चिम में अफगानिस्तान तक जा पहुँची। कनिष्क की राजधानी पुरुषपुर थी, जिसे आजकल पेशावर कहते हैं। वहाँ उसने कई यादगारें बनवाई।

कनिष्क का मत (Religion)—कनिष्क की प्रसिद्धि का मुख्य *कारण यह है कि वह भी महाराजा अशोक की भाँति बुद्धमत का दृढ़ अनुयायी और संरक्षक था परन्तु उसका मत महायान बुद्धमत था और उसने महायान बुद्धमत को फैलाने का प्रत्येक सम्भव उपाय किया।* (१) अशोक की भाँति उसने भी धार्मिक नियमो का निर्णय करने के लिये बौद्ध विद्वानों की एक सभा बुलाई। यह चौथी सभा थी, इसका अधिवेशन काश्मीर में * श्रीनगर के समीप हुआ। इसमें कोई ५०० बौद्ध भिक्षु सम्मिलित हुए। (२) इसके अतिरिक्त कनिष्क ने कई विहार भी बनवाये और (३) मध्य एशिया के देशों में प्रचारक भेजे जिससे महायान बुद्ध धर्म चीन, जापान और मंगोलिया आदि देशो में फैल गया। *इन्हीं कारणों से बौद्ध लेखक उसे दूसरा अशोक समझते हैं।*

बुद्धमत का विभाजन *(बँटवारा)*—कनिष्क के शासनकाल में बुद्धमत दो शाखाओ में बँट गया हुआ था। (१) हीनयान (२) महायान। *हीनयान* (Hinayana) शाखा के लोग पुराने बुद्धमत के अनुयायी हैं, वे बुद्ध को केवल गुरु का स्थान देते हैं। परन्तु *महायान* (Mahayana) शाखा के लोगों ने बुद्ध को देवता का स्थान दिया और इसकी मूर्ति को पूजना आरम्भ कर दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने योग और भक्ति को भी मानना आरम्भ कर दिया और पाली

---

* कई इतिहासकारों का विचार है कि यह सभा जालन्धर में हुई।

भाषा के स्थान पर संस्कृत में अपने विचारों को प्रकाशित करने लगे। कनिष्क स्वयं बुद्धमत की *महायान शाखा* का अनुयायी था और इसी का उसने प्रचार किया।

साहित्य और कला (Art and Literature)—कनिष्क अतीव विद्या प्रेमी था और विद्वानों का सम्मान किया करता था। उसके दरबार में कई विद्वान् रहा करते थे। आयुर्वेद का प्रसिद्ध विद्वान् चरक उसकी सभा का शृङ्गार था, और बुद्धमत के प्रसिद्ध विद्वान् *नागार्जुन, अश्वघोष* और *वसुमित्र* भी इसी काल में हुये हैं।

कनिष्क को अशोक की भाँति भवन बनवाने का भी बड़ा चाव था। उसने पेशावर में एक चार सौ फुट ऊँचा स्तम्भ (मीनार) बनवाया और मथुरा तथा तक्षशिला में कई स्तूप और विहारें बनवाईं। *गांधार* (वर्तमान पेशावर और तक्षशिला के प्रदेश) की *शिल्पकला* ने उसके *शासनकाल में बड़ी उन्नति पाई*। कनिष्क ने काश्मीर में कई यादगारें बनवाईं और श्रीनगर के समीप एक नगर बसाया। यह नगर अब केवल एक गाँव रह गया है। इसका नाम *कनिसपुरा* है।

व्यापार (Trade)—कनिष्क के राज्य की सीमा रोमन साम्राज्य तथा चीन साम्राज्य से मिलती थी अतः उस समय में व्यापार भी बड़े जोरों पर था और अधिकतर रोमन साम्राज्य के साथ होता था। *भारतवर्ष से मोती, गर्म मसाले, रेशम, हाथी दांत, मलमल, जड़ी-बूटियाँ इत्यादि जाते थे और वहाँ से सोना और चाँदी आता था*। बारीक मलमल की रोम में विशेष कर बड़ी माँग थी। यह व्यापार समुद्र और भूमि दोनों मार्गों से होता था। चीन के साथ भी व्यापार होता था।

कनिष्क की मृत्यु—कहा जाता है कि कनिष्क के निरन्तर युद्धों से लोग इतने दुःखी हो गये थे कि एक दिन जब कि वह ज्वर के कारण चारपाई पर पड़ा हुआ था कुछ लोगों ने रजाई से उसे ऐसा लपेट दिया कि उसका श्वास घुट गया और उसकी मृत्यु हो गई।

गुप्त वंश तथा हूण जाति

(GUPTAS AND HUNS)

320 A. D.—540 A. D.

गुप्तवंश

कनिष्क की मृत्यु के कुछ वर्ष पश्चात् उत्तरी भारतवर्ष में कई छोटे छोटे स्वतन्त्र राज्य स्थापित हो गये और देश की राजनैतिक एकता छिन्न-भिन्न हो गई। ये राज्य कोई डेढ़ सौ वर्ष तक रहे। अन्ततः चौथी शताब्दी के आरम्भ में भारतवर्ष में एक नये वंश का आरम्भ हुआ, जिसने एक विशाल और सुदृढ़ राज्य स्थापित किया। इस वंश का नाम 'गुप्तवंश' था। इस वंश ने लगभग दो शताब्दियाँ राज्य किया और इस समय में भारतवर्ष ने न केवल राजनैतिक उन्नति ही की वरन् शिल्प तथा शिक्षा में ऐसी अपूर्व उन्नति की जो आज तक हिन्दुओं के लिये गर्व का कारण है। यह काल हिन्दू-इतिहास का स्वर्ण युग (Golden Age) गिना जाता है। इस वंश को चलाने वाला चंद्रगुप्त था परन्तु सब से प्रसिद्ध शासक *समुद्रगुप्त* और *चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य* थे।

चन्द्रगुप्त
320—330

चन्द्रगुप्त प्रथम (Chandra Gupta I) इस वंश का चलाने वाला था। वह मगध में किसी एक छोटे से राज्य का राजा था। उसका विवाह *लिच्छवी वंश* की एक राजकुमारी *कुमार देवी* से हुआ था। क्योंकि यह वंश बड़ा वीर और सभ्य था इस लिये चन्द्रगुप्त की शक्ति और भी बढ़ गई और उसे अपने राज्य-विस्तार में बड़ी सहायता मिली। उसने पाटलिपुत्र पर अधिकार जमा लिया और एक सुदृढ़ राज्य की नींव डाली जिसमें *वर्तमान बिहार और उत्तरी प्रदेश का पूर्वी भाग* सम्मिलित था। 320 ई० में उसने अपने नाम से **गुप्त सम्वत्** चलाया। उसने '*महाराजाधिराज*' की उपाधि भी धारण की। उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र समुद्रगुप्त राजा बना।

———

समुद्रगुप्त

330—375

☞ Q. Give a brief account of the reign of Samudra Gupta and justify his title to being called the Indian Napoleon. (P.U. 1949-52) (V. Important)

प्रश्न—*समुद्रगुप्त के राज्यकाल का संक्षिप्त वर्णन करो और बताओ कि उसे भारत का नैपोलियन क्यों कहते हैं ?*

समुद्रगुप्त
330—375

समुद्रगुप्त अपने पिता चन्द्रगुप्त प्रथम की मृत्यु पर राजा बना। वह गुप्तवंश का सबसे प्रसिद्ध और शक्तिशाली राजा हुआ है। उसे युद्ध करने का बड़ा चाव था। अंग्रेजी इतिहास लेखक उसे **भारतीय नैपोलियन** (Indian Napoleon) का नाम देते हैं क्योंकि जिस प्रकार नैपोलियन ने लगभग सारे योरुप को विजित किया उसी प्रकार समुद्रगुप्त ने लगभग सारे भारत को विजित किया। इसके अतिरिक्त वह एक योग्य विद्वान्, कवि और संगीतकला में अति निपुण था।

विजयें (Conquests):—

(१) उत्तरी भारत की विजय—सबसे प्रथम उसने गंगा की घाटी में अपने पिता के स्थापित किये हुए राज्य को भली भाँति सुदृढ़ किया और फिर उसने पश्चिम की ओर में कई एक छोटे-छोटे राज्यों को विजय करके यमुना नदी तक सारे उत्तरी-भारत को अपने अधीन कर लिया।

(२) दक्षिण विजय—उत्तरी भारत को विजय कर लेने के बाद उसने दक्षिण पर आक्रमण किया और यहाँ के समस्त (१२) राजाओं को अपनी अधीनता में लाकर अपनी राजधानी पाटलिपुत्र को लौट आया। वह पूर्वी तट के साथ साथ चलता हुआ वर्तमान मद्रास के समीप काँची (कॉजीवरम) तक पहुँचा और वहाँ से पश्चिम को मुड़कर तट के साथ साथ वापस लौटा। उसने दक्षिणी-भारत को अपने साम्राज्य में सम्मिलित नहीं किया क्योंकि *यह उसकी राजधानी से दूर था और इसपर अधिकार जमाये रखना असम्भव था* अतः उसने वहाँ से

केवल कर लेना ही स्वीकार किया। *दक्षिण-विजय उसके शासन काल की एक अत्यन्त प्रभावशाली घटना है।*

(३) जंगली जातियों की विजय—इसके पश्चात् उसने मध्य भारत की जंगली जातियो को अपने अधीन किया। इन जातियों को जीतने का उद्देश्य यह था कि उत्तरी भारत तथा दक्षिण में आने जाने का मार्ग खुला रखा जा सके।

(४) सीमा प्रदेशों की अधीनता—समुद्रगुप्त के ऐसे तेज प्रताप को देखकर सीमा के बहुत से *प्रदेशों यथा आसाम, पूर्वी बंगाल, नैपाल* आदि ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली और अन्य कई कबीलों और विदेशी राजाओं ने भी मित्रता पूर्वक सन्धि कर ली।

(५) अश्वमेध यज्ञ—इन गौरवशाली विजयो की स्मृति में समुद्रगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ किया और **महाराजाधिराज** की उपाधि धारण की। इस शुभ अवसर पर सोने की विशेष मुद्राएँ मुद्रित की गई। जिनकी एक ओर अश्वमेध के घोड़े की मूर्ति थी।

राज्य विस्तार—समुद्रगुप्त का राज्य उत्तर-दक्षिण में *हिमालय से लेकर नर्वदा नदी तक और पूर्व-पश्चिम में हुगली नदी से लेकर यमुना और चम्बल नदी तक फैला हुआ था।* इसके अतिरिक्त सीमा के बहुत से प्रदेश और दक्षिण देश उसके प्रभावाधीन थे।

उसकी योग्यतायें (His Accomplishments)—समुद्रगुप्त केवल एक *महान् सेनापति* ही नहीं था। वरन् वह विद्या तथा कला में भी अनुपम योग्यता रखता था। वह एक उच्चकोटि का *विद्वान्* और *शास्त्रज्ञाता* था। उसे *गायन विद्या* में बड़ी रुचि थी और वह *वीणा* बजाने में विशेष निपुण था। वह एक उच्चकोटि का कवि भी था और कवियों तथा विद्वानों का *आश्रय दाता* भी था। उनमें कवि **हरिषेण** का नाम विशेषतया प्रसिद्ध है। वह दीन दुखियो का पालक था। यद्यपि वह स्वयं दृढ हिन्दु था, तो भी अन्य मत वालो के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार रखता था। उसने लंका के राजा (मेघवर्ण) को बुद्ध गया के

स्थान पर लंका के यात्रियों के लिये विहार बनवाने की सहर्ष आज्ञा दे दी थी।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

375—413

☞ Q. Give a brief account of the reign of Chandra Gupta Vikrmaditya. What light does Fahien throw on this period ?
(P. U. 1920-23-26-28-34-36) (V. Important)

प्रश्न—चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के शासन काल का संक्षिप्त वर्णन करो और बताओ कि फ़ाह्यान ने इस काल के सम्बन्ध मे क्या लिखा है।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
375—413

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य समुद्रगुप्त का पुत्र था और अपने पिता की भाँति शूरवीर तथा विद्या और कला कौशल का संरक्षक था। कई एक मुद्राओं में जो उस समय की प्राप्त हुई है वह शेर को लताड़ता हुआ दर्शाया गया है जिससे सिद्ध होता है कि वह बड़ा वीर था। उसने राजगद्दी पर बैठते ही *विक्रमादित्य* की उपाधि धारण की, जिसका अर्थ "वीरता का सूर्य" है। वह एक बड़ा योग्य शासक था *और उसका राजकाल हिन्दू इतिहास में सबसे शानदार था।* यह भी विचार किया जाता है कि वह राजा विक्रमाजीत जिसके न्याय और प्रजा पालन की बहुत सी कहानियाँ प्रचलित हैं, यही विक्रमादित्य था। परन्तु इस विषय में विश्वस्त रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।

विजयें (Conquests)—चन्द्रगुप्त सारे उत्तरी भारत को अपने आधीन करने का बड़ा इच्छुक था, अतः उसने *मालवा, गुजरात* और *सौराष्ट्र* को विजय करके अपने राज्य में सम्मिलित किया और वहाँ के शक जातीय शासकों का समूल नाश कर दिया। *इस प्रकार से उस ने भारतवर्ष से विदेशी राज्य का अन्त कर दिया।* इन विजयों से चन्द्रगुप्त का राज्य अरब सागर तक फैल गया और कई बन्दरगाहों पर अधिकार हो जाने के कारण व्यापार में उन्नति हुई। पश्चिमी देशों के साथ

व्यापारिक सम्बन्ध तथा मेल-जोल अधिक सुदृढ़ हो गया और देश में धन बढ़ने लगा।

पश्चिम में राज्य-विस्तार के कारण उसने पाटलिपुत्र के अतिरिक्त उज्जैन को राजधानी बनाया जो उन दिनों व्यापार का एक बड़ा भारी केन्द्र था। (कई इतिहास लेखकों का विचार है कि उसने अयोध्या को राजधानी बनाया)। चन्द्रगुप्त ने सम्भवतः पंजाब का भी कुछ भाग विजय किया। परन्तु उसका सबसे बड़ा काम शक शासकों की पराजय है।

साहित्य (Literature) और कला (Art)—चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य विद्या-प्रेमी था। उसके राज-काल में संस्कृत भाषा ने बड़ी उन्नति की। कहते हैं कि नौ बड़े विद्वान् उसके दरबार के शृङ्गार थे। बहुत से विद्वानों का मत है कि संस्कृत का प्रसिद्ध कवि **कालिदास** जो भारत का शेक्सपीयर (Indian Shakespeare) कहलाता है, इसी समय में हुआ। इस काल में आर्ट ने भी बहुत उन्नति की। देहली में कुतुब-मीनार के पास लोहे की जो अद्भुत लाट खड़ी है वह इसी काल में बनी। सच तो यह है कि यह काल कला-कौशल तथा साहित्य की उन्नति का स्वर्ण-युग था।

फाह्यान (Fahien)

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के शासनकाल में एक चीनी यात्री फाह्यान भारत में आया। उसका उद्देश्य बुद्ध धर्म के पवित्र तीर्थों का दर्शन करना और बुद्ध धर्म सम्बन्धी पुस्तकों को प्राप्त करना था। वह यहाँ लगभग ६ वर्ष (405—411) तक रहा और उसने लगभग समस्त बुद्ध धर्म के पवित्र स्थानों की यात्रा की। वह भूमि के मार्ग से आया और समुद्र की राह लंका तथा जावा होता हुआ वापस
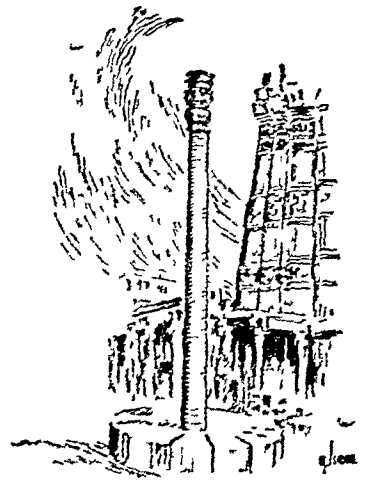
गया। उसकी यात्रा सम्बन्धी पुस्तक से उस काल के भारत की सभ्यता का कुछ पता लगता है।

(१) **राज्य-प्रबन्ध** (Political Condition)—फाह्यान लिखता है कि राज्य प्रबन्ध बड़ा उत्तम है और प्रजा सुखी है। राज कर्मचारी लोगों के निजी विषयों में बहुत कम हस्ताक्षेप करते हैं। दण्ड बहुत साधारण हैं, प्रायः जुर्माना मात्र ही पर्याप्त समझा जाता है। प्राणदण्ड किसी को भी नहीं दिया जाता परन्तु जो लोग बार-बार अपराध करते हैं, उनका दाहिना हाथ काट दिया जाता है। मार्ग सुरक्षित हैं, यात्रा में किसी प्रकार का भय नहीं। कर साधारण हैं और सरकारी आय का अधिकांश भूमिकर (मामला) से प्राप्त किया जाता है, जो उपज का *चौथा भाग* होता है। देश में असंख्य धन है। अनाज तथा अन्य वस्तुएँ इतनी सस्ती हैं कि क्रय-विक्रय में कौड़ियों का प्रयोग होता है।

(२) **धार्मिक अवस्था** (Religious Condition)—धार्मिक अवस्था के सम्बन्ध में वह लिखता है कि गुप्त राजा यद्यपि हिन्दू हैं तो भी धार्मिक विषय के प्रत्येक मत वालों से समान व्यवहार किया जाता है। राज्य बौद्धो तथा जैनियों की पूरी रक्षा करता है, बौद्धों के अनेकों विहार हैं, और जन-साधारण अहिंसा के अनुयायी हैं।

(३) **सामाजिक अवस्था** (Social Condition)—भारतवासी बड़ा शुद्ध जीवन व्यतीत करते हैं। वे किसी जीव की हत्या नहीं करते, न मदिरा पीते है, न प्याज़ लहसुन व मांस खाते हैं। लोग पशु नहीं बेचते, न मण्डी के पास बूचड़ों का दुकानें हैं, न मदिरा पीने के स्थान हैं। मध्य देश में चांडाल लोग नगर से बाहर रहते हैं, उन को नगर में प्रवेश करते समय एक प्रकार की सूचना देनी पड़ती है कि लोग उनसे छूकर अपवित्र न हो जायें। धनाढ्य पुरुषों ने हस्पताल खोल रखे हैं जहाँ रोगियों का मुफ्त इलाज किया जाता है।

(४) **मगध** (Magadha) देश के सम्बन्ध में वह लिखता है, कि वहाँ बड़े-बड़े नगर थे, लोग अतीव धनी तथा सुखी थे। धर्मार्थ
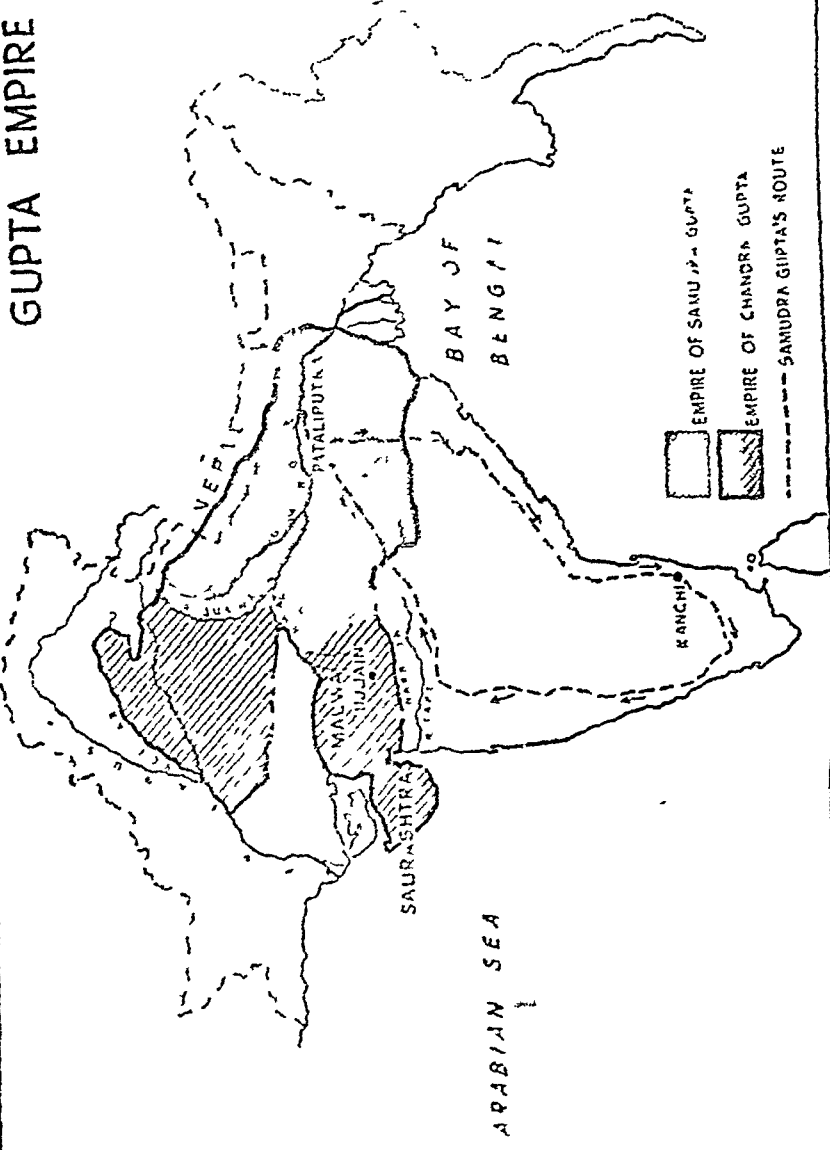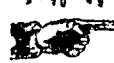
GUPTA EMPIRE
MALWA
UJJAIN
SAURASHTRA
ARABIAN SEA
BAY OF
KANCHI
EMPIRE OF CHANDRA GUPTA
SAMUDRA GUPTA'S ROUTE

संस्थायें असंख्य थीं। यात्रियों के लिये सभी सड़कों पर सरायें और धर्मशालायें बनी हुई थीं।

(५) पाटलिपुत्र के सम्बन्ध में फाह्यान लिखता है कि यह बड़ा विशाल नगर था और विद्या तथा धर्म-कर्म का केन्द्र था। यहाँ बुद्ध-धर्म की दो बड़ी-बड़ी विहारें थीं जिन में एक हीनयान और दूसरी महायान धर्म वालों के लिये थी। प्रत्येक में सहस्रों विद्वान् भिक्षु रहते थे जो सहस्रों विद्यार्थियों को जो भारत के कोने-कोने से वहाँ जाते थे पढ़ाया करते थे। वहाँ एक बहुत बड़ा आतुरालय (हस्पताल) था जहाँ निर्धन रोगियों को औषधि और भोजन मुफ्त दिये जाते थे। पाटलिपुत्र में अशोक का भवन अभी तक विद्यमान था और वह इतना विशाल था जिसे देख कर विश्वास नहीं हो सकता था कि इसे मनुष्यों ने बनाया होगा।

☞ Q. Why is the Gupta period called the Golden age of Hinduism?
(P. U. 1931-34-40-43-45-46-49) (V. Important)

प्रश्न—गुप्तकाल को हिन्दू काल का स्वर्ण-युग कहे जाने के क्या कारण हैं?

स्वर्ण-युग (Golden Age)

गुप्त सम्राटों का शासनकाल हिन्दू इतिहास में सचमुच ही स्वर्ण-युग था, क्योंकि हिन्दुओं की सभ्यता, शिक्षा, शिल्प, विज्ञान, व्यापार तथा कला में जो उन्नति इस काल में हुई, वह न पहले कभी हुई थी और न उसके बाद हुई। लोग सुखी थे और देश में शान्ति भरपूर थी। इस काल की कुछ विशेषताएँ नीचे लिखी जाती हैं:—

(१) **हिन्दू राज की पुनः स्थापना** — मौर्यवंश के पतन के पश्चात् भारतवर्ष के अधिक भागों पर शक, कुशान, इत्यादि विदेशी जातियों का राज्य स्थापित हो गया था जो कोई पाँच सौ वर्ष रहा अन्ततः गुप्तों ने इस विदेशी राज्य को समाप्त कर हिन्दुओं के राज्य को पुनः स्थापित किया और देश को पर्याप्त उन्नति प्राप्त हुई।

(२) उत्तम राज्य—गुप्तो का राज्य अति उत्तम था। कानून नर्म और दण्ड साधारण थे। देश में हर प्रकार से शान्ति थी और प्रजा बड़ी सुखी थी। टैक्स बहुत हल्के थे, लोग सन्तुष्ट थे और उनको धार्मिक स्वतन्त्रता थी। सड़कें सुरक्षित थीं और देश में कई संस्थायें थीं। दण्ड विधान नर्म होने पर भी देश मे चोरी चकारी न होने के बराबर थी।

(३) हिन्दू धर्म की उन्नति—गुप्तवंश के सभी राजा हिन्दूमत के अनुयायी थे। उनके राज्यकाल मे हिन्दू धर्म का पुनः उत्थान हुआ। हिन्दू देवताओं के मन्दिर और मूर्तियों का निर्माण आरम्भ हुआ। हिन्दू देवताओं की पूजा होने लगी और ब्राह्मणों का मान बढ़ गया। कई गुप्त राजाओं (जैसे समुद्रगुप्त और उसके पोते कुमार गुप्त) ने अश्वमेध यज्ञ भी किये और इस प्रकार हिन्दू धर्म जो बुद्धकाल में पीछे रह गया था, फिर से उन्नति के शिखर पर जा पहुँचा परन्तु हिन्दू धर्म की इस उन्नति की यह विशेषता है कि यह बिना किसी अत्याचार के हुई।

(४) संस्कृत भाषा की उन्नति—हिन्दू धर्म की उन्नति के साथ साथ संस्कृत भाषा ने बहुत उन्नति की। इस भाषा में कई पुस्तकें लिखी गईं और इसे राजकीय भाषा नियत किया गया। गुप्तकाल के सिक्के भी इसी भाषा में हैं। बौद्ध विहारों में भी संस्कृत भाषा पढ़ाई जाने लगी। संस्कृत भाषा का सुप्रसिद्ध कवि तथा नाटककार *कालिदास* इसी काल में हुआ और उसने कई ग्रन्थ लिखे जिनमें *शकुन्तला* नाटक उसकी सबसे उत्तम कृति है। *हरिषेण* भी संस्कृत का एक प्रसिद्ध कवि था। *अमरसिंह* ने अमर कोष रचा। *विशाखदत्त* ने 'मुद्राराक्षस' नाटक लिखा। इसके अतिरिक्त पुराण, महाभारत और मनुस्मृति अपने आधुनिक रूप में इसी समय में मुद्रित हुए। *गुप्त काल संस्कृत साहित्य का सचमुच स्वर्ण-युग था।*

(५) विज्ञान में उन्नति—इस काल में गणित और ज्योतिष विद्या ने भी बहुत उन्नति की। इस काल के तीन गणितज्ञ और

ज्योतिषाचार्य *आर्यभट्ट वराहमिहिर* और *ब्रह्मगुप्त* सुविख्यात हैं। वे अपने समय के संसार भर में सबसे बड़े ज्योतिषाचार्य और गणितज्ञ थे। धनवन्त्री अति प्रसिद्ध वैद्य था।

(६) ललित कलाओं (Fine Arts) **में उन्नति**—इस काल में ललित कलाओं, जैसे कि *भवन निर्माण कला*, *धातु कला*, *चित्र कला*, *मूर्ति कला* आदि ने भी बहुत उन्नति की। इस काल की बहुत सी कलापूर्ण वस्तुएँ समय के परिवर्तन के कारण नष्ट हो गई है, परन्तु जो विद्यमान हैं वे उस काल की कला की चतुराई का पूर्ण पता देती हैं।

देवगढ़ (Deogarh) ज़िला झाँसी में उस समय का पत्थर का एक अति सुन्दर मन्दिर और ज़िला कानपुर के एक स्थान *भीतरगाओं* (Bhitargaon) में ईंटो का एक मन्दिर अभी तक है जो उस समय की भवन निर्माण कला का प्रमाण हैं।

धातु कला ने भी आश्चर्यजनक उन्नति कर रखी थी। ह्यूनसांग ने नालन्दा में महात्मा बुद्ध का एक ८० फुट ऊँचा *तांबे का बुत* देखा था। आज भी देहली के समीप मैहरोली में कुतब मीनार के पास गुप्तकाल की बनी हुई *लोहे की एक लाठ खड़ी* है जो गुप्तकाल की धातु कला का पूर्ण परिचय देती है। इस समय की *स्वर्ण मुद्रायें* भी सुन्दर बनी हुई हैं।

चित्र-कला भी अपनी उन्नति के शिखर पर थी। हैदराबाद में *अजन्ता* (Ajanta) की गुफाओं की दीवारों तथा छत्तों पर ऐसी उत्तम चित्रकला का काम किया हुआ है कि संसार भर के कला निपुण (Artists) दूर दूर से देखने के लिये आते हैं। इन में कई चित्र बुद्ध तथा उसकी जीवन झांकियों के है।

इस काल में *मूर्ति कला* ने भी बहुत उन्नति की। बुद्धमत के तीर्थंकरों और हिन्दुमत के देवताओं की अति उत्तम मूर्तियाँ बनाई गईं। सारनाथ, मथुरा आदि में बुद्ध की बहुत सी मूर्तियाँ मिली हैं जो गुप्त काल की मूर्ति कला का उत्तम प्रमाण हैं।

(७) शिक्षा में उन्नति—इस काल में शिक्षा ने भी बहुत उन्नति की। *तक्षशिला, सारनाथ, अजन्ता और नालन्दा* के जगत् विख्यात विश्व-विद्यालय स्थापित थे, जहाँ विदेशों के विद्यार्थी भी शिक्षा पाने के विचार से आते थे। नालन्दा यूनिवर्सिटी विशेषतया प्रसिद्ध थी।

(८) नई बस्तियाँ—इस काल में भारतवासी दूसरे देशों को गये। उन्होंने जावा, सुमात्रा, बालि आदि में बस्तियाँ (Colonies) बसाईं और वहाँ भारतीय सभ्यता तथा रहन-सहन को प्रचलित किया।

(९) व्यापारिक उन्नति—व्यापार में भी पर्याप्त उन्नति हुई, पश्चिम में रोमन साम्राज्य के साथ और पूर्व में पूर्वी द्वीपसमूह के साथ व्यापार होने लगा जिससे देश का धन बढ़ने लगा और भारत धन से भरपूर हो गया।

Q What do you know about the Huns and their invasion of India ?

प्रश्न *हूण जाति तथा भारत पर उनके आक्रमण के विषय में तुम क्या जानते हो ?*

हूण मध्य एशिया की एक जगली, भयानक और यायावर जाति थी। इस जाति ने पाँचवीं शताब्दी के मध्य में भारत पर आक्रमण किया। उस समय गुप्त वंश का राजा स्कन्दगुप्त शासक था। उस ने उन्हें युद्ध में हराया और मार भगाया, परन्तु इस पराजय के कुछ वर्षों के पश्चात् वे और भी अधिक दृढ़ता से भारत पर आक्रमण करने लगे और उनके नेता *तोरमान* ने घोर अत्यचारों के साथ गुप्त साम्राज्य को नष्ट-भ्रष्ट करके पंजाब, राजपूताना, सिंध और मालवा पर अधिकार कर लिया और महाराजाधिराज की पदवी प्राप्त की।

हूण (Huns)

तोरमान के पश्चात् उसका पुत्र *मिहिरगुल* शासक बना और उसने *स्यालकोट* (Sialkot) को अपनी राजधानी बनाया। मिहिरगुल अति निर्दयी और कठोर हृदय व्यक्ति था। अन्त में उसके अत्याचारों के विरुद्ध एक प्रबल विद्रोह की आँधी उठी और मालवा के राजा तथा

मगध देश के गुप्त राजा ने मिलकर 528 ई० में उसे मुलतान के समीप (कहरोड़ के स्थान पर) परास्त किया। मिहिरगुल भाग कर काश्मीर चला गया। उस ने वहाँ के शासक का बध करके सिंहासन पर अधिकार जमा लिया और अन्त में (540 ई० में) वहीं मर गया। उस की मृत्यु के पश्चात् भारत में हूणों की शक्ति समाप्त हो गई।

हूण आक्रमण का प्रभाव—

(१) हूण जाति के आक्रमणों ने गुप्त वंश को समाप्त कर दिया और कई छोटे-छोटे राज्य स्थापित हो गये।

(२) अनेक हूणों ने हिन्दू धर्म को अपना लिया, कई राजपूत वंश उन्हीं हूणों की संतान हैं।

Q. Write short notes on :—Kalidas, Kumaril Bhatta, Shankracharya.

प्रश्न—कालिदास, कुमारिल भट्ट और शंकराचार्य के विषय में संक्षिप्त नोट लिखो।

कालिदास

कालिदास संस्कृत भाषा का उच्चकोटि का कवि और नाटककार हो चुका है। उसे *भारत का शेक्सपीयर* (Indian Shakespeare) कहते हैं। प्रायः ऐसा विचार है कि वह उज्जैन में उत्पन्न हुआ परन्तु कई बंगाली विद्वानों का मत है, कि उसकी जन्मभूमि बंगाल है। उसकी कृतियों से पता चलता है कि वह चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के राज्यकाल में हुआ। सम्भवतः वह उसका राजकवि था। उस के प्रसिद्ध ग्रन्थ *शकुन्तला, विक्रमोर्वशी, मेघदूत, रघुवंश* आदि हैं जो इन दिनों भी संस्कृत भाषा में अपने सौंदर्य, उच्चभावों और शैली की दृष्टि से अनुपम माने जाते हैं।

कुमारिल भट्ट

कुमारिल भट्ट आठवीं शताब्दी में हिन्दू धर्म का एक प्रभावशाली प्रचारक था और अधिकतर उज्जैन में रहा करता था। इसने सारे भारत का भ्रमण करके बुद्धधर्म का घोर विरोध किया और वेदों का प्रचार

किया। उसके यत्नो से बहुत से बौद्धो ने फिर हिन्दू धर्म की शरण ली।

शंकराचार्य हिन्दू धर्म के एक महान् प्रचारक हुए हैं। वह नम्बोदरी ब्राह्मण थे। उनका जन्म 788 ई० में मालाबार में हुआ और उन्हों ने छोटी आयु में ही सन्यास ले लिया। वे उच्चकोटि के विद्वान् थे। उन्हो ने बुद्धमत और जैनमत के विरोध मे प्रभावशाली प्रचार किया। कई शास्त्रार्थों में बौद्ध विद्वानों को हराया, जिसके प्रभाव से अगणित बौद्धो ने हिन्दू धर्म को फिर से अपना लिया। उन्होने हिन्दू धर्म के प्रचार के लिये चार मठ स्थापित किए। एक पूर्व में *जगन्नाथपुरी* के स्थान पर, दूसरा पश्चिम में *द्वारका* के स्थान पर, तीसरा उत्तर मे *बद्रीनाथ* के स्थान पर और चौथा दक्षिण में *शृङ्गेरी* (मैसूर राज्य) के स्थान पर। ३२ वर्ष की आयु में केदारनाथ (काश्मीर) के स्थान पर उनका परलोक-वास हुआ। उनके प्रयत्नो से हिन्दू धर्म ने बड़ी उन्नति की।

शंकराचार्य

हर्ष वर्धन

(HARSHA VARDHANA)

606—647

हूण जाति के आक्रमण के कारण गुप्तवंश का शासन नष्ट-भ्रष्ट हो गया और देश मे अनेक छोटे-छोटे राज्य स्थापित हो गये जो लग-भग एक शताब्दी तक रहे। इस काल में भारत में कोई ऐसा शक्तिशाली राजा न था जो इन सब को अधीनता मे लाता। अन्त में सातवीं शताब्दी के आरम्भ में *थानेश्वर* (पूर्वी पजाब के राजा हर्षवर्धन ने लग-भग सारे उत्तरी भारत पर विजय पाकर एक शक्तिशाली राज्य स्थापित किया। उसके राज्यकाल के विषय में हमारे ज्ञान के दो बड़े स्रोत (१) *बाण का हर्षचरित* और (२) *चीनी यात्री ह्यूनसांग की यात्रा-कथा* हैं।

☞ Q. Give a short account of the reign of Harsha Vardhana and reproduce briefly the state of India as described by Hieun Tsang.
(P U. 1938-42-43-45-50-51-53) (V. Important)

प्रश्न—*हर्ष वर्धन के शासन काल का संक्षेप वर्णन करो और यह भी बताओ कि ह्यूनसांग ने उस समय के भारत के विषय में क्या लिखा है ?*

हर्षवर्धन उत्तरी भारत का अन्तिम महान् हिन्दू सम्राट था।

वह *थानेश्वर* (पूर्वी पंजाब) के राजा प्रभाकरवर्धन का छोटा पुत्र था। 604 ई० में *प्रभाकरवर्धन* की अचानक मृत्यु हो गई और उसका ज्येष्ठ पुत्र राज्यवर्धन राजा बना। राज्यवर्धन को राजा बनते ही *मालवा* (Malwa) के राजा पर चढ़ाई करनी

हर्षवर्धन
606—647

पड़ी, क्योंकि मालवा के राजा ने उसके बहनोई कन्नौज के शासक का बध कर डाला था और उसकी बहन को जिसका नाम *राज्यश्री* था कन्नौज के कारागार में बन्द कर दिया था। राज्यवर्धन ने मालवाधीश को हराया परन्तु उसके मित्र बंगाल के राजा (शशांक) ने राज्यवर्धन का कपट पूर्वक बध कर दिया। बड़े भाई का इस प्रकार बध हो जाने पर 606 ई० में हर्षवर्धन राजा बना। राज्याभिषेक के समय उसकी आयु कोई सोलह वर्ष की थी।

कन्नौज और थानेश्वर का मिलाप— हर्ष बड़ा शूरवीर राजा था। उसने राजगद्दी पर बैठते ही अपनी बहिन का पता लगाना चाहा। अतः वह सेना के साथ विन्ध्याचल के बनों को गया जहाँ उसकी बहिन कारागार से भाग कर चली गई थी और उसे ठीक उस समय पा लिया जब वह सती होने वाली थी। वहाँ से वह उसे अपने साथ ले आया। हर्ष ने अपनी बहिन के कहने पर उसके राज्य कन्नौज को भी अपने राज्य में मिला लिया और **कन्नौज** (Kanauj) को ही अपनी राजधानी बनाया। *कन्नौज और थानेश्वर के मिलाप से* हर्ष की *सैन्य शक्ति* बहुत बढ़ गई।

हर्ष की विजयें (Conquests)—हर्ष ने अपनी विशाल सेना के साथ पाँच छः वर्ष के काल में ही लगभग सारा उत्तरी भारतवर्ष विजय कर लिया।

HARSHA'S EMPIRE
ASSAM
CHAMBAL
UJJAIN
VALABHI
CHALUKYA
BAY OF
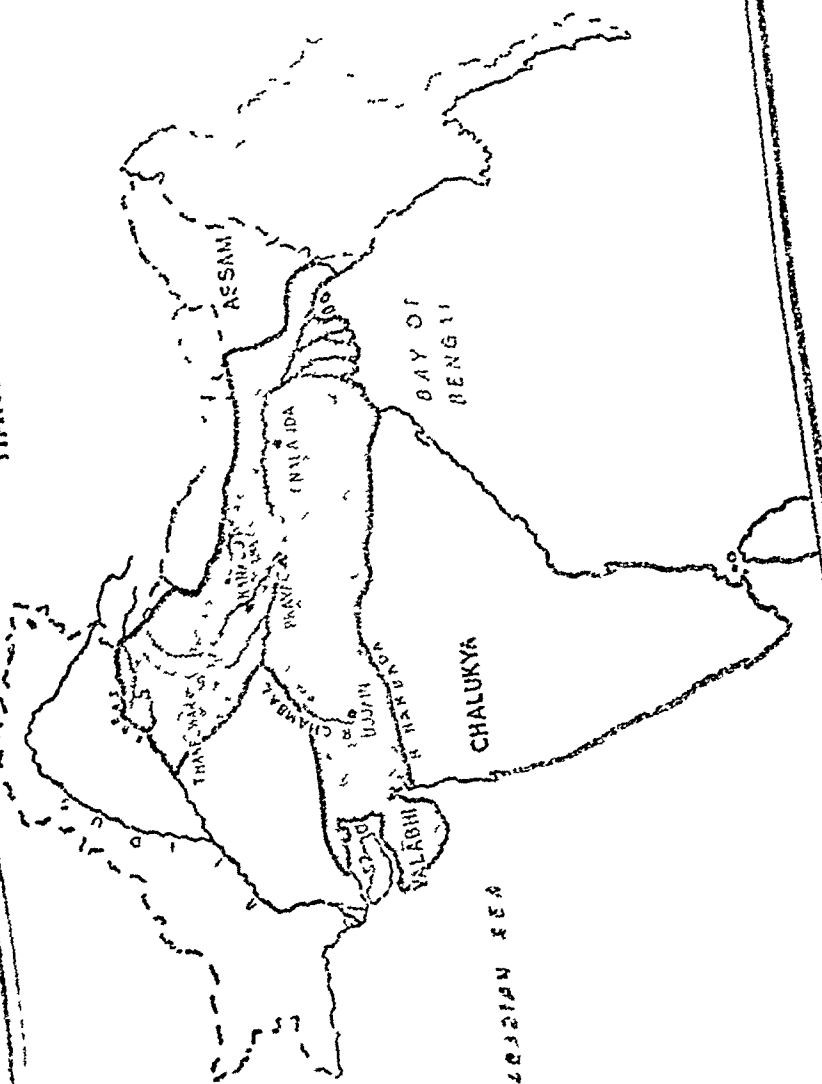
(१) सब से पहिले हर्ष ने अपने बड़े भाई की हत्या का बदला लेने के लिए *बंगाल* (Bengal) में सेनायें भेजीं, परन्तु उन्हें सफलता न हुई।

(२) हर्ष ने *आसाम* (Assam) के राजा से जो बंगाल के राजा (शशांक) का घोर शत्रु था मैत्री कर ली। इससे बंगाल के राजा की परिस्थिति शिथिल हो गई। कुछ वर्षों के बाद जब बंगाल का राजा मर गया तो हर्ष ने बंगाल पर अधिकार कर लिया।

(३) इसके पश्चात् हर्ष ने *मालवा* (Malwa) को विजय किया।

(४) फिर उसने *सौराष्ट्र* (Saurashtra) को जिसे उन दिनों *वलभी* कहते थे जीता परन्तु यह राज्य वहा के राजा को लौटा दिया।

(५) उत्तरी भारत को जीत लेने के बाद 634 ई० के लगभग हर्ष ने *दक्षिण पर आक्रमण किया।* उन दिनो चालुक्य वंश का वीर राजा *पुलकेशिन द्वितीय* (Pulakesin II) वहाँ राज करता था। उसने हर्ष को नर्बदा के *तट पर हरा दिया। इस लिये हर्ष के राज्य की दक्षिणी सीमा नर्बदा नदी से आगे न बढ़ सकी।*

(६) हर्ष ने 643 ई० में *गन्जाम* (Ganjam) पर आक्रमण किया और सम्भवतः उसे जीत लिया। *यह* हर्ष का अन्तिम युद्ध था।

राज्य-विस्तार—इस प्रकार भारतवर्ष के उत्तर-पश्चिमी भाग को छोड़कर सारा उत्तरी भारतवर्ष हर्ष के राज्य में था। दक्षिण में नर्बदा नदी उसके राज्य की सीमा थी।

हर्ष का मत (Religion)—हर्ष आरम्भ में तो हिन्दू मत का अनुयायी था, परन्तु बाद में बुद्धमत की ओर झुक गया। वास्तव में वह सब मतों का समान आदर करता था, और स्वयं भी बुद्ध, सूर्य और शिव की पूजा करता था और इन तीनों देवताओं की आराधना के लिये उसने शानदार मन्दिर बनवा रखे थे। हर्ष प्रति पाँचवें वर्ष प्रयाग (वर्तमान इलाहाबाद) में एक बड़ा भारी उत्सव किया करता था और वहाँ अपनी सभी धन-सम्पत्ति निर्धनों में बाँट देता था और फिर अपनी बहिन से वस्त्र माँग कर पहिना करता था।

हर्ष का चरित्र (Character)—हर्ष एक वीर योद्धा तथा बुद्ध-मत का अनुयायी था। इस प्रकार उस में समुद्रगुप्त तथा अशोक दोनों के गुण थे। वह बड़ा विद्या प्रेमी था। उसने संस्कृत में तीन नाटक (रत्नावली, नागानन्द और प्रिय दर्शिका) लिखे और व्याकरण की भी एक पुस्तक लिखी। उसका सुलेख बड़ा उत्तम था। वह विद्वानों का मान करता था। उसकी राजसभा में कई विद्वान् थे जिन में सब से प्रसिद्ध बाण भट्ट था जिस की लिखी हुई पुस्तकों में हर्षचरित और कादम्बरी प्रसिद्ध हैं। हर्ष अपनी प्रजा से बड़ा अच्छा व्यवहार किया करता था। वह दानी भी बहुत था और दान देने में ब्राह्मणों तथा बौद्धों में कोई भेद न रखता था। प्रजा के हित की चिन्ता में वह कभी कभी अपनी नींद और खाना भी भूल जाया करता था। सच तो यह है कि हर्ष एक आदर्श सम्राट् था।

ह्यूनसांग (Hieun Tsang) ह्यूनसांग एक अत्यन्त योग्य चीनी यात्री था। वह बुद्धमत का प्रकांड पंडित था। हर्ष के शासनकाल में वह बुद्धमत के ग्रंथों की खोज में भारत आया और लगभग पंद्रह वर्ष (630 से 645 तक) यहाँ रहा। उसने हर्ष के शासन काल का वर्णन लिखा है।

(१) शासन प्रबन्ध (Political Condition)—ह्यूनसांग लिखता है कि हर्ष का राज्य प्रबन्ध बहुत अच्छा था। सम्राट् प्रजा के सभी कार्यों की देखभाल करता था। इसी उद्देश्य से वह देश भ्रमण किया करता था। राज्य प्रबन्ध के लिये सारा देश प्रान्तों, ज़िलो और ग्रामों में विभक्त था और उनके लिये पृथक् पृथक् अफसर नियुक्त थे। दंड विधान गुप्त समय की अपेक्षा अधिक कठोर था। भयानक अपराधों के दंड स्वरूप हाथ, पाँव नाक आदि अंग काट दिये जाते थे और सड़कें भी गुप्त काल की अपेक्षा कम सुरक्षित थीं, परन्तु कर बहुत हल्के थे। कुल उपज का छठा भाग भूमिकर के रूप में लिया जाता था और यही राजकीय आय का बड़ा साधन था। इसके अतिरिक्त कई और टैक्स भी थे। हर्ष के पास एक बड़ी भारी सेना थी, जिस में पैदल,

अश्वारोही और हाथी सम्मिलित थे।

(२) शिक्षा (Education)—हर्ष के शासन काल में शिक्षा की अधिक उन्नति हुई और शिक्षा प्रसार के लिये बड़ा धन व्यय किया जाता था। बड़े बड़े विहारों और शिक्षा केन्द्रों को सरकारी सहायता मिलती थी। बिहार राज्य में *नालन्दा यूनिवर्सिटी* उन्नति के शिखर पर थी, जहाँ लगभग दस सहस्र विद्यार्थी शिक्षा पाते थे और पन्द्रह सौ अध्यापक पढ़ाते थे। विद्यार्थी और अध्यापक कुटुम्ब की भान्ति रहते थे। शिक्षा का माध्यम संस्कृत था। विद्यार्थियों को भोजन और वस्त्र मुफ्त मिलते थे। चीन, मंगोलिया आदि बुद्ध धर्म के देशों से विद्यार्थी आकर पढ़ते थे। इस यूनिवर्सिटी से उपाधि प्राप्त किये हुओं का सारे एशिया में मान किया जाता था।

(३) सामाजिक दशा (Social Condition)—लोग स्वभावतः सत्यवादि तथा शिक्षित थे और अति पवित्र जीवन व्यतीत करते थे। जात-पात का पालन दृढ़ता से किया जाता था। स्त्रियों में पर्दे की प्रथा नहीं थी, परन्तु सती हो जाने का रिवाज प्रचलित था। लड़कियों का विवाह छोटी आयु में ही हो जाता था और विधवा विवाह की प्रथा न थी। चंडाल लोग नगर से बाहर रहते थे। लोगों के लिये सराएँ, सड़कें और अस्पताल बने हुये थे। पशु बध वर्जित था और लोग मांस नहीं खाते थे।

(४) धार्मिक अवस्था (Religious Condition)—बुद्धमत धीरे-धीरे अवनत हो रहा था, और हिन्दूमत उन्नति पर था। लोगों को धार्मिक स्वतन्त्रता थी, धार्मिक द्वेश का नाम भी न था। बुद्धमत, जैन मत और हिन्दूमत के अनुयायी आपस में बड़े प्रेम पूर्वक रहते थे। लोग अहिंसा पर आचरण करते थे।

(५) कन्नौज का उत्सव (Religious Assembly)—ह्यूनसांग ने कन्नौज के उत्सव का भी उल्लेख किया है, जिसे उसने अपनी आँखों से देखा था। यह गौरवशाली उत्सव 643 ई० में कन्नौज में कई दिन

तक ह्यूनसाँग के स्वागत में होता रहा था। इसमें बीस कर-दाता राजा और सहस्रों मनुष्य सम्मिलित थे। यह उत्सव बुद्धमत का प्रचार करने के लिये बुलाया गया था और इसकी प्रधानता ह्यूनसांग ने की थी।

राजपूतों का शासनकाल

(RAJPUT PERIOD)

650—1200

हर्ष की मृत्यु के बाद भारतवर्ष में अराजकता फैल गई। इस अराजकता से लाभ उठाकर वीर राजपूतों ने समस्त उत्तरी भारत पर अपना अधिकार जमा लिया और कई छोटे-छोटे स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिये जो लग-भग साढ़े पाँच सौ वर्ष तक रहे और फिर एक-एक करके मुसलमानों ने उन्हें जीत लिया। *इस सारे काल में भारत में कोई एकछत्र राज्य न था। हर्ष की मृत्यु से लेकर मुसलमान राज्य की स्थापना तक के समय को राजपूत काल कहते है।*

☞Q. Give a brief account of the origin, organisation and character of the Rajputs. Describe briefly the principal Rajput Kingdoms on the eve of the Mohammadan invasion. (P. U. 1936-40 43) (Important) Why could they not set up an empire?

प्रश्न—*राजपूतों की उत्पत्ति, व्यवस्था और चरित्र के विषय में तुम क्या जानते हो? मुसलमानी आक्रमण के समय भारत के राजपूतो के जो बड़े बड़े राज्य थे, उनका संक्षिप्त वर्णन करो। वे कोई केन्द्रीय राज्य क्यों स्थापित न कर सके?*

राजपूतों की उत्पत्ति (Origin)

राजपूतों की उत्पत्ति के विषय में इतिहासकारों की भिन्न-भिन्न सम्मतियाँ हैं। परन्तु इतना निश्चित है कि वे *मिश्रित जाति हैं।* उनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में मुख्य विचार निम्नलिखित हैं:—

(१) **वैदिक आर्यों की संतान**—राजपूतों का

अपना कहना है कि वे वैदिक काल के सूर्यवंशी तथा चन्द्रवंशी क्षत्रियों की सन्तान हैं। कई हिन्दू इतिहास-लेखक उनके इस दावे को स्वीकार करते हैं, क्योंकि उनकी आकृति प्राचीनकाल के आर्यों से मिलती जुलती है।

(२) **विदेशी आक्रमणकारियों की सन्तान**—कई इतिहासकार (जैसे राजस्थान का प्रसिद्ध लेखक टाड) उपरिलिखित विचार से सर्वथा सहमत नहीं हैं। उनका विचार है कि कई राजपूत वंश हूण, गुर्जर, कुशान, शक, आदि विदेशी आक्रमणकारी जातियों के वंशज हैं जिन्हों ने भारत में बस जाने के पश्चात् हिन्दू-धर्म को स्वीकार कर लिया। इन आक्रमणकारियों में से जो ऊँची पदवी के थे, वे राजपूत बन गये और नीची पदवी के लोग गुज्जर, अहीर और जाट कहलाने लगे।

(३) **मूल-निवासियों की संतान** — कई इतिहासकार (जैसे डा० स्मिथ) का एक विचार यह भी है कि कई राजपूत वंश विशेषतया जो विन्ध्याचल पर्वत के साथ रहते है, भारत के मूल निवासियों में से हैं। उदाहरण के रूप में बुन्देलखण्ड के चन्देल राजपूत गोंड जाति से हैं। (विख्यात रानी दुर्गावती गोंड थी।)

(३) **अग्निकुल राजपूत**—कुछ एक राजपूत अपने आप को अग्निकुल कहते हैं। उनका कहना है कि उनके पूर्वज आबू पर्वत पर एक अग्निकुण्ड से जन्मे थे। यह एक प्रचलित कथा है कि जब परशु-राम ने सब क्षत्रियों का नाश कर दिया, तो कोई भी क्षत्रिय ब्राह्मणों की रक्षा के लिये न रहा। तब बहुत से ब्राह्मणों ने इकट्ठे होकर आबू (Abu) पर्वत पर एक यज्ञ किया जिसमें उन्होंने पवित्र अग्नि जलाई और ईश्वर से प्रार्थना की कि हमारी रक्षा के लिये कोई बलशाली जाति उत्पन्न करो। कहते हैं कि इस अग्नि में से चार वीर पुरुष प्रकट हुये जिन्होंने चार राजपूत वंशों परमार, परिहार, चौहान और चालुक्य की नींव रखी। इससे सिद्ध होता है कि ये वंश शुद्ध किये गये थे।

राजपूत भिन्न-भिन्न राज्यों में बंटे हुये थे। प्रत्येक राज्य एक राजा के अधीन होता था और राजा का पद परम्परागत था। कोई केन्द्रीय

राजपूतों की व्यवस्था (Organisation)

शासन न था। राजा सारी भूमि का स्वामी समझा जाता था। वह भूमि को अपने सरदारों में बाँट देता था। वे सरदार राजा के आज्ञाकारी होते थे और युद्ध में अपने राजा की सेना से सहायता किया करते थे। राज्य की आय का प्रधान साधन भूमि-कर था।

राजपूतों का चरित्र

गुण—राजपूत बड़े शूरवीर, गौरवप्रिय और दृढ़ प्रतिज्ञ थे। वे छल और कपट से रहित थे और अपने शत्रुओं के साथ भी बड़ी उदारता का व्यवहार करते थे। युद्ध उनका स्वाभाविक कार्य था। अपने जातीय सम्मान के लिये सिर कटा देना उनके लिये साधारण बात थी। वे युद्ध भूमि में शत्रु को पीठ नहीं दिखाते थे। राजपूत स्त्रियाँ भी वीरता में मनुष्यों से पीछे न थीं। वे बड़ी शुद्ध आचार वाली और पतिव्रता थीं। विपत्ति के समय में वे ऐसे साहस और वीरता का परिचय देती थीं जिसका उदाहरण संसार के इतिहास में ढूँढ़ने से भी नहीं मिलता। अपने सम्मान के लिये वे सहर्ष चिता में जीवित जल जाती थीं। इस प्रथा को जौहर कहते थे। उनमें सती की प्रथा भी थी।

राजपूत

त्रुटियाँ—परन्तु जहाँ राजपूतों में ये सब गुण थे, वहाँ उनमें कई त्रुटियाँ भी थीं। उनमें आपसी विरोध, अभिमान और द्वेष अत्याधिक था, वे आपस में लड़ते रहते थे। उनकी राजनैतिक सूझ दूर तक नहीं पहुँचती थी। इसी लिए वे कोई विशाल साम्राज्य स्थापित करने के अयोग्य थे और इसी कारण से वे मुसलमान आक्रमणकारियों के

विरुद्ध सफल न हो सके। उनमें कन्या-बध की कुरीति भी प्रचलित थी और वे अफीम के भी व्यसनी थे।

राजपूत रियासतें
Rajput
Kingdoms

मुसलमानी आक्रमण के समय भारत में बहुत से राजपूत राज्य विद्यमान थे, जिनमें से नीचे लिखे प्रसिद्ध थे :—

(१) देहली (Delhi)—देहली में *तंवार या तोमार* वंश राज्य करता था। इस वंश का पहला राजा अनङ्गपाल था और अन्तिम शासक *अनङ्गपाल द्वितीय* था। उसके कोई पुत्र न था, इसी लिये उसने देहली का राज्य अपने नाती (दोहते) पृथ्वीराज चौहान (अजमेर के शासक) को दे दिया था। 1192 ई० में मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज को तराईं (तरावड़ी) की दूसरी लड़ाई में हराया और इस राज्य को जीत लिया।

(२) अजमेर (Ajmer)—अजमेर में *चौहान वंश* राज्य करता था। इस वंश का अन्तिम और सबसे प्रसिद्ध राजा *पृथ्वीराज चौहान* था। देहली का राज्य उसे अपने नाना अनङ्गपाल द्वितीय से मिला था। पृथ्वीराज एक वीर और शक्तिशाली राजा था। उसने 1191 ई० में मुहम्मद गौरी को तराई (तरावड़ी) के मैदान में हराया, परन्तु अगले ही वर्ष मुहम्मद गौरी ने उसे उसी स्थान पर हरा कर मरवा दिया, और देहली तथा अजमेर पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। *पृथ्वीराज की मृत्यु से हिन्दू महानता का सूर्य सदा के लिये अस्त हो गया।*

(३) कन्नौज (Kanauj) —कन्नौज में *राठौर वंश* शासक था। इस वंश का अन्तिम और प्रसिद्ध राजा *जयचन्द राठौर* था। पृथ्वीराज उसकी लड़की संयुक्ता को स्वयंवर से उठा लाया था जिससे पृथ्वीराज और जयचन्द में शत्रुता हो गई थी। कहते हैं कि इसी राजा ने मुहम्मद गौरी को दिल्ली पर आक्रमण करने की सम्मति दी थी। 1194 ई० में गौरी ने जयचन्द को चन्दवार के मैदान में हराया और वह मारा गया। इससे कन्नौज के राज्य पर मुसलमानों का अधिकार हो गया।

(४) बिहार और बंगाल (Bihar & Bengal)—बिहार में पालवंश और बंगाल में सेन वंश राज्य करता था। पाल वंशज राजा बुद्धमत के अनुयायी थे। अन्ततः बारहवीं शताब्दी के अन्त में मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी ने इन दोनों वंशो को हराकर बिहार और बंगाल को इस्लामी राज्य में सम्मिलित कर लिया।

(५) मालवा (Malwa)—मालवा में परमार वंश का शासन था। इसकी राजधानी धार नगरी थी। इस वंश का प्रसिद्ध राजा भोज था जिसने 1018 ई० से 1060 तक राज्य किया। भोज बड़ा वीर, विद्या-प्रेमी, और संस्कृत का प्रसिद्ध विद्वान् था। उसके शासन काल में संस्कृत भाषा और साहित्य ने बड़ी उन्नति की। भोपाल के समीप उसने एक बहुत बड़ी झील बनवाई थी, जिसे आजकल भोजपुर झील कहते हैं।

(६) बुन्देलखण्ड (Bundelkhand)—यह रियासत यमुना और नर्बदा नदियों के मध्य में स्थित थी। कालिंजर इसका प्रसिद्ध दुर्ग था। वहाँ चन्देल वंश का राज्य था। 1203 ई० में कुतुबुद्दीन ऐबक ने इस रियासत को जीत कर मुसलमानी शासन में मिला लिया।

(७) मेवाड़ (Mewar)—यहां सिसोदिया वंश राज्य करता था जो अब तक राज्य कर रहा है। यह वंश सूर्य वंश से सम्बन्ध रखता है। इसकी नींव बापा रावल ने रक्खी थी। चित्तौड़ इसकी राजधानी थी। यहां के वीर राजपूतों ने कई बार आक्रमणकर्ताओं को परास्त किया और इस स्मृति में उन्होंने यहाँ विजय स्तम्भ (Tower of Victory) स्थापित किया जो अब तक विद्यमान है। राना संग्राम सिंह (सांगा) और राणा प्रताप इसी वंश में हुये हैं।

राजपूतों के भारतवर्ष में कई छोटे छोटे राज्य थे परन्तु उनका कोई केन्द्रीय राज्य न था। इस के कई कारण थे :—

केन्द्रीय राज्य स्थापित न कर सकना

१. उनमें विरोध, ईर्ष्या और द्वेष बहुत था। इसलिये वे परस्पर लड़ते रहते थे।

२. उनमें अपने अपने वंश (Clan) का इतना मान था कि वे

किसी दूसरे के अधीन होने को तैयार नहीं थे।

३. उनमें राजनैतिक दूरदर्शिता न थी। उन्हों ने अपनी शक्ति को संगठित करने के लिए कोई विशेष कार्य न किया।

४. किसी एक वंश की सेना किसी अन्य वंश की कमान तले लड़ने को तैयार न थी।

भारतीय सभ्यता और बस्तियाँ

(HINDU CULTURE AND COLONIES)

Q. Give a brief account of the Hindu Culture and Colonies outside India.

प्रश्न—*भारत के बाहर हिन्दू सभ्यता और हिन्दू बस्तियों का संक्षिप्त वर्णन करो।*

'*भारतवासी सदा से घरेलू रहे हैं*' इस भ्रम को वर्तमान की जांच पड़ताल ने सर्वथा झूठ सिद्ध कर दिया है। यह तो कुछ सीमा तक ठीक है कि हिन्दुओं ने विदेशों में अपना राज्य जमाने का यत्न नहीं किया, परन्तु भारतवासी व्यापार के लिये, धार्मिक प्रचार के लिये और बस्तियाँ बसाने के विचार से भारत से बाहर गये, और वहाँ उन्होंने अपनी सभ्यता फैलाई। कई देश तो ऐसे हैं, जहाँ हिन्दुओं ने अपनी सभ्यता फैलाई और कई ऐसे है जहाँ उन्हो ने अपनी बस्तियो भी बसाई।

विदेशों में भारतीय सभ्यता

अन्वेषकों ने अब पता लगाया है कि भारतीय सभ्यता का प्रभाव लगभग समस्त एशिया में विशेषकर चीन, जापान, लंका, ब्रह्मा, श्याम, मध्य एशिया तक पहुँचा।

लङ्का—कहावत तो यह है कि महाराजा रामचन्द्र के समय में भी रावण का छोटा भाई विभीषण हिन्दू सभ्यता का अनुयायी था। परन्तु ऐतिहासिक काल में हिन्दुओ का आवागमन ईसा से छः सौ वर्ष पहले हुआ। तदनन्तर अशोक ने अपना लड़का (या भाई) महेन्द्र और कुछ समय पीछे अपनी लड़की (या बहन) संघमित्रा बुद्धमत के प्रचार के

लिए लंका में भेजे, जिनके प्रभाव से लङ्का बुद्धमत का अनुयायी देश हो गया और अभी तक इसी मत का अनुयायी है।

ब्रह्मा–ब्रह्मा का नाम ही यह प्रकट करता है कि इस देश का भारत से गूढ सम्बन्ध रहा है। भारतीय सभ्यता और आचार-विचार का ब्रह्मा-वासियों के जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। अशोक ने बुद्धमत के प्रचारक इस देश में भेजे थे। उस समय से यहाँ बुद्धमत प्रचलित है।

श्याम–यह देश ईसा की लगभग तीसरी शताब्दी से लेकर सोलहवीं शताब्दी तक हिन्दुओं के अधीन रहा। यहाँ के राज्यवंश में अब भी हिन्दू नाम ही प्रचलित है। यहां रामायण की कथा बहुत प्रचलित है और एक विख्यात मन्दिर की दीवारों पर रामायण की कहानियों के चित्र बने हुये हैं।

मध्य एशिया–सर आरल स्टाइन (Sir Aurel Stein) ने जो खुतन और गोबी के मरुस्थल में खोज का काम किया करते थे कई ऐसे खंडहर मालूम किये, जहां आज से दो हजार वर्ष पूर्व भारतीय बसे हुये थे। भारतीय सिक्के, लेख तथा बौद्धों और हिन्दू देवताओं की मूर्तियाँ वहाँ पाई गई हैं। इस भाग को भारतीय राजाओं में कनिष्क ने विजय किया था और उसने वहाँ बुद्ध धर्म के प्रचारकों को भेजा था। इन प्रचारकों ने वहां जाकर बुद्धमत और भारतीय सभ्यता को फैलाया। मध्य एशिया से भारतीय सभ्यता और बुद्धमत चीन में फैले और भारत तथा चीन में बुद्धमत फैल गया। कई चीनी बौद्ध यात्री समय समय पर भारत में आये और यहाँ से कई पुस्तकें साथ ले गये और उनका अनुवाद चीनी भाषा में किया। इनमें फाह्यान और ह्यूनसांग के नाम प्रसिद्ध हैं। इस कार्य के लिये सैंकड़ों भारतीय विद्वान् भी चीन जा कर बस गये। चीन से भारतीय सभ्यता कोरिया और जापान में फैली।

हिन्दुओं ने पूर्वी द्वीप समूह के टापुओं जावा, सुमात्रा और बाली में और हिन्दचीनी के भागों कम्बोडिया और चम्पा में अपनी बस्तियाँ

भी बसायीं और कोई एक हज़ार वर्ष तक वहाँ भारतीय सभ्यता ज़ोरों पर थी। इन सब बस्तियों को Greater India कहते थे।

विदेशों में भारतीय बस्तिया

जावा और सुमात्रा— भारतीय बस्तियाँ बसाने वाले सब से पहले इन दोनो द्वीपो में जा बसे, क्योंकि ये द्वीप भारत के अत्यन्त निकट थे। ईसा की पाँचवीं शताब्दी मे जब फाह्यान जावा द्वीप में गया तो उस समय वहाँ हिन्दू धर्म ज़ोरों पर था। आज कल वहाँ का मत इस्लाम है, परन्तु सभ्यता अब भी भारतीय ही है।

बाली—यह द्वीप हिन्दुओ के लिये विशेष दिलचस्पी का कारण है, क्योंकि वहाँ अब भी हिन्दू धर्म प्रचलित है। वहाँ के निवासी हिन्दू देवताओं की पूजा करते हैं। लोग महाभारत का पठन-पाठन करते हैं। इस महाभारत की भाषा संस्कृत है, परन्तु लिपि उनकी अपनी है। यहाँ जात-पात भी है।

कम्बोडिया—ईसा की पहली शताब्दी में हिन्दुओ ने कम्बोडिया में बस्ती बसाई और वहाँ एक प्रबल साम्राज्य स्थापित किया। आठवी और नवीं शताब्दी में यह साम्राज्य उन्नति पर था। इसकी राजधानी अगकोर थी जहाँ हिन्दू देवताओं के सुन्दर मन्दिर थे। किसी समय में अंगकोर थाम संसार के अति उत्तम नगरो में से था, परन्तु आजकल वहाँ जगल ही जंगल हैं। इस साम्राज्य का पतन तेरहवीं शताब्दी में हुआ।

चम्पा—हिन्दुओं की यह बस्ती कम्बोडिया के उत्तर में स्थित थी। इसे हिन्दुओं ने ईसा की पहली शताब्दी में बसाया। इसकी राजधानी अमरावती नगर था। इस राज्य में कई प्रभावशाली राजे हुए। पन्द्रवीं शताब्दी मे इसका पतन हो गया। यह रियासत भारतीय और चीनी सभ्यता का संगम थी। आजकल वहाँ के वासी अधिकतर इस्लाम के अनुयायी हैं।

मुसलमानों का युग

इस्लाम और सिंध विजय

(CONQUEST OF SIND)

Q. Give a brief account of the life of Muhammad the Prophet and the early rise of Islam.

(P. U. 1919-43)

प्रश्न—*हजरत मुहम्मद साहिब की जीवनी और इस्लाम मत के आरम्भ और उन्नति का वर्णन करो।*

हजरत मुहम्मद साहिब

ईसा की सातवीं शताब्दी के आरम्भ में अरब देश में इस्लाम मत का जन्म हुआ। इस मत के प्रवर्तक हजरत मुहम्मद साहिब थे। आप 570 ई० में अरब के प्रसिद्ध नगर मक्का (Mecca) में उत्पन्न हुये। प्रारम्भ से ही आप धार्मिक विचारों में मग्न रहते थे। उस समय अरबवासी मूर्ति पूजक थे और उनमें कई कुरीतियाँ विद्यमान थीं परन्तु हजरत मुहम्मद साहिब मूर्ति पूजा के घोर विरोधी थे। चालीस वर्ष की आयु में आप ने पैगम्बर होने की घोषणा की और इस्लाम मत की नींव डाली। आपकी शिक्षा यह थी कि *परमात्मा एक है, हजरत मुहम्मद साहिब उसके पैग़म्बर हैं, मूर्ति पूजा घोर पाप है, इसे छोड़ देना चाहिये, इत्यादि।* कुछ लोगों ने आप पर विश्वास किया, परन्तु साधारण जनता आपकी शत्रु हो गई और उसने आप का इस भांति विरोध किया कि 622 ई० में आप को मक्का छोड़ मदीना चले जाना पड़ा। इस समय से मुसलमानों का *हिजरी सम्वत्* आरम्भ होता है। मदीना वालों की सहायता से आप ने मक्का पर विजय पाई और मूर्ति-पूजा का अन्त कर दिया। अन्त में 632 ई० में आपका परलोक वास हो गया और आपको मदीना में दफ़न किया गया।

हज़रत मुहम्मद साहिब की मृत्यु के बाद उनका स्थान उनके खलीफ़ो ने ले लिया और उन खलीफों ने इस्लाम के सन्देश को सारे संसार में पहुँचाने का प्रयत्न किया। अरब का देश तो हज़रत मुहम्मद साहिब के जीवन काल में ही इस्लाम के झंडे तले आ गया था। अब मुसलमानों ने चारों ओर विजयें आरम्भ कर दीं और इस्लाम का प्रचार किया। यहाँ तक कि हज़रत मुहम्मद साहिब की मृत्यु से सौ वर्ष के अन्दर अन्दर *इस्लाम मत उत्तर में अनातोलिया तक, पश्चिम मे उत्तरी अफ़रीका, स्पेन और पुर्तगाल तक, और पूर्व मे ईरान तथा अफ़ग़ानिस्तान तक फैल गया।*

इस्लाम की उन्नति

Q. Give a brief account of the Arab conquest of Sind Why was it not permanent? (P.U. 1940-43-51)

प्रश्न—*अरबों की सिंध-विजय का संक्षिप्त वर्णन करो। यह स्थायी सिद्ध क्यों न हुई?*

कारण—आठवीं शताब्दी के आरम्भ में लंका के राजा ने भेंट से भरे हुए कुछ जहाज़ खलीफा के लिये भेजे परन्तु इन जहाज़ों को सिंध की बन्दरगाह *देबल* (Debal) (वर्तमान कराची) के समीप समुद्री डाकुओं ने लूट लिया। उस समय सिंध और मुलतान का शासक *राजा दाहर* (Dahir) था। जब उस से बसरा के मुसलमान शासक *हज्जाज* (Hajjaj) ने हानि को पूरा कर देने के लिए कहा तो दाहर ने कहा कि वह बन्दरगाह मेरी अधीनता में नहीं है। इस पर हज्जाज ने एक सेना भेजी, जो परास्त हो गई। तब उसने 711 ई० में अपने अठारह वर्ष के नवयुवक भतीजे *मुहम्मद बिन कासिम* को सेना देकर सिंध पर आक्रमण करने के लिए भेजा।

सिंध विजय 712 ई०

घटनायें—*मुहम्मद बिन कासिम* (Mohd-bin-Qasim) एक चतुर सेनापति था। वह मकरान (बलूचिस्तान) के मार्ग से भारत में प्रविष्ट हुआ। उसने आते ही **देबल** (Debal) नगर को जीत लिया और

फिर सिन्ध नदी को पार करके आगे बढ़ा। **रावड़** (Rawar) के स्थान पर राजा दाहर से उसका युद्ध हुआ परन्तु दाहर हार गया और युद्ध में ही मारा गया। दाहर की विधवा रानी ने दुर्ग का आश्रय लेकर बड़ी वीरता से मुसलमानो का सामना किया। जब सफलता की कोई आशा न रही तो वह अपने सतीत्व की रक्षा के लिये बहुत सी स्त्रियों के साथ आग में जलकर मर गई। इसके बाद मुहम्मद बिन कासिम ने **ब्राह्मणाबाद, मुल्तान** और कुछ अन्य नगरो पर विजय पाई। इस प्रकार सिन्ध पर मुसलमानो का अधिकार हो गया। इसके पश्चात् शीघ्र ही मुहम्मद बिन कासिम को बुला लिया गया और खलीफा ने किसी रोष के कारण उसे मरवा दिया।

सिंध पर अरबों का राज्य—सिंध लगभग दो सौ वर्ष अरबो के अधीन रहा परन्तु यह अधीनता केवल नाम मात्र ही थी। अरबों ने लोगों के रहन सहन में किसी प्रकार का हस्ताक्षेप नहीं किया, प्रबन्ध कार्य अधिकतर हिन्दुओं के हाथ में ही रहा। धार्मिक विषयों में अधिक हस्ताक्षेप नहीं किया, केवल जज़िया (कर) लगा दिया। इस जज़िया के कारण बहुत से हिन्दू मुसलमान बन गये।

अरबों की असफलता—अरबो की सिंध विजय स्थायी सिद्ध न हुई, न केवल वे अपने राज्य को इससे आगे ही बढ़ा न सके वरन् वे सिन्ध प्रान्त पर भी अपना अधिकार न रख सके। इसके बड़े बड़े कारण निम्नलिखित थे :—

(१) अरब लोग गलत मार्ग से भारत में प्रविष्ट हुए। सिंध मरु-भूमि होने के कारण उनके लिये कोई आकर्षण न रखता था।

(२) सिंध की विजय के लिये जो सेनायें भेजी गई थीं वे अपर्याप्त थीं।

(३) सिंध मुसलम राज्य से बहुत दूर था और उन दिनों जब कि आवागमन के साधन अच्छे न थे. सिंध पर प्रभुत्व बनाये रखना बहुत कठिन था।

(४) सिन्ध और शेष भारतवर्ष के बीच एक शुष्क मरुस्थल स्थित

था जो मुसलमानों के आगे बढ़ने में बड़ी रुकावट थी।

(५) खलीफों की शक्ति कम हो गई थी अतः वे विजयों के क्रम को बढ़ा न सके।

(६) सबसे बड़ा कारण यह था कि भारतवर्ष में उस समय वीर राजपूतों का राज्य था और उनको परास्त करना कुछ सुगम न था।

सुल्तान महमूद ग़ज़नवी

(MAHMUD OF GHAZNI)

997—1030

अफ़ग़ानिस्तान में मुसलमानों का एक छोटा सा राज्य ग़ज़नी में था। 977 ई० में सुबुक्तगीन नामक एक व्यक्ति जो यथार्थ में एक तुर्क दास था वहाँ का शासक बना। वह वीर और साहसी था। राजगद्दी पर बैठते ही उसने आस-पास के प्रदेशों को जीतना प्रारम्भ कर दिया। उन दिनों पंजाब में *राजा जयपाल* राज्य करता था और सिन्ध पार काबल तक का प्रदेश उसके अधीन था। इसकी राजधानी *बठिंडा* थी। सुबुक्तगीन ने उसे दो बार परास्त किया और सिंध पार का सीमा प्रदेश उससे छीन लिया। जयपाल ने दोनों बार कर देने की प्रतिज्ञा कर छुटकारा पाया। कोई बीस वर्ष राज्य करने के पश्चात् 997 ई० में सुबुक्तगीन की मृत्यु हो गई और उसका बेटा महमूद सिंहासन पर बैठा।

सुबुक्तगीन

☞Q. Give an account of the important invasions of Mahmud. What was their object ? Also describe the causes of his success. Form an estimate of Mahmud's character and achievements.
(P. U. 1935-45-53) (Important)

प्रश्न—*महमूद कौन था ? उसके प्रसिद्ध आक्रमणों का वर्णन करो और बताओ कि उन आक्रमणों का उद्देश्य क्या था ? उसकी सफलता के कारण भी वर्णन करो। महमूद के चरित्र और पराक्रमों पर नोट लिखो।*

महमूद गज़नी के शासक सुबुक्तगीन का बेटा था। 997 ई० में अपने पिता के मरने के बाद वह गज़नी का शासक बना। सिंहासनारोहण के समय उसकी आयु छब्बीस वर्ष की थी। वह बड़ा शूरवीर और प्राणपण से लड़ने वाला विजयी योद्धा था।

महमूद ग़ज़नवी
997—1030

महमूद के आक्रमण—महमूद ने भारत पर *कोई सत्रह आक्रमण* किए। वह जाड़े में आक्रमण करता और ग्रीष्म ऋतु आरम्भ होने से पहले ही वापस लौट जाता था। उसके आक्रमणों के दो प्रयोजन थेः—

(१) वह कट्टर मुसलमान होने के कारण भारत में इस्लाम को फैलाना चाहता था।

(२) वह देश के धन को हथियाना चाहता था। यही कारण है कि उसके कई आक्रमण मन्दिरों पर हुये, जहाँ कि उसके दोनो प्रयोजन सुगमता से पूरे हो सकते थे। उसके कुछ एक प्रसिद्ध आक्रमण निम्नलिखित हैं :—

(१) जयपाल पर चढ़ाई—1001 ई० में महमूद ने पंजाब के राजा जयपाल पर आक्रमण किया, क्योंकि उसने सिंध पार के अपने खोये हुये प्रदेश को वापिस लेने की चेष्टा की थी। *पेशावार के समीप* जयपाल परास्त हुआ और पकड़ा गया। जयपाल ने पूर्ववत् कर देने की प्रतिज्ञा करके छुटकारा पाया परन्तु वह इस अपमान को न सह सका और चिता में जल कर मर गया। इसके पश्चात् उसका पुत्र *आनन्दपाल* उसका उत्तराधिकारी बना।

(२) आनन्दपाल की पराजय (1008)—महमूद की बढ़ती हुई शक्ति से पंजाब के राजा आनन्दपाल को बड़ी चिंता हुई और उसने महमूद का सामना करने के लिये शक्तिशाली राजपूत राजाओं को संगठित किया। हिन्दुओं में इस समय बड़ा जोश था। हिन्दू स्त्रियों ने अपने गहने बेचकर और निर्धन स्त्रियों ने सूत कातकर युद्ध के लिए धन भेजा। खोखर भी—जो एक युद्ध-प्रिय जाति थी—हिन्दुओं के

साथ थे। 1008 ई० में *पेशावर के समीप* दोनों सेनाओं का सामना हुआ और अति भयानक युद्ध हुआ। महमूद की सेनाएँ हार जाने को थीं कि उसी समय आनन्दपाल का हाथी डर कर युद्ध-क्षेत्र से भाग निकला, अतः सेना में भगदड़ मच गई। महमूद की जीत हुई और बहुत से हिन्दू मारे गये।

(३) **नगरकोट पर आक्रमण** (1009)—1009 ई० में महमूद ने नगरकोट अर्थात् कांगड़े के दुर्ग पर आक्रमण किया और बड़ी सुगमता से इसे जीत लिया और अगणित धनराशि लेकर ग़ज़नी को लौट गया। इस लूट के माल में चाँदी का एक घर ३० गज़ लम्बा और १५ गज़ चौड़ा भी था जो पृथक् हो सकता था और फिर जोड़ा जा सकता था।

(४) **मथुरा और कन्नौज पर आक्रमण** (1018)—1018 ई० में महमूद कन्नौज की ओर बढ़ा, *जो उन दिनो उत्तरी भारत मे एक सुन्दर नगर था*। मार्ग में महमूद ने मथुरा को खूब लूटा और वहाँ के अनेक सुन्दर मन्दिरों को गिराकर मिट्टी में मिला दिया। जब वह कन्नौज पहुँचा तो वहाँ के राजा *राज्यपाल* ने अधीनता मान ली जिस से महमूद को बहुत सी धन-सम्पत्ति मिल गई।

(५) **लाहौर पर आक्रमण** (1021)—1021 ई० में महमूद ने लाहौर को भी जीत लिया और वहाँ एक मुसलमान गवर्नर नियुक्त कर दिया। इस प्रकार पंजाब उसके साम्राज्य का एक भाग बन गया।

☞ (६) **सोमनाथ पर आक्रमण** (1025)—1025 ई० में महमूद ने सोमनाथ के मन्दिर पर जो काठियावाड़ के दक्षिण में समुद्र तट पर विद्यमान था आक्रमण किया। यह उसका सबसे प्रसिद्ध आक्रमण था। महमूद ग़ज़नी से चल कर *मुलतान* और *अजमेर* होता हुआ राजपूताने के मरुस्थल को पार कर सोमनाथ पहुँचा। वीर राजपूत-सरदारों ने अपने इस मन्दिर की रक्षा के लिये जो उस समय सब से अधिक पवित्र और धनपूर्ण था प्राणपण से सामना किया। तीन दिन घमासान युद्ध

हुआ, परन्तु जीत महमूद की ही हुई। उसने मन्दिर में प्रविष्ट होकर मूर्ति को तोड़ डाला और अगणित धन समेट कर ग़ज़नी लौट गया। इस आक्रमण के लगभग पाँच वर्ष के पश्चात 1030 ई० में ग़ज़नी में महमूद की मृत्यु हुई।

आक्रमणों का प्रभाव—महमूद ने भारतवर्ष में कोई राज्य स्थापित नहीं किया। उसके आक्रमणों का प्रभाव केवल निम्नलिखित था :—

१—उसने पंजाब को स्थायी रूप से अपने साम्राज्य मे मिला लिया।

२—उसके निरंतर आक्रमणो से उत्तरी भारत के राजा निर्बल हो गये। इसीलिए उसके उत्तरकालीन मुसलमान आक्रमणकारियो के लिये भारत पर विजय पाने का मार्ग निष्कंटक हो गया।

३—इसके अतिरिक्त भारतवर्ष धन से वंचित हो गया और बड़े-बड़े मन्दिर और भवन नाश हो गये।

सफलता के कारण—महमूद की विजयों के कारण निम्नलिखित थे :—

१. उस समय भारत में कई छोटी-छोटी रियासतें थीं और हिन्दुओ में राजनैतिक एकता न थी।

२. राजपूतो में परस्पर ईर्ष्या और द्वेष था जिससे वे संगठित होकर मुकाबला न कर सकते थे।

३. महमूद स्वयं एक वीर तथा युद्ध प्रिय सैनिक था। वह बड़ा साहसी तथा प्राणपण से लड़ने वाला था।

४. महमूद के सैनिको में बड़ा धार्मिक जोश था और वे हिन्दुओ को हराना पुण्य का काम समझते थे इसलिए वे बड़ी वीरता से लड़ते थे।

महमूद के चरित्र में कुछ एक बातें भली भाँति स्पष्ट हैं :—

महमूद का चरित्र

प्रथम तो यह कि वह एक *विजयी वीर सेनापति* था। भारत पर उसके आक्रमण उसके वीर सैनिक और योद्धा होने का प्रमाण हैं।

दूसरी यह कि वह *विद्या-प्रेमी और विद्वानों* का आदर करने

शाला था, यही कारण था कि उसकी राज-सभा में बहुत योग्य विद्वान् एकत्र रहते थे जिनमें सबसे प्रसिद्ध *फ़िरदौसी* और *अल्बेरूनी* थे। उसने अपनी राजधानी गज़नी में एक विश्वविद्यालय, एक पुस्तकालय और एक अद्‌भुतालय (अजायबघर) बनवाया। इसके अतिरिक्त वहाँ उसने उत्तम-उत्तम मस्जिदें और भवन भी बनवाये जिससे गज़नी एक सुन्दर नगर बन गया।

तीसरी यह कि वह *न्याय प्रिय* था। सब मुसलमानों से एक जैसा बर्ताव करता था। निर्धन और अत्याचार से पीड़ितों का स्वयं न्याय करता था।

चौथी यह कि उसे अपने धर्म से बड़ा प्रेम था।

परन्तु इन सब गुणों की अपेक्षा उसमें कई एक **त्रुटियाँ** भी थीं। एक तो वह *धन का लोभी* था, मरते समय अपना कोष देखकर रो दिया। दूसरे यह *कि उसने साम्राज्य की दृढता के लिये कोई विशेष कार्य नहीं किया*। इसलिये उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका साम्राज्य कई एक टुकड़ों में बँट गया।

Q. Write notes on (a) Firdausi (b) Alberuni.

प्रश्न—*फ़िरदौसी और अल्बेरूनी पर संक्षिप्त नोट लिखो।*

फ़िरदौसी महमूद के समय में फारसी का एक अत्यन्त प्रसिद्ध और उच्चकोटि का कवि था। वह खुरासान के एक नगर **तूस** (वर्तमान मशहद) में उत्पन्न हुआ था। उसने *शाहनामा* नामक एक पुस्तक लिखी। कहते हैं कि सुलतान महमूद ने फिरदौसी से प्रतिज्ञा की थी कि वह शाहनामा के प्रत्येक श्लोक के लिये एक मोहर देगा, परन्तु जब पुस्तक तैयार हो गई तो उसने मोहर के स्थान प्रति श्लोक एक रुपया देना चाहा। फिरदौसी ने रुपया लेने से इन्कार कर दिया और शाहनामे के आरम्भ में महमूद की निन्दा लिखकर चला गया। कहा जाता है कि निन्दा के श्लोकों को सुनकर सुलतान ने कुछ समय के बाद अपने प्रण

फ़िरदौसी

के अनुसार उसे मोहरें भेजी, परन्तु उस समय तक फिरदौसी की मृत्यु हो चुकी थी।

अल्बेरूनी का यथार्थ नाम अबूरेहान था। वह खीवा (Khiva) देश का रहने वाला था। वह चतुर गणितज्ञ, इतिहासकार, फिलास्फर तथा संस्कृत का विद्वान था और अपने समय में संसार भर के उच्चकोटि के विद्वानों में से था। वह महमूद के साथ भारत में आया और कुछ समय यहाँ रहा। उसने हिन्दुओं के दैनिक जीवन के सम्बन्ध में एक विद्वत्तापूर्ण पुस्तक लिखी, जिसका नाम 'तहकीक-इ-हिंद' है। यह पुस्तक उस काल के इतिहास का एक अमूल्य स्रोत है। इसके अतिरिक्त अल्बेरूनी ने संस्कृत की कई पुस्तकों का फारसी में अनुवाद भी किया। ७५ वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई।

अल्बेरूनी

शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी

(SHAHAB-UD-DIN MUHAMMAD GHORI)

1175—1206

शहाबुद्दीन जो इतिहास में मुहम्मद गौरी के नाम से प्रसिद्ध है, रियासत गौर (अफगानिस्तान में स्थित) के शासक गियासुद्दीन का छोटा भाई था। वह बड़ा वीर और प्राणपण से लड़ने वाला योद्धा था।

मुहम्मद गौरी

शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी

1173 ई० में उसके भाई ने गजनी का राज्य जीत कर उसे सौंप दिया था। मुहम्मद गौरी ने सब से पहले गजनी में अपना राज्य सुदृढ़ किया और इसके बाद भारत की ओर बढ़ा। उसकी इच्छा

भारत में इस्लामी राज्य स्थापित करने की थी और उसकी यह इच्छा पूरी भी हुई। *इस प्रकार मुहम्मद ग़ौरी ही भारत मे इस्लामी राज्य का स्थापनकर्ता सिद्ध हुआ।*

Q. Briefly describe the conquest of India under Mohammad Ghori and his Generals.

(P. U. 1919-22-26-46)

प्रश्न—*मुहम्मद ग़ौरी और उसके सेनापतियो के हाथों भारत विजय का वर्णन करो।*

मुहम्मद ग़ौरी और भारत विजय

मुहम्मद ग़ौरी ने १२वीं शताब्दी के अन्तिम भाग में भारत पर आक्रमण किये। उस समय *पंजाब* और *सिन्ध* पर इस्लामी राज्य था। *देहली* तथा *अजमेर* में पृथ्वीराज चौहान राज्य करता था। *कन्नौज* में जयचन्द राठौर का राज्य था। उसका राज्य बनारस तक फैला हुआ था और जयचन्द अधिकतर बनारस मे ही रहता था। *गुजरात* में भीमदेव राज्य करता था। बुन्देलखण्ड में चन्देलों का राज्य था। कन्नौज के पूर्व में *बिहार* और *बंगाल* के राज्य थे। मुहम्मद ग़ौरी ने इन सब को विजय कर उत्तरी भारत मे मुसलमानों का राज्य स्थापित किया।

(१) पंजाब और सिंध की विजय—मुहम्मद ग़ौरी ने ग़ज़नी पर अधिकार कर लेने के पश्चात् भारत पर आक्रमण किया। 1175 ई० में उसने *मुलतान* पर विजय पाई और *सिंध* पर अधिकार कर लिया। इस के तीन वर्ष पश्चात् उसने गुजरात की राजधानी *अनोहलवाडा* पर आक्रमण किया परन्तु राजा भीमदेव ने उसे परास्त किया। 1186 ई० में उसने लाहौर के शासक *खुसरो मलिक* को जो ग़ज़नी वंश का अंतिम बादशाह था, *पदच्युत कर दिया*। इस प्रकार पंजाब और सिध पर उसका अधिकार हो गया।

(२) तराई की पहली लड़ाई—1911 ई० में मुहम्मद गौरी देहली की ओर बढ़ा, परन्तु वीर राजपूत सरदारो ने देहली के सम्राट् *पृथ्वीराज चौहान* के नेतृत्व में असंख्य सेना के साथ तराई के मैदान

में (जिसे तरावड़ी भी कहते हैं) उसका सामना किया। मुहम्मद गौरी घायल हो गया और मुसलमान हार कर युद्ध-क्षेत्र छोड भागे। यह लड़ाई तराई की पहली लड़ाई के नाम से प्रसिद्ध है।

☞ **(३) तराई की दूसरी लड़ाई**—दूसरे ही वर्ष अर्थात् 1192 ई० में मुहमम्द गौरी पिछली पराजय का प्रतिकार लेने के लिए एक लाख बीस हजार अश्वारोहियों के साथ फिर तराई के मैदान में आ डटा। घमासान युद्ध हुआ। परन्तु इस बार राजपूतों की पराजय हुई और पृथ्वीराज पकड़ा गया और मार डाला गया। तराई की दूसरी लड़ाई एक निर्णयात्मक लड़ाई थी। *इस से राजपूतों की शक्ति का ह्रास हो गया और भारत में मुसलमानों के राज्य की नींव पड़ गई।*

इसके पश्चात् मुहम्मद गौरी अपने एक विश्वास-योग्य दास कुतुबुद्दीन ऐबक को अपना वायसराय नियत करके गज़नी लौट गया। कुतुबुद्दीन ने शीघ्र ही *देहली*, *मेरठ*, *अजमेर* और *अलीगढ* को जीत लिया और देहली को राजधानी बनाया।

(४) कन्नौज विजय—1194 ई० में मुहम्मद गौरी फिर भारत में आया और उसने कन्नौज के शासक *जयचंद राठौर* को चन्दवार के मैदान में परास्त किया और कन्नौज तथा बनारस पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। इसके पश्चात् बहुत सारे राजपूत राजपूताना में जा कर बस गये।

(५) गुजरात और बुन्देलखण्ड पर विजय—कुतुबुद्दीन ऐबक ने कुछ एक वर्षों में पहले *गुजरात* और फिर *बुन्देलखण्ड* को भी (जिसकी राजधानी कालिंजर थी) जीत लिया।

(६) बिहार और बङ्गाल विजय—बिहार के थोड़े से भाग पर पाल वंश और बंगाल में सेन वंश का राज था। मुहम्मद गौरी के एक सेनापति *मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी* ने (1197 ई० में) बिहार पर बेरोकटोक विजय पाई और फिर बंगाल की राजधानी *नदिया* पर चढ़ाई की। वहाँ का राजा लछमण सेन डर के मारे भाग खड़ा हुआ। और (1199 ई० में) बंगाल भी मुसलमानी साम्राज्य का अंग बन

गया। इस प्रकार सारे उत्तरी भारत पर मुसलमानी साम्राज्य छा गया।

(७) **मुहम्मद गौरी की मृत्यु**—1205 ई० में मध्य पंजाब में खोखर नाम की एक युद्ध-प्रिय जाति ने विद्रोह कर दिया। मुहम्मद गौरी ने ग़ज़नी से आकर इस विद्रोह को शान्त किया। परन्तु जब वह लौटकर जा रहा था तो किसी खोखर ने 1206 ई० में उसे धम्याक (ज़िला जेहलम) के स्थान पर वध कर दिया।

Q Whom do you consider to be the real founder of Muslim rule in India, Mahmud Ghaznavi or Muhammad Ghori? Give reasons in support of your answer.

प्रश्न—*तुम्हारे विचार में भारत में मुस्लिम राज्य का वास्तविक संस्थापक कौन था, महमूद ग़जनवी या मुहम्मद ग़ौरी? अपने उत्तर को युक्तियों से स्पष्ट करो।*

मुस्लिम राज्य का संस्थापक

भारत में मुस्लिम राज्य का संचालक मुहम्मद गौरी था, न कि महमूद गज़नवी। इसमें संशय नहीं कि महमूद को मुहम्मद गौरी की अपेक्षा अधिक विजयें प्राप्त हुईं और उसे किसी मैदान में भी हार का मुंह नहीं देखना पड़ा। परन्तु महमूद के आक्रमणों का *मुख्य उद्देश्य केवल लूट-मार और इस्लाम का प्रचार करना था। भारत में मुस्लिम राज्य स्थापित करना उसकी शक्ति से बाहर था।* वह भारत के धन को मध्य एशिया के आक्रमणों पर व्यय करना चाहता था। पंजाब की विजय के अतिरिक्त उसके आक्रमणों का कोई स्थायी परिणाम न निकला। अधिक से अधिक यह कहा जा सकता है कि महमूद ने दूसरे मुसलमान आक्रमणकारियों को *भारत पर विजय पाने का मार्ग दिखाया।*

इसके विपरीत मुहम्मद गौरी भली प्रकार जानता था कि हिन्दुओं की राजनैतिक अवस्था बड़ी शिथिल है और भिन्न भिन्न राजपूत रियासतें आपस में लड़ती रहती हैं। इस लिए उसने लाभ उठाकर भारत में *मुस्लिम-राज्य स्थापित करने का विचार किया।* उसकी विजयें स्थायी और

लाभकारी सिद्ध हुई। उसने अपने योग्य सेनापतियों की सहायता से सारा उत्तरी भारत जीत लिया और मुस्लिम राज्य की नींव रखी अतः मुहम्मद गौरी ही मुस्लिम राज्य का सञ्चालक था।

Q. Briefly describe the causes of the Muslim success in their wars with the Rajputs. (P.U.1950-53)

प्रश्न—राजपूतों के मुकाबले में मुसलमान आक्रमणकारियों की विजय के कारण सक्षेप से लिखो।

मुसलमानों की विजय के कारण

राजपूत बड़े वीर और युद्ध कुशल थे। वे अपने शत्रुओं अर्थात् मुसलमानों से किसी प्रकार भी कम वीर न थे। परन्तु मुहम्मद गौरी ने उन्हें पच्चीस तीस वर्ष के थोड़े से काल में ही हरा कर उत्तरी भारतवर्ष पर अधिकार कर लिया और इस्लामी राज्य स्थापित कर दिया। इस मुकाबले में राजपूतों की हार और मुसलमानों की विजय के कई कारण थे।

(१) राजपूतों में राजकीय संगठन का अभाव—मुसलमानों की सफलता का बड़ा कारण यह था कि हिन्दुओं में एकता और संगठन का नाम तक न था। भिन्न-भिन्न राजपूत सरदार परस्पर लड़ते रहते थे। उनमें जातीयता का भाव ही न था और वे एकचित्त होकर शत्रु का सामना नहीं कर सकते थे। तराई की दूसरी लड़ाई में कन्नौज के शासक जयचन्द ने पृथ्वीराज की कोई सहायता न की। 1194 ई० में जब जयचन्द की बारी आई तो उसका पड़ोसी चंदेल राजा तमाशा देखता रहा।

(२) सैनिक संगठन का अभाव—मुसलमान अधिक संगठित थे। उनकी सारी सेना एक ही सेनापति की अधीनता में होती थी और उसी एक के आदेश पर चलती थी, परन्तु राजपूत सेनायें भिन्न-भिन्न सेनानायकों की अधीनता में होती थीं जिस से मिलकर काम करना असम्भव था।

(३) गर्म जल-वायु—शीत देशों के निवासी होने के कारण

मुसलमान लोग बलवान और शक्तिशाली थे, परन्तु राजपूत लोग भारत के गर्म जल-वायु के प्रभाव से आलसी और निर्बल हो चुके थे।

(४) **पुरानी युद्ध रीति**—मुसलमान लोग युद्ध विद्या में बड़े चतुर थे और उस समय की युद्ध-कला से पूर्ण रूप से परिचित थे। किन्तु राजपूत लोग प्राचीन समयों की भान्ति अपने हाथियों पर विश्वास रखते थे। यह हाथी मुसलमानों के तेज़ दौड़ने वाले घोड़ों के आक्रमण से डर कर अपनी ही सेना को रोंद डालते थे।

(५) **मुसलमानों में धार्मिक जोश**—मुसलमानो में धार्मिक उत्साह कूट-कूट कर भरा हुआ था। उनका यह विश्वास था कि अमुस्लिम देशों में मुस्लिम राज्य स्थापित करना और इस्लाम का प्रचार करना पुण्य का कार्य है। इसके विपरीत हिन्दुओं में यह भाव नहीं था।

(६) **मुसलमानों का प्राणपण से लड़ना**—मुसलमानों को भली प्रकार विदित था कि हार का मुँह देखने पर उनके लिये अपने देश को लौटना सम्भव नहीं हो गा, अपितु मार्ग में ही इन्हे मौत के घाट उतार दिया जायगा इसलिये वे बड़ी वीरता से सामना करते थे जिससे पीछे भागने का अवसर ही न आये।

(७) **मुसलमानों के पास भरती का अच्छा देश**—मुसलमानो के पास नई सेना भरती करने के लिये बड़ा अच्छा देश था और अगणित लोग केवल धन प्राप्ति के लोभ से ही इस्लामी सेना में भरती होकर भारतवर्ष में लड़ने के लिए आ जाते थे। परन्तु राजपूत राजाओं के छोटे-छोटे राज्य थे और वे भी परस्पर लड़ते रहते थे अतः किसी भी राजपूत राजे के लिये सेना की भरती का क्षेत्र बड़ा ही सीमित और संकुचित होता था।

(८) **केन्द्रीय राज्य का अभाव**—राजपूत छोटे-छोटे राज्यो में बटे हुये थे और देश में कोई शक्तिशाली केन्द्रीय साम्राज्य न था इसलिये मुसलमानों को उन पर विजय पाना सुगम था।

(९) **अहिंसा का प्रभाव**—अहिंसा के सिद्धान्त ने भारतवासियों को निर्बल तथा शान्ति प्रिय बना दिया था इसलिये वे मुसलमानों का

मुकाबला न कर सके। यही कारण था कि बिहार बंगाल के प्रान्त, जो बुद्धमत के गढ़ थे, मुसलमानों ने सुगमता से जीत लिए।

(१०) **उत्तरी-पश्चिमी सीमा को दृढ़ न करना**—राजपूतों ने उत्तर-पश्चिमी सीमा को दृढ बनाने की ओर कोई ध्यान न दिया जिस से आक्रमणकारियों के लिये भारत में प्रवेश करना सुगम था।

(११) **भारत से बाहर मुसलमानों की विजयें**—संसार के दूसरे भागों में मुसलमानों की विजयों ने उनका साहस बढ़ा दिया था। इसके विपरीत हिन्दुओं की बार-बार की हार ने उनका साहस तोड़ दिया था। यह बात भी इस्लामी विजय का एक कारण थी।

Q. Write a short note on Prithvi Raj Chauhan

प्रश्न—*पृथ्वीराज चौहान पर एक संक्षिप्त नोट लिखो।*

पृथ्वीराज चौहान जिसे *राय पथौरा* भी कहते हैं देहली और अजमेर का अन्तिम हिन्दू राजा था। वह वीर योद्धा और अच्छा शासक था। उसके पराक्रमों के कारण उसका नाम आज तक सारे उत्तरी भारत में प्रसिद्ध है। उसने अपने पड़ोसी राजाओं से कई युद्ध किये और कन्नौज के राजा जयचन्द की रूपवती कन्या *संयुक्ता* को स्वयंवर से बलपूर्वक उठा लाया। इस से जयचन्द और पृथ्वीराज के बीच शत्रुता हो गई। 1191 ई० में उसने मुहम्मद गौरी को पराजित किया, परन्तु अगले ही वर्ष 1192 ई० में मुहम्मद गौरी से हार खा कर मारा गया। उसकी मृत्यु से हिन्दू *महानता का सूर्य सदा* के लिये अस्त हो गया। उसकी राजसभा के कवि चाँदबरदाई ने उसका वृत्तान्त एक पुस्तक *चाँद-रईसा* या *पृथ्वीराज रासो* में लिखा है।

पृथ्वीराज चौहान

पृथ्वीराज चौहान

देहली में सुलतानों का राज्य

या

पठानों का शासनकाल

THE SULTANATE OF DELHI
Or
THE PATHAN EMPIRE
1206—1526

1206 ई० से 1526 ई० तक का काल भारत के इतिहास में सुलतानों या पठानों के शासन काल के नाम से प्रसिद्ध है। उस काल में पाँच विभिन्न वंशों ने राज्य किया :—

१—दासवंश	....	1206 से 1290 तक
२—खिलजीवंश	..	1290 से 1320 तक
३—तुग़लकवंश	..	1320 से 1414 तक
४—सैय्यदवंश	..	1414 से 1450 तक
५—लोधीवंश	..	1451 से 1526 तक

१—दासवंश

(SLAVE DYNASTY)
1206—1290

यह वंश भारत में पहिला मुस्लिम राजवंश समझा जाता है। इस की नींव मुहम्मद गौरी के दास कुतुबुद्दीन ऐबक ने डाली थी। क्योंकि इस वंश के सभी शासक स्वयं दास रह चुके थे या दासों की सन्तान थे इसलिए इस वंश को दास वंश कहते हैं।

Q. Give a brief account of the reigns of the chief rulers of the Slave Dynasty.

प्रश्न—*दासवंश के प्रसिद्ध शासकों के शासन काल का संक्षेप में वर्णन करो।*

कुतुबुद्दीन ऐबक मुहम्मद गौरी का एक तुर्की दास था, परन्तु अपनी युद्ध-विद्या की चतुराई से उसका सेनापति बन गया था और

उसने भारत विजय में मुहम्मद गौरी की बड़ी सहायता की थी। इस लिये मुहम्मद गौरी जब गज़नी लौट गया तो उसे अपने अधिकृत प्रदेशों का प्रतिनिधि बना कर छोड़ गया। इस पद पर रहते हुये उसने मुहम्मद गौरी की विजय को सुदृढ किया और *गुजरात, बुन्देलखण्ड, बंगाल तथा बिहार* को इस्लामी राज्य में सम्मिलित किया।

कुतुबुद्दीन ऐबक
Qutb-ud-Din
1206-1210

1206 ई० में मुहम्मद गौरी की मृत्यु पर कुतुबुद्दीन भारत का स्वतन्त्र शासक माना गया और उसने दासवंश की नींव डाली। इस प्रकार वह भारत में *प्रथम मुस्लिम शासक था*। कुतुबुद्दीन बड़ा वीर, न्यायप्रिय तथा कृपालु राजा था और अपने दानी होने के कारण *लखदाता* के नाम से प्रसिद्ध था। उसने अपने राज्य को सुदृढ़ करने के लिये शक्तिशाली सरदारों के साथ विवाह सम्बन्ध जोड़े और इस प्रकार देश में शान्ति स्थापित रखी।
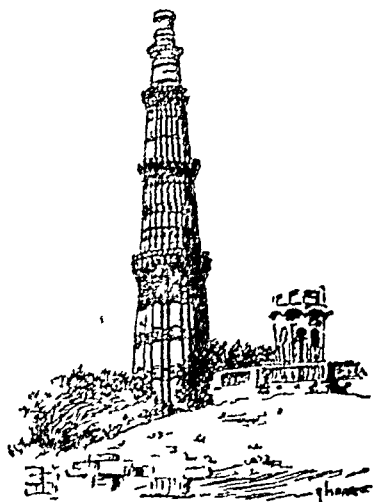
कुतुब मीनार

कुतुबुद्दीन को भवन निर्माण का भी चाव था। उसने देहली में ख्वाजा कुतुबुद्दीन (एक प्रसिद्ध मुसलमान वली) के नाम पर (*कुतुबमीनार* और *कुतुबमस्जिद* भी बनवानी आरम्भ कीं, जिन्हें अल्तमश ने पूरा करवाया। अजमेर में भी उसने एक विशाल मस्जिद बनवाई। 1210 ई० में वह लाहौर में चौगान खेलता हुआ घोड़े से गिर कर मर गया और लाहौर में ही दफन किया गया।

नोट—कुतुबुद्दीन की मृत्यु पर उसका बेटा आरामशाह सिंहासन पर बैठा परन्तु वह बड़ा अयोग्य और आलसी था, इसलिये उसे शीघ्र ही *अल्तमश* ने जो बदायूँ का सूबेदार था सिंहासन से उतार दिया।

अल्तमश प्रारम्भ में कुतुबुद्दीन ऐबक का एक दास था, परन्तु उन्नति करते करते उसका जमाता बन गया। 1211 ई० में उसने आरामशाह को सिंहासन से उतार दिया और स्वयं अधिकार कर लिया। उस समय वह वर्तमान उत्तर प्रदेश में बदाओं (Badaon) का सूबेदार था।

अल्तमश
☞ Altamash
1211—1236

अल्तमश दासवंश का एक अतीव योग्य शासक था। उसके समय की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित थीं :—

(१) सूबेदारों के विद्रोह को कुचलना—राजसिंहासन पर बैठते ही अल्तमश को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इसका कारण यह था कि कुतुबुद्दीन की मृत्यु पर कई सूबेदार स्वतन्त्र शासक बन बैठे थे। *(१) पंजाब और ग़जनी में ताजुद्दीन यल्दूज (२) सिंध में नासिरुद्दीन कबाचा और (३) बङ्गाल मे अली मर्दान खि़लजी* ने विद्रोह कर दिया। परन्तु अल्तमश ने इन विद्रोहों को कुचल डाला और विद्रोहियो को अपने अधीन कर लिया।

(२) राजपूतों को दबाना—कई राजपूत सरदार भी अपनी छिनी हुई स्वतन्त्रता को दोबारा प्राप्त करने की सोच रहे थे और कुछ एक तो आरामशाह के राज्यकाल में स्वतन्त्र हो बैठे थे। अतः अल्तमश ने राजपूतों की ओर ध्यान दिया, और आठ वर्षों (1226—1234) में ही *रणथम्भोर, ग्वालियर, मालवा और उज्जैन* को जीत लिया। इस प्रकार उसने लगभग सारे उत्तरी भारत पर अधिकार कर लिया।

(३) चंगेज़खाँ का आक्रमण—अलतमश के शासन-काल की एक प्रसिद्ध घटना यह भी है कि मंगोल या मुगल पहली बार भारत की सीमा तक पहुँच गये। 1221 ई० में मङ्गोल सरदार *चंगेज़खाँ* (Changez Khan) जो संसार में एक महान् विजयी हो चुका है अपने एक शत्रु (ख्वारिज़म के शासक जलालुद्दीन) का पीछा करता हुआ सिन्ध नदी तक आ पहुँचा। परन्तु सिंध के पार के प्रदेश में ही लूट-

मार करके लौट गया और इस प्रकार भारत एक भयानक विपत्ति से बच गया। परन्तु इतना हुआ कि बहुत सारे मंगोल सिंध पार के प्रदेश में बस गये और समय समय पर पंजाब पर आक्रमण करते रहे।

(४) कुतुबमीनार की पूर्ति—अल्तमश ने कुतुबमीनार और कुतुब मस्जिद को जिन्हें कुतुबुद्दीन आरम्भ कर गया था, पूर्ण करवाया।

नोट—अल्तमश की मृत्यु के बाद उसका लड़का रुकनुद्दीन सिंहासन पर बैठा, परन्तु वह एक अयोग्य और विलासी मनुष्य था। इसलिये थोड़े से ही महीनों के बाद मन्त्रियों ने उसे राज्य से पृथक् करके राज्य उसकी बहिन सुल्ताना रज़िया को दे दिया।

रज़िया बेगम
Razia Begum
1236—1239

रजिया, अल्तमश की होनहार बेटी थी। मुसलमानों में वह पहली और अन्तिम स्त्री थी जो देहली के सिंहासन पर बैठी। उसने अपने पिता के जीवन में ही राज्य प्रबन्ध का पर्याप्त ज्ञान पा लिया था। रजिया बड़ी योग्य और साहसी स्त्री थी। वह पुरुषों का पहरावा पहन कर दरबार लगाया करती थी और सेनाओं का नेतृत्व भी स्वयं किया करती थी। परन्तु यह उस का दुर्भाग्य था कि वह स्त्री थी और उसके पठान मन्त्री स्त्री के अधीन रहना अपमान समझते थे। इसके अतिरिक्त वह **याकूब** नाम के एक हब्शी दास पर जो उसके घुड़साल का दारोग़ा था बहुत कृपालु हो गई थी, यहाँ तक कि उसने उसको सेनानायक बना दिया था। कट्टर मुसलमान उसका बिना पर्दे दरबार में आना भी पसन्द न करते थे। इन कारणों से लाहौर और बठिंडा के सूबेदारों ने विद्रोह कर दिया और बठिंडा के विद्रोही सरदार **अल्तूनियाँ** ने रज़िया को जब कि वह वहाँ विद्रोह दबाने के लिये गई,

रजिया बेगम

बन्दी बना लिया। इस पर षड्यन्त्रकारियों ने रज़िया के भाई बहराम को सिंहासन पर बिठा दिया। परन्तु रज़िया ने अल्तूनियाँ से विवाह कर लिया और देहली का सिंहासन प्राप्त करने का यत्न करने लगी, किन्तु सफल न हुई और उसके पति सहित 1240 ई० में उसकी हत्या कर दी गई।

नोट—रज़िया के बाद दो राजा अर्थात् उसका भाई बहराम और भतीजा अलाउद्दीन क्रमशः राजा बने, परन्तु अयोग्यता के कारण राज्य से पृथक् कर दिये गये। फिर नासिरुद्दीन शासक बना।

नासिरुद्दीन
Nasir-ud-Din
1246—1266

नासिरुद्दीन अल्तमश का लड़का था। यह बादशाह बड़ा शुद्ध हृदय और धार्मिक व्यक्ति था और अपने सादा जीवन के कारण इतिहास में *'दरवेश बादशाह'* के नाम से प्रसिद्ध है। *वह राजकीय कोष से अपने व्यय के लिये कौड़ी भी न लेता था और कुरान शरीफ़ की प्रतियाँ लिखकर अपना निर्वाह करता था*। घर का सारा काम-काज उसकी नेक पत्नी अपने हाथो से करती थी। नासिरुद्दीन ने सारा राज्य-प्रबन्ध अपने मन्त्री बलबन (Balban) को जो उसका ससुर था सौंप रखा था। बलबन अतीव योग्य और नीतिज्ञ व्यक्ति था। उसने बीस वर्ष तक बादशाह की खूब सेवा की। *उसने मुग़लो को हराया और राजपूतो के विद्रोह को भी दबाया*। 1266 ई० में नासिरुद्दीन की मृत्यु पर बलबन राजा बन बैठा।

बलबन
Balban
1266—1286

प्रारम्भिक जीवन (Early Life)—ग़ियासउद्दीन बलबन जिस को बाद में *उलगख़ाँ* (अर्थात् 'बड़ा सरदार') की पदवी प्राप्त हुई, यथार्थ में अल्तमश का एक मोल लिया हुआ दास था, परन्तु वह उन्नति करते करते सुल्तान का *ख़ासाबर्दार* अर्थात् *निजी सेवक* (Personal Attendant) बन गया। रज़िया के राज्य-काल में वह *मीर शिकार* (Lord of the Hunt) नियुक्त हो गया और तत्पश्चात उसे *रीवाड़ी* और *हाँसी* की जागीरें मिल

गई। शनैः शनैः उन्नति करते-करते वह नासिरुद्दीन के समय में उसका मन्त्री वन गया और उसकी मृत्यु पर आप राजा बन गया। बीस वर्ष *वह मन्त्री रहा था और बीस वर्ष ही राजा रहा*। इस प्रकार चालीस वर्ष तक राज्य की वागडोर उसके हाथ में रही।

बलबन मंत्री के रूप में (Balban as Minister)—बलबन ने मन्त्री के पद पर रहते हुए अपने स्वामी नासिरुद्दीन की लगभग बीस वर्ष तक बड़ी योग्यता से सेवा की। उसके इस मन्त्री काल की निम्नलिखित घटनायें हैं।

(१) मुगलों ने जो चंगेज़ख़ाँ के चले जाने के वाद सिन्ध पार बस गये थे, पंजाव पर आक्रमण करने आरम्भ कर दिये, परन्तु बलबन ने उनके आक्रमणों को रोका।

(२) राजपूतों ने भी स्वतन्त्र होने के लिये विद्रोह कर दिये। अतः बलबन ने उनका भी दमन किया।

(३) दोआब में भी कई एक ज़िमींदारों ने सिर उठाया परन्तु बलबन ने उन्हें भी कठोर दण्ड दिये।

(४) अवध और सिंध के सूवेदारों ने विद्रोह किये, परन्तु बलबन ने उन्हें भी दबा दिया।

इस प्रकार बलबन ने अपनी वीरता तथा नीती से साम्राज्य को भीतरी विद्रोहों तथा वाह्य आक्रमणों से बचाये रखा।

बलबन राजा के रूप में (Balban as King) —1266 ई० में बलबन देहली का राजा बन गया और राज्य करने में वह बड़ा योग्य परन्तु निर्दयी सिद्ध हुआ। वह देहली के शासकों में एक अतीव योग्य शासक हो चुका है। उसके शासन-काल की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित थीं—

(१) शाँति स्थापना—अल्तमश की मृत्यु के वाद तीस वर्ष तक बड़े अयोग्य उत्तराधिकारी राज्य करते रहे। उनके राज्य काल में बादशाहों का भय सर्वथा जाता रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि

देश में अशान्ति फैल गई। देहली के आसपास मेवाती राजपूतों ने लूट
मार मचा रखी थी और दोआब में चारों ओर डाकुओं ने ऊधम मचा
रखा था। जान तथा माल सर्वथा अरक्षित थे और व्यापार चौपट
हो गया था। बलबन ने सब से पहले इस ओर ध्यान दिया। उसने
मेवातियों का दमन किया और दोआब में चोरों तथा डाकुओं का
अन्त किया। इस प्रकार उसने देश में शान्ति स्थापित की।

(२) मुग़लों की रोक थाम—भीतरी शान्ति स्थापित करने के
साथ बलबन ने उत्तर-पश्चिमी सीमा की ओर भी विशेष ध्यान दिया।
उसके शासनकाल में मुग़लों ने कई बार आक्रमण किये, इसलिये सुल्तान
ने उनकी रोक-थाम के लिये उत्तर-पश्चिमी सीमा से राजधानी तक सुदृढ़
दुर्गों की पंक्ति बनवा कर उनमें सशस्त्र सेना रख दी और अपने सब से
बड़े लड़के मुहम्मद को उनकी देखभाल का काम सौंपा। मुहम्मद ने कुछ
समय तक मुग़लों के आक्रमणों का अच्छा मुक़ाबला किया और उनका
भय कम हो गया।

(३) बंगाल का विद्रोह, 1279—बलबन के शासन-काल की
सबसे प्रसिद्ध घटना बंगाल विद्रोह को दबाना है। बंगाल के शासक
तुग़रल बेग (Tughral Beg) ने यह समझ कर कि राजा बूढ़ा है
और बंगाल का प्रान्त राजधानी से बहुत दूर है, स्वतन्त्रता की घोषणा
कर दी और दो शाही सेनाओं को पराजित भी किया। अन्त में सुल्तान
स्वयं सेना के साथ बंगाल पर चढ़ आया। तुग़रल बेग भाग गया
और मारा गया। बलबन ने उसके साथियों को फांसी पर लटका दिया,
और अपने छोटे पुत्र बुग़रा ख़ां को बंगाल का गवर्नर नियत किया,
साथ ही उसे चेतावनी दी कि यदि उसने कभी विद्रोह का नाम भी
लिया तो उसका भी अन्त ऐसा ही होगा।

(४) बलबन के सुधार—बलबन ने राज्य प्रबन्ध भी उत्तम
रीति से किया और कई सुधार किये। उसने (१) अमीरों, वज़ीरों
की शक्ति कम कर दी। (२) न्याय-विभाग को ऐसा दृढ़ किया कि कोई
पुरुष अपने नौकरों और दासों पर भी सख़्ती नहीं कर सकता था।

(३) गुप्तचरों का विभाग भी संशोधित किया। (४) मदिरा-पान बन्द कर दिया और (५) कई कुरीतियों का अन्त किया।

(५) बलबन की मृत्यु—बलबन के शासन-काल के अन्तिम भाग (1285 ई०) में मुगलों ने पंजाब पर आक्रमण किया। बलबन का पुत्र मुहम्मद इस आक्रमण का सामना करता हुआ मारा गया। सुल्तान को अपने इस प्यारे पुत्र की मृत्यु से ऐसा धक्का लगा कि वह शोक से 1287 ई० में मर गया।

बलबन का चरित्र

बलबन दासवंश का सबसे शक्तिशाली राजा था। वह एक अच्छा योद्धा और योग्य राजनीतिज्ञ था। वह बड़ा न्यायप्रिय था और अपने सम्बन्धियों का भी पक्षपात न करता था। उसका इतना भय था कि कोई व्यक्ति अपने नौकरों तथा दासों से भी दुर्व्यवहार न कर सकता था। उसने देश में पूर्ण शान्ति स्थापित की। यद्यपि वह कभी-कभी क्रोध में आ जाता और बड़े बड़े दण्ड देता था, तथापि वह घरेलू जीवन में बड़ा सुशील हृदय मनुष्य था। वह विद्या-प्रेमी भी था। वह नीच तथा कमीने लोगों से कोई सम्बन्ध नहीं रखता था और नौकरियाँ केवल उच्च वंश के लोगों को देता था।

बलबन का दरबार

बलबन का दरबार बड़ा वैभवशाली था। मध्य एशिया के कई शासक उसके शरणागत थे। बलबन के दरबारी नियम बड़े कठोर थे। दरबार में न तो वह स्वयं कभी हँसता था और न कोई दरबारी हँसने का साहस कर पाता था। किसी व्यक्ति को नियमानुसार दरबारी वेश पहने बिना दरबार में आने की आज्ञा न थी। फ़ारसी का प्रसिद्ध कवि *अमीर खुसरो* (Amir Khusro) भी उसी के दरबार का शृङ्गार था।

नोट—बलबन की मृत्यु के बाद उसका पोता कैकबाद जो बुग़राख़ाँ बंगाल के शासक का लड़का था, राजा बना। वह बड़ा आलसी और विलासी था। 1290 ई० में जलालुद्दीन ख़िलजी पंजाब के शासक ने उसे मरवा कर राज्य पर अधिकार जमा लिया और इस प्रकार ख़िलजी वंश प्रारम्भ हुआ।

२. ख़िलजी वंश

(KHILJI DYNASTY)

1290—1320

सुल्तान जलालुद्दीन, ख़िलजी वंश का संचालक था। राज्याभिषेक के समय उसकी आयु सत्तर वर्ष की थी। वह बड़े दयालु स्वभाव का था; यही कारण था कि उसके राजत्व में विद्रोह होने लगे। *मुग़लों* ने *आक्रमण* किये, परन्तु वे पराजित कर दिये गये। कुछ मुग़ल देहली के निकट ही बस गये और मुसलमान हो गये। उस स्थान का नाम *मुग़लपुरा* पड़ गया। जलालुद्दीन के शासनकाल की सब से प्रसिद्ध घटना *देवगिरि का आक्रमण* है।

जलालुद्दीन ख़िलजी
Jalal-ud-Din
1290—1296

देवगिरि पर आक्रमण, 1294—जलालुद्दीन ने अपने भतीजे अलाउद्दीन को जो उसका जामाता भी था, अवध के प्रान्त में क़ड़ा का शासक नियुक्त कर रखा था। वह बड़ा साहसी और मनचला युवक था। उसने देवगिरि पर आक्रमण करने का विचार किया क्योंकि उसने वहाँ की सम्पत्ति का वृत्तान्त सुन रखा था। अतः आठ हज़ार सवारों को लेकर 1294 ई० में उसने दक्षिण पर चढ़ाई की और अचानक ही देवगिरि के *राजा रामचन्द्रदेव* पर आक्रमण कर दिया। राजा की हार हुई और अलाउद्दीन बहुत सी धन-सम्पत्ति लेकर लौटा।

जलालुद्दीन की हत्या—जब जलालुद्दीन ने अपने भतीजे की इस विजय को सुना तो उसका स्वागत करने के लिए कड़ा पहुँचा। परन्तु अलाउद्दीन का मन शुद्ध न था। वह देहली के राज्य पर अधिकार करना चाहता था। इसलिये उसने गले लगते समय अपने चाचा की हत्या कर दी और फिर उसकी सन्तान का नाश करके स्वयं राजा बन बैठा।

अलाउद्दीन ख़िलजी

1296—1316

☞ Q. Give a brief account of the early career, conquests, administration (internal policy) and

character of Ala-ud-Din Khilji.
(P. U. 1926-33-42-48-52-54) (V Important)

प्रश्न—अलाउद्दीन के आरम्भिक जीवन, विजयों, राज्य प्रबन्ध और चरित्र का संक्षेप से वर्णन करो।

आरम्भिक जीवन—अलाउद्दीन खिलजी जलालुद्दीन खिलजी का भतीजा और जामाता अलाउद्दीन खिलजी था। वह बड़ा साहसी और मनचला युवक था। जलालुद्दीन ने उसे कड़ा* का शासक नियुक्त कर दिया था। 1292 ई० में उसने मालवा पर चढ़ाई की और भीलसा (Bhilsa) का नगर जीत लिया। वहाँ उसने देवगिरि की सम्पत्ति का हाल सुना। अतः 1294 ई० में उसने देवगिरि पर आक्रमण किया और उसे विजय कर लिया। वहाँ से वापस लौट कर 1296 ई० में अपने चाचा जलालुद्दीन खिलजी की हत्या करके राजा बना। उसने सिंहासन पर बैठते ही अमीरों, वज़ीरों को प्रलोभन देकर अपनी ओर कर लिया और साधारण जनता में दिल खोलकर रुपया बाँटा, इसलिए कि वे उसके चाचा की हत्या को भूल कर उसकी ओर खिंच जायें।

अलाउद्दीन

अलाउद्दीन खिलजी ने बीस वर्ष राज्य किया। वह एक सुयोग्य और सफल शासक सिद्ध हुआ। उसने उत्तरी भारत को जीता, दक्षिण में मुस्लिम राज्य स्थापित किया, मुगलों के आक्रमणों को रोका और राज्य-प्रबन्ध में कई संशोधन किये।

---

*यह स्थान वर्तमान ज़िला इलाहाबाद में गंगा नदी के किनारे है।

विजयें

(१) गुजरात, 1297 ई०—गुजरात एक बड़ा उपजाऊ प्रान्त था। अलाउद्दीन ने अपने सेनापति उलग़ख़ां को गुजरात विजय करने के लिये भेजा। वहाँ का राजा **कर्ण** देवगिरी को भाग गया और गुजरात जीता गया। गुजरात की यह विजय दो बातों के लिये प्रसिद्ध है। प्रथम तो यह कि राजा कर्ण की रानी **कमलादेवी** देहली में लाई गई, जहाँ उसका विवाह अलाउद्दीन के साथ हो गया और दूसरे **काफ़ूर** नाम का एक हिन्दू दास भी आक्रमण में खम्बायत नगर से सुल्तानी सेना के हाथ लगा, जिसने बाद में अलाउद्दीन के लिये दक्षिण विजय किया। गुजरात विजय के पश्चात् सुल्तान ने राजपूताना की ओर ध्यान दिया।

(२) रणथम्भौर, 1301 ई०—रणथम्भौर राजपूताने की सुप्रसिद्ध रियासत थी और यह इस्लामी राज्य से स्वतन्त्र हो गई हुई थी। अलाउद्दीन ने इसे विजय करने के लिये सेना भेजी परन्तु वह असफल रही। तब सुल्तान ने स्वयं इस पर चढ़ाई की और बहुत दिनों तक घेरा डाल रखने के बाद वहाँ के राजा **हम्मीरदेव** को हराया और दुर्ग को हस्तगत किया। हम्मीरदेव का वध कर दिया गया।

(३) चित्तौड़, 1303 ई०—चित्तौड़ के राणा रत्नसिंह की रानी *पद्मिनी* अनुपम सुन्दरी थी। अलाउद्दीन उसे अपने अन्तःपुर में लाना चाहता था। इस कारण से तथा चित्तौड़ को अपने राज्य में मिलाने के उद्देश्य से उसने चित्तौड़ पर चढ़ाई की। राजपूतों ने बड़ी वीरता से सामना किया, परन्तु हार खाई और चित्तौड़ जीत लिया गया। रानी पद्मिनी अपनी सखियो सहित चिता में जलकर मर गई।

(४) मालवा, 1305 ई०—अलाउद्दीन ने मालवा विजय करने के लिये सेना भेजी। वहाँ का राजा मारा गया और मालवा विजय हो गया। इसके पश्चात् उज्जैन, *माण्डू*, धार और *चन्देरी* जीत लिये गये। इस प्रकार 1305 ई० तक लगभग सारे उत्तरी भारत पर उसका अधिकार हो गया।

(५) दक्षिण विजय, 1306-1311 ई०—अलाउद्दीन के शासन-काल की सबसे प्रसिद्ध घटना दक्षिण विजय है। उत्तरी भारत पर विजय पा लेने के बाद उसने दक्षिण विजय का विचार किया और इस काम के लिये अपने सेनापति **मलिक काफूर** को नियुक्त किया। काफूर ने देवगिरि, वारंगल, द्वार समुद्र और मदुरा के चारो राज्यो को जीत लिया और बढ़ता हुआ रामेश्वरम तक जा पहुँचा जहाँ उसने एक मस्जिद बनवाई। अन्त में अगणित धन सम्पत्ति के साथ देहली को लौटा। इस प्रकार अलाउद्दीन का राज्य सारे उत्तरी और दक्षिणी भारत में फैल गया। परन्तु दक्षिण को उसने अपने राज्य में सम्मिलित नही किया, केवल हिन्दू राजाओ से वह कर लेता रहा।

मुग़लों का आक्रमण

अलाउद्दीन के राजत्व काल के आरम्भ में मङ्गोलो (मुगलो) ने कई बार आक्रमण किये, परन्तु प्रत्येक बार परास्त हुए। उनका सबसे भयानक आक्रमण 1298 ई० में हुआ जब कि लगभग दो लाख मुगल अपने सरदार **कतलग ख़्वाजा** (Qutlugh Khwaja) के नेतृत्व में देहली तक आ पहुँचे, परन्तु उन्हे हार खानी पड़ी। इस युद्ध में अलाउद्दीन का सब से बड़ा जरनैल **ज़फर खाँ** (Zafar Khan) मारा गया। इसके बाद भी मुगल आक्रमण करते रहे परन्तु पञ्जाब के सूबेदार **गाजी तुगलक** ने उनके हराने में बड़ा भाग लिया।

इसके बाद सुलतान ने राज्य को मुगलों से सुरक्षित करने के लिये बलबन की नीति पर आचरण किया। उसने एक दृढ सेना रखी, उत्तर-पश्चिमी सीमा पर कुछ नये दुर्ग बनवाये और पुराने दुर्गो की भी मुरम्मत करवाई और वहा अनुभवी सेनापति नियुक्त किये। सेना की संख्या बढ़ा दी और सब प्रकार के शस्त्र देहली में एकत्र किये। इससे मुगलों के आक्रमण रुक गये और राज्य में चारों ओर सुख शान्ति छा गई।

ALA-UD-DIN'S EMPIRE
KASHMIR
LAHORE
DELHI
NEPAL
ASSAM
KARA
CHITOR
MALWA
UJJAIN
ARABIAN SEA
DEOGIRI
WARANGAL
BAY OF
BENGAL
DWARASAMUDRA
MADURA
RAMESWARAM
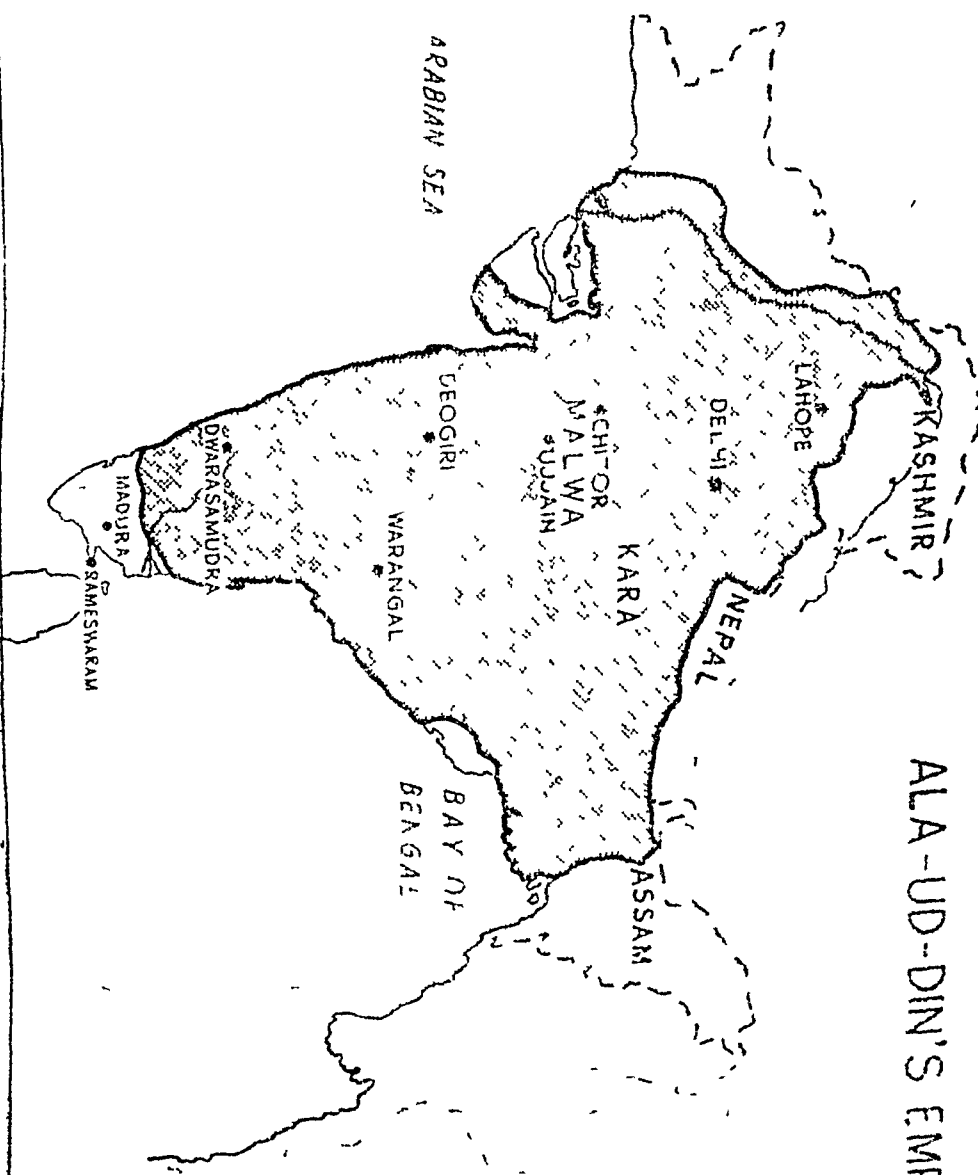
अलाउद्दीन एक चतुर सेनापति होने के साथ ही उच्चकोटि का राज्य प्रवन्धक भी था। उसका राज्य बहुत विस्तृत था। उसके विरुद्ध कुछ षड्यन्त्र हुये। उसने अपने मन्त्रियों से परामर्श लिया। उन्होने कहा कि विद्रोह के यथार्थ कारण (१) सुलतान की वेपरवाही, (२) शराब पीना (३) सरदारों तथा मन्त्रियों का आपसी मेल-जोल और (४) धन की अधिकता हैं। इसलिये उसने विद्रोह और षड्यन्त्रो का समूल नाश करने तथा सुप्रवन्ध स्थापित करने के लिये निम्नलिखित ढङ्ग अपनाये:—

राज्य प्रवन्ध

(१) मदिरा पान का निषेध—मदिरा पान का निषेध कर दिया गया और मदिरा की सभी दुकानें बन्द कर दी गई और इस नियम के विरुद्ध चलने वालों के लिये कठोर दण्ड निर्धारित किये गये। सुलतान ने स्वयं भी मदिरा पीनी छोड़ दी।

(२) परस्पर मेल-जोल का निषेध—सरदारों तथा मन्त्रियो को बिना आज्ञा लिये एक दूसरे से मिलने-जुलने, भोज देने और परस्पर सम्बन्ध करने से रोक दिया गया, इसलिये कि उन्हे षड्यन्त्र करने का अवसर ही न मिले।

(३) जागीरें छीनना—उसने सरदारो और मन्त्रियो की बहुत सी जागीरें और जायदादें छीन लीं और जागीरदारी का अन्त कर दिया। उसने अलाउन्स वन्द कर दिये। इसके साथ ही जब कभी वह किसी व्यक्ति को अधिक धनाढ्य होते देखता तो उसकी सम्पत्ति छीन लेता था।

(४) गुप्त विभाग—देश में गुप्तचरो का जाल बिछा दिया जो हर बात सुल्तान के कानों तक पहुँचा देते थे। यदि कोई गुप्तचर अपने कर्तव्य में ढील करता तो उसे कठोर दण्ड दिया जाता था। सरदार और मन्त्री लोग उन गुप्तचरों से इस प्रकार सहमे हुये थे कि वे अपने घरों में साधारण बातचीत करते भी डरते थे और कई बार इशारों से ही बातें करते थे।

(५) लगान में वृद्धि—सुल्तान ने हिन्दुओं पर अधिक कठोरता की और उनको निर्धन बनाने के लिये गंगा तथा यमुना के मध्यवर्ती दोआब पर *समस्त उपज का आधा भाग लगान* नियुक्त किया। इसके अतिरिक्त हिन्दुओं के पशुओं और घरों पर भी कर लगा दिया। ये लगान और कर बड़ी कठोरता से उगाहे जाते थे।

(६) सेना का संगठन—उसने विद्रोहों को दबाने और मुगलों के आक्रमणों को रोकने के लिये अपनी सेना बहुत बढ़ा ली और उसे नये सिरे से संगठित तथा शिक्षित किया। मुग़लों की रोक थाम के लिये उसने बलबन की नीति पर आचरण किया। उत्तर पश्चिमी सीमा पर सुदृढ़ दुर्ग बनाये और पुराने दुर्गों की मरम्मत भी कराई और उन में सुशिक्षित सेना भरती की। इसके अतिरिक्त उसने *घोड़ों को अंकित करने की रीति* भी प्रचलित की। सुल्तान अपनी सेना को नकद वेतन दिया करता था।

(७) भाव नियत करना—सुल्तान के लिये इतनी बड़ी सेना को उनके निर्वाह के लिये पूरा पूरा वेतन देना बड़ा कठिन था। इसलिये उसने सैनकों के वेतन तो कम नियत किये परन्तु सेना के खर्च को पूरा करने के लिये उसने अन्न तथा दूसरी सभी वस्तुओं के भाव सस्ते नियत कर दिये। बड़े बड़े गोदाम बनाकर उन में अन्न संग्रह किया गया और कई भूमियों पर कर अन्न के रूप में उगाहाया जाने लगा।

(८) मंडियों की देखभाल—सुल्तान ने मंडियों की देखभाल के लिये दो अफसर *दीवान-इ-रियासत* और *शाहना-इ-मन्डी* नियुक्त कर रखे थे और कई जासूस भी इस काम के लिये रखे हुए थे। यदि कोई दुकानदार कम तोलता था तो उसे कठोर दण्ड दिया जाता था।

चरित्र

अलाउद्दीन एक *निरंकुश शासक था*। वह वीर सेनापति और चतुर प्रबन्धक था परन्तु अनपढ तथा कठोर स्वभाव का था। वह अपने शत्रुओं को कठोर दण्ड देता था। गुजरात की विजय से अभिमान में आकर वह सिकन्दर की समता के स्वपन देखने लगा और उसने सारे संसार

को जीतने का विचार किया। इसके अतिरिक्त उस ने एक नया मत चलाने की सोची। परन्तु देहली के कोतवाल (अलाउलमुल्क) के समझाने पर उसने दोनो विचार त्याग दिये।

सुल्तान अनपढ़ होते हुए भी विद्या का सरक्षक था। फारसी का प्रसिद्ध कवि **अमीर खुसरो** उसके समय में भी था। सुल्तान उसकी ओर विशेष प्रेम रखता था। अलाउद्दीन को भवन बनवाने का भी चाव था। उसने देहली का नया नगर बसाया और उसका नाम **सिरी** रखा। (आजकल वहाँ शाहपुर का गॉव बसा हुआ है)।

अलाउद्दीन राज-प्रबन्ध के लिए मुसलमान उल्मा के परामर्श तथा धार्मिक नियमो को नहीं मानता था, प्रत्युत समय के अनुसार आदेश चालू कर देता था। उसने एक बार कहा था "मै नही जानता कि धर्म मे उचित और अनुचित क्या है, जो कुछ मै देश के भले के लिए और अवसर के अनुसार आवश्यक समझता हूं वही कुछ करता हूं।" वह मुसलमान सम्राटों में एक शक्तिशाली सम्राट हो चुका है। आयु के अन्तिम भाग में वह चेतना खो बैठा था। कहते हैं कि मलिक काफूर ने उसे विष देना आरम्भ किया जिससे वह जनवरी 1316 ई० में मर गया।

Q Write a short note on Malik Kafur

(P U. 1936-41)

प्रश्न—मलिक काफूर पर सक्षेप से एक नोट लिखो।

मलिक काफूर

मलिक काफूर एक हिन्दू दास था। गुजरात विजय के समय खम्भायत नगर से अलाउद्दीन की सेना के हाथ लगा। पीछे वह मुसलमान हो गया और अपनी योग्यता से सुल्तान का प्रधान सेनापति तथा मुख्य मन्त्री बन गया। उसी ने अलाउद्दीन के लिए दक्षिण का प्रदेश जीता। जब अलाउद्दीन बूढ़ा हो गया तो मलिक काफूर राज्य को हथियाने की चेष्टा करने लगा। कहते हैं कि उसने सुल्तान को इस प्रकार का विष देना आरम्भ किया जिससे वह घुल घुल कर मर गया। अलाउद्दीन

की मृत्यु के बाद मलिक काफ़ूर ने उसके नन्हें बच्चे को राजगद्दी पर बिठा दिया और आप उसका संरक्षक बन बैठा। परन्तु एक मास के बाद ही किसी ने उसका वध कर दिया।

---

३. तुग़लक वंश

(TUGHLAK DYNASTY)

1320—1414

गियासुद्दीन तुग़लक
1320—1325

गियासुद्दीन तुग़लक इस वंश का संचालक था। उसका बाप तुर्क था परन्तु माँ पंजाब के एक जाट वंश से थी। वह अत्यन्त योग्य और दयावान शासक था। सिंहासनारोहण से पहले वह पंजाब का सूबेदार था। उसने अपने राजत्वकाल में मुग़लों की रोक थाम के लिये उत्तर पश्चिमी सीमा को दुर्ग बनवा कर सुरक्षित किया। उसके राज्य काल में बंगाल में एक विद्रोह उठ खड़ा हुआ जिसे सुल्तान ने स्वयं वहाँ जा कर दबा दिया। परन्तु जब वह बंगाल से लौटा तो देहली के निकट एक लकड़ी के भवन के गिरने से (जो उसके पुत्र जूनाख़ाँ ने उसके स्वागत के लिये बनवा रखा था) मर गया। कुछ एक ऐतिहासकों का विचार है कि भवन का गिर जाना आकस्मिक घटना न थी, प्रत्युत वह एक षड्यन्त्र था। गियासुद्दीन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र जूनाख़ाँ मुहम्मद तुग़लक के नाम से सुलतान बना।

मुहम्मद तुग़लक

1325—1351

☞Q. Briefly describe the character and reign of Muhammad Tughlak. Also describe the causes of his failure. (P. U. 1939-43 46-52-54) (Important.

प्रश्न—*मुहम्मद तुग़लक के चरित्र और राजत्वकाल का संक्षेप से वर्णन करो और बताओ कि उसकी असफलता के क्या कारण थे ?*

चरित्र (Character)—गुण—मुहम्मद तुग़लक का यथार्थ नाम जूना खाँ था। वह बड़ा विद्वान् था। वह नीति, ज्योतिश, गणित, तर्क और वैद्यक आदि सभी विद्याओं पर अधिकार रखता था। वह उत्कृष्ट कवि तथा सुलेखक भी था। तर्क में तो वह इतना योग्य था कि उसके दरबारी उसे उस समय का अरस्तु (Aristotle) कहते थे। उसकी स्मरणशक्ति बड़ी तीव्र थी और उसे सदा नई बातें सूझती थीं। मुहम्मद तुग़लक बड़ा न्यायप्रिय और दानी था। वह निर्धनों की सदैव सहायता करता था। उसने निःशुल्क औषधालय और चिकित्सालय खोल रखे थे। उसका व्यवहार अपनी हिन्दू प्रजा के साथ भी बड़ा अच्छा था। उसने सती की प्रथा को बन्द करने की चेष्टा भी की। विदेशी लोगों से भी वह सहानुभूति का वर्ताव करता था। कई एक को तो उसने ऊँचे पदों पर नियुक्त कर रखा था। वह अपने धर्म का भी दृढ़ता से पालन करता था और पाँच समय नमाज़ पढ़ा करता था। शराब से उसे घृणा थी। परन्तु वह मुसलमान उल्मा के परामर्श को नहीं मानता था। वह एक अच्छा जरनैल भी था।

मुहम्मद तुग़लक
1325—1351

दोष—परन्तु उसके ये गुण निरर्थक थे, क्योंकि उसमें साधारण ज्ञान (Common Sense) की कमी थी। वह अत्यन्त क्रोधी था, साधारण बात पर क्रोध में आ जाया करता था और प्रजा को कठोर दण्ड दिया करता था। वह बड़ा हठी था, जिस बात की उसे धुन समा जाती थी उसे करके छोड़ता था। उसके स्वभाव में गुणों और दोषों का विचित्र मेल-जोल था, अर्थात् वह निर्दयी परन्तु दाता, कट्टरपन्थी परन्तु जातिगत द्वेष से रहित, अभिमानी परन्तु कृपाशील था। यही कारण है कि उसे (Mixture of opposites) भी कहते हैं।

मुहम्मद तुग़लक ने कई ऐसे कार्य किये जिनसे वह बड़ा बदनाम हो गया। ये कार्य निम्नलिखित थे :—

(१) राजधानी परिवर्तन—मुहम्मद तुग़लक का राज्य लगभग सारे भारतवर्ष पर था। उसका विचार था कि देहली में रहकर इतने बड़े राज्य का प्रबन्ध करना कठिन है, इसलिये उसने देहली की अपेक्षा दक्षिण के नगर देवगिरि (Deogiri) को जो अधिक केन्द्रीय स्थान था और मुग़लों के मार्ग से भी दूर स्थित था, अपनी राजधानी बनाया और उसका नाम दौलताबाद रखा। वहाँ उसने कई महल और मस्जिदें बनवाईं परन्तु उसने मूर्खता की बात यह की, कि सरकारी दफ़्तरों को वहां ले जाने के स्थान उसने सभी देहली वासियों को अपने धन सम्पत्ति समेत वहां पहुंचने का आदेश दिया और इस आदेश का पालन कठोरता से करवाया। इसमें सन्देह नहीं कि सुल्तान ने देहली से देवगिरि तक एक सड़क बनवाई और इस ७०० मील के मार्ग में हर प्रकार की सुविधा दी, निर्धनों के लिये खाने और ठहरने का प्रबन्ध भी निशुल्क किया परन्तु फिर भी असंख्य लोग इस यात्रा के कष्ट से मर गये। कुछ समय बीतने पर उन अभागे लोगों को फिर देहली लौट जाने की आज्ञा दी गई परन्तु देहली को पुरानी रौनक न मिल सकी।

मुहम्मद तुग़लक की अद्भुत योजनायें

(२) मुग़लों को धन देना—राजधानी बदलने का एक परिणाम यह हुआ कि कुछ सूबेदारों ने उत्तरी भारत में विद्रोह कर दिये। यह देखकर मुग़लो ने पंजाब पर आक्रमण किया और वे बढ़ते हुये देहली तक आ पहुँचे। मुहम्मद तुग़लक ने लड़ने के स्थान उन्हें बहुत-सा धन देकर लौटा दिया। अन्त में विवश होकर सम्राट् को देहली राजधानी बनानी पड़ी।

(३) चीन और ईरान पर धावा—सुल्तान ने ईरान पर आक्रमण करने का विचार किया और इसी हेतु उसने ३,७०,००० सवारों की एक विशाल सेना इकट्ठी की और उसे एक वर्ष का वेतन भी पेशगी दे दिया। परन्तु कुछ एक कठिनाइयाँ आ पड़ने से यह विचार त्याग,

सेना को तोड़ देना पड़ा। परिणाम यह हुआ कि उस सेना ने अपने देश में ही लूट मार आरम्भ कर दी। इसके बाद सुल्तान ने एक लाख योद्धा चीन* विजय के लिये भेजे। उनमें से बहुत से तो हिमालय की बर्फ में दब कर मर गये, जो चीन पहुँचे उन्होंने वहाँ मुह की खाई और जो वापिस लौटे उनमें से बहुतों को पहाड़ी लोगों ने मार डाला और जो देहली आ पहुँचे उनका सुल्तान ने बध करवा दिया।

(४) **ताँबे के सिक्के**—सुल्तान के अन्धाधुन्ध दान और मूर्खता-पूर्ण कार्यों के कारण कोष रिक्त हो गया। तब इसने तांबे का सिक्का चलाया और आदेश किया कि इसका मूल्य चांदी और सोने के सिक्के के तुल्य समझा जाय परन्तु लोगो ने अपने घरों में नकली सिक्के बनाने आरम्भ कर दिये। लोगों ने अपना लगान और सूबेदारो ने अपना वार्षिक कर (खिराज) उन्हीं नकली सिक्को में चुकाया। उधर विदेशी व्यापारियो ने इन सिक्कों को लेना स्वीकार न किया जिससे व्यापार लगभग चौपट हो गया। इससे सुल्तान को बहुत खेद हुआ और उसने नया सिक्का बन्द कर दिया और लोगो से ताँबे के सिक्के वापिस लेकर उन्हे सोने-चाँदी के सिक्के दे दिये। इस प्रकार कोष को बहुत हानि पहुँची।

(५) **दोआब में कर**—सुल्तान ने कोष को भरने के लिये गङ्गा और यमुना के मध्यवर्ती दोआब में जो बड़ा उपजाऊ था भूमि का लगान बढ़ा दिया और कई अन्य कर लागू कर दिये। उन करो को इतनी कठोरता से उगाहाया गया कि कई निर्धन किसान खेतियाँ छोड़ कर वनो में भाग गये। उधर वर्षा न हुई जिससे देश में अकाल पड़ गया जो कई वर्ष रहा। परन्तु इतना अवश्य है कि सुल्तान ने अकाल पीड़ितों की सहायता के लिये बहुत कुछ किया। उसने कुएँ खुदवाये-

---

*कई इतिहासज्ञों का मत है कि यह सेना हिमालय पर्वत में एक विद्रोही सरदार के विरुद्ध भेजी गई थी और उसे कुछ सफलता भी हुई थी।

लोगों में अनाज बाँटा और कृषकों को ऋण दिया । परन्तु यह सब सहायता ठीक समय पर न मिल सकी।

सुल्तान की इस मूर्खता पूर्ण नीति का परिणाम यह हुआ कि एक तो भूमिया उजाड़ हो गई तथा खेती बाड़ी को भारी हानी पहुँची। दूसरे देश के कोने-कोने में विद्रोह की आग भड़क उठी। बंगाल, अवध, सिंध, दक्षिण, इत्यादि, सब विद्रोही हो गये। सुल्तान ने अपने राज्य के अन्तिम १० वर्ष इन विद्रोहों को दबाने में व्यतीत किये परन्तु वह उन सब विद्रोहों को दबा न सका। बङ्गाल और दक्षिण के प्राँत सदा के लिए स्वतन्त्र हो गये। दक्षिण में दो नये राज्य बहमनी और विजयनगर स्थापित हो गये।

मुहम्मद तुग़लक की नीति का परिणाम

1351 ई० में सुल्तान जब कि वह सिन्ध में विद्रोह को दबा रहा था, ठट्टा (Thatta) नामक स्थान के निकट ज्वर के कारण मर गया और सेना के नायकों ने उसके चचेरे भाई फ़िरोज़ तुग़लक को अपना राजा बनाया। सुल्तान मुहम्मद तुग़लक शासक के रूप में असफल सिद्ध हुआ और बड़ा बदनाम हो गया। उसकी असफलता के कारण निम्नलिखित थे :—

असफलता के कारण

(१) क्रोधी स्वभाव—सुल्तान अत्यन्त क्रोधी था । साधारण सी बात पर रुष्ट होकर प्रजा को बड़े कठोर दण्ड देता था।

(२) अद्भुत योजनाएँ—उस ने अपने राज्य काल में कई अद्भुत योजनाएँ कीं। जन साधारण इन योजनाओं को भली प्रकार समझ नहीं सकते थे। सुल्तान चाहता था कि सब मनुष्य उसी की तरह सोचे और काम करें। परन्तु जब वह ऐसा नहीं करते थे तो सुल्तान उनको बड़ा कष्ट देता था। इससे लोग बहुत दुःखी हुये और बहुत सा धन व्यर्थ गया।

(३) भयानक अकाल—देश में एक बड़ा भयानक अकाल पड़ गया जिससे सरकार के बहुत से साधन व्यर्थ खर्च हो गए।

(४) धार्मिक उदारता—सुल्तान धार्मिक विचारों में बड़ा उदार

था। वह मुसलमान उलमा को राज्य-कार्य में दख़ल नहीं देने देता था। इस कारण कट्टर मुसलमान उसके विरुद्ध थे।

(५) विदेशियो को ऊँचे पद देना—सुल्तान ने कई विदेशियों को ऊँचे-ऊँचे पदों पर नियुक्त कर रखा था। इन विदेशी सरदारो ने देश के भिन्न भिन्न भागो में विद्रोह कर दिये। सुल्तान के लिये उन सब को दबाना कठिन हो गया। उसने क्रोध में आकर कठोर दण्ड देने आरम्भ किये परन्तु सफलता न हुई।

(६) देशी मुसलमानों का रोष—विदेशियो की नियुक्ति के कारण देश के मुसलमान सरदार उससे रुष्ट थे क्योंकि वे समझते थे कि इस से उनके अधिकारो पर हस्ताक्षेप किया गया है।

फ़िरोज़ तुग़लक

1351—1388

☞ Q. Give a brief account of the administration of Feroz Tughalk with special reference to (a) his reforms (b) his irrigation works (c) his buildings (d) his religious policy and (e) character in general. How far was he responsible for the downfall of the Pathan Empire ? (P.U. 1937-40-45-47-49)

(V. Important)

प्रश्न—*फ़िरोज़ तुग़लक के राज्य-प्रबन्ध का संक्षेप से वर्णन करो और विशेषतया उसके सुधारों, सिचाई के ढङ्गो, इमारतों, धार्मिक नीति और चरित्र का वर्णन करो। वह पठान, साम्राज्य के पतन का कहाँ तक जिमेदार था ?*

फ़िरोज़ तुग़लक
1351—1388

मुहम्मद तुगलक का कोई बेटा न था। इस लिये फिरोज़ शाह तुग़लक जो सुल्तान मुहम्मद तुगलक का चचेरा भाई था राजा बना। वह राज्य पाने का इच्छुक नहीं था परन्तु बड़े-बड़े सरदारों ने उसे इस कार्य के लिये प्रेरित कर ही लिया। उसका *शासनकाल शान्ति तथा सुख से भरपूर था।* उसने प्रजा के हित के लिए कई काम

किये। इसलिये वह तुग़लक वंश का सर्वोत्तम सम्राट् गिना जाता है।

सैनिक आक्रमण

(१) फ़िरोज़ तुग़लक ने बङ्गाल (Bengal) को जो मुहम्मद तुग़लक के शासन काल में स्वतन्त्र हो गया था। जीतने के लिये दो बार चढ़ाई की परन्तु दोनों बार ही असफल रहा। तब उसने बङ्गाल की स्वतन्त्रता स्वीकार कर ली।

(२) बंगाल से लौटते समय उसने उड़ीसा (Orissa) को (जिसे उन दिनों जाजनगर कहते थे) विजय किया।

(३) उसने काँगड़ा (Kangra) पर भी आक्रमण किया और वहाँ के राजा ने अधीनता स्वीकार कर ली।

(४) इसके बाद उसने सिन्ध (Sind) पर आक्रमण किया। सिन्ध पर विजय तो पा ली, परन्तु फ़िरोज़ ने उस प्रान्त को वहाँ के राजा के एक सम्बन्धी के पास ही रहने दिया।

(५) दक्षिण को जीतने का तो उसने रत्ती भर यत्न न किया। इससे ज्ञात होता है कि *फ़िरोज तुग़लक योग्य सेनापति न था।*

राज्य प्रबन्ध (Administration)

फ़िरोज़ का राज्य अतीव प्रशंसनीय था। उसने प्रजा के सुख और शान्ति के लिये प्रत्येक सम्भव यत्न किया, तथा देश में कई सुधार किये। इस कार्य में उसके मन्त्री खानजहाँ मकबूल ने उसकी बड़ी सहायता की।

(१) पीड़ितों की सहायता—उसने सबसे प्रथम मुहम्मद तुग़लक के समय के पीड़ित लोगों का पता लगाया और सरकारी कोष से उनकी सहायता की। कृषकों को जो रुपया ऋण के रूप में दिया हुआ था क्षमा कर दिया।

(२) **दण्ड सुधार**—दण्ड व्यवस्था अतीव साधारण कर दी। कठोर दण्ड अर्थात् हाथ पाँव काट देना निषिद्ध कर दिये गये।

(३) **टैक्स सुधार**—अनुचित टैक्स उठा दिये। केवल वही चार टैक्स लगाये गये जो इस्लामी व्यवस्था के अनुकूल थे। उसने

चुंगी के महसूल भी कम कर दिये। इससे व्यापार और कृषि में विशेष उन्नति हुई और देश में धन धान्य अधिक हो गया।

(४) बेरोज़गारों की सहायता—उसने बेरोज़गारो को काम दिये जाने का प्रबन्ध किया और बूढ़े कर्मचारियों की पेन्शन नियत कर दी। इसके अतिरिक्त उसने सैनिक पदों को पैतृक बना दिया।

(५) शिक्षा प्रसार—सुल्तान बड़ा विद्या प्रेमी था। उसने विद्या के प्रसार के लिये स्कूल तथा कालिज स्थापित किये और विद्वानों के लिये वृत्तियाँ नियत कीं।

(६) दासों का प्रबन्ध—दासो को नाना प्रकार की शिल्पविद्यायें सिखाने का प्रबन्ध किया गया, परन्तु शीघ्र ही उनकी संख्या बहुत बढ गई और वे साम्राज्य के लिये एक भय बन गये।

(७) दीवान-इ-खैरात—मुसलमान निर्धनो तथा विधवाओ की सहायता के लिये एक अलग विभाग *'दीवान-इ-खैरात'* के नाम से स्थापित किया। निर्धन मुसलमान कन्याओ के विवाह का प्रबन्ध भी यही विभाग करता था।

(८) आतुरालय—उसने देहली में एक आतुरालय (हस्पताल) स्थापित किया जहाँ औषधि तथा भोजन निःशुल्क दिये जाते थे और बड़े-बड़े योग्य डाक्टर रोगियो की चिकित्सा करते थे।

(९) कृषि (Agriculture)—फिरोज़ तुग़लक ने कृषि की उन्नति की ओर विशेष ध्यान दिया। सिंचाई के लिये यमुना तथा सतलुज नदियो से चार नहरे निकलवाईं। वर्तमान *पश्चिमी यमुना* नहर (Western Jumna Canal) फिरोज़शाह की नहर पर बनाई गई है। पुराने तालाबों की मरम्मत करवाई गई, और सिंचाई के लिये बन्ध बाँधे गये। इस प्रकार ऊसर भूमियाँ उपजाऊ हो गई। सुल्तान ने लगान भी घटा दिया और इस बात का विशेष ध्यान रखा कि लगान उगाहने में किसानों पर किसी प्रकार की कठोरता न हो। *इससे प्रजा सुखी हो गई, और सरकारी आय भी बढ गई।*

(१०) सर्वसाधारण के हितकारी काम (Public Works) फिरोज़ तुग़लक को भवन बनाने का बड़ा चाव था। उसने सर्वसाधारण के हितकारी कामों में विशेष ध्यान दिया। मस्जिदें, सरायें, सड़कें, स्नानागृह, पुल आदि बनवाये। स्कूल स्थापित किये, औषधालय प्रचलित किये, निराश्रयो और निर्धनों के लिये दानगृह खोले और कई सुन्दर बाग़ बनवाये* परन्तु उसका सब से बड़ा हितकारी कार्य नहर पश्चिमी यमुना का बनाना था। फिरोज़शाह ने कई नगर भी बसाये। देहली के समीप फ़िरोज़ाबाद नगर बसाया (जिसे आजकल कोटला फिरोज़शाह कहते हैं)। इसके अतिरिक्त हिसार फ़िरोज़ा (जिसे आज कल हिसार कहते हैं), फतेहाबाद और जौनपुर के नगर बसाये। सुल्तान को बाग़ों का भी बहुत चाव था। उसने देहली के पास १२०० बाग़ लगवाये जिनसे गवर्नमेंट को पर्याप्त आय होती थी। उसने अशोक के बनवाये हुए दो स्तम्भ भी दूसरे स्थानों से लाकर फ़िरोज़ाबाद में गड़वा दिये।

(११) जागीरें देना—फिरोज़ के सुधार अति लाभदायक थे, परन्तु उसने एक बड़ी भूल यह की कि उसने अपने अमीरों वज़ीरों को प्रसन्न करने के लिये उन्हे जागीरें देनी आरम्भ कर दीं। इससे केन्द्रीय सरकार में शिथिलता आनी आरम्भ हो गई।

(१२) धार्मिक नीति (Religious Policy)—फिरोज़ बड़ा शुद्ध हृदय और पक्का सुन्नी मुसलमान था। वह मुसलमान उलमा के परामर्श पर चलता था और प्रत्येक कार्य कुरान शरीफ के अनुसार करता था। उसका व्यवहार दूसरे धर्मों से अच्छा न था। उस ने ब्राह्मणों पर भी जो अभी तक जजिया से मुक्त थे, जज़ीया लगा दिया और मूर्ति पूजा करना और नये मन्दिर बनवाना निषिद्ध कर दिया। शिया लोगों

*इनकी गिनती इस प्रकार है—५० बन्ध, ४० मसजिदें, ३० कालिज, १०० सराये, २०० नगर, ३० तालाब, १०० हस्पताल, १०० हमाम, १५० पुल, १० कुएँ, ५ मकबरे, १० स्तम्भ, २० महल।

से भी वह कठोर व्यवहार करता था। उसने अपनी प्रजा को इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिये कई प्रलोभन दिये।

चरित्र (Character)—फिरोज भला और सुहृदय मुसलमान था। वह निर्धनों और निराश्रयों की बड़ी सहायता करता था। वह ठाटबाट को अच्छा नहीं समझता था। सोने चाँदी के बर्तनों के स्थान वह मिट्टी के बर्तन अपने महल में बर्ता करता था। फकीरों और दरवेशों का मान करता था। उसने देश में शान्ति स्थापित की और सर्वसाधारण के हित के लिये बड़े काम किये। परन्तु वह अच्छा योद्धा न था और उसका व्यवहार हिन्दुओं और शिया लोगों से अच्छा न था।

फ़िरोज तुग़लक पठान साम्राज्य के पतन के लिये बहुत कुछ उत्तरदायी है। (१) वह एक योग्य जरनैल न था (२) उसने अपने अमीरों वज़ीरों को नकद वेतन देने के स्थान पर जागीरें देने की रीति फिर से प्रचलित कर दी जिससे उन्हे विद्रोह का अवसर हाथ आ गया (३) इसके अतिरिक्त सैनिक नौकरियो को पैत्रिक बना देना (४) दासों की संख्या का अत्याधिक बढ़ जाना (५) सुल्तान का दूसरे धर्मों से अच्छा व्यवहार न करना और (६) मुसलमान उल्मा के परामर्श पर चलना ऐसी बातें थीं जो पठान राज्य के पतन का कारण सिद्ध हुईं।

1388 ई० में फिरोज़शाह तुग़लक की मृत्यु हो गई।

Q What do you know about Timur? Give a brief account of his invasion and its consequences.

(P. U. 1941)

प्रश्न—*अमीर तैमूर के विषय मे तुम क्या जानते हो? उसके आक्रमण का संक्षिप्त वर्णन करो और परिणाम भी लिखो।*

अमीर तैमूर मध्य एशिया का एक प्रबल विजयी था। वह

अमीर तैमूर
Timur

तुर्किस्तान का शासक था और समरकन्द (Samarkand) उस की राजधानी थी।

तैमूर

उसका कद लम्बा था। बचपन में ही उसकी एक टाँग लंगड़ी हो गई थी इस लिये उसे *तैमूरलिंग* या *तिमरलंग* भी कहते हैं। तैमूर बड़ा साहसी और युद्ध निपुण था। उसने लगभग सारे मध्य एशिया पर अपनी धाक जमाई हुई थी। 1398 ई० में उसने भारत पर आक्रमण किया। उस समय उस की आयु ६२ वर्ष की थी।

तैमूर का आक्रमण
1398

तैमूर के आक्रमण के समय तुग़लक वंश का अन्तिम शासक महमूद तुग़लक देहली में सिंहासनारूढ़ था। वह एक निर्बल शासक था और देशों में खलबली मची हुई थी। देहली साम्राज्य की इस दुर्दशा का समाचार पाकर और उसकी अतुल धन-सम्पत्ति का हाल सुनकर 1398 ई० में तैमूर ने ९२००० सेना के साथ भारत पर आक्रमण किया। तैमूर लूटमार करता हुआ देहली के समीप पहुँच गया। महमूद तुग़लक की सेना ने उसका सामना किया परन्तु हार खाई और सुल्तान गुजरात की ओर भाग गया। तैमूर देहली में प्रविष्ट हुआ और कई दिन देहली में लूट-खसोट और मार-काट मची रही। तैमूर के सैनिकों ने सहस्रों लोग बध कर दिये। अन्त में कोई पन्द्रह दिन देहली में रहने के बाद तैमूर मेरठ और हरद्वार होता हुआ समरकन्द वापस लौट गया। वह अपने साथ कई कारीगर भी ले गया ताकि अपनी राजधानी में अच्छे-अच्छे भवन बनवा सके और लौटते समय पंजाब के शासक *ख़िज़र ख़ां* को अपना प्रतिनिधि नियत कर गया।

१—तैमूर के आक्रमण से देहली का साम्राज्य छितरा गया और देश में अशान्ति छा गई, कई सूबेदार स्वतन्त्र हो गये।

आक्रमण का परिणाम

२—तैमूर अतुल धन-सम्पत्ति अपने साथ ले गया जिससे देश निर्धन हो गया और उस के लौट जाने के बाद एक भीषण अकाल पड़ा जिस में असंख्य मनुष्य नष्ट हो गए।

नोट—तैमूर के आक्रमण के कुछ समय बाद महमूद तुग़लक देहली लौट आया और 1412 ई० मे मर गया।

४—सैय्यद वंश

(SAYYAD DYNASTY)

1415—1450

महमूद तुगलक के बाद दो वर्ष तक देहली में कोई शासक न था। 1414 में तैमूर का प्रतिनिधि **खिज़र खाँ** देहली का राजा बना। खिज़र खाँ सैय्यद जाति से था, इसलिए उसके वंश को सैय्यद वश कहते हैं। इस वश मे केवल चार राजा हुये और उन्हो ने ३७ वर्ष राज्य किया। इस वंश का राज्य केवल देहली और उसके आसपास के कुछ एक ज़िलो तक सीमित था। अन्तिम सैय्यद राजा ने अपना राज्य पंजाब के अफ़गान गवर्नर *बहलोल लोधी* को सौंप दिया और आप तटस्थ हो गया। इस प्रकार लोधी वश का राज्य आरम्भ हुआ।

नोट—सैय्यद वंश के राजाओं ने न ही सुल्तान की उपाधि धारण की और न ही अपने नाम का सिक्का चलाया।

५—लोधीवंश

(LODHI DYNASTY)

1451—1526

बहलोल लोधी, लोधी वश का प्रवर्तक था। वह *देहली* के *सिंहासन पर बैठने वाला प्रथम पठान बादशाह था*। वह एक वीर योद्धा

था। उसने सिंहासन पर बैठते ही देहली साम्राज्य के खोये हुये गौरव को फिर से लौटाना चाहा। इसलिये सबसे प्रथम उसने देहली के आस-पास के प्रदेशों को अपने अधीन किया और फिर २६ वर्ष के निरन्तर युद्ध के बाद जौनपुर की शक्तिशाली रियासत को जीत लिया। उसकी मृत्यु पर उसका पुत्र सिकन्दर लोधी सिंहासन पर बैठा।

बहलोल लोधी
1451—1488

सिकन्दर लोधी अपने पिता की भान्ति बड़ा योग्य और शक्तिशाली शासक था। उसने बिहार और तिरहुत को जीता और आगरे का नगर बसा कर उसे देहली के स्थान पर अपनी राजधानी बनाया। आगरे के पास ही सिकन्दरा (Sikandra) नामक एक गाँव है जहाँ अकबर का मकबरा है। यह गाँव इसी सिकन्दर के नाम पर बसा था। सिकन्दर लोधी वंश का योग्यतम शासक था। उसका राज्य प्रबन्ध बहुत उत्तम था। उसके राज्य काल में देश सुख शान्ति से भरपूर था और खाने के सब पदार्थ सस्ते थे। उस की मृत्यु पर उसका बेटा इब्राहीम लोधी राजा बना।

सिकन्दर लोधी
1488—1517

इब्राहीम, लोधी वंश का अन्तिम राजा था। वह बड़ा क्रूर और दुराभिमानी था और अफ़ग़ान सरदारों का अपमान किया करता था। इस पर देश में विद्रोह होने आरम्भ हो गये और अन्त में पञ्जाब के शासक दौलत खाँ लोधी ने काबुल के बादशाह बाबर को भारत पर आक्रमण करने का न्योता दिया। बाबर ने बड़े हर्ष से यह मान लिया। 1526 ई० में पानीपत के मैदान में इब्राहीम लोधी को हराया। इब्राहीम

इब्राहीम लोधी
1517—1526

युद्ध में मारा गया और बाबर देहली के राज्य का स्वामी बन गया। इब्राहीम की मृत्यु से देहली से सुल्तानी शासन का अन्त हो गया और मुग़ल साम्राज्य आरम्भ हो गया।

Q. How long did the Pathan rule (Sultanate of Delhi) last in Northern India? State clearly the circumstances that led to its overthrow. (P.U. 1932)

प्रश्न—*उत्तरी भारत में पठान साम्राज्य कब तक रहा? उसके पतन के कारण लिखो।*

पठानों का शासन

उत्तरी भारत में पठान शासन **1206** ई० से लेकर **1526** ई० तक अर्थात् ३२० वर्ष रहा। *कुतुबुद्दीन ऐबक* ने इस की नींव डाली और बाबर ने इस वंश के अन्तिम बादशाह *इब्राहीम लोधी* को पानीपत के मैदान में बुरी तरह हराकर साम्राज्य का अन्त कर डाला।

पठान साम्राज्य के पतन के कारण निम्नलिखित थे :—

पतन के कारण

(१) गर्म जलवायु—प्रारम्भ में मुसलमान लोग शीत देश से आने के कारण बड़े वीर और परिश्रमी थे, परन्तु समय बीतने पर भारत के गर्म जलवायु ने उन्हें निर्बल और आलसी बना दिया था।

(२) निरंकुश शासन—पठानों का शासन निरंकुश शासन था। अतएव साम्राज्य की दृढ़ता के लिये आवश्यक था कि बादशाह शक्तिशाली हों। परन्तु पठानों में शक्तिशाली बादशाह बहुत कम थे। कुतुबुद्दीन ऐबक, अल्तमश, बलबन और अलाउद्दीन के बिना कोई योग्य बादशाह न था।

(३) साम्राज्य विस्तार—पठानों का साम्राज्य बहुत विस्तृत था और उन दिनों जवाक आने जाने के साधन निकम्मे और कठिन थे, दूरवर्ती प्रान्तों को अपने अधीन रखना अत्यन्त कठिन था, इस लिये साम्राज्य का विस्तार स्वयं ही पतन का कारण बना और समय पाकर कई सूबेदार स्वतन्त्र हो गये।

(४) मुहम्मद तुग़लक की नीति—मुहम्मद तुग़लक के कुकृत्यों

और अत्याचारों के कारण देश में स्थान-स्थान पर विद्रोह उठ खड़े हुये। बङ्गाल और दक्षिण के प्रांत सदा के लिये साम्राज्य से पृथक् हो गये। इसके अतिरिक्त उसने विदेशियों को उच्च पदों पर नियुक्त करके भारी भूल की।

(५) फ़िरोज़ का जागीरें देना—फ़िरोज़ तुग़लक ने जो नक़द वेतन के स्थान पर जागीरें देने की रीति चलाई थी वह उसकी बड़ी भारी भूल थी, क्योंकि उससे जागीरदारों के लिए स्वतन्त्र होना सुगम हो गया।

(६) मुग़लों के आक्रमण—मुग़लों के आक्रमणों ने पठान साम्राज्य को बहुत दुर्बल कर दिया। 1398 ई० में तैमूर के आक्रमण ने उसकी नींव हिला दी और साम्राज्य बुरी तरह छिन्न-भिन्न हो गया।

(७) सरदारों और सूबेदारों का स्वार्थ—सरदार और सूबेदार अत्यन्त स्वार्थी थे। उन्हें केन्द्रीय राज्य से प्रेम न था और जब कभी उन्हें राज्य छीनने या स्वतन्त्र होने का अवसर मिलता था वे कभी नहीं चूकते थे। अल्तमश ने कुतुबुद्दीन के बेटे को सिंहासन से उतार दिया। ज़फ़र ख़ाँ दक्षिण में स्वतन्त्र हो बैठा और उसने बहमनी साम्राज्य स्थापित किया।

(८) हिन्दुओं के विद्रोह—हिन्दू लोग यद्यपि बहुसंख्या में थे, फिर भी मुसलमान राजाओं का उनके साथ ऐसा बर्ताव न था जिससे हिन्दुओं के हृदय में उनके लिये प्रेम, श्रद्धा या भक्ति हो इसलिये वे मुसलमान शासकों के राज्य से प्रसन्न न थे और राजपूत राजे भी अपनी स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के इच्छुक थे। अतः जब कभी उन्हें अवसर मिलता था वे विद्रोह कर देते थे।

(९) बाबर का आक्रमण—इस साम्राज्य का अन्तिम बादशाह इब्राहीम लोधी दुराभिमानी और क्रूर स्वभाव का था। सभी पठान अमीर उससे रुष्ट थे। इसलिये बाबर ने उस अवसर से लाभ उठाकर भारत पर आक्रमण किया और पठान साम्राज्य की समाप्ति हो गई।

बहमनी और विजयनगर साम्राज्य

THE BAHMANI AND VIJAYANAGAR KINGDOMS

मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में दक्षिण का प्रदेश पठान साम्राज्य से पृथक् हो गया था। इस प्रदेश में दो शासन स्थापित हो गये। एक तो *बहमनी साम्राज्य* जो मुसलमानों का था और जिसका संचालक *जफ़र खां* था। दूसरा *विजयनगर साम्राज्य* जो हिन्दुओं का था और जिसकी नींव दो हिन्दू भाइयों *हरिहर* और *बुक्काराय* ने डाली थी।

Q. Give a brief account of the rise and fall of the Bahmani Kingdom

प्रश्न—*बहमनी साम्राज्य के उदय और पतन का वर्णन करो।*

बहमनी साम्राज्य एक इस्लामी राज्य था, जिसका संचालक एक व्यक्ति *जफ़र खाँ* नाम का था। उसने मुहम्मद तुगलक के शासन काल में 1347 ई० में इस साम्राज्य की नींव डाली और गुलबर्गा (Gulbarga) को अपनी राजधानी बनाया।

बहमनी साम्राज्य 1347—1518

जफ़र खां अपने आप को ईरान के एक शासक *बहमन शाह* के वंश से मानता था इस लिये उसने अपना उपनाम *अलाउद्दीन हसन शाह बहमनी* रक्खा और इस साम्राज्य का नाम बहमनी साम्राज्य पड़ गया।

इस वंश का राज्य कोई पौने दो सौ वर्ष तक रहा। उन्नति करते करते यह साम्राज्य *कृष्णा नदी* के उत्तर में दक्षिण के आरपार दोनों ओर समुद्र तक जा पहुँचा। इस राज्य के बादशाह अपने पड़ोसी हिन्दू साम्राज्य विजयनगर से सदा लड़ते रहे। इन लड़ाइयों का मुख्य कारण *रायचूर दोआब* (Raichur Doab) *था जो कृष्णा और तुङ्गभद्रा नदियों के बीच स्थित है।*

इस साम्राज्य का सबसे प्रसिद्ध व्यक्ति एक ईरानी **महमूद गावाँ** (Mahmud Gawan) हुआ है जो बहुत समय तक इस साम्राज्य का वज़ीर रहा। *वह बड़ा बुद्धिमान और उच्चकोटि का राजनीतिज्ञ था और*

बड़ा सादा जीवन व्यतीत करता था । उसने देश के प्रबन्ध मे कई सुधार किये और अपनी विजयों से राज्य को विस्तृत किया । परन्तु 1481 ई० में उसके शत्रुओं ने एक झूठे दोष के आधार पर उसका वध करवा दिया । महमूद गावाँ के बाद साम्राज्य का पतन आरम्भ हो गया और कुछ एक वर्षों में ही यह साम्राज्य पाँच भागों में बँट गया, *(१)* बीदर, *(२)* बरार, *(३)* अहमदनगर, *(४)* बीजापुर, *(५)* गोलकुण्डा ।

बहमनी साम्राज्य के भिन्न-भिन्न भाग होने पर भी विजयनगर के हिन्दू साम्राज्य के साथ उनका झगड़ा बराबर बना रहा और अन्त में 1565 ई० में सब बहमनी राज्यों ने मिलकर *तलीकोट* के युद्ध में इस साम्राज्य को समाप्त कर दिया ।

नोटः—(१) **बीदर** (Bidar) की नीव एक व्यक्ति *कासिम बरीद* ने जो बहमनी बंश के अन्तिम बादशाह का मन्त्री था, डाली थी । परन्तु शीघ्र ही इस रियासत की समाप्ति हो गई और यह बीजापुर की रियासत में सम्मिलित हो गई । (२) **बरार** (Berar) की नीव एक व्यक्ति इमादुल्मुल्क ने डाली थी । कुछ काल बाद अहमदनगर के बादशाह ने इसे अपनी रियासत मे सम्मिलित कर लिया । (३) **अहमदनगर** (Ahmadnagar) का संचालक एक व्यक्ति *निज़ाम अहमदशाह* था । चाँदबीबी इसी रियासत मे हुई है । शाहजहाँ ने 1637 ई० में इसे मुग़ल साम्राज्य मे सम्मिलित कर लिया । (४) **बीजापुर** (Bijapur) की नीव यूसुफ आदिल शाह ने डाली थी । 1686 ई० मे इसे औरङ्गज़ेब ने विजय कर लिया । (५) **गोलकुण्डा** (Golkunda) की नीव एक व्यक्ति कुतुबल्मुल्क ने रखी थी । 1687 ई० मे इसे औरङ्गज़ेब ने मुग़ल साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया ।

Q. Briefly describe the story of the Vijayanaga kingdom and write a short note on its administratio

प्रश्न—*विजयनगर साम्राज्य का संक्षेप से वर्णन करो और उस राज्य-प्रबन्ध के विषय में एक नोट लिखो ।*

विजयनगर दक्षिण में हिन्दुओं का एक साम्राज्य था और बहमनी साम्राज्य के दक्षिण में स्थित था। इस की स्थापना मुहम्मद तुग़लक के शासनकाल में दो हिन्दू भाइयों *हरिहर* और *बुकाराय* ने 1336 ई० में की थी इसलिये कि मुस्लिम आक्रमणों की बढ़ती हुई बाढ़ को रोका जाय। यह साम्राज्य दो सौ वर्ष से कुछ अधिक समय तक स्थापित रहा।

विजयनगर साम्राज्य
1336—1565

इस राज्य ने शीघ्र ही बहुत उन्नति की और कृष्णा नदी से लेकर कुमारी अन्तरीप तक फैल गया। इसकी राजधानी *विजयनगर* थी। इस साम्राज्य के राजा बहुधा अपने पडोसी बहमनी साम्राज्य से लड़ते रहे। इन सब में प्रसिद्ध राजा **कृष्ण देव** (Krishan Dev) था जिस ने 1509 से 1529 तक शासन किया। वह बड़ा विद्वान् और योग्य शासक था। *उसने मुसलमानों को हराया, भूमि की सिंचाई के लिये नहरें खुदवाईं, मन्दिरों का निर्माण करवाया और प्रजा के हित के लिए प्रत्येक सम्भव उपाय किया।* उसका व्यवहार पुर्तगालियों के प्रति बड़ा अच्छा था। वह एक कवि और लेखक भी था।

☞ **तलीकोट की लड़ाई** (Battle of Talikot), 1565 ई०—विजयनगर साम्राज्य का अन्तिम राजा *रामराजा* था। वह बड़ा योग्य परन्तु अभिमानी पुरुष था। वह बहमनी साम्राज्य की भिन्न-भिन्न रियासतों को लड़ाता रहता था। अन्त में उन मुस्लिम रियास्तों ने (सिवाय बरार के) आपस में एकता कर ली और विजयनगर पर चढ़ाई की। 1565 ई० में *तलीकोट* (Talikot) से कुछ दूरी पर मुसलमानों और हिन्दुओं के मध्य एक महान युद्ध हुआ जिस में मुसलमानों की विजय हुई। लड़ाई में रामराजा मारा गया और लगभग एक लाख हिन्दू खेत रहे। इस लड़ाई को *तलीकोट की लड़ाई* कहते हैं। इस लड़ाई का परिणाम यह हुआ कि :—

(१) हिन्दुओं के विजयनगर राज्य का अन्त हो गया।

(२) विजयनगर के विनाश का एक भारी परिणाम यह हुआ कि

पुर्तगालियों के व्यापार को जिसका इस राज्य से घनिष्ट सम्बन्ध था बड़ी हानि पहुँची और यह बात पुर्तगालियों के पतन का एक कारण सिद्ध हुई।

राजधानी—इस राज्य की राजधानी विजयनगर थी। यह अतीव सुन्दर और धन से परिपूर्ण नगर था। इस में अति सुन्दर भवन और मन्दिर बने हुये थे और इसका घेरा लगभग साठ मील था। इस के चारों ओर सात दीवारें थीं।

विजयनगर का प्रान्तीय शासन

राज्य प्रबन्ध—सारा राज्य प्रबन्ध दो सौ प्रान्तों में बँटा हुआ था और प्रत्येक प्रांत में एक प्रांतीय शासक नियत था जो लगभग स्वतंत्र ढङ्ग पर शासन करता था और प्रायः राजकीय वंश से होता था। कर अधिक भारी थे, उपज की वृद्धि के लिये बन्ध और नहरें बनी हुई थीं, दण्ड अति कठोर थे, सेना की समस्त संख्या बारह लाख के लगभग थी, राजे निरंकुश थे।

हिन्दूमत और इस्लाम का एक दूसरे पर प्रभाव

THE MUTUAL INFLUENCE OF HINDUISM AND ISLAM

Q. Write a short note on the effects of the contact of Hinduism and Islam.

प्रश्न—*हिन्दुओं और मुसलमानों के परस्पर मेल-जोल का एक दूसरे पर क्या प्रभाव पड़ा ?*

हिन्दुओं और मुसलमानों के मेल-जोल का प्रभाव

मुस्लिम राज्य की स्थापना के कुछ समय बाद हिन्दू और मुसलमान आपस में पड़ोसियों की भाँति रहने लगे थे। इसलिये यह स्वाभाविक था कि उनका एक दूसरे के रीति रिवाज और रहन-सहन पर प्रभाव पड़े। यह प्रभाव अधिकतर निम्नलिखित थे :—

(१) कई हिन्दुओं ने जज़िया से बचने के लिये या किन्हीं अन्य कारणों से विवश होकर इस्लाम मत को अपना लिया।

(२) कई मुसलमानों ने हिन्दू स्त्रियों से विवाह कर लिये। इन नवमुस्लिमो ने अपने पुराने रीति रिवाज स्थिर रखे, जिस से मुस्लिम घरानों में हिन्दू रीति रिवाज घर कर गये।

(३) हिन्दू स्त्रियों में परदे की प्रथा पहले की अपेक्षा अधिक फैल गई और बचपन का विवाह तथा सती का रिवाज अधिक प्रचलित हो गये।

(४) हिन्दू लोग हिन्दी भाषा बोलते थे और मुसलमान अधिकतर फ़ारसी का प्रयोग करते थे। इन दोनों भाषाओं के मेल-जोल का परिणाम यह हुआ कि एक नई भाषा उर्दू का जन्म हुआ।

(५) इसलाम मत का एक प्रभाव यह हुआ कि हिन्दुओं में भी ईश्वर की एकता पर ज़ोर दिया जाने लगा। जात पात का भी विरोध आरम्भ हुआ। हिन्दुओं में भक्ति की लहर ने ज़ोर पकड़ा।

Q. Write a short note on the Bhakti Movement. Give a brief account of the chief reformers of this movement (P. U. 1938-41-44-50)

प्रश्न—*भक्ति की लहर से क्या अभिप्राय है? इसके प्रसिद्ध नेताओं का संक्षेप से वर्णन करो।*

भक्ति की लहर

भक्ति की लहर एक धार्मिक लहर है जिसका अर्थ है कि *मनुष्य एक ईश्वर की पूजा और प्रेम में लीन होकर मुक्ति प्राप्त कर सकता है।* भक्ति-मत में जात-पात का भेद-भाव और छूत-छात नहीं होता। भक्ति-मत के अनुयायी नाच और राग-रंग द्वारा परमात्मा की पूजा करते हैं और उनका मत है कि *एक परमात्मा के प्रेम में लीन हो जाने से ही मुक्ति प्राप्त हो जाती है।*

यों तो भक्ति का सिद्धान्त हिन्दुओ में बहुत पुराना है, परन्तु पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में भक्ति की लहर विशेष रूप से प्रसिद्ध हुई। इसका कारण यह था कि इस्लाम-मत के प्रभाव से भारत में कई ऐसे हिन्दू धार्मिक नेता उत्पन्न हुये जिन्हों ने ईश्वर की एकता पर ज़ोर

दिया। मूर्तिपूजा जात-पात के भेद-भाव और छूत-छात के विरुद्ध आन्दोलन किया और उसके साथ ही भक्ति-मत का प्रचार किया। इन नेताओं की शिक्षा का एक प्रभाव यह हुआ कि इस्लाम के प्रचार का ह्रास हुआ, क्योंकि अब हिन्दू लोग समझने लगे थे कि इस्लाम में कोई ऐसा गुण नहीं जो हिन्दू धर्म में न हो।

भक्ति मार्ग के नेताओं में नीचे लिखे प्रसिद्ध हैं।

भक्ति मार्ग के नेता

(१) रामानन्द (Ramanand)—इनका जन्म चौदहवीं शताब्दी में *इलाहाबाद* में हुआ। वे अधिकतर *बनारस* में रहा करते थे। उन्हों ने भक्ति-मत का उत्तरी भारत में प्रचार किया। वह प्रथम हिन्दू थे जिन्होंने लोगों को प्रचलित भाषा (हिन्दी) में शिक्षा दी। उनके शिष्यों में उच्च तथा नीच प्रत्येक जाति के व्यक्ति थे। *उन्होंने राम और सीता की आराधना पर ज़ोर दिया।* उनके चेलों में भक्त कबीर सबसे प्रसिद्ध थे।

(२) कबीर (Kabir)—भक्त कबीर पन्द्रहवीं शताब्दी में हुए हैं। उनके जन्म के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न विचार हैं। कई तो कहते है कि उनका जन्म हिन्दू घर में हुआ और पालन-पोषण एक मुसलमान जुलाहे *नीरू* के घर हुआ। कइयों का मत है कि वे यथार्थ में मुसलमान थे परन्तु हिन्दुओं के प्रभाव में आ चुके थे। उनका जन्म *बनारस* में हुआ। उनका व्यवसाय जुलाहागीरी था। वह रामानन्द के शिष्य थे। उन्होंने जात-पात और मूर्ति-पूजा के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन किया। *वह कहा करते थे कि अल्ला और ईश्वर एक ही है और सर्व-व्यापक है। उसकी भक्ति के लिये ससार का परित्याग आवश्यक नहीं वरन् ससार मे रहते हुये भी मनुष्य परमात्मा को पा सकता है।* उन्हो ने अपने मत का प्रचार अधिकतर बंगाल और बिहार मे किया। उनके

कबीर जी

शिष्यों में हिन्दू और मुसलमान दोनों थे। उनके दोहे समस्त भारत में प्रसिद्ध हैं। कबीर सिकन्दर लोधी के राज्य काल में हुये हैं।

(३) गुरु नानक (Guru Nanak)—गुरु नानक देव जी 1469 में ज़िला शेखूपुरा के तलवंडी नामक गाँव में जिसे आजकल ननकाना साहिब कहते हैं उत्पन्न हुये थे। ३० वर्ष की आयु में वह साधु हो गये और उन्होंने समस्त उत्तरी भारत में भ्रमण करके भक्ति का प्रचार किया। उनकी शिक्षा कबीर जी की भाँति ही थी। वे *जात-पात, छूत-छात और मूर्ति-पूजा के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों की कुरीतियों के विरुद्ध प्रचार किया और एक ईश्वर की पूजा पर ज़ोर दिया।* उन्होंने सिक्ख मत स्थापन किया। 1538 ई० में ७० वर्ष की आयु में *कर्तारपुर* के स्थान पर उनकी मृत्यु हुई।

गुरु नानक देव जी

(४) चैतन्य या गौराङ्ग महाप्रभु (Chaitanya)—चैतन्य या गौराङ्ग महाप्रभु का जन्म 1485 ई० में बंगाल के नदिया (Nadia) नामक नगर में एक ब्राह्मण कुल में हुआ। २४ वर्ष की आयु में ही उन्होंने सन्यास ले लिया। वह श्री कृष्ण के अनन्य भक्त थे और उन्हीं के प्रेम में मगन होने का प्रचार करते थे। *उन्होंने बंगाल में वैष्णव मत का प्रचार किया।* उन

चैतन्य महाप्रभु

के भक्त आजकल भी बंगाल और पंजाब में पाये जाते हैं। ये भक्त अपने आपको कृष्ण की गोपियाँ कहते हैं। ये लोग राग-रंग द्वारा कृष्ण की भक्ति करते हैं। चैतन्य स्वामी के शिष्य प्रत्येक जाति में से थे और उनमें एक मुसलमान भी था। 1533 ई० में चैतन्य महाप्रभु की मृत्यु हुई। बंगाल में उनका नाम बहुत प्रसिद्ध है। लाखों हिन्दू उन्हें कृष्ण का अवतार मानकर उनकी पूजा करते हैं।

मुग़ल वंश

THE MOGHUL DYNASTY

मुग़ल या मंगोल मध्य एशिया के मंगोलिया प्रदेश के वासी थे। वे बड़े वीर योद्धा थे। ईसा की तेरहवीं शताब्दी में इन लोगों ने भारत पर आक्रमण करने आरम्भ कर दिये थे। उनका एक प्रसिद्ध नेता चंगेज़ ख़ाँ था, जिसने अल्तमश के शासन काल में भारत की पश्चिमी सीमा को जीता। इसके बाद भी मुग़ल लोग समय समय पर देहली सम्राटों के शासनकाल में भारत पर आक्रमण करते रहे। 1526 ई० में बाबर ने आक्रमण किया और इब्राहीम को हराकर मुग़ल वंश की नींव डाली।

मुग़ल

नोट—चंगेज़ख़ाँ आदि मुग़ल मुसलमान नहीं थे। मुग़ल बाद में मुसलमान हुये।

ज़हीरुद्दीन बाबर

ZAHIR-UD-DIN BABAR
1526—1530

Q. Give a brief account of the early career, conquests and character of Babar.

प्रश्न—बाबर के आरम्भिक जीवन, विजयों और चरित्र का संक्षिप्त वर्णन करो।

बाबर भारत में मुग़ल वंश का पहला बादशाह था। उसका नाम

बाबर का प्रारम्भिक जीवन

जहीरुद्दीन था। वह अपने पिता की ओर से तैमूर और माता की ओर से चंगेज़ ख़ाँ के वंश में से था। इस प्रकार उसकी नसों में मध्य एशिया के दो विजयी वीरों के रक्त का सम्मिश्रन था। उसका पिता *मिर्ज़ा उमर शेख़* तुर्किस्तान की एक छोटी सी रियासत फ़र्ग़ाना* (Ferghana) का शासक था।

बाबर की आयु उस समय लगभग ११ वर्ष की थी, जब उसके पिता का देहान्त हो गया और बाबर को कठोर विपत्तियों का सामना करना पड़ा। उसके सम्बन्धियों ने उसके साथ कठोर दुर्व्यवहार किया और उसका पैतृक देश भी उससे छीन लिया। अन्त में दस वर्ष के निष्फल प्रयत्न के बाद बाबर अपना देश छोड़ कर काबुल (Kabul) चला आया, जहाँ वह 1504 ई० में बादशाह

बाबर

बन गया। इसके कुछ समय बाद बाबर ने भारत को विजय करने का विचार किया और चार बार सिन्ध नदी को पार करके पंजाब पर आक्रमण किया। उन दिनों देहली में *इब्राहीम लोधी* का राज्य था, जिसने अपने दुर्व्यवहार से सब सरदारों को अपने विरुद्ध कर लिया हुआ था और वे सब उसके राज्य से छुटकारा पाना चाहते थे।

भारत विजय

1525 ई० में पंजाब के वीर सूबेदार *दौलत ख़ाँ लोधी* का निमन्त्रण पाकर बाबर ने भारत पर आक्रमण किया। परन्तु दौलत ख़ाँ स्वयं उसका विरोधी हो गया। अतएव बाबर को पहले उसी से लड़ना पड़ा। दौलत ख़ाँ की हार हुई और बाबर ने पंजाब पर अधिकार कर लिया और देहली की ओर बढ़ा। इसके पश्चात् उसने चार ही युद्धों से सारे उत्तरी भारत

---

*इसे आजकल खोकन्द कहते हैं।

पर अधिकार जमा लिया।

(१) पानीपत (Panipat) की पहली लड़ाई, 1526 ई०—यह लड़ाई बाबर और देहली के सुल्तान *इब्राहीम लोधी* के मध्य हुई। इब्राहीम एक लाख सेना और कई हाथियों के साथ मैदान में आया। बाबर की सेना केवल १२,००० थी, परन्तु थी शिक्षित और उसके पास तोपखाना भी था। इसके अतिरिक्त बाबर स्वयं बड़ा वीर जरनैल था। परिणाम-स्वरूप इब्राहीम की हार हुई और वह लड़ाई में मारा गया। इसके शीघ्र ही बाद बाबर के पुत्र हुमायूँ ने आगरा पर अधिकार कर लिया। *इस प्रकार इस लड़ाई से देहली और आगरे पर बाबर का अधिकार हो गया और भारत मे मुग़ल साम्राज्य की नींव पड़ गई।*

(२) कंवाहा* (Kanwaha) की लड़ाई, 1527 ई०—पानीपत की लड़ाई के बाद बाबर को राजपूतों का सामना करना पड़ा। राजपूतों का सरदार, चित्तौड़ का वीर शासक *राणा सांगा* (संग्राम सिंह) था। उसका अनुमान था कि बाबर इब्राहीम को हराकर लौट जायगा, परन्तु जब उसने देखा कि बाबर ने भारत में राज्य स्थापित करने का दृढ़ निश्चय कर लिया है, तो वह एक बहुत बड़ी सेना के साथ बाबर का सामना करने के लिए तैयार हो गया। सीकरी (Fatehpur Sikri) के समीप *कणवाहा* के मैदान में घोर युद्ध हुआ। आरम्भ में तो मुग़लों के होश उड़ गये, परन्तु बाबर ने एक प्रभावशाली भाषण से अपनी सेना को उत्साहित किया। मदिरा के प्याले तोड़ डाले और शपथ खाई कि वह भविष्य में कभी मदिरा नही पियेगा। तब मुग़लों ने बड़े साहस से धावा किया। राजपूतों की पराजय हुई और राणा साँगा युद्ध क्षेत्र से भाग निकला और दो वर्ष पश्चात मर गया। *बाबर की इस जीत ने भारत विजय का कार्य सुगम कर दिया।*

(३) चन्देरी (Chanderi) की लड़ाई, 1528 ई०— *कणवाहा*

---

*यह स्थान सीकरी से दस मील और आगरा से बीस मील है। इसे खानुआ भी कहते हैं।

की लड़ाई से अगले वर्ष अर्थात् 1528 ई० में बाबर ने आगे बढ़ कर मालवा में राजपूतों के प्रसिद्ध दुर्ग चंदेरी (Chanderi) को भी, जो राजपूत सरदार मैदनी राव के अधीन था, जीत लिया।

(४) घागरा (Ghagra) **की लड़ाई, 1529 ई०**—चंदेरी की लड़ाई के बाद बाबर बङ्गाल और बिहार की ओर बढ़ा, क्योंकि वहाँ अफ़ग़ानों ने इब्राहीम के भाई *महमूद लोधी* के अधीन अपनी शक्ति दृढ़ कर ली थी। 1529 ई० में घागरा और गङ्गा के सङ्गम पर अफ़ग़ानों की पराजय हुई।

ऊपर लिखी चार लड़ाइयों में विजय पाकर बाबर सारे उत्तरी भारत का स्वामी बन गया।

चरित्र (Character)

बाबर बड़ा हृष्ट पुष्ट था। उसकी प्रारम्भिक कठिनाइयों ने उसे धैर्यवान और साहसी बना दिया था। उसकी वीरता के कारण ही तुर्क सरदारों ने उसे बाबर (शेर-बबर) की उपाधि दी थी। वह इतना बलवान् था कि बड़ी लम्बी लम्बी यात्रायें घोड़े की पीठ पर सवार होकर समाप्त कर लेता था। कहते हैं कि वह दो मनुष्यों को काँख में दबाकर आगरे के दुर्ग की दीवार पर दौड़ सकता था। वह तैराक भी उच्चकोटि का था। भारत में उसने जितनी नदियाँ पार कीं (गङ्गा के सिवाय) सब तैर कर ही कीं। उसे शिकार का भी शौक था। इन सब से बढ़कर वह बड़ा *आत्म विश्वासी* था।

बाबर एक उत्कृष्ट श्रेणी का *कवि* और *लेखक* भी था। तुर्की और फ़ारसी में बढ़िया पद्य लिखा करता था। उसने अपनी जीवनी (तुज़क-इ-बाबरी) स्वयं लिखी है। बाबर को प्राकृतिक दृश्यों और विलासपूर्ण सभाओं का भी चाव था। वह मदिरा बहुत पीता था। परन्तु कण्वाहा की लड़ाई में उसने भविष्य में मदिरा न छूने की दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली थी।

बाबर एक *अनुभवी जरनैल* भी था। उसने चार ही वर्षों में सारा उत्तरी भारत जीत लिया। उसके भाषणों में जादू का प्रभाव था। उसने कण्वाहा के युद्ध में अपनी दक्षता का पूर्ण परिचय दिया। वह अपने-

सैनिकों से बहुत प्रेम करता था, परन्तु वह नियन्त्रण को कभी ढीला नहीं होने देता था।

बाबर का देहान्त 1530 ई० में हुआ जिससे उसे शासन प्रबन्ध का अवसर ही न मिला। उसके देहान्त के विषय में यह प्रचलित कथा है, कि 1530 ई० की ग्रीष्म ऋतु में उसका बेटा हुमायूँ बहुत बीमार हो गया और चिकित्सा शुश्रूषा से भी वह निरोग न हो सका। तब किसी ने बाबर को सम्मति दी कि वह कोई असूल्य वस्तु दान में दे डाले। बाबर ने सोचा कि मेरे अपने जीवन से बढ़कर और अमूल्य वस्तु क्या हो सकती है, तब उसने पलंग के चारों ओर तीन चक्कर काटे और परमात्मा से प्रार्थना की कि हुमायूँ का रोग मुझे लग जाये। कहते हैं कि ऐसा ही हुआ। हुमायूँ निरोग होता गया और बाबर रोगी होकर 26 दिसम्बर 1530 ई० को इस संसार से विदा हो गया। यह घटना आगरा नगर में हुई। उसकी इच्छानुसार उसके शव को काबुल में ले जाकर एक रमणीक बाग़ में दफनाया गया।

बाबर का देहान्त
(Death)

Q. Write a short note on Rana Sanga.
(P. U. 1939-41)

प्रश्न—*राणा सांगा पर नोट लिखो।*

राणा संग्रामसिंह जो इतिहास में राणा साँगा के नाम से प्रसिद्ध है, *चित्तौड़ का वीर राजपूत सरदार था।* वह अतीव युद्ध कुशल और साहसी योद्धा था। उस ने अपने जीवन में कई संग्राम जीते थे। मालवा और गुजरात के शासकों को पराजित किया था। इन युद्धों में उसकी एक आँख, *एक हाथ और एक टांग निकम्मे हो गये थे। शरीर पर तलवारों और भालों के अस्सी चिन्ह थे।* उसने बाबर को भारत पर आक्रमण करने का निमन्त्रण दिया था। परन्तु वह कदापि सहन न कर सकता था कि बाबर भारत का बादशाह बन बैठे। इसलिये जब बाबर ने इब्राहीम को पानीपत के मैदान में हराया, तो राणा ने उसे

राणा सांगा

रोकने की ठानी और 1527 ई० में कणवाहा के स्थान पर बड़ी वीरता से सामना किया, परन्तु हार गया और युद्धक्षेत्र से भाग निकला। इस के दो वर्ष बाद वह मर गया।

नसीरुद्दीन हुमायूँ

NASIR-UD-DIN-HUMAYUN
1530—1540 और 1555—1556

Q. Briefly describe the story of the reign of Humayun

प्रश्न—*हुमायूँ के शासन काल का संक्षेप से वर्णन करो।*

हुमायूँ का सिंहासनारोहण

बाबर की मृत्यु के बाद उसका सबसे बड़ा पुत्र हुमायूँ जो उस समय २३ वर्ष का था सिंहासन पर बैठा। मरते समय बाबर ने उसे यह उपदेश दिया था कि अपने भाइयो (कामरान, हिन्दाल और अस्करी) से अच्छा व्यवहार करना। तदानुसार हुमायूँ ने सिंहासनारूढ़ होते ही राज्य के भिन्न-भिन्न भाग उन्हे राज्य करने के लिये दे दिये। कामरान को जो काबुल और कंधार का शासक था उसके प्रदेशों में पक्का कर दिया और

हुमायूँ

फिर जब उसने पंजाब पर भी अधिकार कर लिया तो हुमायूँ चुप रहा। *हिन्दाल को मेवात और अलवर का प्रदेश और अस्करी को सँभल,* (रुहेलखंड) का प्रदेश दे दिया। परन्तु साम्राज्य का यह विभाजन हुमायूँ के लिये बड़ा हानिकर सिद्ध हुआ।

बाबर को अपने जीवन में राज्य को संगठित करने का अवसर ही न मिला था, इसलिए सिंहासनारूढ़ होते ही हुमायूँ चारों ओर से कठिनाइयों में घिर गया। पूर्व में बंगाल और बिहार के अफग़ानों ने

सिर उठाया, जिनमें शेरशाह सबसे प्रसिद्ध था। दक्षिण में गुजरात के शासक बहादुरशाह ने देहली जीतने की तैयारियाँ कीं। उत्तर-पश्चिम में उसके भाई कामरान ने जो काबुल, कंधार का शासक था पंजाब पर अधिकार कर लिया, जिससे हुमायूँ के लिये युद्ध-कुशल सैनिक जो उन्हीं प्रदेशों में मिलते थे, सेना के लिये पाना कठिन हो गया। परन्तु हुमायूँ का सबसे बड़ा शत्रु शायद वह स्वयं ही था, क्योंकि वह कोई काम भी जम कर नहीं कर सकता था, अपितु वह एक काम को अधूरा छोड़ दूसरे की ओर लग जाता था।

हुमायूँ के मार्ग में कठिनाइयां

(१) बिहार पर चढ़ाई, 1531 ई०—हुमायूँ ने सबसे पहले पूर्व के अफग़ानों पर चढ़ाई की और उन्हें लखनऊ के निकट हरा दिया। फिर उसने चुनार के दुर्ग को जो शेरशाह के कब्ज़े में था घेर लिया परन्तु शेरशाह को पूर्ण रूप से अधीनता में लाये बिना वह आगरे लौट आया। इससे शेरशाह को अपनी शक्ति दृढ़ करने का अवसर मिल गया।

हुमायूँ की लड़ाइयाँ

(२) गुजरात पर चढ़ाई, 1535 ई०—अफग़ानों को हराने के बाद हुमायूँ गुजरात की ओर बढ़ा। बहादुरशाह की हार हुई और वह कुछ समय मारा-मारा फिरता रहा। अन्ततः उसने दियू (Diu) के टापू में पुर्तगालियों के यहाँ रक्षा ली। उस समय हुमायूँ को यह सूचना मिली कि शेरशाह बंगाल में अपनी शक्ति को बढ़ा रहा है। अतः वह वहाँ से शेरशाह की ओर बढ़ा। पीछे से बहादुरशाह ने गुजरात फिर छीन लिया।

(३) ☞ शेरशाह से लड़ाई, 1539-40 ई०—शेरशाह बड़ा चतुर था। वह इस समय तक बंगाल विजय कर चुका था। जब हुमायूँ उसकी ओर बढ़ा तो उसने किसी प्रकार की बाधा न डाली प्रत्युत हुमायूँ को बिना रोक-टोक दूर देश के अन्दर घुस जाने दिया। हुमायूँ ने बङ्गाल की राजधानी गौड़ (Gaur) पर अधिकार कर लिया, परन्तु

वर्षा ऋतु के आरम्भ हो जाने के कारण उसे बहुत समय वहीं ठहरना पड़ा। मौसमी ज्वर फूट निकला और उसकी सेना के बहुत से सैनिक मर गये। इसी बीच में शेरशाह ने हुमायूँ के युद्ध सामग्री के आवागमन के मार्ग को रोक लिया। विवश हो हुमायूँ ने वापस लौटना चाहा; परन्तु शेरशाह ने हुमायूँ की लौटती हुई सेना को गंगा नदी के तट पर बक्सर के समीप *चौसा* (Chausa) के स्थान पर रोक लिया और अचानक धावा करके उसे हराया। यह घटना 1539 ई० की है। हुमायूँ की सेना को बहुत हानि पहुँची। सहस्रों सैनिक मारे गये और गंगा नदी में डूब गये। हुमायूँ स्वयं प्राण बचाने के लिये घोड़े समेत गंगा में कूद पड़ा। घोड़ा तो मँझधार में डूब गया, परन्तु हुमायूँ को एक भिश्ती ने जिसका नाम *निज़ाम* था डूबने से बचा लिया। हुमायूँ ने इस उपकार के बदले में आगरे पहुँच कर उस भिश्ती को थोड़े समय के लिये राज्य करने की आज्ञा दे दी और भिश्ती ने *चाम* के *दाम* चलाये। दूसरे वर्ष अर्थात् 1540 ई० में हुमायूँ ने फिर शेरशाह पर चढ़ाई की, परन्तु *कन्नौज* (Kanauj) के स्थान पर हार खाई और भाग निकला। शेरशाह भारत का सम्राट् बन गया।

हुमायूँ का देश-निकाला

कन्नौज के स्थान पर शेरशाह से हार जाने के बाद हुमायूँ *लाहौर* आया कि अपने भाई कामरान से सहायता पा सके, परन्तु कामरान शेरशाह के भय से लाहौर छोड़कर काबुल भाग गया था। वहाँ से निराश होकर हुमायूँ ने *सिन्ध* की ओर मुँह किया और कई विपत्तियाँ सहने के बाद *अमरकोट* पहुँचा, जहाँ हुमायूँ का लड़का अकबर (1542 ई० में) उत्पन्न हुआ। इसी स्थान पर बैरम खाँ जो बाद में अकबर का संरक्षक बना हुमायूँ से मिला। वह कन्नौज की पराजय के बाद गुजरात को भाग गया था। उसके आ मिलने से हुमायूँ को बहुत प्रसन्नता हुई। अमरकोट से हुमायूँ *ईरान* को चला गया। वहाँ के बादशाह *शाह तहमास्प* (Shah Tehmasp) ने उसकी सहायता करना स्वीकार किया। ईरान से सेना लेकर हुमायूँ लौटा और

कुछ काल अपने भाइयों से युद्ध के बाद उसने कन्धार और काबुल जीन लिये। उस समय शेरशाह सूरी मर चुका था और उसके उत्तराधिकारी बड़े शक्तिहीन थे।

हुमायूँ का दोबारा राज्य प्राप्त करना

1555 ई० में हुमायूँ ने भारत पर आक्रमण किया और पंजाब और देहली के शासक सिकन्दर सूरी को सरहिंद (Sarhind) के स्थान पर हरा कर देहली और आगरा पर अधिकार कर लिया।

हुमायूँ का मकबरा

सिकन्दर सूरी शिवालिक की पहाड़ियो में भाग गया। इस प्रकार पन्द्रह वर्ष के देश निकाले के पश्चात हुमायूँ फिर बादशाह बन गया। उसने अपने पुत्र अकबर को पञ्जाब का सूबेदार नियुक्त किया और बैरम खाँ को उसका परामर्शदाता बनाया।
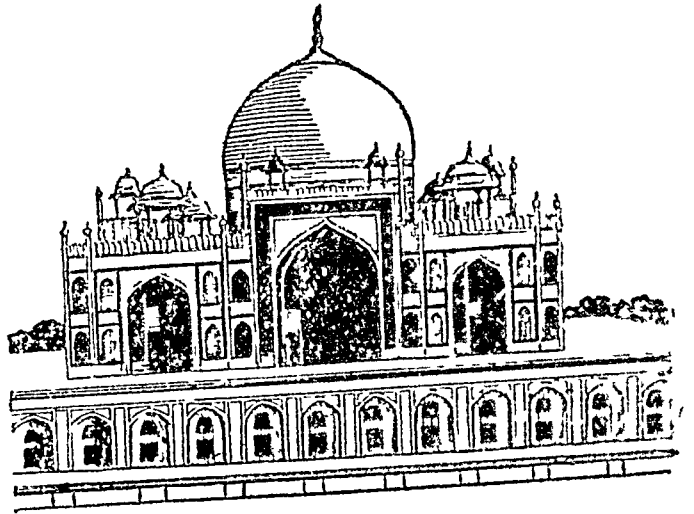
किन्तु चिरकाल राज्य करना हुमायूँ के भाग्य में न था। केवल छः ही मास के बाद वह देहली में अपनी लाइब्रेरी की सीढ़ियों से उतरता हुआ गिर पड़ा और मर गया।

हुमायूँ की मृत्यु

शेरशाह सूरी

SHER SHAH SURI

1540—1545

☞ Q. Give a brief account of the early life, conquests and administration of Sher Shah Suri. What

place would you give him among the Muslim Rulers of India ? (P.U. 1931-34-42-48-51-53) (V. Important)

प्रश्न—शेरशाह सूरी के प्रारम्भिक जीवन, विजयों और राज्यप्रबन्ध का संक्षेप से वर्णन करो और बताओ कि भारत के मुसलमान शासकों में तुम उसको कौन सा स्थान दोगे ?

शेरशाह का बचपन का नाम *फ़रीद ख़ाँ* था। वह सम्भवतः 1472* ई० में होशियारपुर के निकट *बजवाड़ा* में उत्पन्न हुआ था। उसका बाप *हसन बिहार* प्रान्त में *सहसराम* (Sabasram) का जागीरदार था और फरीद का बचपन वहीं व्यतीत हुआ। फरीद अपनी सौतेली माँ के बर्ताव से दुःखित होकर *जौनपुर* चला गया जो उन दिनों इस्लामी शिक्षा का एक अति प्रसिद्ध केन्द्र था। वहाँ उसने भली प्रकार मन लगा कर शिक्षा पाई और फ़ारसी तथा अरबी में अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। कुछ समय बाद हसन उसे लौटा ले गया और अपनी जागीर का प्रबन्ध उसे सौंप दिया। फरीद ने उस जागीर का कई वर्षों तक बहुत अच्छा प्रबन्ध किया और *यह अनुभव बाद में उसको उपयोगी सिद्ध हुआ*। कुछ समय बाद फ़रीद फिर घर से चला गया और बिहार के सूबेदार (बहार ख़ाँ) के यहाँ नौकरी कर ली। उसी नौकरी के समय में फरीद ने एक शेर को मार कर *शेर ख़ाँ* का उपनाम पाया। फिर किसी झगड़े के कारण वह इस नौकरी को छोड़ कर बाबर के यहाँ नौकर हो गया परन्तु कोई एक वर्ष पश्चात् फिर बिहार में आ गया और धीरे

शेरशाह का प्रारम्भिक जीवन

शेरशाह

*एक विचार यह है कि वह 1486 ई० में हिसार में उत्पन्न हुआ।

धीरे उन्नति करता हुआ वह बिहार का स्वयं शासक बन बैठा और फिर उसने बंगाल को भी जीत लिया। जब हुमायूँ उसके विरुद्ध बढ़ा तो उसने हुमायूँ को 1539 ई० में *चौसा* (Chausa) के स्थान पर पराजय दी और आप *शेरशाह* का उपनाम धारण कर लिया। उस से अगले वर्ष उसने हुमायूँ को *कनौज* (Kanauj) के स्थान पर हराया और स्वयं भारत का बादशाह बन गया।

विजयें
Conquests

बादशाह बनने से पहले ही शेरशाह ने *बँगाल से लेकर कनौज तक* का सारा प्रदेश जीत लिया था। इसके बाद उसने *पंजाब* (Punjab) को विजय कर लिया। वहां का मुग़ल शासक कामरान लाहौर छोड़ कर काबुल चला गया। उन दिनों जेहलम तथा सिंध नदी के बीच के पर्वतीय भाग में गखड़ नाम की एक युद्धप्रिय जाति बसी हुई थी। शेरशाह ने उन्हें परास्त किया और उनकी रोक थाम के लिये जेहलम नगर के निकट *रोहतास* (Rohtas) नाम का दुर्ग बना कर वहाँ बहुत-सी पठान सेना रखी। इस के पश्चात् शेरशाह ने *मालवा* (Malwa) और *सिंध* (Sind) को विजय किया। फिर मध्य भारत में *रायसीन* (Raisin) के दुर्ग को जीता। इसके बाद उसने *जोधपुर* (Jodhpur) पर चढ़ाई की परन्तु कोई विशेष सफलता प्राप्त न हुई। इस स्थान पर वीर राजपूतों ने उस के कैम्प पर ऐसा हल्ला बोला कि शेरशाह बड़ी कठिनता से अपने प्राण बचा सका। कहते हैं कि शेरशाह ने बड़े दुख से कहा था कि *एक मुट्ठी भर बाजरे के लिये मैं हिन्दुस्तान का साम्राज्य गँवा बैठने लगा था।* इसके बाद उसने *चित्तौड़* ले लिया। 1545 ई० में उसने *कालिन्जर* के दुर्ग को घेर लिया, परन्तु बारूद में आग लग जाने के कारण वह जल कर मर गया। इस प्रकार उसका साम्राज्य लगभग सारे उत्तरी भारतवर्ष में फैला हुआ था।

शेरशाह भारत का प्रथम मुसलमान बादशाह था जिसने राज्य-प्रबन्ध की ओर विशेषतया ध्यान दिया। उसने अपने पाँच वर्ष

राज्य प्रवन्ध (Administration) के थोड़े से शासन काल में बहुत लाभदायक सुधार किये जिसके कारण वह भारत के प्रसिद्ध शासकों में गिना जाता है।

(१) प्रांतीय प्रबन्ध (Provincial Government)–शेरशाह ने सारे साम्राज्य को ४७ *सरकारों* में बाँट रखा था और सरकारें *परगनों* में बँटी हुई थीं। उनके उचित प्रबन्ध के लिये योग्य अधिकारी नियुक्त कर रखे थे और शेरशाह सारे प्रबन्ध की देखभाल स्वयं करता था।

☞ **(२) भूमि का प्रबन्ध** (Land Revenue)—सारी भूमि का माप कराया गया और समस्त उपज का *तिहायी* और कुछ स्थानो पर *चौथाई* भाग लगान नियत किया, जो नकदी या वस्तु के रूप में दिया जा सकता था। परन्तु शेरशाह नकदी को पसन्द करता था। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता था कि किसानो पर किसी प्रकार की कठोरता न होने पाये और न ही खेती-बाड़ी को हानि पहुँचने पाये। हानि हो जाने की अवस्था में किसान की हानि पूरी कर दी जाती थी। अकाल के समय कृषकों को ऋण भी दिया जाता था। शेरशाह का यह प्रबन्ध इतना उत्तम था कि अकबर ने भी इसका अनुकरण किया।

(३) प्रजा की रक्षा (Protection)—प्रजा की रक्षा का प्रबन्ध अत्युत्तम था। यदि कहीं चोरी चकारी हो जाती थी तो गाँव के प्रवन्धक अर्थात् नम्बरदार को उसका पता लगाना पड़ता था, नहीं तो हानि पूरी करनी पड़ती थी। हत्या (कतल) की घटना हो जाने पर यदि प्रवन्धक हत्यारों का पता न लगा सकता था, तो उसको फाँसी दी जाती थी। इससे प्रजा का जीवन और धन सर्वथा सुरक्षित था। यात्री लोग बे खटके यात्रा कर सकते थे।

(४) समाचार विभाग (Intelligence Department)—शेरशाह ने सारे देश में गुप्तचर छोड़ रखे थे जो सम्राट को प्रत्येक बात की सूचना देते थे। इससे किसी अधिकारी को अनुचित हस्तक्षेप करने का साहस ही न होता था। इसके अतिरिक्त सम्राट् ने और मुसलमान बादशाहों की भाँति मोहतसिब नियुक्त कर रखे थे, जो प्रजा के धार्मिक

आचार व्यवहार की देख-रेख करते थे।

५. **न्याय विभाग** (Law and Justice)—शेरशाह बड़ा न्याय प्रिय शासक था। वह हिन्दू तथा मुसलमान, धनी तथा निर्धन सबके साथ एक जैसा न्याय करता था। कोई मनुष्य अपने उच्चवंश के कारण दण्ड पाने से नहीं बच सकता था। दण्ड बड़े कठोर और शिक्षाप्रद थे। चोरी और घूँसखोरी में फाँसी तक का दण्ड दिया जाता था। न्याय का प्रबन्ध प्रशंसनीय था।

☞(६) **सड़कें** (Roads) — शेरशाह ने यात्रियों के सुख के लिये तथा सेना के एक स्थान से दूसरे स्थान पर सुगमता से पहुँच सकने के लिये कई सड़कें बनवाईं। उनके दोनों ओर छायादार वृक्ष लगवाये और थोड़ी थोड़ी दूरी पर सरायें और कुएँ बनवाये। उन सरायों में मुसलमानों और हिन्दुओं के रहने और भोजन का अलग अलग प्रबन्ध था। (१) सबसे प्रसिद्ध सड़क जरनैली सड़क (Grand Trunk Road) थी जो ढाका के निकट सुनार गाँव से लेकर अटक तक जाती थी। (२) दूसरी सड़क आगरे से बुरहानपुर तक (३) तीसरी आगरे से जोधपुर और चित्तौड़ तक और (४) चौथी लाहौर से मुलतान तक थी। आने जाने के मार्ग सुगम हो जाने से व्यापार उन्नत हो गया और देश में धन की वृद्धि हुई।

☞(७) **सेना का प्रबन्ध** (Military Administration)—शेरशाह की सेना शस्त्रों से सुसजित और भली प्रकार शिक्षित थी जिसका नियन्त्रण अत्युत्तम था। यह सेना देश के भिन्न-भिन्न भागों में छावनियों में रहती थी। इनमें से देहली और रोहतास की छावनियाँ अधिक प्रसिद्ध थीं। शेरशाह ने सरकारी घोड़ों को अङ्कित करने और सवारों की पहचान लिखे जाने की रीति चलाई, इसलिये कि घोड़ों और सवारों की झूठी गिनती को रोका जा सके। बादशाही सेना में १,५०,००० घुड़सवार और २५,००० (पच्चीस सहस्र) प्यादे थे। सेना को नकद वेतन दिया जाता था और उसको यह आदेश था कि युद्ध पर जाते समय खेती को किसी प्रकार की हानि न पहुँचायें। शेरशाह

सैनिकों की भर्ती स्वयं करता था और योग्यता के अनुसार वेतन नियत करता था।

(८) भवन निर्माण (Buildings)—शेरशाह को भवन बनवाने की बड़ी लगन थी। उस ने देहली (Delhi) का नया नगर बसाया और पंजाब में एक नगर रोहतास (Rohtas) नाम का बसाया। सहसराम में उसका अपना मकबरा जो उसने स्वयं बनवाया था, भारत के ऊँची श्रेणी के भवनो में गिना जाता है। देहली का पुराना किला भी उसी ने बनवाया था।
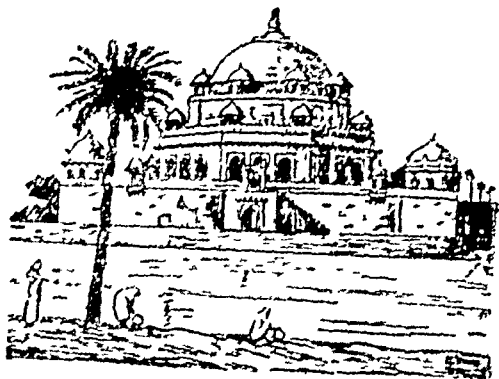
शेरशाह का मकबरा

(९) डाक प्रबन्ध (Post)— डाक का प्रबन्ध भी भली प्रकार होता था। सड़कों के किनारे जो सरायें बनी हुई थीं वे डाक की चौकियों का काम भी देती थीं और हरकारे डाक ले जाते थे परन्तु यह डाक सरकारी ही होती थी।

(१०) विशुद्ध सिक्के (Coins)—शेरशाह से पहले सिक्कों में बहुत खोट होता था। उसने सिक्कों का भी संशोधन किया और विशुद्ध चाँदी के बहुत से सिक्के बनवाये। उसने कई अनुचित महसूल भी हटा दिये जिससे व्यापार में पर्याप्त वृद्धि हुई।

(११) दान और वृत्तियां (Donations)—शेरशाह ने शिक्षा प्रसार के लिये बहुत से मकतब (फारसी और अरबी की पाठशालाएँ) खोले और विद्यार्थियों के लिये वृत्तियाँ नियत कीं। सम्राट् ने कई धर्मार्थ लंगर खोले थे जिन पर प्रति वर्ष एक लाख अस्सी हजार सुवर्ण मुद्रा व्यय होती थीं।

(१२) हिन्दुओं से वर्ताव—शेरशाह का व्यवहार अपनी हिन्दू प्रजा से भी बहुत अच्छा था। उसने हिन्दुओं को राज्य के कई उच्च पदों पर लगा रखा था। उसके प्रसिद्ध जरनैलों में से एक ब्रह्मजीत गौड़ था।

शेरशाह का स्थान और चरित्र

शेरशाह की गणना भारत के योग्यतम शासकों में होती है। वह बड़ा दूरदर्शी, प्रजापालक और युद्धकला में प्रवीण था। वह उच्चकोटि का प्रबन्धक था। उसने पाँच वर्ष के थोड़े से समय में देश के अन्दर पूर्ण शान्ति का साम्राज्य स्थापित कर दिया। उसका सब से प्रशंसनीय गुण यह था कि *पक्का मुसलमान होते हुये भी उसने हिन्दुओ और मुसलमानो से समान व्यवहार किया और उसने हिन्दुओ को धार्मिक स्वतन्त्रता दे रखी थी।* परन्तु वह जज़िया न हटा सका।

वह प्रत्येक विभाग की देख-भाल स्वयं करता था। उसे इस बात का ध्यान था कि *राज सुख भोग के लिये नही काम के लिये है।* वह न्याय प्रिय था और बेईमानी करने वालों को बड़े दण्ड देता था। वह निर्धनों-का पालक और कृषको का रक्षक था। परन्तु इतना अवश्य है कि वह युद्ध में अनुचित साधनों का प्रयोग भी कर लेता था। *शेरशाह पठान राजाओं मे सबसे उत्तम प्रबन्धकर्ता हो गुजरा है। उसकी सफलता का रहस्य यह था कि वह राज-काज की समस्त बातो को भली भाति जानता था क्योकि वह एक सैनिक से उन्नति करता हुआ राजा बना था। यदि वह कुछ अधिक समय जीवित रहता या उसके उत्तराधिकारी भी उस जैसे योग्य होते तो मुग़ल दोबारा भारत के शासक न बन सकते थे।*

अकबर बादशाह ने भी उसके कई सशोधनों का अनुकरण किया। यही कारण है कि शेरशाह को *अकबर का अग्रसर* (Fore-runner) कहते हैं। यदि उसे कुछ अधिक समय शासन करने को मिलता तो वह भारत के इतिहास में अकबर से किसी प्रकार भी कम प्रसिद्ध न होता।

Q. How was Sher Shah in ability and statesmanship the fore-runner of Akbar ? (P. U. 1931-39)

प्रश्न—*सिद्ध करो कि योग्यता और नीति मे शेरशाह सूरी अकबर का अग्रसर था।*

अकबर मुग़ल वंश का सबसे बड़ा बादशाह माना गया है। उसने अपने शासन काल में अत्यन्त योग्यता और नीति से राज्य किया परन्तु सत्य यह है कि उसके समस्त सुधार और उसकी नीति बहुधा

शेरशाह का अनुकरण है। अकबर ने शेरशाह के ही सुधारों को साधारण परिवर्तन के बाद चालू रखा।

शेरशाह अकबर का अग्रसर

अकबर के शासन काल का भूमि प्रबन्ध जिसके कारण अकबर का नाम विशेषतया विख्यात है, शेरशाह के भूमि-प्रबन्ध का अनुकरण है। टोडरमल ने उसमें समय के अनुसार संशोधन किया था।

अकबर का सेना प्रबन्ध सर्वथा शेरशाह के सेना-प्रबन्ध की भाँति था। घोड़ो को अंकित करने और सवारों की पहिचान लेखबद्ध करने की रीति जो अकबर ने प्रचलित की थी, वह शेरशाह की ही रीति थी।

अकबर की प्रसिद्धि का एक बड़ा कारण उसका हिन्दुओं से बर्ताव है और सत्य यह है कि शेरशाह ने भी पक्का मुसलमान होते हुए हिन्दुओं से अच्छा बर्ताव किया। इसमें सदेह नहीं कि उसने जज़िया नहीं हटाया, परन्तु शेष सब बातो में उसका बर्ताव हिन्दुओ से न्यायपूर्ण और पक्षपात रहित था।

सत्यतः क्या सिविल तथा क्या सैनिक सुधार, जिन्होंने अकबर के नाम को चार चाँद लगा दिये, उनकी स्थापना शेरशाह कर गया था। निःसंदेह शेरशाह योग्यता और नीति में अकबर का अग्रसर (Fore-runner) था।

Q. Give a brief account of the successors of Sher Shah.

प्रश्न—*शेरशाह के उत्तराधिकारियों का वृत्तान्त संक्षेप से लिखो।*

शेरशाह की मृत्यु के बाद उसका लड़का जलाल ख़ाँ, इस्लामशाह या सलीमशाह के नाम से राजगद्दी पर बैठा।

शेरशाह के उत्तराधिकारी 1545—1553

वह एक योग्य व्यक्ति अवश्य था परन्तु उसमें अपने पिता की सी योग्यता न थी। उसने आठ वर्ष शासन किया। इस्लामशाह की मृत्यु के बाद उसके पुत्र का उसके (लड़के के) मामा ने वध कर दिया और आप बादशाह बन बैठा। उसने आदिलशाह का

उपनाम धारण किया। आदिलशाह बड़ा विलासी और साहसहीन पुरुष था। उसने राज्य का प्रबन्ध एक बड़े योग्य हिन्दू मन्त्री हेमू (Hemu) को सौंप रखा था। आदिल-शाह की विलासिता के कारण देश में स्थान स्थान पर विद्रोह हो पड़े और सिंहासन के लिये सूरी वंश के दो और दावेदार उठ खड़े हुये। एक *इब्राहीम सूरी* था जिसने देहली और आगरे पर अधिकार कर लिया परन्तु उसे दूसरे दावेदार *सिकन्दर सूरी* ने वहाँ से निकाल दिया। यह अवस्था देखकर आदिलशाह स्वयं चनार चला गया और हुमायूँ को दोबारा लौटने का अवसर मिल गया।

सलीमशाह

जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर महान्

JALAL-UD-DIN AKBAR THE GREAT

1556—1605

अकबर का राज्याभिषेक

हुमायूँ ने अपने देश निकाले के दिनों में एक ईरानी स्त्री *हमीदा बानू बेगम* (Hamida Banu) से विवाह किया था। अकबर का जन्म इसी की कोख से 1542 ई० में *अमरकोट* (Amarkot) के स्थान पर हुआ। हुमायूँ की मृत्यु के समय अकबर की आयु तेरह वर्ष से कुछ अधिक थी। हुमायूँ ने उसे पंजाब का सूबेदार नियुक्त कर रखा था और वह उस समय अपने शिक्षक *बैरम खाँ* के साथ पंजाब में सिकन्दर सूरी का पीछा कर रहा था। उसे अपने पिता की मृत्यु का समाचार ज़िला गुरदासपुर के नगर *कलानौर* में मिला। बैरम खाँ ने वहाँ ही अकबर का राज्याभिषेक कर दिया और स्वयं उसका संरक्षक बना।

प्रारम्भिक कठिनाइयाँ—आरम्भ में चारों ओर अकबर के शत्रु थे। पंजाब में *सिकन्दर सूरी* का ज़ोर था, पूर्व में *आदिलशाह सूरी*

सिंहासन पर अधिकार पाने के यत्न में था। काबुल में अकबर का सौतेला भाई *मिर्ज़ा हकीम* एक स्वतन्त्र शासक के रूप में राज्य कर रहा था। परन्तु अकबर का सबसे प्रबल शत्रु हेमू था जो हुमायूँ के मरते ही देहली और आगरे पर अधिकार जमाकर *महाराजा विक्रमाजीत* के नाम से शासक बन बैठा था। सब से प्रथम अकबर ने हेमू का सामना किया और उसे पानीपत की दूसरी लड़ाई में हराया। इस लड़ाई के कुछ ही समय बाद *सिकन्दर सूरी* ने भी अधीनता मान ली और *आदिल शाह सूरी* की मृत्यु हो गई।

अकबर

Q. Briefly describe the Second Battle of Panipat.

प्रश्न—*पानीपत की दूसरी लड़ाई पर संक्षिप्त नोट लिखो।*

पानीपत की दूसरी लड़ाई 1556

यह लड़ाई अकबर की हेमू के साथ हुई, जो आदिलशाह सूरी का मन्त्री था। उसने हुमायूँ के मरते ही देहली और आगरे पर अधिकार कर लिया था और *विक्रमाजीत* के नाम से शासक बन बैठा था। वह एक बड़ी प्रबल सेना के साथ जिस में कोई १५०० हाथी थे मैदान में आया। प्रारम्भ में हेमू की सफलता हुई परन्तु अचानक ही एक तीर उसकी आँख में आ लगा, जिस से वह मूर्छित हो गया और उसकी सेना साहस छोड़ कर भाग निकली। हेमू पकड़ा गया और वध कर दिया गया। इस *विजय से अकबर आगरे और देहली का स्वामी बन गया और भारत में पुनः मुग़ल राज्य स्थापित हो गया।*

Q Write a short note on Bairam Khan.

प्रश्न—*बैरम ख़ाँ पर एक संक्षिप्त नोट लिखो।*

बैरम ख़ाँ अकबर का शिक्षक तथा संरक्षक था। वह तुर्क जाति

बैरम ख़ाँ

का एक सरदार और शिया मत का अनुयायी था। उसने बाबर और हुमायूँ की बड़ी तन-मन से सेवा की थी और हुमायूँ के साथ वह ईरान भी गया था। वह अकबर के बचपन में उसका शिक्षक था और यह *उसी के यत्नों का परिणाम था कि अकबर भारत का सिंहासन पा सका। उसे ख़ान-इ-ख़ानां* (Khan-i-Khanan) *की उपाधि मिली हुई थी।*

बैरम ख़ाँ अकबर को शासक बनाकर स्वयं उसका संरक्षक बन गया और चार वर्ष (1556-60) इस पद पर रहा। उसने *पंजाब, अजमेर, ग्वालियर* और *जौनपुर* के प्रदेश जीते तथा विद्रोही सरदारों को अधीन किया। परन्तु वह बड़ा अभिमानी हो गया और अपने अधिकारों का अनुचित प्रयोग करने लगा। अकबर ने इस बात को बुरा माना, इसलिये 1560 ई० में अकबर ने राज्य प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया और बैरम ख़ाँ को मक्के चले जाने के लिये कहा। बैरम ख़ाँ ने विद्रोह कर दिया, किन्तु *जालन्धर* के निकट हार खाई। अकबर ने उसका अपराध क्षमा कर दिया और वह मक्के को चल पड़ा परन्तु गुजरात में *पाटन* (Patan) के स्थान पर किसी पठान ने निजी शत्रुता के कारण (1561 ई० में) उसकी हत्या कर दी।

बैरम ख़ाँ

☞ Q. Briefly describe the conquests of Akbar.
(P. U. 1945-47-50) (Important)

प्रश्न—*अकबर की विजयो का संक्षेप से वर्णन करो।*

अकबर की विजये

राज्याभिषेक के बाद अकबर ने अपने राज्य को बढ़ाना आरम्भ कर दिया और उत्तरोत्तर विजयों के बाद एक सुदृढ़ राज्य स्थापित करने में सफल हो गया।

(१) सबसे पहले *देहली, आगरा* और *पंजाब*

1556 ई० में जीते गये।

(२) अकबर के शासन काल के पहले चार वर्षों में बैरम खाँ ने ग्वालियर, अजमेर और जौनपुर के प्रदेश जीत कर मुग़ल साम्राज्य में सम्मिलित कर दिये।

(३) **मालवा**, 1562 ई०—मालवा में एक अफग़ान सरदार *बाज़ बहादुर* शासक था। अकबर ने *अधमखाँ* (Adham Khan) को सेना देकर उसके विरुद्ध भेजा। बाज़ बहादुर ने अधीनता मान ली और मालवा जीता गया।

(४) **गोंडवाना**, 1564 ई०—गोंडवाना का प्रदेश वर्तमान मध्य प्रदेश का उत्तरी भाग था। यहाँ वीर राजपूत रानी *दुर्गावती* शासक थी। वह एक अत्यन्त योग्य स्त्री थी। जब मुग़ल सेनाओं ने गोंडवाना पर चढ़ाई की तब दुर्गावती ने *जबलपुर* (Jubblepore) के निकट वीरतापूर्वक सामना किया, परन्तु जब विजय की कोई आशा न रही, तो उसने अपने स्त्री-धर्म की रक्षा के लिये आत्महत्या कर ली। उसका पुत्र वीर *नारायण* भी वीरगति को प्राप्त हुआ। इस प्रकार गोंडवाना भी मुग़लों की अधीनता में चला गया।

(५) **चित्तौड़**, 1568—चित्तौड़ राजपूताने के प्रसिद्ध राज्य मेवाड़ की राजधानी थी। यहाँ राणा *उदयसिंह* शासक था। यद्यपि कई राजपूत सरदारों ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी तो भी उदयसिंह ने मुगलों की अधीनता स्वीकार करने से निषेध कर दिया था। इस पर अकबर ने स्वयं चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया। राणा उदयसिंह दुर्ग अपने सेनापति *जैमल* को सौंप स्वयं अर्वली पर्वत को भाग गया और शीघ्र ही उसने उदयपुर के स्थान पर अपनी नई राजधानी स्थापित कर ली। जैमल ने बड़ी वीरता से कुछ एक मास तक अकबर का सामना किया, परन्तु एक रात को वह अकबर की गोली का निशाना बना और दुर्ग पर (1568 ई० में) मुग़लों का अधिकार हो गया।

(६) **रणथम्भौर और कालिंजर**, 1569 ई० — चित्तौड़ की

विजय के पश्चात् अकबर ने राजपूताना के अन्य प्रसिद्ध दुर्गों की ओर ध्यान दिया। 1569 ई० में उसने *रणथम्भौर* और *कालिंजर* जीत लिये। इसके पश्चात् *बीकानेर* और *जैसलमेर* के राजाओं ने भी अधीनता स्वीकार कर ली। इस प्रकार सारे राजपूताना पर अकबर का अधिकार हो गया।

(७) **गुजरात,** 1572 ई०—गुजरात बड़ा उपजाऊ प्रदेश था और अकबर उसे अपने साम्राज्य में मिलाने का इच्छुक था। उस समय वहाँ का शासक *मुजफ्फ़रशाह* था। 1572 ई० में अकबर ने गुजरात पर आक्रमण किया। मुज़फ्फ़रशाह खेतों में छुपा हुआ पकड़ लिया गया। उसने अधीनता स्वीकार कर ली। अकबर ने उसकी साधारण पेन्शन नियत कर दी। *इस विजय से सूरत और अन्य कई बन्दरगाहों पर अकबर का अधिकार हो गया जिससे राज्य के व्यापार और आय दोनों में उन्नति* हुई। इससे अगले वर्ष गुजरात में एक बड़ा भारी विद्रोह उठ खड़ा हुआ। अकबर उसी समय अपनी राजधानी *फ़तहपुर सीकरी** से चल पड़ा और ६०० मील की यात्रा ग्यारह दिन में पूरी कर गुजरात पहुँचा और विद्रोह को दबा दिया।

(८) **बिहार और बङ्गाल,** 1576 ई०—बिहार और बंगाल के शासक *दाऊद ख़ाँ* ने अकबर की अधीनता स्वीकार करने से निषेध कर दिया। इस पर अकबर ने बङ्गाल पर चढ़ाई की। दाऊद ख़ाँ हार कर उड़ीसा की ओर भाग गया। परन्तु 1576 ई० में वह युद्ध में मारा गया और बिहार तथा बङ्गाल मुग़ल साम्राज्य में सम्मिलित कर लिये गये।

(९) **काबुल, काश्मीर, सिंध, आदि**—1585 ई० में अकबर का सौतेला भाई *मिर्ज़ा हकीम* जो काबुल का शासक था, मर गया और काबुल मुग़ल साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया। अकबर ने राजा मानसिंह को काबुल का सूबेदार नियत कर दिया। 1586 ई० में *काश्मीर* पर अधिकार हो गया। 1591 ई० में सिंध, 1592 ई० में *उड़ीसा* और 1595 ई० में बलोचिस्तान और *कन्धार* के प्रदेश भी अकबर के साम्राज्य में मिला लिये गये।

---

* कई वर्ष (1570-1585) फ़तहपुर सीकरी अकबर की राजधानी रही।

दक्षिण विजय — उत्तरी भारत को जीत लेने के बाद अकबर ने दक्षिण की ओर ध्यान दिया और समय भी बहुत उपयुक्त था, क्योंकि दक्षिण की मुस्लिम रियासतों में आपसी झगड़े छिड़े हुये थे।

(१) **अहमदनगर की विजय**, 1600 ई०—सब से प्रथम अकबर ने अपने बेटे *मुराद* (Murad) को सेना देकर अहमदनगर के विरुद्ध भेजा। उस समय अहमदनगर का राज्य-प्रबन्ध वहाँ के अल्प-वयस्क (नाबालिग) शासक की बुआ वीर साम्राज्ञी **चाँदबीबी** (Chand Bibi) के हाथ में था। मुराद ने 1595 ई० में अहमदनगर को घेर लिया, परन्तु चाँदबीबी ने वीर जनों की भाँति सामना किया और उसकी कोई चाल न चलने दी अन्त में सन्धि हो गई और चाँदबीबी ने बरार (Berar) का प्राँत मुग़लों को दे दिया परन्तु इसके कुछ वर्ष बाद चाँदबीबी का अपने ही सैनिकों के हाथों धोखे से वध हो गया, और मुग़ल सेना ने 1600 ई० में *अहमदनगर* पर अधिकार कर लिया।

(२) **खानदेश की विजय**, 1601 ई०—1599 में अकबर ने खानदेश के प्रदेश पर चढ़ाई की और इसकी राजधानी *बुरहानपुर* (Burhanpur) को जीत लिया। इसके बाद उसने खानदेश के प्रसिद्ध दुर्ग *असीर गढ* (Asirgarh) पर आक्रमण किया और 1601 ई० में इसे जीत लिया गया। यह दुर्ग उत्तरी भारतवर्ष से दक्षिण जाने वाले मार्ग पर स्थित होने के कारण बड़ा महत्वशाली था। इस दुर्ग के जीत लेने से खानदेश पर अकबर का अधिकार हो गया।

अकबर ने दक्षिण के जीते हुये प्रदेश को *बरार, अहमदनगर* और *खानदेश* तीन प्रांतों में बाँटा।

राज्य विस्तार — इस प्रकार अकबर का राज्य बंगाल से अफगानिस्तान तक और काश्मीर से लेकर दक्षिण में गोदावरी नदी तक फैल गया।

Q. What was Akbar's policy? How did he conciliate the Hindus and Rajputs? OR ...

AKBAR'S EMPIRE

MULTAN
PANIPAT
DELHI
AJMER
NEPAL
BIHAR
ALLAHABAD
SIND
CHITOR
MALWA
BENGAL
GUJRAT
KHANDESH
GONDWANA
BERAR
ORISSA
GOLCONDA
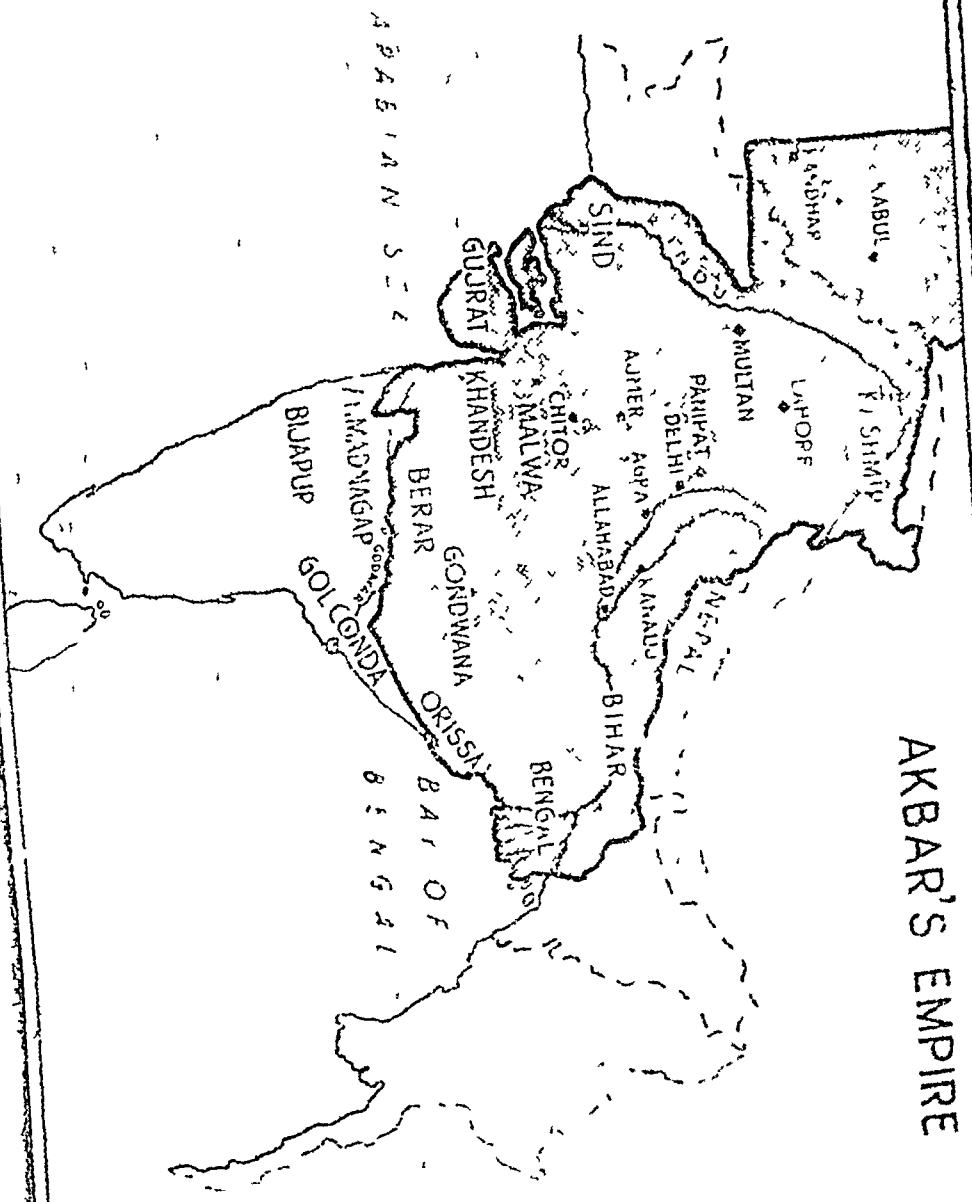
Describe Akbar's dealing with the Rajputs.

प्रश्न—*अकबर की नीति क्या थी ? इसने राजपूतों और हिन्दुओं को किस प्रकार प्रसन्न किया ?* या

अकबर के राजपूतों के साथ व्यवहार का वर्णन करो।

अकबर की नीति

अकबर दूरदर्शी नीतिज्ञ था। वह जब राजगद्दी पर बैठा तो कई मुसलमान सरदारों ने उसे बच्चा समझ कर विद्रोह किये। ये विद्रोह तो बैरम खाँ की सहायता से दबाये गये परन्तु अकबर को विचार आया कि मुसलमान सरदारों की रोकथाम के लिये उसे हिन्दुओं विशेषतया राजपूतों को अपनी ओर गाँठना चाहिये। पीछे जाकर उसके धार्मिक विचार भी बहुत उदार हो गये और इसने यह नीति विचारी कि *हिन्दुओ और मुसलमानो के बीच के सभी भेदभाव दूर करके एक सम्मिलित जाति बना दी जाय।*

अकबर और राजपूत

अपनी नीति में सफल होने के लिये अकबर ने वीर और कृतज्ञ राजपूत जाति को अपनी ओर गाँठना चाहा और इसके लिये उसने निम्नलिखित ढंग अपनाये :—

(१) विवाह सम्बन्ध— अकबर ने राजपूत घरानों से सम्बन्ध जोड़े। 1562 ई० में *जयपुर के राजा बिहारीमल* की लड़की से विवाह किया। सलीम उसी रानी की कोख से था। इसके पश्चात् *बीकानेर* और *जैसलमेर* की राजपूत राजकुमारियाँ भी शाही महलों में आ गईं। राजकुमार सलीम का विवाह भी एक राजपूत राजकुमारी (राजा भगवानदास की पुत्री) के साथ हुआ। अकबर अपने इन राजपूत सम्बन्धियों से बड़ा अच्छा व्यवहार करता था।

(२) उच्च पद—राजपूतों और हिन्दुओं को ऊँचे सिविल तथा सैनिक पदों पर नियुक्त किया गया। *राजा भगवानदास, टोडरमल, बीरबल* और *मानसिंह* उसके प्रसिद्ध राजपूतों में से थे। अकबर के आधे से अधिक सैनिक हिन्दू थे।

(३) धार्मिक स्वतन्त्रता—अकबर ने हिन्दुओं को पूरी स्वतंत्रता दे रखी थी। उसने अपने शासन काल में हिन्दू मन्दिरों को किसी

प्रकार की हानि पहुँचाना निषिद्ध कर दिया। अकबर ने हिन्दुओं की प्रसन्नता के लिए विशेष दिनों में पशुवध निषेध कर दिया।

(४) जज़िया हटाना—अकबर ने 1563 ई० में हिन्दू यात्रियों से यात्रा-कर लेना बन्द कर दिया और 1564 ई० में जज़िया लेना भी बन्द कर दिया। इसमें संदेह नहीं कि इन करों के हटाने से सरकारी आय में बहुत कमी हो गई परन्तु हिन्दू विशेष कर प्रसन्न हो गये।

इस नीति का परिणाम यह हुआ कि सभी हिन्दू विशेषतया *राजपूत देहली साम्राज्य के पालक हो गये और उन्होंने मुग़ल साम्राज्य की सच्चे हृदय से सहायता की। वे मुग़ल साम्राज्य की तलवार तथा ढाल थे। इससे मुग़ल साम्राज्य की जड़ें भारत में दृढ़ता से गड़ गईं और देश की आर्थिक* दशा भी बहुत सुधर गई।

नोट—अकबर के शासनकाल में तो राजपूतों ने मुग़ल साम्राज्य की नींव सुदृढ़ करने में बहुत भाग लिया, परन्तु जब औरंगज़ेब ने अकबर की इस नीति को बदल दिया, तो वे साम्राज्य के घोर शत्रु बन गये और साम्राज्य का पतन आरम्भ हो गया।

Q. Write a short note on Rana Partap (P.U. 1948)

प्रश्न—*राणा प्रताप पर संक्षिप्त नोट लिखो।*

राणा प्रताप जो राजस्थान के इतिहास में सर्वोच्च व्यक्ति हो चुका है, उदयसिंह का पुत्र और संग्रामसिंह (सांगा) का पोता था। अपने पिता की मृत्यु पर 1572 ई० में वह उदयपुर के सिंहासन पर बैठा। प्रताप बड़ा साहसी और स्वाभिमानी राजपूत था। उसने अकबर की अधीनता स्वीकार करने और उससे विवाह संबंध करने से निषेध कर दिया और शपथ

राणा प्रताप

खाई कि जब तक चित्तौड़ को न लौटा लूँगा, तब तक भूमि पर ही सोया करूँगा, पत्तों पर भोजन करूँगा और मूछें ऊपर को न चढाऊँगा।

अकबर ने राजा मानसिंह को सेना देकर प्रताप को दबाने भेजा। 1575 ई० में हल्दी घाट (Haldighat) के मैदान में घोर युद्ध के बाद राणा की हार हुई और वह अपने प्रिय घोड़े 'चैतिक' पर सवार होकर पहाड़ो को भाग गया और लगभग बीस वर्ष मारा-मारा फिरता रहा। इस काल में राणा को अगणित विपत्तियाँ झेलनी पड़ीं। परन्तु उस स्वाभिमानी राजपूत ने असीम धैर्य से उन सब विपत्तियों को झेला और अकबर जैसे महाप्रतापी बादशाह के आगे अपना सिर न झुकाया। 1597 ई० में राणा परलोक को सिधार गया, परन्तु इससे पहले उस ने चित्तौड़ और एक दो अन्य दुर्गों को छोड़कर शेष सारा प्रदेश मुगलों से छीन लिया था। *वह राजपूतों मे सबसे बडा देश भक्त था।*

☞ Q (a) Give an account of the administration of Akbar. (b) What are your reasons for regarding him as the greatest of the Moghal Emperors?

(P U 1924-30-44-47 48-50-54) (V Important)

प्रश्न—*अकबर के राज्य-प्रबन्ध का वर्णन करो और बताओ कि उसे मुग़ल वंश का सबसे बडा सम्राट् मानने के क्या कारण है ?*

अकबर का राज्य-प्रबन्ध अतीव प्रशंसनीय था। उसने देश के आर्थिक तथा सैनिक प्रत्येक विभाग में अत्यन्त लाभकारी सुधार किये।

केन्द्रीय शासन
Central Government

अकबर एक निरंकुश राजा था। वह अपनी इच्छानुसार जो चाहे कर सकता था। वह न केवल सिविल प्रबंध का ही कर्त्ता-धर्ता था अपितु सेनापति भी था परन्तु वह अपने मन्त्रियो से परामर्श ले लेता था। उसके बड़े-बड़े *मन्त्री, महामन्त्री, आर्थिक मन्त्री, युद्ध मन्त्री, धार्मिक मन्त्री, इत्यादि* थे। देश में सब से बड़ा न्यायाधीश अकबर स्वयं ही था।

राज्य-प्रबन्ध के लिये अकबर ने अपने विस्तृत राज्य को पन्द्रह* प्रान्तों में बांट रखा था। प्रत्येक प्रान्त एक सूबेदार के अधीन था, जो या तो सम्राट का निकट का सम्बन्धी या ऊँचे परिवार का कोई अमीर व्यक्ति होता था। इसके अतिरिक्त एक *दीवान*, एक *फ़ौजदार*, एक *आमिल* और कई अन्य अधिकारी नियत थे। *दीवान* सरकारी आय और व्यय का लेखा रखता था। फ़ौजदार प्रान्त की सेना का उच्च अधिकारी होता था और *आमिल* कर एकत्र करता था। प्रान्त सरकारों और परगनों में बटे हुये थे। इनके प्रबन्ध के लिये अधिकारी नियत थे। नगरों में अभियोगों के सुनने के लिये *क़ाज़ी* और शान्ति रक्षा के लिये *कोतवाल* नियुक्त थे। दण्ड बड़े कठोर होते थे। ग्रामों का प्रबन्ध *पंचायतें* करती थीं।

प्रान्तीय शासन
Provincial Administration

सैनिक अधिकारियों को *मनसबदार* कहते थे। उनकी *तैंतीस श्रेणियां* थीं। उन सब मनसबदारों को आवश्यकता के समय सम्राट के लिये घुड़सवार देने पड़ते थे। छोटे से छोटा मनसबदार *दस सवार* और बड़े से बड़ा *दस हजार सवार* अपनी अधीनता में रख सकता था। मनसबदारों के बड़े-बड़े पद (पाँच हज़ार से ऊपर) केवल राजकुमारों और ऊँचे पद वाले सरदारों के लिये ही होते थे। परन्तु इस रीति में एक बड़ी त्रुटि *यह थी कि मनसबदार सरदारों की नियत संख्या अपने पास नहीं रखते थे*. वरन् सेना की गिनती के समय इधर-उधर से सवार पकड़ कर संख्या पूरी कर लेते थे। अकबर ने इस त्रुटि को दूर करने के लिये शेरशाह की भान्ति *घोड़ों को अंकित किया और सवारों की पहचान रजिस्टर में लिख ली*। इन सब मनसबदारों को बहुधा नकद वेतन मिलता था परन्तु कई एक को जागीरें भी मिली हुई थीं। इसके अतिरिक्त शाही सेना भी

सेना नियन्त्रण
Military Administration

---

*आगरा, इलाहाबाद, अवध, देहली, लाहौर, मुलतान, काबुल, अजमेर, बंगाल, बिहार, एहमदाबाद, मालवा, खानदेश, बरार, एहमदनगर।

थी जिस में पैदल, घुड़सवार, तोपखाना, हाथी और जहाज़ शामिल थे, परन्तु घुड़सवारों की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था।

भूमि प्रबन्ध
Land Revenue

अकबर के शासन काल का सर्वोत्तम काम भूमि का प्रबन्ध है। यह काम अकबर के अर्थमन्त्री *राजा टोडरमल* ने किया था। खेती के योग्य सारी भूमि को नापा गया और उपज के अनुसार भूमि को चार भागों में बाँटा गया। समस्त उपज का तिहाई भाग भूमि-कर (लगान) नियत किया गया जो कि नकदी या उपज के रूप में दिया जा सकता था। परन्तु अकबर नकदी को अधिक पसन्द करता था, विशेषतः जब कि वस्तुएँ शीघ्र गल सड़ जाने वाली हों। अकाल के दिनों में भूमि-कर में कमी कर दी जाती थी और कभी कभी कृषकों को ऋण भी दिया जाता था। भूमि-कर कृषकों से सीधा उगाह्या जाता था और भूमि-कर उगाहने वाले अधिकारियों को विशेष निर्देश था कि वे कृषकों को कदापि तंग न करें। *इसका परिणाम यह हुआ कि कृषिकों की दशा सुधर गई और राजकीय आय में भी वृद्धि हुई।* आरम्भ में यह कर वार्षिक होता था परन्तु बाद में दस वर्ष के लिये कर दिया गया। टोडरमल का यह भूमि प्रबन्ध अंग्रेज़ी राज्य के भूमि प्रबन्ध की भी आधार शिला था।

सामाजिक सुधार

अकबर ने कई सामाजिक सुधार भी किये। अधिक प्रसिद्ध नीचे लिखे जाते हैं:—

(१) बाल विवाह को निषिद्ध घोषित किया गया।

(२) हिन्दू विधवाओं का पुनर्विवाह नियमानुसार घोषित किया गया।

(३) सती की प्रथा को बन्द कर देने का यत्न किया गया।

(४) प्रजा को पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता दी गई (यात्रा टैक्स और जज़िया लेना बन्द कर दिया गया)।

(५) विशेष दिनों में पशुवध वर्जित कर दिया गया।

(६) विजित शत्रुओं को बन्दी बनाना वर्जित कर दिया गया।

मुग़लवंश का सबसे बड़ा सम्राट्

अकबर मुग़लवंश का सबसे बड़ा सम्राट् गिना जाता है। इसके कुछ कारण नीचे लिखे हैं :—

(१) यथार्थतः भारत में मुग़ल साम्राज्य का संचालक अकबर ही था। बाबर को इतना अवकाश ही न मिला था कि साम्राज्य को सुदृढ़ कर जाता। हुमायूँ ने नये सिरे से देश को जीता।

(२) अकबर ने अपने विशाल साम्राज्य का अत्युत्तम प्रबन्ध किया, और उसकी नींव सुदृढ़ कर दी। उसके राष्ट्रीय, आर्थिक और सेना सम्बन्धी सुधार उसकी योग्यता का स्पष्ट प्रमाण हैं।

(३) अकबर प्रथम मुस्लिम बादशाह था, जिसने यह अनुभव किया कि राज्य की दृढ़ता समस्त प्रजा की प्रसन्नता पर निर्भर है न कि प्रजा के एक भाग की प्रसन्नता पर। इसलिये उसने हिन्दुओं और मुसलमानों से समान बर्ताव किया और जज़िया हटा दिया। यह बात निस्सन्देह प्रशंसनीय है कि जिस समय योरुप के शासक विरोधी धर्म वालों पर घोर अत्याचार कर रहे थे, अकबर ने अपनी प्रजा को धार्मिक स्वतन्त्रता दे रखी थी। यही कारण था कि उसका राज्य जो सारी जातियों के सहयोग पर स्थित था अधिक दृढ़ और स्थायी सिद्ध हुआ।

(४) भारत के इतिहास में अकबर प्रथम व्यक्ति है; जिसने एक संयुक्त जाति बनाने का प्रयत्न किया और इसी विचार से उसने दीन-इ-इलाही चलाया। उसने *एक भारतीय के रूप में शासन किया, न कि मुसलमान या हिन्दू की भावना से।* उसके शासन में प्रजा सन्तुष्ट थी और देश समृद्धिशाली था।

☞ Q. What do you know about the religious policy of Akbar ? (P. U. 1947) Write a note on the Din-i-Ilahi. (P. U. 1928-41-43-45) (Important)

प्रश्न—*अकबर की धार्मिक नीति के सम्बन्ध मे तुम क्या जानते हो ? दीन-इ-इलाही के विषय में नोट लिखो।*

अकबर आरम्भ में सुन्नी मुसलमान था। परन्तु धीरे-धीरे उसके

अकबर की धार्मिक नीति

धार्मिक विचारों में परिवर्तन होता गया और उसने एक नया मत दीन-इ-इलाही (Din-i-Ilahi) चलाया। इस परिवर्तन के कई कारण थे :—

(१) अकबर स्वभाव से स्वतन्त्र विचारों का था और वह अपनी माता तथा अपने शिक्षक (अब्दुललतीफ़) के प्रभाव से जो स्वयं पक्षपात से रहित थे, और भी उदार विचार हो गया था।

(२) उसकी हिन्दू पत्नियों का भी उसके धार्मिक विचारों पर प्रभाव पड़ा और उसने हिन्दू धर्म की अच्छी अच्छी बातों को अपनाना आरम्भ किया।

(३) अकबर की राजसभा में *शेख़ मुबारिक़* और उसके लड़के *फ़ैजी* और *अबुलफ़ज़ल* सूफ़ी विचारों के विद्वान् थे। उनके विचारों के कारण भी सम्राट् के धार्मिक सिद्धान्तों में परिवर्तन हो गया था।

(४) अकबर को धार्मिक शास्त्रार्थ का बड़ा चाव था। उसने *फ़तहपुर सीकरी* में एक इबादतख़ाना (पूजा-गृह) बनवा रखा था जहाँ भिन्न-भिन्न मतों के नेताओं के शास्त्रार्थ हुआ करते थे। अकबर पर उन शास्त्रार्थों का बड़ा प्रभाव पड़ा।

इन सारी बातों का परिणाम यह हुआ कि अकबर को धार्मिक द्वेश और पक्षपात से घृणा हो गई और उसने सब मतों को पूर्ण स्वतन्त्रता दे दी। 1579 ई० में उसने एक घोषणा-पत्र निकाला कि धार्मिक विषयों में भी सम्राट् ही सर्वोच्च नेता होगा।

☞ दीन-इ-इलाही Din-i-Ilahi

1582 ई० में अकबर ने एक नया मत चलाया, जिसका नाम *दीन-इ-इलाही* रखा। इस मत में विभिन्न मतों विशेषतः हिन्दू, जैन, इस्लाम, पारसी, ईसाई मत की अच्छी-अच्छी बातें सम्मिलित की गई थीं। *इसका मुख्य नियम यह था कि ईश्वर एक है और अकबर उसका ख़लीफ़ा (प्रतिनिधि) है।* मनुष्य को बुद्धि से काम लेना चाहिये, क्योंकि किसी बात पर आँखें मूँद कर विश्वास करना

धर्म नहीं है अकबर स्वयं प्रातःकाल उठकर सूर्य की पूजा किया करता था और उसके अनुयायी अकबर के आगे सिर झुकाया (सिजदः किया) करते थे। इस मत में माँस खाना निषिद्ध था। इस धर्म के अनुयाइयों से यह आशा की जाती थी कि वे अपनी सम्पत्ति, अपना जीवन, मान और धर्म सम्राट् के लिये न्योछावर करने को तैयार होंगे। परन्तु इसे थोड़े ही लोगों ने अपनाया। इसलिये अकबर के मरते ही इस मत की भी समाप्ति हो गई।

Q. Give a brief account of some of the important personages of Akbar's court.

प्रश्न—*अकबर की राजसभा के कुछ एक विख्यात व्यक्तियों का वर्णन करो।*

(१) **अबुल फ़ज़ल** (Abul Fazal) अकबर के नवरत्नों में सबसे योग्य था। वह शेख़ मुबारक का बेटा और फैज़ी का छोटा भाई था। वह अपने समय का एक बहुत बड़ा विद्वान् था जो धीरे-धीरे उन्नति करता हुआ प्रधान मन्त्री के पद पर पहुँच गया था। उसने *आईन-इ-अकबरी* और *अकबर नामा* दो प्रसिद्ध पुस्तकें लिखीं, जिन में अकबर के शासन के वृत्तांत लिखे हैं। अबुल फ़ज़ल सूफ़ी विचारों का था और उसकी अनुमति से अकबर ने दीन-इ-इलाही चलाया था। उसके बढ़ते हुये प्रभाव को देखकर राजकुमार सलीम (जहाँगीर) ने 1602 ई० में अवर्छा के राजा *बीर सिंह बुन्देला* के हाथों उसका वध करवा दिया।

(२) ☞ **फ़ैज़ी** (Faizi) शेख़ मुबारक का लड़का और अबुल फ़ज़ल का बड़ा भाई था। वह उच्चकोटि का कवि था तथा संस्कृत और फ़ारसी का योग्य पंडित था। उसने रामायण, महाभारत और भगवत गीता का संस्कृत से फारसी में अनुवाद किया।

(३) ☞ **राजा टोडरमल** (Todar Mal) पंजाब का एक खत्री था और अकबर की राजसभा के प्रसिद्ध नवरत्नों में से एक था। उसका सुविख्यात काम 'कृषि प्रबन्ध' है। वह अकबर का अर्थ मन्त्री था, साथ ही वह एक योग्य सेना नायक भी था। उसने उत्तर पश्चिमी सीमा पर और बगाल विजय में बड़े सुन्दर ढंग से सेना का संचालन

किया था। अकबर से पहले वह शेरशाह सूरी के यहाँ भी मालगुजारी के विभाग में नौकरी कर चुका था।

(४) मानसिंह (Man Singh) अकबर का एक अत्यन्त विश्वास पात्र सेनापति था। वह जयपुर के राजा भगवान दास का दत्तक पुत्र था। उसने अनेकों विजयें प्राप्त कीं और 1576 ई० में राणा प्रताप को हल्दीघाटी के मैदान में हराया। वह बंगाल और काबुल का सूबेदार भी रहा।

राजा टोडरमल

(५) बीरबल (Birbal)—उसका मूलनाम महेशदास था वह जाति का भाट तथा कालपी का रहने वाला था। अपनी विद्वत्ता तथा तत्काल उत्तर देने की योग्यता के लिये विशेष रूप से प्रसिद्ध था। 1586 ई० में वह उत्तर-पश्चिमी सीमा पर लड़ता हुआ मारा गया।

(६) अब्दुल रहीम (Abdul Rahim) खानखानाँ बैरमखाँ का लड़का था। 1556 ई० में लाहौर में उत्पन्न हुआ। उसने भी कई लड़ाइयाँ लड़ीं। वह विद्या-प्रेमी और कवि था। वह अरबी, फारसी तथा तुरकी भाषाओं में निपुण था और हिन्दी में भी कविता लिखता था।

Q. Write short notes on:- (a) Hemu, (b) Chand Bibi.

प्रश्न—हेमू और चाँदबीबी पर संक्षिप्त नोट लिखो।

हेमू (Hemu)—हेमू आरम्भ में रिवाड़ी में एक साधारण दुकानदार था, परन्तु वह व्यवहारिक कार्यों में बड़ा चतुर और अनुभवी पुरुष था। धीरे-धीरे उन्नति करके आदिलशाह सूरी का प्रधान मन्त्री और सेनापति बन गया और उसने शासनकार्य बड़ी बुद्धिमत्ता से चलाया। वह एक वीर योद्धा तथा बुद्धिमान राजनीतिज्ञ था। उसने कई लड़ाइयाँ लड़ी थीं और उन में सफलता प्राप्त की थी। हुमायूँ की मृत्यु के बाद तत्काल उसने देहली और आगरे पर अधिकार कर लिया और विक्रमाजीत का उपनाम धारण करके स्वयं देहली के राजसिंहासन पर बैठ गया।

पानीपत की दूसरी लड़ाई में उसने अकबर का बड़ी वीरता से सामना किया, परन्तु वह हार गया और उसका वध कर दिया गया।

चाँद बीबी (Chand Bibi)—अहमद नगर के मुसलमान शासक की पुत्री और बीजापुर के शासक अली आदिलशाह की पत्नी थी। विधवा हो जाने पर वह अहमदनगर चली आई और अपने अल्पवयसक (नाबालिग़) भतीजे की संरक्षक बन गई। वह एक वीर और तीक्ष्ण बुद्धि वाली स्त्री थी। 1595 ई० में जब अकबर के पुत्र मुराद ने अहमदनगर पर आक्रमण किया तो उसने बड़ी वीरता से अपने नगर की रक्षा की। परन्तु कुछ वर्ष पश्चात् वह अपने ही विद्रोही सैनिकों के हाथों वध कर दी गई। उसके मरने के बाद मुग़ल सेना ने अहमदनगर जीत लिया।

चाँदबीबी

Q. Briefly describe the character of Akbar.

प्रश्न—*अकबर के चरित्र का संक्षिप्त वर्णन करो।*

अकबर का चरित्र

शरीर गठन—अकबर शरीर का बली और सुन्दर मनुष्य था। उसका कद मँझले दर्जे का था और रङ्ग गेहुंआ था। उसकी आँखें चमकीली और भौंहें काली थीं। शरीर गठा हुआ था। छाती चौड़ी तथा हाथ और भुजायें लम्बी थीं। उसकी आवाज़ रोबीली तथा सुरीली थी। वह चाल तथा चेहरे के तेज से सर्वथा बादशाह दीखता था।

प्रकृति—उसकी प्रकृति बड़ी सादी थी। वह दिन में केवल एक बार भोजन किया करता था और मांस, प्याज़ तथा लहसुन का खाना उसने छोड़ दिया था। उसे अपने सम्बन्धियों से बड़ा स्नेह था। उसे शिकार का और सवारी का बड़ा चाव था। लड़ाई से उसको बहुत आनन्द होता था और वह बात का बड़ा धनी था। अकबर बड़ा साधारण प्रकृति और दयालु-हृदय था, पर कभी-कभी क्रोध के कारण

आपे से बाहर हो जाता था।

स्मरण शक्ति—अकबर की स्मरण शक्ति भी असाधारण थी, वह था तो अनपढ़ परन्तु ईश्वर ने उसे ऐसी बुद्धि दी थी कि कठिन से कठिन बात सुगमता से उसकी समझ में आ जाती थी। वह सब प्रकार की पुस्तकें पढ़वा कर सुनता था। उसकी स्मरण शक्ति इतनी प्रबल थी, कि एक बार सुनी हुई बात को शायद ही कभी भूलता था। उसे धार्मिक विवादों को सुनने का अतीव चाव था। वह कई नई बातों का आविष्कारिक भी था। उसने एक यन्त्र का आविष्कार किया था, जिस से एक ही समय में सोलह बन्दूकें साफ की जा सकती थीं।

नीतिज्ञ—अकबर एक उच्चकोटि का नीतिज्ञ तथा वीर सेनापति भी था। उसने प्रजा की भलाई के लिये बहुत काम किया। उसके चरित्र में सबसे बड़ी बात यह थी कि वह जातीय द्वेष से रहित था और हिन्दुओं तथा मुसलमानो को समान समझता था।

५. Who was the real founder of the Moghal Empire in India, Babar or Akbar? State your reasons.

प्रश्न—*भारत में मुग़ल साम्राज्य का संस्थापक कौन था? बाबर या अकबर? कारण भी लिखो।*

मुग़ल साम्राज्य का संस्थापक

इसमें सन्देह नहीं कि मुगल साम्राज्य का प्रथम व्यक्ति जिसने उत्तरी भारत पर विजय पाई बाबर था, परन्तु विस्तृत देशों को जीत लेने से एक व्यक्ति साम्राज्य का संस्थापक नहीं माना जा सकता। उसके लिये आवश्यक है कि वह जीते हुये प्रदेशों में एक नियमित प्रबन्ध का शासन भी स्थापित करे। परन्तु बाबर को मृत्यु ने राज्य प्रबन्ध का अवसर ही न दिया और न ही वह किसी प्रकार का नियमित राज्य ही स्थापित कर सका। यही कारण था कि उसके मरते ही देश में स्थान-स्थान पर विद्रोह उठ खड़े हुये और शेरशाह सूरी ने हुमायूँ को देश से खदेड़ कर उसके साम्राज्य का अन्त कर दिया। पन्द्रह वर्ष के देश-निकाले के पश्चात् जब हुमायूँ लौटा तो अभी उसने देहली और आगरे पर अधिकार किया ही था कि उसे मौत ने आ दबाया।

हुमायूँ की मृत्यु के बाद जब अकबर का सिंहासनारोहण हुआ तो वह *बिना देश के ही राजा था*। सिकन्दर सूरी पंजाब में स्वतंत्र था, और हेमू ने विक्रमाजीत के नाम से देहली और आगरे पर अधिकार कर लिया था। इसलिये अकबर को नये सिरे से देश जीतना पड़ा। अकबर ने अपनी वीरता और चतुराई से कई प्रदेश जीते और उन जीते हुये प्रदेशों में एक सुदृढ़ राज्य स्थापित किया और मुग़ल साम्राज्य की नींव ऐसी दृढ़ कर दी कि उसके पश्चात् लगभग डेढ़ सौ वर्ष तक उसके उत्तराधिकारी निष्कंटक राज्य करते रहे। *इसलिये भारत में मुग़ल साम्राज्य का संस्थापक अकबर था, न कि बाबर*।

नूरुद्दीन जहाँगीर

(NUR-UD-DIN JAHANGIR)

1605—1627

Q. Give a brief account of the reign of Jahangir and describe his character.

प्रश्न—*जहाँगीर के शासनकाल का संक्षिप्त वर्णन करो और उसके चरित्र के विषय में एक नोट लिखो*।

अकबर के तीन पुत्र थे—*सलीम*, *मुराद* और *दानियाल*। मुराद और दानियाल तो पिता के जीवन में ही मदिरापान के व्यसनी होने के कारण मर चुके थे। केवल सलीम बाकी था। अकबर की मृत्यु पर सलीम जहाँगीर के नाम से बादशाह बना।

जहाँगीर का सिंहासनारोहण

राजकाज के सँभालते ही जहाँगीर ने कई *लाभकारी सुधार किये*।

(१) उसने कठोर दण्ड जैसे नाक और कान आदि काट देना निषिद्ध कर दिये। (२) शराब तथा नशीली

वस्तुओं का प्रयोग वर्जित कर दिया। (३) कई अनुचित कर भी हटा दिये। (४) विशेष दिनों को पशु-वध वर्जित कर दिया और (५) प्रार्थियों की पहुँच के लिये अपने राजभवन की दीवार के बाहर सोने की एक ज़ञ्जीर (Chain of Justice) लटकवा दी, इसलिये कि प्रार्थी उसे खींच कर अपनी शिकायत बादशाह को सुना सकें।

जहाँगीर के राज्य की प्रसिद्ध घटनाएँ निम्मनलिखित हैं।

खुसरो का विद्रोह 1606

जहाँगीर के सिंहासन पर बैठने के कुछ ही मास बाद उसके सब से बड़े बेटे खुसरो ने जो मानसिंह का भाँजा था और बड़ा भद्र और सुशिक्षित युवक था, विद्रोह कर दिया, और आगरे से चलकर लाहौर पर आक्रमण कर दिया, परन्तु उसे सफलता न हुई। जहाँगीर ने बड़े साहस से उसका पीछा किया और उसे लाहौर के पास हराया। तब उसने काबुल की ओर भागने का यत्न किया, परन्तु वज़ीराबाद के समीप चनाव को पार करता हुआ पकड़ा गया और कैद में डाल दिया गया। उसके साथियों को लाहौर में बड़े दण्ड दिये गये। सिक्खों के गुरु अर्जुन देव जी को भी जिन्हों ने राजकुमार की इस विपित्ति में सहायता की थी अपने जीवन की आहुति देनी पड़ी। (कहते हैं कि 1622 ई० में राजकुमार खुर्रम अर्थात् शाहजहाँ के संकेत पर ख़ुसरो का वध कर दिया गया)।

नूरजहाँ

1611 ई० में जहाँगीर ने एक ईरानी सुन्दरी नूरजहाँ से विवाह किया। उस सुन्दरी का बचपन का नाम मेहरुन्निसा था परन्तु विवाह के बाद उसका नाम नूरमहल और फिर नूरजहाँ रखा गया। नूरजहाँ तेहरान (Tehran) के एक व्यक्ति मिर्ज़ा ग़ियास की लड़की थी। मिर्ज़ा ग़ियास आजीविका की खोज में एक काफले (व्यापारी दल) के साथ भारत आ रहा था कि नूरजहाँ मार्ग में कन्धार के निकट उत्पन्न हुई। क्योंकि उसके माता-पिता के पास उसके पालने का कोई साधन न था, इसलिये उन्होंने उसे वहीं छोड़ दिया और आप आगे चल पड़े परन्तु काफ़ले

(व्यापारी दल) के नेता को जब इस समाचार का पता लगा तो उसने लड़की के लालन-पालन का बोझ अपने कन्धों पर ले लिया। भारत में पहुँचने पर गियास को अकबर के दरबार में एक अच्छी सी नौकरी मिल गई और नूरजहाँ भी अपनी माँ के साथ शाही महलों में आने-जाने लगी। जहाँगीर का उससे प्रेम हो गया। यह देखकर अकबर ने नूरजहाँ का विवाह एक ईरानी सरदार अली कुली ख़ाँ (शेर अफ़ग़ान) से करा दिया और उसे बर्दवान का गवर्नर नियुक्त कर दिया। परन्तु जहाँगीर के सिंहासन पर बैठने के थोड़े ही समय बाद शेर अफ़ग़ान एक झगड़े में मारा गया और नूरजहाँ शाही महलों में भेज दी गई। लगभग चार वर्ष के बाद 1611 ई० में उसका बादशाह से विवाह हो गया।

नूरजहाँ

नूरजहाँ का प्रभाव और बर्ताव--नूरजहाँ अत्यन्त चतुर और बुद्धिमति स्त्री थी। विवाह होते ही उसने सम्राट् पर पूरा अधिकार कर लिया और शासनप्रबन्ध अपने हाथों में ले लिया। सिक्कों पर भी उसका नाम लिखा जाने लगा। उसने अपने पिता और भाई को ऊँचे पद दिलवाये। नूरजहाँ ने बड़ी चतुरता से राज-काज चलाया। कई अनाथ और निर्धन कन्याओं के विवाह निजी व्यय से किये और अपने पति के व्यसनो को भी छुड़ाने का यत्न किया। परन्तु जहाँगीर की मृत्यु पर नूरजहाँ के अधिकारो की समाप्ति हो गई और शाहजहाँ ने उसकी उचित पैन्शन नियत कर दी। वह लाहौर में रहने लगी। अन्त में 1645 ई० में उसकी मृत्यु हो गई और उसका शव शाहदरा में दबा दिया गया।

(१) मेवाड़ की लड़ाई—राणा प्रताप के बाद उसका पुत्र राणा

जहाँगीर के राज्यत्व काल के युद्ध

अमर सिंह मेवाड़ के सिंहासन पर बैठा। उसने जहाँगीर की अधीनता स्वीकार करने से निषेध कर दिया। जहाँगीर ने उसके विरुद्ध कई बार सेनायें भेजीं, परन्तु सफलता न हुई। अन्त में 1614 ई० में राजकुमार *खुर्रम* (शाहजहाँ) ने राणा को हराया और उसने अधीनता स्वीकार कर ली। जहाँगीर ने इस रियासत से बड़ा अच्छा व्यवहार किया।

(२) कांगड़ा विजय—1620 ई० में *खुर्रम* ने कांगड़ा पर विजय पाई। उस विजय का जहाँगीर को बड़ा गर्व था, क्योंकि अकबर भी उस दुर्ग को न जीत सका था।

(३) अहमदनगर से लड़ाई—अहमदनगर का राज्य जिसे अकबर ने अपने राज्य काल में जीता था, 1610 में निज़ामशाही वंश के वज़ीर *मलिक अम्बर* की अधीनता में स्वतन्त्र हो गया। जहाँगीर ने राजकुमार *खुर्रम* को अहमदनगर भेजा। उसने अहमदनगर तो जीत लिया, परन्तु पूर्ण रूप से वहाँ मुग़लों का अधिकार न जम सका।

(४) कन्धार का छिन जाना—कन्धार का प्रदेश अकबर ने जीता था, परन्तु 1622 ई० में ईरानियों ने उसे फिर जीत लिया। अतः वह प्रदेश देहली साम्राज्य से पृथक् हो गया।

सर टामस रो

सर टामस रो (Sir Thomas Roe) एक अंग्रेज़ी राजदूत था। वह 1615 ई० में इङ्गलैंड के शासक जेम्स प्रथम (James I) की ओर से जहाँगीर के दरबार में आया। उसके आने का उद्देश्य अंग्रेज़ी कंपनी के लिये व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त करना था। वह यहाँ तीन वर्ष रहा और कुछ अधिकार पाने में सफल हो गया। उसने जहाँगीर के शासन काल का वृत्तान्त भी लिखा है। वह लिखता है कि *दरबार बड़ा सज-धज वाला था। विषय-विलास की सभायें प्रायः लगी रहती थीं। देश में धन बहुत था। विदेशियों से बहुत अच्छा वर्ताव किया जाता था। राज्य-प्रबन्ध बहुत अच्छा न था और घूँस खोरी का बाजार गरम था। सड़कें डाकुओं से सुरक्षित न थीं।*

नूरजहाँ की लड़की (लाडली बेगम) जो शेर अफ़ग़ान से थी जहाँगीर के सबसे छोटे लड़के *शहरयार* से व्याही हुई थी।

खुर्रम का विद्रोह

इसलिये नूरजहाँ अपने जामाता शहरयार को उत्तराधिकारी बनाने के लिये यत्न कर रही थी। यह देखकर खुर्रम ने विद्रोह कर दिया और आगरे की ओर बढ़ा। परन्तु उसे शाही सेनापति *महाबत खां* ने देहली के निकट हराकर बंगाल की ओर भगा दिया। फिर वहाँ से उसे शाही सेनाओं ने हरा कर दक्षिण की ओर भाग जाने पर विवश कर दिया। अन्त में 1625 ई० में पिता-पुत्र में सन्धि हो गई, परन्तु खुर्रम पिता की मृत्यु तक दक्षिण में ही रहा।

महाबत ख़ा का विद्रोह

महाबत ख़ाँ जहाँगीर के शासन काल में एक प्रसिद्ध सेनापति था। उसके बढ़ते हुए प्रभाव के कारण नूरजहाँ उससे भय खाती थी और उसके प्रभाव को घटाना चाहती थी। इस पर महाबत ख़ाँ ने विद्रोह कर दिया और जब बादशाह जहाँगीर काबुल जा रहा था उसे जेहलम के किनारे पकड़ लिया। नूरजहाँ ने अपने पति को छुड़ाने का बड़ा यत्न किया, परन्तु उसका प्रयत्न असफल रहा, अतः वह भी जहाँगीर के साथ बन्दी बन गई। परन्तु काबुल पहुँच कर नूरजहाँ ने बड़ी चतुराई और युक्ति से बादशाह को छुड़ा लिया और महाबत ख़ाँ दक्षिण की ओर भाग गया।

जहाँगीर की मृत्यु

जहाँगीर अपनी आयु के अन्तिम भाग में दमा के रोग से रोगी रहता था। 1627 ई० में जब वह काश्मीर से लौट रहा था तो मार्ग में ही भिवर के स्थान के निकट थोड़े दिन बीमार रह कर मर गया। उसे लाहौर के निकट शाहदरा में दबा दिया गया।

जहाँगीर का चरित्र

जहाँगीर एक न्याय-प्रिय शासक था। वह बड़ा दानी और सुहृदय था परन्तु कभी-कभी बड़ा निर्दयी हो जाता था और क्रोध में आकर कठोर दण्ड देता था। उसे प्राकृतिक दृश्यों में बड़ी रुचि थी और चित्र-कला

तथा मनोरञ्जन कलाओं से उसे विशेष अनुराग था और उसे शिकार का भी बड़ा शौक था, परन्तु उसमें शराब पीने का बुरा व्यसन था। युवावस्था में तो वह नित्य प्रति बीस-बीस प्याले पी जाया करता था। परन्तु शासक बनने के बाद वह शराब केवल रात को पीता था और दिन के समय पूर्णतया सचेत रहता था और यदि कोई दरबारी शराब पीकर आता तो उसे कड़ा दण्ड देता था। वह बड़ा विद्या-प्रेमी था। उसने अपने वृत्तान्त एक पुस्तक, "*तुजक-इ-जहांगीरी*" में लिखे हैं। जहांगीर वास्तव में एक *विद्वान् शराबी* (Talented Drunkard) था। नूरजहां से विवाह के बाद उसने सारा राज्य प्रबन्ध उसी को सौंप दिया था।

शाहजहाँ

(SHAHJAHAN)
(1627—1658)

Q. Give a brief account of the reign of Shah Jahan with special reference to (a) his Deccan Wars (b) his Buildings. (P. U. 1944)

प्रश्न—*शाहजहां के शासन काल का संक्षिप्त हाल लिखो और उस की दक्षिण की लड़ाइयों और भवनों का वर्णन करो।*

जब जहाँगीर की मृत्यु हुई तो उसके दो पुत्र शहरयार और खुर्रम जीवित थे।

शाहजहां का राज्याभिषेक

शहरयार नूरजहां का जामाता था और खुर्रम नूरजहां के भाई आसफ खां का, और वह उस समय दक्षिण में था। आसफ खां ने तत्काल उसे बुला भेजा और उस की अनुपस्थिति में खुसरो के लड़के (दावर बख्श) को कुछ दिनों के लिये सिंहासन पर बिठा दिया। शहरयार को आसफ खां ने लाहौर के निकट लड़ाई

शाहजहां

में हरा दिया और उसकी आँखें निकलवा दीं। खुर्रम तुरन्त आगरे पहुँचा और आते ही उस ने बाबर की संतान के सब पुरुषों को गुप्त रूप से मरवा डाला और फिर शाहजहाँ के उपनाम से सिंहासन पर बैठा। उस ने आसफ़ख़ाँ को साम्राज्य का वज़ीर बनाया।

मुमताज़ महल की मृत्यु

मुमताज़ महल का आरम्भिक नाम *अर्जमन्दबानु बेगम* था। वह आसफ ख़ाँ की पुत्री और *नूरजहाँ की भतीजी थी*। उसका विवाह शाहजहाँ के साथ हुआ था। शाहजहाँ उससे बहुत प्रेम करता था। वह १६ वर्ष विवाहिता रही। 1631 ई० में प्रसूतावस्था में उसका देहान्त हो गया। इससे शाहजहाँ को बड़ा दुःख हुआ। इस स्त्री से शाहजहाँ की १४ संतानें हुईं। उसकी स्मृति में शाहजहाँ ने आगरा में रौज़ा ताजमहल बनवाया था।

दक्षिण की लड़ाइयाँ

(१) ख़ाँजहाँ लोधी का विद्रोह—शाहजहाँ के सिंहासन पर बैठने के थोड़े ही दिनों बाद दक्षिण के वायसराय और सेनापति *ख़ांजहां लोधी* (Khan Jahan Lodhi) ने विद्रोह कर दिया, परन्तु हार खाई और 1631 ई० में मारा गया।

(२) अहमद नगर का मिलना—अहमदनगर के सुल्तान ने ख़ाँजहाँ लोधी की सहायता की थी, इसलिये अहमदनगर से युद्ध छिड़ गया। अहमदनगर जीत लिया गया और अंततः 1637 ई० में यह रियासत पूर्ण रूप से मुग़ल साम्राज्य में मिला ली गई।

(३) बीजापुर और गोलकुण्डा की अधीनता—इसी बीच में शाहजहाँ ने गोलकुण्डा और बीजापुर की ओर ध्यान दिया और उन्हें

अधीनता स्वीकार करने को कहा। उन दोनों ने अधीनता मान ली और कर देना स्वीकार कर लिया। इसके बाद बीस वर्ष तक दक्षिण में शान्ति बनी रही।

हुगली पर आक्रमण

हुगली (Hugli) नगर में पुर्तगालियों ने एक व्यापारिक कोठी खोल रखी थी और वहाँ उन्होंने अपनी शक्ति को पर्याप्त बढ़ा लिया था। ये लोग हिन्दू और मुसलमान अनाथ बच्चों को पकड़ कर ईसाई बना लेते थे और दासों का व्यापार करते थे। उनका साहस इतना बढ़ गया था कि एक बार उन्होंने बेगम मुमताज़ महल की दो दास-कन्याओं को भी पकड़ लिया। इस पर शाहजहाँ ने क्रुद्ध होकर हुगली पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। बङ्गाल का सूबेदार (कासिम खाँ) उनके विरुद्ध बढ़ा और उसने हुगली का घेरा डाल दिया। पुर्तगालियों ने सामना किया परन्तु अन्त में हार गये। उनके कोई १० हज़ार पुरुष मारे गये और उनकी बस्ती उजाड़ दी गई।

कन्धार पर अधिकार

जहाँगीर के शासनकाल में कन्धार (Qandhar) पर ईरानियों ने अधिकार कर लिया था। शाहजहाँ उसे लौटा लेना चाहता था। कारण यह था कि कंधार भारत से ईरान जाने वाले व्यापारी मार्ग पर एक अति महत्वशाली नगर था। अली मर्दान खाँ (Ali Mardan Khan) जो शाह ईरान की ओर से कन्धार का गवर्नर था किसी कारण अपने स्वामी से रुष्ट था। इसलिये उसने 1638 ई० में कुछ धन लेकर कन्धार शाहजहाँ को सौंप दिया और उसके अधीन नौकरी भी स्वीकार कर ली। परन्तु कुछ वर्षों के बाद (1649 ई० में) ईरानियों ने कन्धार पर फिर विजय पाई। शाहजहाँ ने उसे वापिस लेने के लिये कई बार सेनायें भेजीं, किन्तु सफलता न हुई और कन्धार सदा के लिये मुग़लों के हाथों से जाता रहा। इस असफलता से मुगल सेना की निर्बलता प्रकट हो गई।

शाहजहाँ का राज्य-काल मुग़ल निर्माण-कला का स्वर्णयुग था।

शाहजहाँ के भवन

उस सम्राट् को भवन बनाने का बड़ा चाव था, इसलिये उसने आगरा, देहली, लाहौर और अन्य कई नगरों में बड़े सुन्दर भवन बनवाये, जिन पर करोड़ों रुपया व्यय किया गया। इसी कारण शाहजहाँ को इन्जीनियर सम्राट् भी कहते हैं।

(१) रोज़ा ताजमहल (The Taj)—शाहजहाँ के भवनों में सबसे अधिक प्रसिद्ध रोज़ा ताजमहल आगरा है। संगमरमर का यह मकबरा शाहजहाँ ने अपनी प्यारी पत्नी मुमताज़ महल की स्मृति में आगरा नगर में यमुना के तट पर बनवाया। इसके बनवाने में २२ वर्ष लगे और लगभग ३ करोड़ रुपया व्यय हुआ। यह मकबरा संसार की विचित्र वस्तुओं में गिना जाता है। शाहजहाँ स्वयं इस मकबरा में दफ़नाया गया।
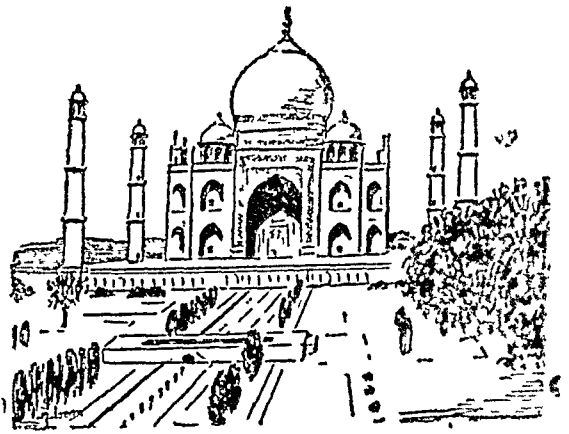
रोज़ा ताजमहल

(२) मोती मस्जिद—यह मस्जिद आगरा नगर में किले के अन्दर बनी हुई है और सफेद संगमरमर का एक अति सुन्दर भवन है। इस पर तीन लाख रुपया व्यय हुआ।
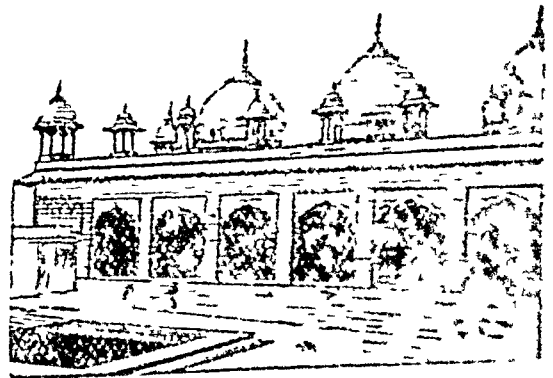
मोती मस्जिद

(३) मुसम्मन बुर्ज—मुसम्मन बुर्ज आगरा में किला के अन्दर

संगमरमर का बना हुआ एक अति सुन्दर भवन है। शाहजहाँ की मृत्यु इसी भवन में हुई थी। यहाँ से रोज़ा ताजमहल स्पष्ट दिखाई देता है।

(४) लाल किला—लाल किला देहली में यमुना नदी के तट पर लाल पत्थर का बना हुआ है। इसमें दीवान-इ-आम और दीवान-इ-ख़ास बहुत सुन्दर बने हुये हैं। विशेषतया दीवान-इ-ख़ास तो अति सुन्दर है। इसकी एक दीवार पर फ़ारसी का श्लोक लिखा हुआ है। जिसका अर्थ यह है :—

लाल किला

यदि स्वर्ग कहीं भूमि पर है,
तो यही है, यही है, यही है।

(५) जामा मस्जिद—यह मस्जिद देहली नगर में लाल किले से थोड़ी दूर पर स्थित है और एक बड़ा विशाल भवन है। यह लाल पत्थर की बनी हुई है।

(६) शाहजहाँनाबाद—देहली का वर्तमान नगर जो बहुत समय तक शाहजहाँनाबाद के नाम से प्रसिद्ध था, इसी बादशाह का बनवाया हुआ है।
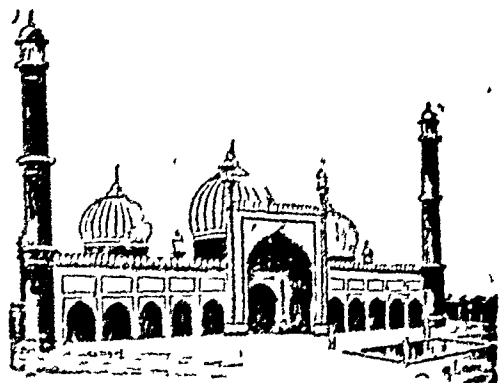
जामा मस्जिद

(७) जहाँगीर का मकबरा—शाहदरा (पाकिस्तान) में जहाँगीर का मकबरा जो बड़ा ही सुन्दर है, शाहजहाँ ही का बनवाया हुआ है।
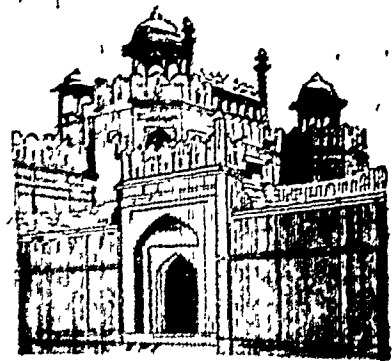
(८) शालामार बाग —लाहौर (पाकिस्तान) का यह बाग भी अली मरदान खाँ की देख-रेख में शाहजहाँ ने ही बनवाया था।

(९) तख्त-इ-ताऊस (Peacock Throne)—शाहजहाँ ने बादशाह बनते ही एक नया राज्य सिंहासन बनवाया, जिसे तख्त-इ-ताऊस (मोर सिंहासन) कहते हैं। यह सिंहासन सात वर्ष में बन कर पूरा हुआ। इस पर एक करोड़ रुपया व्यय हुआ। इस सिंहासन में अगणित बहुमूल्य पत्थर और हीरे मोती जड़े हुए थे। 1739 ई० में नादिरशाह इसे अपने साथ ईरान ले गया। अब यह कहीं भी नही मिलता।

Q. Distinguish between the characters of the sons of Shah Jahan. (P. U. 1951)

प्रश्न —*शाहजहां के पुत्रों के सम्बन्ध में तुम क्या जानते हो?*

शाहजहाँ के पुत्र

शाहजहाँ के कुल चौदह संतानें हुईं जिन में से चार पुत्र और दो पुत्रियाँ जीवित रहे। पुत्रों के नाम दारा, शुजा, औरंगज़ेब और मुराद थे।

(१) दारा (Dara)—दारा शाहजहाँ का सबसे बड़ा और प्यारा पुत्र था। वह *पंजाब और मुलतान का सूबेदार था।* शाहजहाँ उसे अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था। यही कारण था कि वह आगरे में अपने पिता के पास रहा करता था। दारा अच्छा विद्वान् और स्वतन्त्र विचारों का था वरन् किसी सीमा तक वह हिन्दु धर्म की ओर झुका हुआ था। इसलिये मुसलमान अमीर वज़ीर उससे अप्रसन्न थे। उसमें एक बड़ा दोष यह था *कि वह बड़ा हठी था और थोड़े किये किसी के परामर्श को नही मानता था।* वह कोई अच्छा जरनैल भी न था।

(२) शुजा (Shuja)—*शुजा बंगाल का सूबेदार था।* शुजा था तो वास्तव में *शुजा* (शूरवीर) परन्तु व्यसन और विलासिता ने उसे निर्बल कर दिया था। वह *शिया मत को मानता था* इसलिये दरबार के

सुन्नी अधिकारी जिनकी दरबार में बहुसंख्या थी उससे अप्रसन्न थे।

(३) **औरंगजेब** (Aurangzeb)—*औरंगजेब दक्षिण का सूबेदार* था। सब भाइयों से अधिक चतुर और समझदार था। विलासिता उसे छूने न पाई थी। बड़ा दृढ़ स्वभाव का था और मन का भेद किसी पर प्रकट न होने देता था। वह वीर तथा सफल सैनिक था और पक्का सुन्नी मुसलमान था इस लिये वह सुन्नी सरदारों में जिनका उन दिनों राज-सभा में जोर था सर्वप्रिय था।

(४) **मुराद** (Murad)—मुराद सबसे छोटा था और *गुजरात का सूबेदार था*। उस में वीरता की कमी न थी, परन्तु वह राजनैतिक विषयों में सर्वथा कोरा था। *शराब और शिकार का भी व्यसनी था और ऐसा सरल चित्त था कि झट दूसरों के कहने में लग जाता था।*

नोट—शाहजहाँ की दो पुत्रियों के नाम जहाआरा और रोशनआरा थे। जहाआरा दारा की और रोशनआरा औरंगज़ेब की पक्ष-पातिनी थी।

☞ Q. Briefly describe the war of succession among the sons of Shah Jahan and give reasons for Aurangzeb's success.

(P. V. 1932-34-38-40-51) (V. Important)

प्रश्न—*शाहजहाँ के पुत्रों में सिंहासनारोहण के युद्ध का हाल लिखो और उसमें औरङ्गजेब की सफलता के कारण वर्णन करो।*

राज्य पाने के लिये युद्ध

1657 ई० में शाहजहाँ आगरे में बहुत बीमार हो गया। दारा उस समय पिता के पास ही था। शुजा बंगाल में, औरंगज़ेब दक्षिण में और मुराद गुजरात में था। ये सब भाई सूबेदार थे इसलिये इन सब का राज्य प्रबन्ध तथा सैनिक युद्धों का पर्याप्त अनुभव था और प्रत्येक के पास अपनी अपनी सेना थी। दारा ने यत्न किया कि किसी प्रकार पिता की बीमारी का समाचार दूसरे भाइयों तक न पहुँचने पाये परन्तु वह सफल न हो सका। गुप्तचरों द्वारा प्रत्येक राजकुमार को पिता की

बीमारी का समाचार मिल गया और सबने युद्ध की तैयारी करनी आरम्भ कर दी।

सबसे प्रथम बंगाल के सूबेदार *शुजा* ने अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा की और बड़ी भारी सेना लेकर आगरे की ओर बढ़ा, परन्तु दारा के पुत्र *सुलेमान शिकोह और राजा जयसिंह* ने उसे बनारस के निकट **बहादुरपुर** (Bahadurpur) के स्थान पर हराया और शुजा वापिस बंगाल भाग गया।

औरंगजेब बड़ा चतुर था। उसने मुराद को अपनी ओर गाँठ लिया। दोनो भाइयों में एक सन्धि-पत्र हुआ कि *जीत जाने के बाद पंजाब, काबुल, काश्मीर और सिंध के प्रदेश मुराद को मिलेंगे और शेष भाग का स्वामी औरंगज़ेब होगा और वह ही भारतवर्ष का सम्राट् होगा।* इसके बाद दोनों भाइयों की संयुक्त सेनायें आगरे की ओर बढ़ीं। दारा ने *जसवन्त सिंह राठौर* और *कासिम खाँ* को उनका सामना करने को भेजा परन्तु वह उज्जैन के समीप **धर्मत** (Dharmat) के स्थान पर हार गया और जोधपुर भाग गया।

विजयी सेना बढ़ती हुई आगरे के निकट पहुँच गई। उस समय शाहजहाँ रोग मुक्त हो चुका था। उसने स्वयं युद्धक्षेत्र में जाने की इच्छा प्रकट की ताकि युद्ध समाप्त हो जाय। परन्तु हठी होने के कारण दारा ने न तो अपने पिता के आदेशों को ही सुना और न सुलेमान की वापसी की प्रतीक्षा की और स्वयं सामना करने के लिये बढ़ा। 29 मई 1658 ई० को आगरा से कुछ मील दूर ☞ **सामूगढ़** (Samugarh) के *स्थान पर इस कलह का निर्णयकारी युद्ध* हुआ। दारा ने पचास हज़ार सेना के साथ बड़ी वीरता से सामना किया। विजय का सेहरा उसके सिर बंध जाने को था कि वह अपने घायल हाथी से उतर पड़ा और किसी साथी के परामर्श से घोड़े पर सवार हो गया। *उसकी इस बात ने उसके भाग्य का निर्णय कर दिया।* जब उसकी सेना ने हौदे को

खाली देखा तो अनुमान किया कि या तो दारा मारा गया है या भाग गया है। उसकी सेना हार गई और दारा युद्ध क्षेत्र से भाग निकला। इसके बाद औरंगज़ेब ने तुरन्त आगरे पर अधिकार कर लिया और अपने पिता को जो रोग मुक्त हो चुका था, शेष आयु के लिये दुर्ग में बन्दी बना दिया, (जहाँ वह 1666 ई० में मर गया)।

भाइयों का अन्त—इसके बाद औरङ्गज़ेब और मुराद दारा (Dara) का पीछा करते हुये देहली को चले। मथुरा पहुँचकर औरङ्गज़ेब ने **मुराद** (Murad) को न्योता दिया और उसे खूब शराब पिला दी। जब वह नशे में चूर हो गया तो उसे कैद करके ग्वालियर जेल में भेज दिया गया और वहीं उसका वध कर दिया गया।

इसी अन्तर में **शुजा** (Shuja) ने एक बार फिर प्रयत्न किया। परन्तु औरङ्गज़ेब की सेना ने उसे (इलाहाबाद के निकट *खजवा* के स्थान पर) हरा दिया। औरङ्गज़ेब के सेनापति *मीर जुमला (Mir Jumla)* ने उसका पीछा करके उसे अराकान के पार भगा दिया। इसके बाद उसका कुछ पता न चला।

उधर भागे हुये **दारा** (Dara) का पीछा बड़े उत्साह से हो रहा था। अन्त में दादर (सिंध) के शासक *मलिक जीवन* ने, जिसका वह शरणागत था उसके साथ विश्वासघात किया और उसे औरङ्गज़ेब को सौंप दिया। दारा को फटे पुराने कपड़े पहना कर, एक मरियल हाथी पर बिठा कर देहली में घुमाया गया और फिर उसे काफिर घोषित करके वध कर दिया गया। इस प्रकार औरङ्गज़ेब ने अपने पिता का सिंहासन प्राप्त किया।

इस युद्ध में औरङ्गज़ेब की सफलता के कारण निम्नलिखित थे :—

औरंगज़ेब की सफलता के कारण

(१) *औरङ्गज़ेब अतीव योग्य और अनुभवी सेनापति था।* वह युद्ध विद्या में चतुर था और साहस को कभी हाथ से न जाने देता था। उसकी सेना सुशिक्षित और आज्ञाकारी थी।

इसके विपरीत दारा वीर सेनापति न था और उसके सेना नायक विश्वासघाती थे।

(२) *औरङ्गजेब पक्का सुन्नी मुसलमान था*, इसलिए राजसभा की सुन्नी पार्टी उसका पक्षपात करती थी। इसके विपरीत दारा को वे लोग काफिर समझते थे और उसके विरोधी थे। दारा के अपने सरदारों ने भी उसके साथ धोका किया। कहते हैं कि दारा को हाथी से उतर कर घोड़े पर सवार होने का परामर्श देना भी शत्रु की ही एक चाल थी।

(३) औरङ्ग़ज़ेब ने अपने भाई *मुराद को अपना साथी बनाया* और बाद में उसकी सेना को भी घूंस और लोभ देकर अपनी ओर गांठ लिया।

(४) औरङ्ग़ज़ेब की सफलता का कुछ कारण *शाहजहाँ की भूल भी हो सकती है*। वह सामूगढ़ के युद्ध से पहले रोगमुक्त हो चुका था। यदि वह उस समय रणक्षेत्र में जाता तो सम्भव है कि युद्ध वहीं समाप्त हो जाता।

औरङ्ग़ज़ेब आलमगीर

(AURANGZEB ALAMGIR)

1658—1707

☞Q Give a brief account of the reign of Aurangzeb. Also explain his character and policy.

(P. U. 1936-41-43-49)

प्रश्न—*औरङ्गजेब के शासनकाल का वृत्तान्त लिखो और उसका चरित्र तथा नीति बताओ।*

औरङ्ग़ज़ेब *मुग़ल वंश का अन्तिम महान् सम्राट था*। वह कट्टर सुन्नी मुसलमान था और उसने कुरान शरीफ़ के आदेशानुसार राज्य किया। सिंहासनारोहण के समय उसकी आयु चालीस वर्ष की थी। उसने 1658 से 1707 ई० तक उनचास वर्ष

शासन काल के दो भाग

राज्य किया। उसके शासनकाल को दो लगभग समान भागों में बांटा जा सकता है।

प्रथम—1658 ई० से 1681 ई० :— यह सारा समय उत्तरी भारत में बीता और सम्राट ने दक्षिण की ओर कोई विशेष ध्यान न दिया।

द्वितीय—1682 ई० से 1707 ई०— यह समय दक्षिण की विजय अर्थात् बीजापुर और गोलकुण्डा की शिया रियासतों और मराठों के विरुद्ध युद्ध करने में बीता।

औरङ्गज़ेब

उत्तरी भारत की घटनायें

(१) आसाम पर चढ़ाई, 1663 ई०—शुजा की हार के पश्चात औरङ्गज़ेब ने *मीर जुमला* (Mir Jumla) को बङ्गाल का सूबेदार नियत किया था। उसने आसाम पर चढ़ाई की, क्योंकि वहाँ के राजा ने थोड़े से मुग़ल प्रदेश पर अधिकार कर लिया था। परन्तु देश दुर्गम होने और मौसमी ज्वर के कारण मीर जुमला को विशेष सफलता न हुई और लौटते समय ढाका (Dacca) के निकट उसकी मृत्यु हो गई।

(२) चिटागांग की विजय, 1666 ई०—मीर जुमला की मृत्यु हो जाने पर औरङ्गज़ेब का मामा *शाइस्ता खाँ* (Shaista Khan) बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया गया। उसने पुर्तगाली समुद्री डाकुओं को जो खाड़ी बंगाल के एक टापू में रहा करते थे बहुत तंग किया और उनके सहायक अराकान के राजा से चिटागांग का प्रदेश जीत लिया।

(३) शिवाजी से युद्ध, 1663-1680 ई०—उन दिनों महाराष्ट्र देश में मराठा सरदार शिवाजी अपनी शक्ति को बढा रहा था। उस ने

मुग़ल प्रदेश पर भी हाथ मारना आरम्भ कर दिया था। *शाइस्त-ख़ाँ* को (जो उस समय दक्षिण का सूबेदार था) शिवाजी के विरुद्ध भेजा गया। परन्तु शिवाजी ने 1663 ई० में पूना के स्थान पर रात के समय छापा मार कर उसे हरा दिया। इसके बाद पहले राजकुमार *मुअज़्ज़म* और फिर राजा *जयसिंह* को उसके विरुद्ध भेजा गया। शिवाजी ने कुछ शर्तों पर अधीनता स्वीकार कर ली और आगरे में उपस्थित हुआ। वहाँ उसे बन्दी बना लिया गया। परन्तु वह चतुराई से भाग कर दक्षिण पहुँच गया। शिवाजी अन्त तक मुग़लों के विरुद्ध लड़ता रहा और उसने कई दुर्ग वापस छीन लिये। अन्त में 1680 ई० में उसका देहान्त हो गया।

(४) जाटों का विद्रोह, 1669 ई०—मथुरा और उसके आस-पास के प्रदेश में बहुत से जाट रहते थे जो बड़े बलवान और वीर पुरुष थे। औरंगज़ेब की धार्मिक नीति से अप्रसन्न होकर उन्होंने 1669 ई० में मथुरा में विद्रोह कर दिया। उनका नेता *गोकल* (Gokal) जाट था। मुग़ल सेना ने इस विद्रोह को दबा दिया और गोकल मारा गया परन्तु जाट लोग औरङ्गज़ेब के सारे राज्यकाल में मुग़लों को तंग करते रहे। औरंगज़ेब की मृत्यु के पश्चात् जाट और भी शक्तिशाली बन गये और *मुग़ल साम्राज्य के पतन का एक कारण सिद्ध हुये।*

(५) सतनामियों का विद्रोह, 1672 ई०—सतनामी हिन्दू साधुओं का एक दल था। ये लोग देहली से कुछ दूर *नारनौल* (वर्तमान पैप्सू राज्य) में रहा करते थे और उनकी संख्या चार-पाँच हज़ार थी। वे लोग धार्मिक विचारों के थे और थोड़ी बहुत कृषि और कुछ व्यापार भी करते थे। 1672 ई० मे उन्होंने विद्रोह कर दिया। इसका कारण यह था कि एक सरकारी प्यादे ने किसी सतनामी से दुर्व्यवहार किया था। औरङ्गज़ेब ने उन्हें दबाने के लिये सेना भेजी। सतनामी बड़ी वीरता से लड़े और आरम्भ में उन्हें कुछ सफलता भी हुई। परन्तु अन्त में हार गये और सतनामियों का सर्वनाश कर दिया गया।

(६) सिक्खों से शत्रुता—औरङ्गज़ेब की धार्मिक नीति ने सिक्खों को भी उसके विरुद्ध कर दिया। नवीं बादशाही श्री गुरु तेगबहादर जी

को हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये देहली में अपना सीस बलिदान करना पड़ा। उनके पश्चात् गुरु गोविन्द सिंह जी मुगलों के विरुद्ध लड़ते रहे। उन्होंने बड़ी वीरता से मुगलों से कई युद्ध किये और कई विजये प्राप्त कीं। इन युद्धों में गुरु जी को अपने चारों पुत्र बलिदान करने पड़े परन्तु वह तनिक भी न डोले। सिक्खों से शत्रुता मुगल साम्राज्य के पतन का एक कारण बनी।

(७)☞**राजपूतों से युद्ध, 1679-1681 ई०**—मारवाड़ (जोधपुर का *महाराजा जसवन्तसिंह राठौर* जो औरङ्गज़ेब की ओर से जमरूद का फौजदार था, 1678 ई० में मर गया और उसकी पत्नियाँ और पुत्र मारवाड़ को चले आये। मार्ग में औरङ्गज़ेब ने उसके पुत्र *अजीतसिंह* को जो अभी कुछ महीनों का दूध पीता बच्चा था किसी कारण देहली में रोकना चाहा, परन्तु वीर राजपूत सरदार *दुर्गादास राठौर* उसे निकाल कर ले गया। *बादशाह की इस कुचेष्टा पर राजपूत बहुत भड़क उठे।* *उधर* 1679 ई० *में जज़िया, जो सम्राट् अकबर ने अपने राज्यकाल में हटा दिया था, दोबारा लगा दिया गया।* इससे वे और भी क्रुद्ध हो गये और युद्ध छिड़ गया। मारवाड़ और मेवाड़ दोनों मिल गये। औरङ्गज़ेब ने अपने पुत्र अकबर के अधीन उनके विरुद्ध सेनायें भेजीं और दोनों पक्षों को बहुत हानि हुई। *अकबर* राजपूतों से मिल गया, परन्तु औरङ्गज़ेब ने एक पत्र लिखकर राजपूतों के हृदय में उसके सम्बध में सन्देह डाल दिया और अकबर को भागना पड़ा। 1681 ई० में राजपूतों के साथ सन्धि हो गई, परन्तु मारवाड की रियासत औरङ्गज़ेब की मृत्यु तक मुगलों के विरुद्ध लड़ती ही रही। इस युद्ध का साम्राज्य के पक्ष में बहुत बुरा प्रभाव पड़ा, क्योंकि *एक तो धन बड़ा व्यय हुआ और दूसरे राजपूत जो देश की ढाल और तलवार थे सदा के लिये मुगल साम्राज्य के शत्रु हो गये और राजपूतों और मुग़लों का पारस्परिक मेल जो अकबर के समय से चला आता था और जिस पर मुगल साम्राज्य आश्रित था सदा के लिये समाप्त हो गया। अब औरङ्गजेब को दक्षिण के युद्ध उनकी सहायता के बिना ही लड़ने पड़े।*

राजपूतों के साथ सन्धि कर लेने के बाद औरङ्गज़ेब 1681 ई० में दक्षिण चला गया। अपनी आयु के शेष छब्बीस वर्ष वह वहीं रहा और वहीं 1707 ई० में उसकी मृत्यु हो गई। दक्षिण जाने में उसके दो उद्देश्य थे *(१) एक तो वह बीजापुर और गोलकुँडा के शिया राज्यों को जीतना चाहता था और (२) दूसरे वह मराठों को कुचलना चाहता था।*

दक्षिण की लड़ाइयाँ
1682—1707

(१) बीजापुर और गोलकुंडा पर विजय—औरङ्गज़ेब को इन दोनों राज्यों के विरुद्ध शिकायतें थीं एक तो ये राज्य मराठों की सहायता करते थे और दूसरे इन दोनों रियासतों के बादशाह शिया थे और क्योंकि औरङ्गज़ेब दृढ़ विचारों का सुन्नी था इस लिये वह उन्हें समाप्त कर देना चाहता था। तीसरे वह अपने साम्राज्य को बढ़ाना चाहता था।

औरङ्गज़ेब ने राजकुमार *आजम* (Azam) को *बीजापुर* के विरुद्ध भेजा परन्तु उसे एक वर्ष तक कोई विशेष सफलता न हुई। इस लिये सम्राट् स्वयं वहाँ गया और 1686 ई० में बीजापुर पर विजय पाई। वहाँ के बादशाह *सिकन्दर* (Sikandar) को पेन्शन देकर राज्य से पृथक कर दिया गया और बीजापुर मुग़ल राज्य में मिला लिया गया।

1687 ई० में गोलकुंडा पर घेरा डाला गया। वहाँ का बादशाह *अबुलहसन* (Abul Hasan) बड़ा विलासी और कोमल कान्ति व्यक्ति था, परन्तु जब उसे लड़ना पड़ा तो उसने बड़ी वीरता से मुग़लों का मुक़ाबला किया और उन्हें बड़ी हानि पहुँचाई। उसके एक जरनैल *अब्दुर्रज़ाक* ने वीरों की भान्ति दुर्ग की रक्षा की। जब औरङ्गज़ेब को वहाँ सफलता होती न दिखाई दी तो उसने दुर्ग रक्षक को घूँस देकर अपनी ओर गाँठ लिया, और उसने दुर्ग का द्वार खोल दिया। अब्दुर्रज़ाक वीरों की भान्ति लड़ता हुआ घावों से घायल हो गया और अन्त में मुग़लों के हाथ आ गया। गोलकुंडा पर मुग़लों का अधिकार हो गया।

दक्षिण के इन राज्यों के जीते जाने से मराठों की शक्ति बहुत बढ़ गई और वे बे-रोक-टोक लूटमार करने लगे।

(२) मराठों से युद्ध—बीजापुर और गोलकुंडा पर विजय पाने के बाद केवल मराठों की ही एक शक्ति बाकी थी जो औरंगजेब के समस्त भारत का एक मात्र स्वामी बनने के मार्ग में बाधा थी। अतः औरंगजेब ने मराठों की ओर ध्यान दिया और बीस वर्ष उनके साथ युद्ध में लगा रहा। *परन्तु मराठों के अनोखे युद्ध करने के ढंग ने उसकी पेश न जाने दी।*

शिवाजी उस समय मर चुका था और उसका पुत्र *सम्भाजी* (Sambhaji) राजा था। वह अत्यन्त विलासी और अयोग्य था। उसने कुछ काल तो मुगलों का मुकाबला किया परन्तु 1689 ई० में *सम्भाजी* मुग़लों के हाथों में पड़ गया और वध किया गया और उसका पुत्र *साहुजी* कैद हो गया। ऐसा प्रतीत होता था कि औरङ्गजेब अपने प्रयोजन में सफल हो गया है, *परन्तु यह उसके पतन का आरम्भ था।* मराठे सम्भाजी के भाई *राजाराम* (Raja Ram) की अधीनता में मुगलों का खूब सामना करते रहे और उसकी मृत्यु (1700 ई०) पर उस की विधवा *तारा बाई* (Tara Bai) की अधीनता में युद्ध चलता रहा। वह बड़ी वीर स्त्री थी। उसने युद्ध को बड़े साहस से चालू रखा। मराठों के युद्ध का ढंग बड़ा अनोखा था। वे कभी खुले मैदान में तो लड़ते ही न थे। वे तो पर्वतों में छिपे रहते थे और अवसर पाकर शत्रु को हानि पहुँचाते तथा भोजन सामग्री को लूट लेते थे। इसके प्रतिकूल मुगल सेना दुर्बल और विश्राम-प्रिय हो चुकी थी। उनमें अनुशासन का चिह्न भी न था।

अन्त में औरङ्गजेब निराश होकर लौट पड़ा, परन्तु 1707 ई० में *अहमदनगर* के स्थान पर मृत्यु की गोद में सदा के लिये सो गया। मराठों के गुरीला युद्ध तथा मुगल सेना की शिथिलता ने औरङ्गजेब को मराठों के विरुद्ध सफल न होने दिया। *इस दक्षिण के फोडे ने औरङ्गजेब का अन्त कर दिया।* "The Deccan ulcer ruined Aurangzeb."

दक्षिण के युद्धों के परिणाम—दक्षिण युद्ध के परिणाम मुग़ल साम्राज्य के लिये हानिकारक सिद्ध हुये। *निरन्तर युद्धों से सेना दुर्बल और साम्राज्य की आर्थिक अवस्था शिथिल हो गई।* उत्तरी भारत में सिक्खों और जाटों ने सिर उठाना आरम्भ कर दिया और प्रान्तीय गवर्नर केन्द्रीय
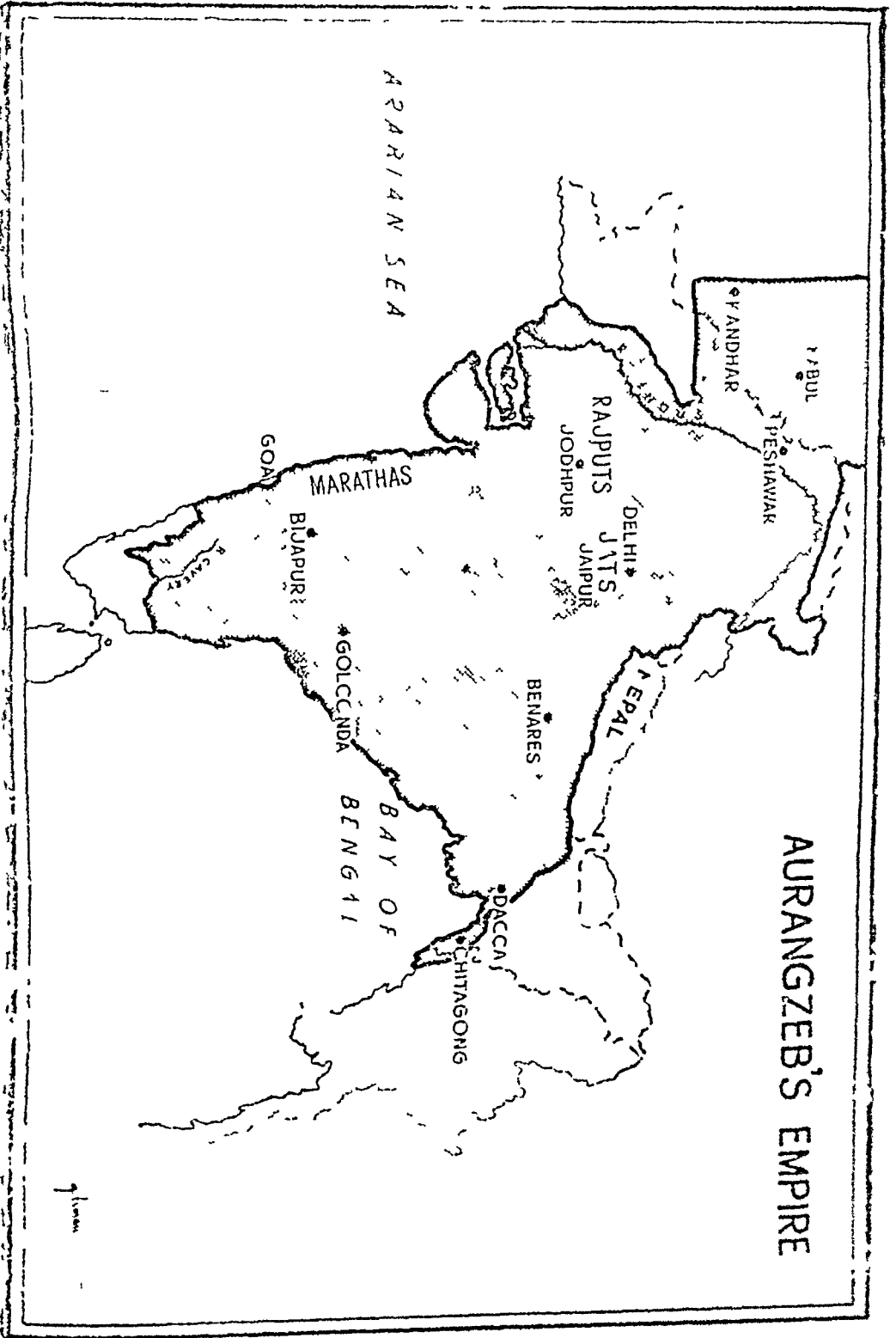
AURANGZEB'S EMPIRE
PESHAWAR
DELHI
RAJPUTS
JATS
JAIPUR
JODHPUR
BENARES
DACCA
CHITAGONG
ARARIAN SEA
MARATHAS
GOLCCNDA
BAY OF
BENG11
BIJAPUR
GOA
R CAVERY

शासन से विमुख हो गये, जिससे मुग़ल साम्राज्य का पतन निकट आ गया।

औरङ्गज़ेब मुगल वंश का एक अति प्रसिद्ध शासक था। उस के चरित्र में अधिक स्पष्ट बात यह है कि वह पक्का सुन्नी मुसलमान और शरीयत का पूर्णतया पालक था। उसे कुरान शरीफ कंठस्थ था। उसका जीवन बड़ा सरल था। वह निजी आवश्यकता के लिये कोष से एक पाई का व्यय भी पाप समझता था और टोपियाँ बनाकर तथा कुरान शरीफ की प्रतियाँ लिख कर निर्वाह करता था। उसे गाने, बजाने और भड़कीले कपड़ों से घृणा थी और उसने देश में राग-रंग बन्द कर रखा था। वह मदिरा नहीं पीता था। वह एक वीर सैनिक तथा अनुभवी सेनापति था और घोर युद्ध में भी साहस न छोड़ता था। इसके अतिरिक्त वह एक परिश्रमी राजा था और राज्य के सूक्ष्म से सूक्ष्म कार्य की देखभाल स्वयं करता था। वह राजनीति में भी बड़ा चतुर था और इरादे का बड़ा पक्का था और अपने मन का भेद किसी पर प्रकट न होने देता था। उसे विद्या से भी बड़ा प्रेम था और वह आयु पर्यन्त अध्ययन करता रहा। वह फारसी तथा अरबी भाषा का बड़ा विद्वान था।

औरङ्गज़ेब का चरित्र

परन्तु वह बहुत ही अविश्वासी स्वभाव का था, यहाँ तक कि वह अपने पुत्रों पर भी विश्वास न करता था। इसके अतिरिक्त उसने अपनी धर्मान्धता से हिन्दुओं, सिक्खों और राजपूतों को अपना शत्रु बना लिया था और इन कारणों से मुगल राज्य का पतन आरम्भ हो गया।

औरङ्गज़ेब कट्टर सुन्नी मुसलमान था, और इस्लाम के प्रति उसे अतीव श्रद्धा थी। वह अपना जीवन कुरान शरीफ के आदेशों के अनुसार बिताता था। उसका व्यवहार अपनी हिन्दू प्रजा के साथ अच्छा न था। कई स्थानों पर हिन्दू मन्दिर गिरा दिये गये, हिन्दुओं के लिये सरकारी नौकरी के द्वार बन्द कर दिये गये और उनको पालकी में या अरबी घोड़े पर सवार होने से निषेध कर दिया गया। 1679 ई०

धार्मिक नीति

में जज़िया लगा दिया गया जो 1564 ई० में अकबर ने हटा दिया था। *औरङ्गजेब शिया मत का भी विरोधी था।* दक्षिण के मुस्लिम राज्यों को समाप्त करने का मुख्य कारण यह था कि उन राज्यों के बादशाह शिया थे और उनके मन्त्री हिन्दू थे। *औरङ्गजेब की धार्मिक नीति साम्राज्य के लिये अत्यन्त हानिकारक सिद्ध हुई।*

Q. What were the causes of Aurangzeb s failure as a king ?

प्रश्न—*औरङ्गज़ेब के सम्राट् के रूप में असफल होने के क्या कारण थे ?*

औरङ्गज़ेब की असफलता के कारण

बाह्य रूप में औरङ्गज़ेब एक अत्यन्त सफल शासक था। उत्तरी भारत में उसे प्रत्येक युद्ध में सफलता हुई। दक्षिण में उसने बीजापुर और गोलकुण्डा के राज्यों को जीता और यदि वह मराठों को हरा न सका, तो मराठे भी उसके विरुद्ध कोई पर्याप्त सफलता न पा सके। उसका साम्राज्य भारत में एक कोने से दूसरे कोने तक फैला हुआ था और इतना विस्तृत था कि उससे पहले किसी मुसलमान बादशाह का साम्राज्य इतना बड़ा न था और भारत में कोई ऐसी शक्ति शेष न थी जो मुगल साम्राज्य का सामना कर सकती। परन्तु वास्तव में यह बात है कि औरङ्गज़ेब सम्राट् के रूप में असफल सिद्ध हुआ और उसके शासनकाल में ही मुगल साम्राज्य के पतन का आरम्भ हो गया था। उसकी असफलता के कारण नीचे लिखे हैं:—

(१) **धार्मिक नीति**—औरङ्गज़ेब पक्का सुन्नी मुसलमान था। उसने हिन्दुओं को नौकरियों से पृथक् कर दिया, उनके मन्दिर गिरवा दिये और उनपर जज़िया लगा दिया। परिणाम यह हुआ कि औरङ्गजेब के शत्रुओं अर्थात मराठों और सिक्खों के साथ उसकी हिन्दू प्रजा की सहानुभूति हो गई। इसके अतिरिक्त वीर राजपूत जो अकबर के समय से लेकर मुग़ल साम्राज्य के सच्चे सहायक और हितचिन्तक चले आते थे मुग़ल साम्राज्य के घोर शत्रु बन गये और औरङ्गजेब को दक्षिण के युद्ध उनकी हार्दिक सहायता के बिना ही लड़ने पड़े।

(२) बीजापुर और गोलकुण्डा की विजय—औरङ्गज़ेब ने इन राज्यो को जीत कर एक भयानक राजनैतिक भूल की, क्योंकि इस से मराठों की शक्ति बढ़ गई। इन राज्यो के सैनिक मराठी सेना में आ भरती हुये। इसके अतिरिक्त इन राज्यो को जीत लेने से मुग़ल साम्राज्य इतना विशाल हो गया कि उसको वश में रखना असम्भव हो गया।

(३) दक्षिण की लड़ाइयाँ—दक्षिण में निरन्तर २६ वर्ष की लड़ाइयों ने न केवल कोष ही रिक्त कर दिया, परन्तु राज्य-प्रबन्ध को भी शिथिल कर दिया। उत्तरी भारत में अशान्ति फैल गई। इस समय में सिक्खो को अपनी शक्ति बढाने का अवसर मिला गया। जाटो ने विद्रोह कर दिये और ज़मींदारो ने मुगल वायसरायो का प्रतिरोध करना आरम्भ कर दिया।

(४) अविश्वासी स्वभाव—औरङ्गजेब का स्वभाव अत्यंत संदेह-शील था, उसे पुत्रो पर भी विश्वास न था। इसका प्रभाव यह हुआ कि विश्वस्त कर्मचारी भी निराश हो गये और कोई भी सच्चे हृदय से उसकी सेवा न कर सका। राज्य प्रबंध खोखला हो गया। उसके पुत्रों को राज्य प्रबंध की शिक्षा ही न मिली।

Q. Write short notes on :—
Ali Mardan Khan, Mir Jumla, Shaista Khan, Jazia.

प्रश्न—*अली मर्दान खाँ, मीर जुमला, शाइस्ताखाँ और जजिया पर नोट लिखो।*

अली मर्दान खाँ

अली मर्दान खाँ शाहजहाँ के समय में ईरान के सम्राट् की ओर से कन्धार का सूबेदार था। क्योंकि वह अपने स्वामी ईरान के सम्राट् से रुष्ट था इस लिये उसने कुछ घूँस लेकर कन्धार का प्रदेश शाहजहाँ को सौंप दिया और आप भी उसकी नौकरी करली। शाहजहाँ ने उसे उच्च पद पर नियुक्त किया। वह काश्मीर और काबुल का सूबेदार भी रहा। वह एक योग्य इजीनियर भी था। *लाहौर का प्रसिद्ध शालामार बाग और यमुना की नहर उसी ने बनवाये थे।*

मीर जुमला ईरान में रत्नों का एक प्रसिद्ध व्यापारी था।

व्यापार के सम्बन्ध में गोलकुण्डा आया था और अपनी योग्यता से वहाँ मन्त्री बन गया था, परन्तु बाद में उस ने शाहजहाँ के पास नौकरी कर ली। राजसिंहासन के युद्ध में उसने औरङ्गज़ेब की बड़ी सहायता की और शुजा को हरा कर अराकान के पार भगा दिया और उस के बाद औरङ्गज़ेब ने उसे बंगाल का सूबेदार नियत किया। 1663 ई० में मीर जुमला ने आसाम पर आक्रमण किया, परन्तु इस युद्ध ने उसका स्वास्थ्य नष्ट कर दिया और लौटते समय वह बीमार होने के कारण ढाका के निकट मर गया।

मीर जुमला

शाइस्ता खाँ औरङ्गज़ेब का मामा था। वह कुछ समय तक दक्षिण का वायसराय रहा। औरङ्गज़ेब ने उसे शिवाजी को दबाने के लिये भेजा परन्तु वह सफल न हो सका। इसके बाद (1663 ई० में) उसे बंगाल का सूबेदार बनाकर भेजा गया, जहाँ उसने लगभग तीस वर्ष तक बड़ी योग्यता से शासन किया। उसने चिटागाँग से समुद्री डाकुओं को मार भगाया और इस प्रदेश को मुगल साम्राज्य में मिला लिया। 1694 ई० में उसकी मृत्यु हुई।

शाइस्ता ख़ाँ

जज़िया एक टैक्स था जो मुसलमान बादशाह अपनी अमुस्लिम प्रजा से उगाहाया करते थे। इसे भारतवर्ष म सिंध के विजेता मुहम्मद बिन कासिम ने शुरू किया था। आरम्भ में तो भारतवर्ष के मुसलमान शासकों ने ब्राह्मणों पर जज़िया नहीं लगाया था, परन्तु फ़िरोज तुग़लक ने ब्राह्मणों पर जज़िया लगा दिया। अकबर ने 1564 ई० में जज़िया सब के लिये हटा दिया, परन्तु औरङ्गज़ेब ने 1679 ई० में फिर से लगा दिया। इस जज़िया से बचने के लिये कई हिन्दू मुसलमान हो गये। औरङ्गज़ेब के उत्तराधिकारियों ने इसे हटाया और लगाया। अन्त में मुहम्मदशाह ने इसे 1720 में हटा दिया।

जज़िया

☞Q Describe the policy of Akbar, Jahangir, Shah Jahan and Aurangzeb towards the Rajputs.

प्रश्न—*अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरङ्गजेब की नीति राजपूतों की ओर वर्णन करो।*

मुगल सम्राट् तथा राजपूत

राजपूत बड़े वीर, तलवार के धनी तथा सम्मान प्रिय थे। उन की वीरता लोक प्रसिद्ध थी। वे बड़े स्वामीभक्त थे। राजपूताने में उन्हों ने कई स्वतन्त्र रियासते स्थापित कर रखी थीं।

भिन्न भिन्न मुग़ल सम्राटो ने उन के साथ भिन्न-भिन्न वर्ताव किया।

(१) अकबर और राजपूत—अकबर बड़ा दूरदर्शी था। वह एक महान साम्राज्य स्थापित करना चाहता था। उसने यह बात शीघ्र ही समझ ली थी कि एक बडा साम्राज्य वीर राजपूतो के हार्दिक सहयोग और सहायता के विना स्थापित नहीं हो सकता। अतः उसने वीर राजपूतों को प्रसन्न कर उनको अपनी ओर कर लिया। इस के लिये उसने निम्नलिखित उपाय वरते :—

(१) राजपूतों से विवाह सम्बन्ध—अकबर ने राजपूतों के साथ विवाह सम्बन्ध किये। सब से प्रथम उसने जयपुर के राजा बिहारीमल की लडकी से 1562 ई० में विवाह किया। इसके पश्चात कई और राजपूत घरानो से भी उसके वैवाहिक सम्बन्ध हो गये।

(२) राजपूत सम्बन्धियों से अच्छा व्यवहार—अकबर ने अपने इन राजपूत सम्बन्धियो के साथ बड़ा उत्तम व्यवहार किया और उन्हें राजकीय वंश के ही मेम्बर समझा।

(३) राजपूतों को ऊँचे पद देना—उसने योग्य राजपूतों को बड़े बड़े सिविल तथा सैनिक पदों पर लगाया। बिहारीमल का लड़का *भगवानदास* और पोता *मानसिंह* राज्य के प्रसिद्ध अधिकारियो में से थे। अकबर की सेना में भी कई राजपूत थे।

(४) धार्मिक स्वतन्त्रता—अकबर ने अपने सर्वप्रथम राजपूत

सम्बन्ध के अगले ही वर्ष अर्थात् 1563 ई० में हिन्दुओं पर से *यात्रा टैक्स* हटा दिया और उस से अगले वर्ष अर्थात् 1564 ई० में *जजिया* भी हटा दिया। इससे राजकीय आय में पर्याप्त कमी हो गई परन्तु अकबर ने उसकी कुछ भी परवाह न की। उसने राजपूतों (हिन्दुओं) को पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता दे रखी थी।

अकबर की इस नीति का परिणाम यह हुआ कि प्रायः राजपूत वंश मुग़ल साम्राज्य के पक्के हितैषी बन गये और उनहोने इस साम्राज्य को बढ़ाने तथा पक्का करने के लिये पूरा पूरा यत्न किया। उन्होने अकबर के पसीने के स्थान पर अपना लहु बहा दिया। सच तो यह है कि अकबर को '*महान् अकबर*' बनाने वाले राजपूत ही थे। *वे अकबर के समय मे मुग़ल साम्राज्य की तलवार और ढाल थे।* परन्तु कुछ राजपूत घरानों ने जिनमें से चितौड़ के *महाराणा प्रताप* का नाम विशेषतया वर्णनीय है अकबर की अधीनता स्वीकार न की।

(२) जहाँगीर और राजपूत—जहाँगीर ने भी राजपूतो के सम्बन्ध में अपने पिता महान् अकबर की नीति को ही अपनाया। उस ने राजपूतो के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध रखे। उसने वीर महाराणा प्रताप के पुत्र *राणा अमर सिंह* को पराजित किया परन्तु उससे भी अच्छा व्यवहार किया और उसे मुग़ल दरबार में हाज़िर होने के लिये बाधित नही किया। उसने भी जज़िया नहीं लगाया परन्तु इतना अवश्य है कि अब राजपूतों का सरकारी नौकरियों में वह भाग नही था जो अकबर के राज्य काल में था।

(३) शाहजहाँ और राजपूत—जहांगीर के बाद शाहजहा बादशाह बना। उसने भी राजपूतों से मैत्री ही रखी और उसके समय से भी राजपूत सरकारी पदो पर रहे। *महाराजा जसवन्त सिंह* और *राजा जयसिंह* उसके प्रसिद्ध जरनैलों में से थे। शाहजहा ने भी जज़िया नहीं लगाया।

(४) औरङ्गजेब और राजपूत—शाहजहा के बाद औरङ्गज़ेब

बादशाह बना। वह पक्का सुन्नी मुसलमान था और शरीयत पर चलने वाला था। उसने अपने उपरिलिखित पूर्वजों की नीति को सर्वथा बदल दिया। वह अमुसलिमों से घृणा करता था। परन्तु जब तक *राजा जयसिंह और महाराजा जसवन्तसिंह* जीवित रहे उसे राजपूतों के विरुद्ध कोई विशेष कार्यवाही करने का साहस नहीं हुआ। परन्तु जब *महाराजा जसवन्त सिंह* 1678 में मर गया तो औरङ्गज़ेब ने उसकी रियासत *मारवाड* को हथियाना चाहा। इसके अतिरिक्त 1679 ई० में उसने *जजिया* भी लगा दिया। इससे राजपूत बहुत रुष्ट हो गये और उन्होंने औरङ्गजेब के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। इस युद्ध में राजपूतो की हार तो हुई परन्तु वे सदा के लिये मुग़ल साम्राज्य के कट्टर शत्रु बन गये। उनकी *शत्रुता औरङ्गजेब को बहुत महंगी पड़ी*। उसे दक्षिण के युद्ध राजपूतो की सहायता के बिना ही लड़ने पड़े और उनमें उसे कोई विशेष सफलता न हुई। राजपूतो की यह शत्रुता मुग़ल साम्राज्य के पतन में सहायक हुई।

मराठों की उन्नति

शिवाजी

RISE OF THE MARATHAS

SHIVAJI

Q. What do you know about the Marathas and their country ?

प्रश्न—*तुम मराठो और उनके देश के बारे में क्या जानते हो ?*

मराठे महाराष्ट्र देश के निवासी हैं। यह प्रदेश पूना के आस-पास है। इस देश का बहुत-सा भाग पर्वतो और जंगलों से भरा पड़ा है। भूमि ऊँची नीची और मार्ग अत्यन्त पेचीदा है। देश की इन प्राकृतिक अवस्थाओं ने मराठों को वीर, युद्ध कुशल और सरल स्वभाव वाला बनाने में बड़ा भाग लिया है। इस देश के पर्वतीय दुर्ग मराठों के

मराठे

लिये अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुये है। इन्हीं दुर्गों की सहायता से मराठे अपने शत्रुओं को हराने में सफल हो सके। युद्ध के समय मराठे इन्हीं दुर्गों में छिप जाते थे और अवसर पाकर शत्रु सेना पर छापा मारते थे।

मराठे कद के छोटे, सुदृढ़ और परिश्रमी थे। चिरकाल तक ये लोग दक्षिण के मुसलमान बादशाहों के अधीन और कर-दाता रहे परन्तु इस काल की धार्मिक लहर ने उनके अन्दर अपने धर्म और जाति के लिये विशेष प्रेम उत्पन्न कर दिया। *अन्त मे शिवाजी ने इन मराठो को मुस्लिम शासन से स्वतन्त्र करा कर शक्तिशाली जाति बना दिया।*

☞ Q. Give a brief account of the career and character of Sivaji and write a note on his administration. (P. U. 1928-33-43-48-50-54) (Important)

प्रश्न—*शिवाजी के जीवन-चरित्र का संक्षेप से वर्णन करो और उस के राज्य-प्रबन्ध पर नोट लिखो।*

प्रारम्भिक जीवन (Early Life)—शिवाजी का जन्म 1627 ई० में *शोनीर* के दुर्ग में हुआ। यह दुर्ग पूना से लगभग ५० मील की दूरी पर था। शिवाजी का *पिता शाहजी भोसला* बीजापुर रियासत में एक उच्च सैनिक पद पर नियुक्त था और पूना का प्रदेश उसे जागीर में मिला हुआ था। इसके अतिरिक्त करनाटक में भी उसकी जागीर थी। शिवाजी की माँ *जीजाबाई* एक साध्वी, सदा चारिणी और बुद्धिमती स्त्री थी।

शिवाजी

शिवाजी का लालन-पालन पूना में अधिकतर अपनी माता की देख-रेख में हुआ। उस साध्वी ने प्राचीन हिन्दू वीरों की कथायें सुना

सुनाकर शिवाजी के हृदय में धर्म और जाति की रक्षा का भाव कूट-कूट कर भर दिया था। जब शिवाजी कुछ बड़ा हुआ तो **दादाजी कोण्डदेव** जो पूना में शाहजी की जागीर का प्रबन्धक था उसका गुरु बना। उसने शिवाजी को युद्ध विद्या और शासन प्रबन्ध में चतुर कर दिया तथा महाराष्ट्र के धार्मिक नेताओं **गुरु रामदास** और तुकाराम की शिक्षा ने उसके मन में हिन्दू धर्म के लिये असीम प्रेम उत्पन्न कर दिया और उसने अपने देश को मुसलमानो के राज्य से स्वतन्त्र कराना चाहा। *इन सब बातों का प्रभाव यह हुआ कि शिवाजी ने मराठा जाति को सङ्गठित करने का पक्का निश्चय कर लिया।* इस कार्य के लिये उसने अपने साथ कई और वीर साथियो को भी मिला लिया।

प्रारम्भिक विजयें (Early Conquests), **1646-48**—शिवाजी ने अपना *सैनिक* जीवन बीजापुर के विरुद्ध आक्रमण से आरम्भ किया। १६ वर्ष की आयु में उसने रियासत बीजापुर के एक दुर्ग *तोरणा* (Torna) पर (जो पूना से बीस मील दक्षिण-पश्चिम को है) अधिकार कर लिया और थोड़े ही समय के बाद *राजगढ़* (Rajgarh), पुरन्धर (Purandhar), *रायगढ़* (Raigarh), आदि कुछ एक अन्य दुर्गों का स्वामी हो गया। बीजापुर के बादशाह ने क्रोध में आकर शिवाजी के पिता शाहजी को जेल में डाल दिया, परन्तु शिवाजी ने बड़ी बुद्धिमत्ता से उसे छुड़ा लिया। इसके बाद कुछ समय तक शिवाजी चुप रहा और अपनी शक्ति दृढ़ करता रहा।

बीजापुर से युद्ध (War with Bijapur), **1659-62**—अपनी शक्ति बढ़ा लेने के बाद शिवाजी ने बीजापुर में फिर लूट मार आरम्भ की। अन्त में बीजापुर के बादशाह ने 1659 ई० में अपने सेनापति *अफ़जल खाँ* (Afzal Khan) को शिवाजी को दबाने और पकड़ लाने को भेजा। दोनों ने एक दूसरे से बात चीत करना स्वीकार कर लिया, परन्तु दोनों के हृदय शुद्ध न होने के कारण एक दूसरे के गले लगते ही छीना-झपटी हो गई और शिवाजी ने बिछुये से अफ़ज़ल खाँ का वध कर दिया तथा उसकी सेना को भगा दिया। यह घटना *प्रतापगढ़*

दुर्ग के निकट हुई। इसके बाद बीजापुर के बादशाह ने और भी कई बार सेना भेजी, परन्तु कोई विशेष सफलता न हुई। अन्त में 1662 ई० में शाह बीजापुर ने शिवाजी के साथ सन्धि कर ली और उसे *सारे अधिकृत प्रदेश का स्वतन्त्र स्वामी मान लिया*।

मुग़लों से युद्ध (War with Mughals), 1663-80-अफ़ज़ल ख़ाँ को हराने के बाद शिवाजी का साहस बहुत बढ़ गया और उसने मुग़ल प्रदेश पर भी छापे मारना आरम्भ कर दिया। औरङ्गज़ेब ने यह देखकर अपने मामा *शाइस्ता खाँ* (Shaista Khan) को जो उस समय दक्षिण का सूबेदार था, उसके विरुद्ध भेजा। शाइस्ताखाँ ने मराठा प्रदेश पर आक्रमण किया और पूना (Poona) पर अधिकार कर लिया परन्तु एक रात (1663 ई०) शिवाजी ने चार सौ मराठा सैनिकों के साथ बरात के रूप में पूना में प्रवेश करके मुग़लों पर धावा बोल दिया। अनेकों मुग़ल सैनिक मारे गये। शाइस्ता खाँ स्वयं कठिनाई से प्राण बचा कर भाग निकला, परन्तु उसका पुत्र मारा गया। उससे अगले वर्ष 1664 ई० में शिवाजी ने *सूरत* (Surat) की बन्दरगाह को लूटा और बहुत बड़ी सम्पत्ति प्राप्त की।

शाइस्ता ख़ाँ की असफलता के बाद औरङ्गज़ेब ने *राजा जयसिंह* को जो उसका सबसे वीर जरनैल था शिवाजी के विरुद्ध भेजा। जयसिंह ने कुछ एक स्थानों पर विजय प्राप्त की और शिवाजी को पुरंधर के दुर्ग में घेर कर औरङ्गज़ेब की अधीनता मानने और आगरे में बादशाह के दरबार में उपस्थित होने को मना लिया। शिवाजी ने २३ दुर्ग भी मुगलों को दे दिये। परन्तु जब शिवाजी दरबार में उपस्थित हुआ तो उसका अपमान किया गया और उसे बन्दी बना दिया गया। किन्तु शिवाजी बड़ी चतुराई से मिठाई के टोकरे में छिप कर भाग गया और वापिस दक्षिण आ पहुँचा। यह घटना 1666 ई० की है। इसके बाद शिवाजी मुग़ल साम्राज्य का घोर शत्रु बन गया।

शिवाजी का राज्याभिषेक (Sivaji's Coronation)—आगरे से लौट कर शिवाजी ने फिर सब किले जीत लिये और 1670

ई० में सूरत को लूटा। 1674 ई० में रायगढ़ (Raigarh) को राजधानी बनाकर बड़े सजधज से अपना राज्याभिषेक मनाया और 'छत्रपति' की उपाधि धारण की। इसके बाद उसने कर्नाटक के प्रदेशों में जिंजी, वैलोर तथा अन्य कई दुर्ग जीते। 1680 ई० में ५३ वर्ष की आयु में रायगढ़ के स्थान में वह मृत्यु वश हो गया।

शिवाजी का राज्य-प्रबन्ध अत्यन्त प्रशसनीय था। सारा प्रदेश दो भागों में बंटा हुआ था। एक **स्वराज्य** जो कि सीधा शिवाजी की अधीनता मे था और दूसरा **मुगलाई** जो आस-पास के कुछ एक जिलो पर सम्मिलित था और जो मराठों की अधीनता में न था, परन्तु जहाँ से चौथ और सरदेशमुखी नामक टैक्स उगाहे जाते थे।

शिवाजी का राज्य प्रबन्ध

(१) शासन प्रबन्ध—शासन प्रबन्ध शिवाजी के अपने हाथो में था, परन्तु उसने राजकीय कामों में सहायता के लिये आठ मन्त्रियों की सभा बनाई हुई थी जिसे 'अष्ट प्रधान' कहते थे। प्रत्येक मन्त्री के अधीन राज्य-प्रबन्ध के कई विभाग थे। प्रधान मन्त्री **पेशवा** कहलाता था और वह सदा ब्राह्मण हुआ करता था। शिवाजी उस सभा की सम्मति से राज्य का प्रबन्ध करता था। सारा देश सूबों और जिलो में बांटा हुआ था। प्रत्येक जिले के प्रबन्ध के लिये राजकीय अधिकारी नियुक्त थे। गाँव के नम्बरदार को *पटेल* या मुखिया कहते थे। ग्रामो का प्रबन्ध पंचायतें करती थीं।

(२) भूमि प्रबन्ध—कृषकों से कुल उपज का ; भाग लगान के रूप में उगाहाया जाता था जो नकदी या अन्न के रूप में दिया जा सकता था। इन पर किसी प्रकार की कठोरता नहीं की जाती थी, वरन अकाल के दिनों में कृषकों को कुछ रुपया बीज आदि मोल लेने के लिये ऋण के रूप में दिया जाता था, जिसे किसान अपनी शक्ति के अनुसार वार्षिक किश्तों में चुका देते थे। भूमिकर के अतिरिक्त राजकीय आय के और भी कई साधन थे, जैसे *चौथ* और *सरदेशमुखी*। इसके अतिरिक्त लूट का धन भी राजा के पास जमा होता था।

(३) सैनिक प्रबन्ध—शिवाजी उच्चकोटि का जरनैल था और उसका सैनिक प्रबन्ध बहुत अच्छा था। उसके पास सशस्त्र सेना थी, जिसमें पैदल और घुड़सवार दोनों सम्मिलित थे। इसके अतिरिक्त उसके पास २०० लड़ाई के जहाजों का एक बेड़ा* और ८० के लगभग तोपें थीं। कमांडर-इन-चीफ़ को सेनापति या सरनौबत कहते थे। सेना को नकद वेतन दिया जाता था। दुर्गों की विशेष रूप से रक्षा की जाती थी और उनको अच्छी दशा में रखने के लिये बहुत धन खर्च किया जाता था।

शिवाजी का सैनिक नियन्त्रण भी उच्चकोटि का था। किसी सैनिक को युद्धक्षेत्र में स्त्री को साथ ले जाने की आज्ञा न थी। इस नियम को न मानने का दण्ड फाँसी थी। लूट-मार का सारा धन राजा के पास पहुँचाना पड़ता था। शिवाजी की मृत्यु के समय उसके पास कोई तीस-चालीस हज़ार घुड़सवार और एक लाख प्यादा सेना थी।

शिवाजी का चरित्र

शिवाजी जन्म से ही नेता था। उसने अपने आपको एक वीर सेनापति और योग्य प्रबन्धकर्त्ता सिद्ध किया। उसका सबसे प्रसिद्ध कार्य यह है कि *उसने मराठों में जातीयता का प्रबल भाव उत्पन्न किया, और मराठा जाति को जो रेत के कणों की भाँति बिखरी हुई थी एक संयुक्त जाति बना दिया।*

निजी जीवन में शिवाजी अत्यन्त सदाचारी और पवित्रतात्मा व्यक्ति था। वह अपनी माता का बहुत मान करता था। उसे अपने धर्म से अटूट प्रेम था, परन्तु वह दूसरे धर्मों से भी घृणा नहीं करता था। वह मन्दिरों के लिये दान दिया करता था और मुसलमान पीरों का बड़ा मान करता था। मुसलमान इतिहास लेखक खाफीखाँ लिखता है *'कि शिवाजी मसजिदों, स्त्री जाति और कुरान शरीफ़ के अपमान की कभी आज्ञा न देता था। जब कभी कुरान शरीफ की कोई प्रति उसके हाथ आती तो बहुत बड़े आदर के साथ किसी मुसलमान को दे देता था और वह स्त्रियों*

*यह बेड़ा बम्बई से कुछ मील दक्षिण में स्थित बन्दरगाह कोलाबा में रहा करता था।

का बड़ा सम्मान करता था।' शिवाजी अनपढ़ था, परन्तु बड़ा समझदार था। उसे योग्य पुरुषों के चुनने में विशेष योग्यता थी और वह राजसभा की चालों में बड़ा चतुर था।

Q Write notes on Chauth, Sardeshmukhi and Maratha Method of warfare.

प्रश्न—*चौथ, सरदेशमुखी और मराठों की युद्ध विधि पर नोट लिखो।*

चौथ और सरदेशमुखी

चौथ (Chauth) एक प्रकार का टैक्स था जो मराठा लोग उन प्रदेशों से उगाहते थे जो उनकी लूटमार से बचना चाहते थे। यह भूमिकर के चौथे भाग के बराबर होता था। *सरदेशमुखी* (Sardeshmukhi) भी एक प्रकार का कर था और यह चौथ के अतिरिक्त उगाहाया जाता था। यह भूमिकर के दसवें भाग के बराबर होता था।

मराठों की युद्धविधि

प्रारम्भ में मराठे खुले मैदानों में नहीं लड़ते थे। उनकी युद्धविधि यह थी कि जब शत्रु की सेना आगे निकल जाती थी और रसद का सामान पीछे होता था तो वे दोनों के बीच रुकावट उत्पन्न कर देते थे और रसद को लूट लेते थे या शत्रु सेना के अकेले दुकेले जत्थों पर छापा मारते और अन्य सैनिकों के आने से पहले भाग जाया करते थे। उनकी सफलता का एक रहस्य यह भी था कि वे बड़े फुर्तीले और चुस्त थे और अत्यन्त शीघ्रता से आ जा सकते थे। प्रत्येक सैनिक के पास भोजन सामग्री और कपड़े होते थे। इसलिये उन्हें भोजन सामग्री ढोने वाले विभाग की आवश्यकता नहीं थी। वे ऐसे स्थान पर छापा मारते थे जहाँ उनके आने की सम्भावना भी न होती थी। उनकी सफलता का दूसरा रहस्य यह था कि उनके सैनिक विशेषतया मावली लोग पर्वतों पर चढ़ने और उतरने में बड़े निपुण थे और तीसरा रहस्य यह था कि उनके युद्ध प्रायः अपने देश में होते थे जहाँ की चप्पा-चप्पा भूमि से वे भली-भान्ति परिचित थे। ऐसी युद्ध-विधि को अँग्रेजी में Guerilla Warfare अर्थात 'छापामार युद्ध' कहते हैं

औरङ्गज़ेब के उत्तराधिकारी
और
मुग़ल साम्राज्य का पतन

SUCCESSORS OF AURANGZEB AND THE DECLINE OF THE MOGHAL EMPIRE

औरङ्गज़ेब के उत्तराधिकारी

औरङ्गज़ेब की मृत्यु के बाद उसके पुत्रों में राज्य प्राप्ति के लिये युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध में राजकुमार मुअज़्ज़म सफल हुआ और *बहादुरशाह* (Bahadur Shah) के उपनाम से राजगद्दी पर बैठा। उसे *शाह आलम प्रथम* भी कहते थे। वह इतना बूढ़ा और निकम्मा था कि लोग उसे 'शाह-इ-बेख़बर' कहा करते थे। उसने 1707-1712 ई० तक राज्य किया।

बहादुर शाह की मृत्यु पर उसके पुत्रों में राज्यगद्दी के लिये युद्ध हुआ और *जहांदारशाह* (Jahandar Shah) सफल हुआ। उसके राज्य में सय्यद भाई *हुसैन अली* और *अब्दुल्ला* बहुत शक्ति पकड़ गये। उन्होंने 1713 ई० में जहांदारशाह को मरवा दिया और उस के भतीजे फ़र्रुख़ सय्यर को सिंहासन पर बैठाया।

फ़र्रुख़ सय्यर (Farrukh Siyyar), 1713-1719 ई० तक बादशाह रहा। उसके राज्य की सबसे प्रसिद्ध घटना यह है कि सिक्खों का नेता *बन्दा बहादुर* पकड़ा जाकर वध कर दिया गया। इसके अतिरिक्त एक अँग्रेज़ डाक्टर *हैमिलटन* (Hamilton) ने बादशाह को एक बीमारी से मुक्त किया *जिससे प्रसन्न होकर फ़र्रुख़ सय्यर ने अंग्रेज़ी कम्पनी को बंगाल मे विना महसूल व्यापार की आज्ञा दे दी।* सय्यद भाई फ़र्रुख़ सय्यर को कठपुतली बनाना चाहते थे। जब उसने स्वतन्त्र होने की चेष्टा की तो उन्होने उसे मरवा दिया। इसके कुछ मास पश्चात उन्होंने १८ वर्ष के युवक मुहम्मदशाह को बादशाह बनाया।

मुहम्मदशाह (Muhammad Shah) ने 1719-1748 ई० तक कोई तीस वर्ष राज्य किया। वह बड़ा विलास-प्रिय शासक था और सदा रंगरलियो में ही डूबा रहता था। इसलिये उसे *मुहम्मदशाह रंगीला*

कहते हैं। उसके शासनकाल में कई प्रांत मुगल साम्राज्य की अधीनता से स्वतन्त्र हो गये और मुगल साम्राज्य टुकड़े-टुकड़े होने लगा। 1739 ई० में नादिरशाह ने आक्रमण करके साम्राज्य को सर्वथा नष्ट कर दिया। *अलीवर्दी खा बङ्गाल में, सआदत अली खा अवध में और निजामुलमुल्क दक्षिण में* स्वतन्त्र शासक बन बैठे।

मुहम्मदशाह की मृत्यु के बाद जो बादशाह हुये वे सब के सब केवल नाम मात्र के बादशाह थे। उनमें दो बादशाहो के नाम प्रसिद्ध हैं एक *शाह आलम द्वितीय* (Shah Alam II) जिसने अंग्रेजों को बङ्गाल, बिहार और उडीसा की दीवानी का अधिकार दिया और दूसरा *बहादुरशाह द्वितीय* (Bahadur Shah II) जो इस वंश का अन्तिम बादशाह था। उसने 1857 ई० के स्वतन्त्रता के पहले युद्ध में भाग लिया और शाही कैदी बनाकर रंगून भेज दिया गया जहाँ 1862 ई० मे उसकी मृत्यु हो गई।

Q. Write a short note on the Sayyad Brothers.

प्रश्न—*सय्यद भाइयों पर संक्षिप्त नोट लिखो।*

सय्यद भाई

सय्यद भाई दो सगे भाई थे। एक का नाम सय्यद अब्दुल्ला खां और दूसरे का नाम सय्यद हुसैन अली था। सय्यद अब्दुल्ला इलाहाबाद का और सय्यद हुसैन अली बिहार का सूबेदार था। इन दोनों भाइयो ने औरंगजेब की मृत्यु के कुछ ही समय बाद देहली दरबार में बहुत प्रभाव प्राप्त किया, यहाँ तक कि वे जिसको चाहते बादशाह बना देते और जिसे चाहते वध करवा देते या सिंहासन से उतार देते। इस प्रकार उन्होंने थोडे ही वर्षों में कई व्यक्तियों को बादशाह बनाया और कइयों को राजगद्दी पर से उतारा। इसलिये वे इतिहास में King Makers के नाम से विख्यात हैं। मुहम्मदशाह के शासन में इन दोनो का अन्त हो गया।

☞ Q. Briefly describe the invasions of Nadir Shah and Ahmad Shah Abdali and estimate their influence (Important)

प्रश्न—*नादिरशाह और अहमदशाह अब्दाली के आक्रमणों का वृत्तान्त लिखो और बताओ कि उनका क्या प्रभाव पड़ा?*

नादिरशाह ईरान का एक विख्यात विजयी हो चुका है। आरम्भ में वह एक गडरिया था परन्तु अपनी ईश्वर-प्रदत्त योग्यता से उन्नति करके 1736 ई० में ईरान का बादशाह बन गया। इसके दो वर्ष पश्चात् उसने कन्धार भी जीत लिया और फिर

नादिरशाह 1739

उसने भारतवर्ष पर चढ़ाई करनी चाही। इसके लिये उसे बहाना भी मिल गया। बहुत से अफ़गान कन्धार से भागकर मुग़ल राज्य में आ गये थे। नादिरशाह ने राजदूत भेजकर दिल्ली के शासक मुहम्मद शाह से प्रार्थना की कि वह इन अफ़ग़ानों को अपने राज्य में न आने दे, परन्तु उसने कोई उत्तर न दिया। इस पर **1739** ई० में नादिरशाह ने भारतवर्ष पर आक्रमण कर दिया।

मुहम्मदशाह रङ्गीला एक अयोग्य शासक था इसलिये नादिरशाह बे-रोक-टोक **करनाल** (Karnal) तक आ पहुँचा। यहाँ उसने मुहम्मदशाह की सेना को हराया और फिर देहली में प्रविष्ट हुआ। कुछ दिनों के बाद नगर में यह झूठा लोकवाद फैल गया कि नादिरशाह का किसी ने वध कर दिया है। इस पर नगर वासियों ने उसके कुछ एक सैनिकों को मार डाला। जब नादिरशाह को इस बात का पता चला तो उसने सर्वघात की आज्ञा दे दी। यह

नादिरशाह

सर्वघात आठ घण्टों तक रहा। सहस्रों लोग मृत्यु के घाट उतार दिये गये। अन्त में मुहम्मदशाह की प्रार्थना पर खून-खराबा बन्द हुआ। नादिरशाह लगभग दो मास देहली में ठहरने के बाद वापिस ईरान लौट गया और अपने साथ *असीम धनराशि, कोहनूर हीरा और शाहजहाँ का तख़्त-इ-ताऊस (मोर सिंहासन) भी ले गया। इसके अतिरिक्त सिन्ध पार का मुग़ल प्रदेश नादिरशाह के राज्य में सम्मिलित कर दिया गया।*

परिणाम—*नादिरशाह के इस आक्रमण ने मुग़ल साम्राज्य की जड़ों*

को खोखला कर दिया तथा कई स्वतन्त्र रियासतें स्थापित हो गई। मुग़ल साम्राज्य छितरा गया। इस आक्रमण के पश्चात् मराठों को अपनी शक्ति बढ़ाने का सुअवसर मिल गया। लौटने के कुछ वर्ष बाद (1747 ई० में) नादिरशाह अपने विरोधियों के हाथों वध किया गया।

अहमदशाह अफ़ग़ानों के अब्दाली या दुर्रानी कबीले का सरदार और नादिरशाह का एक सेनापति था। नादिरशाह की हत्या के बाद वह अफ़ग़ानिस्तान का बादशाह बन बैठा और उसने भारत पर कोई आठ आक्रमण किये। उसने पंजाब जीत लिया और देहली को लूटा। उसका सब से प्रसिद्ध आक्रमण 1761 ई० में हुआ। इस आक्रमण में उसने मराठों को पानीपत की तीसरी लड़ाई में बुरी तरह हराया। *अहमदशाह के इन आक्रमणों ने मुग़ल साम्राज्य की रही सही शक्ति को भी मिटा दिया।*

अहमदशाह अब्दाली

अहमदशाह

Q. Describe fully and clearly the causes that led to the decline and downfall of the Moghal Empire.
(P. U. 1929-35-38-44-46-52-54) (V. Important)

प्रश्न—*मुग़ल साम्राज्य के पतन के कारण स्पष्ट रूप से लिखो।*

मुग़ल साम्राज्य के पतन के कारण

वास्तव में मुग़ल साम्राज्य के पतन का प्रारम्भ औरङ्गज़ेब के शासनकाल में ही हो गया था और उसकी नीति ही पतन का भारी कारण थी। परन्तु जब तक औरङ्गज़ेब जीवित रहा उसका प्रभाव बना रहा। उसके मरते ही साम्राज्य का पतन शीघ्रता पकड़ गया।

(१) औरङ्गज़ेब की धार्मिक नीति – औरङ्गज़ेब प्रत्येक कार्य सुन्नी मुस्लिम दृष्टिकोण से करता था। उसने हिन्दुओं पर जज़िया

फिर से लगा दिया और उनके मन्दिर गिरवा दिये। उस की धार्मिक नीति से हिन्दू उससे रुष्ट हो गये और उनकी सहानुभूति उसके शत्रुओं अर्थात मराठों और सिक्खों के साथ हो गई। राजपूत भी जो मुग़ल साम्राज्य के प्रबल सहायक थे, उसके शत्रु बन गये। इसके अतिरिक्त उसकी शिया प्रजा भी उससे असंतुष्ट थी।

(२) बीजापुर और गोलकुण्डा की विजय—बीजापुर और गोलकुण्डा की रियासतों को जीत कर औरङ्गजेब ने एक राजनैतिक भूल की, क्योंकि उसके बाद मराठे बढ़-चढ़ कर मुगल प्रदेश पर हाथ मारने लगे। उन रियासतों के बेकार सैनिक भी मराठों से आ मिले।

(३) दक्षिण की लड़ाइयाँ—औरङ्गजेब को लगभग छब्बीस वर्ष राजधानी से दूर दक्षिण की लड़ाइयों में बिताने पड़े। वह ऐसा दक्षिण में गया कि फिर देहली लौटना उसके भाग्य में ही न हुआ। शासन प्रबन्ध जो उसकी निजी देखभाल पर निर्भर था, खोखला हो गया। साथ ही निरन्तर युद्ध के कारण उसकी सेना निर्बल हो गई और कोष रिक्त हो गया। उधर सैनिकों ने अपने पिछले वेतन न मिलने के कारण विद्रोह कर दिया।

(४) अयोग्य उत्तराधिकारी—औरङ्गजेब का स्वभाव अत्यन्त संदेहशील था। उसके इस स्वभाव का परिणाम यह हुआ कि उसके लड़कों को किसी प्रकार की शासन शिक्षा न मिल सकी। इसलिये उसके उत्तराधिकारी आलसी, शक्तिहीन, दुराचारी, तथा निकम्मे सिद्ध हुये और वे अपने मन्त्रियों के हाथों में कठपुतली बने रहे। इस से केन्द्रीय शासन का अन्त हो गया।

(५) विदेशी राज्य—भारतवर्ष की अधिकांश जनसंख्या के लिये मुग़ल राज्य एक विदेशी राज्य था। अतः वह त्याग और देश-भक्ति जो किसी साम्राज्य की स्थिरता के लिये आवश्यक है, लोगों के हृदय में न थे। लोगों को राज्य के साथ कोई विशेष प्रेम न था।

(६) निरंकुश राज्य—मुग़ल साम्राज्य निरंकुश राज्य था और इस प्रकार का राज्य केवल उस समय तक चल सकता है जब तक

बादशाह दूरदर्शी और शक्तिशाली हो। जब राज्य किसी निकम्मे बादशाह के हाथ आ जाता है तो निश्चय ही उसका पतन हो जाता है। औरङ्गज़ेब के पश्चात् सब मुगल बादशाह निकम्मे और शक्तिहीन थे और यह बात पतन का एक बड़ा कारण सिद्ध हुई।

(७) उत्तराधिकारी नियुक्त करने के नियम का न होना—मुगलों में उत्तराधिकारी नियुक्त करने का कोई विशेष नियम न था इसलिये जब कभी कोई बादशाह मरता, तो उसके लडकों में राज्य-अधिकार पाने के लिये युद्ध छिड जाता था। जहाँगीर, शाहजहाँ, औरङ्गज़ेब आदि की मृत्यु के बाद राजगद्दी के लिये गृह-युद्ध हुए, जो साम्राज्य के लिये अतीव हानिकर सिद्ध हुए। ये युद्ध औरङ्गजेब की मृत्यु के २० वर्ष पश्चात् तक के समय में तो बहुत अधिक हो गये। इन युद्धों में कई राजकुमार, मुगल सरदार और सुशिक्षित सैनिक मारे गये।

(८) अमीरों की अयोग्यता—इसमें कोई सन्देह नहीं कि अब्दुर्रहीम, आसफ खा, महावत खा, मीर जुमला, इत्यादि बडे उच्चकोटि के अमीर थे। वे मुगल साम्राज्य के स्तम्भ थे और उन्होने मुगल साम्राज्य को सुदृढ़ करने में बड़ा भाग लिया। परन्तु उनके वंशज अर्थात् उनके पुत्र पौत्र बडे विलास-प्रिय और अयोग्य सिद्ध हुये। उनमें अपने पूर्वजों की योग्यता लेश मात्र भी न थी। उच्चकोटि के अमीरों का अभाव भी इस साम्राज्य के पतन का एक बड़ा भारी कारण था।

(९) मुगल सेना की निर्बलता—असीम धन और विलासता के कारण मुगल सेना भी विलास-प्रिय और निर्बल हो गई थी। अफसर पालकियों में बैठकर युद्ध क्षेत्र में जाते थे। सैनिक अपने साथ अपनी स्त्रियों को भी ले जाते थे। बाबर के समय जैसा साहस और वीरता उनमें नाममात्र भी न थी। मुगल सेना की निर्बलता शाहजहाँ के समय से ही प्रकाशित हो गई थी जब कि कई बार प्रयत्न करने पर भी वह कन्धार का नगर इरानियों से वापिस न ले सकी। औरङ्गजेब के राज्यकाल में तो यह निर्बलता और भी स्पष्ट हो गई थी।

(१०) प्रान्तों की स्वतन्त्रता—औरङ्गजेब की मृत्यु के पश्चात

कोई योग्य शासक न रहा, तो सूबेदार अपने-अपने प्रान्तों में स्वतन्त्र हो गये। बङ्गाल में अलीवर्दी ख़ाँ, अवध में सआदत अली खाँ, दक्षिण में निज़ामुल्मुल्क आसफ़जाह और रुहेलखण्ड में रुहेले मुहम्मदशाह रंगीले के समय में स्वतन्त्र बन बैठे।

(११) विदेशी आक्रमण—मुग़ल साम्राज्य की इस दुर्बलता से लाभ उठाकर *नादिरशाह* और *अहमदशाह* ने भारत पर आक्रमण किये और इस साम्राज्य की रही-सही शक्ति को भी मिटा दिया। नादिरशाह ने सिंध नदी के पश्चिमी प्रदेश को मुग़लो से छीन लिया और अहमदशाह ने पंजाब पर अधिकार कर लिया। इससे मुगल साम्राज्य बहुत शिथिल हो गया।

(१२) साम्राज्य विस्तार—औरङ्गज़ेब के समय में मुग़ल साम्राज्य बहुत विस्तृत हो गया था और उस काल में जब कि आने जाने के साधन इतने अच्छे न थे और समाचार शीघ्र भेजने का उचित प्रबन्ध नहीं होता था इतने बड़े साम्राज्य को अपने अधीन रखना अत्यन्त कठिन था, इसलिये साम्राज्य का विस्तार भी उसके पतन का एक कारण सिद्ध हुआ।

(१३) नई शक्तियाँ—मराठे और सिक्ख बड़ी शीघ्रता से अपनी शक्ति को बढ़ा रहे थे। मराठे दक्षिण से उत्तरी भारत तक छा गये थे, और सिक्खो ने पंजाब पर अधिकार जमा लिया था। इसके अतिरिक्त यूरोपीय जातियों ने भी भारत में अपने पैर जमा लिये थे। इससे मुगल साम्राज्य का सर्वथा अन्त हो गया।

(१४) अच्छे यौद्धक बेड़े का न होना—कई इतिहासज्ञों का विचार है कि अच्छे यौद्धक बेड़े का न होना भी साम्राज्य के पतन का एक कारण था। उनका मत है कि यदि जहाज़ी बेड़ा साम्राज्य के पतन को बचा नहीं सकता था तथापि योरुप के आक्रमण-कर्त्ताओं का मुकाबला करके उस पतन को कुछ समय के लिये रोका जा सकता था।

सिक्खों का उत्थान

RISE OF SIKHS

Q. Give an account of the rise of the Sikhs emphasising the work of Guru Nanak and Guru Gobind Singh. (Important) (P.U 1928-51-53)

प्रश्न—*सिक्खों की उन्नति का संक्षिप्त वर्णन करो और इस सम्बन्ध में गुरु नानक देव जी और गुरु गोविन्दसिंह जी के काम का विशेषता पूर्वक वर्णन करो।*

सिक्खों का उत्थान

गुरु नानक (1469-1538)—सिक्ख मत के संचालक गुरु नानक (Guru Nanak) देव जी थे जो 1469 ई० में तलवंडी गाँव (वर्तमान ननकाना साहिब) जिला शेखपुरा में उत्पन्न हुये। उनका पिता कालू एक पटवारी था और साथ ही दुकान भी करता था। आरम्भ ही से गुरु नानक देव जी विचारशील स्वभाव के थे। इसलिये लगभग तीस वर्ष की आयु में वे साधु हो गये और उन्होंने समस्त भारत में अपने विचारों का प्रचार किया और कहते हैं कि वे अरब तक भी गये। अन्तिम आयु में उन्होंने करतारपुर में डेरा जमा लिया और वहीं सत्तर वर्ष की आयु में 1538 ई० में स्वर्ग सिधार गये। उन्हों ने लोगों को ईश्वर के एक होने की शिक्षा दी। वह जात-पात, छूत-छात, मूर्ति पूजा और निरर्थक रीतियों के विरुद्ध थे। उनके शिष्य सिक्ख कहलाने लगे। उनके बाद सिक्खों के नौ गुरु और हुए।

गुरु नानक

दूसरे गुरु **अंगददेव** (Angad Dev) जी ने गुरुमुखी अक्षर प्रचलित किये और उनमें गुरुनानक देव जी का जीवन चरित्र

(जन्म-साखी) लिखा और *लंगर की रीति प्रचलित* की। तीसरे गुरु **अमर दास** (Amar Das) जी थे। उन्होंने सिक्ख धर्म के प्रचार के लिये बहुत से प्रचारक नियुक्त किये और लङ्गर के काम को बहुत उन्नत किया। चौथे गुरु **राम दास** (Ram Das) जी थे, जिन्हों ने अमृतसर का तालाब बनाया और अमृतसर नगर की नींव रखी जो बाद में सिक्खों का तीर्थ और मुख्य स्थान बन गया। पाँचवें गुरु **अर्जुनदेव** (Arjun Dev) जी थे। उन्होंने अमृतसर में हर मन्दिर बनवाया और ग्रन्थ साहिब को संग्रह किया। इस प्रकार सिक्खों के प्रबन्ध में उन्नति होती गई, क्योंकि उस *समय तक उनकी एक लिपि (गुरु-मुखी), एक तीर्थ स्थान (अमृतसर)* और एक पवित्र पुस्तक *(ग्रन्थ साहिब) तैयार हो चुके थे*। 1606 ई० में गुरु अर्जुन देव जी को जहाँगीर के विद्रोही पुत्र खुसरो की सहायता करने के अपराध में और लाहौर के दीवान चन्दूलाल की शत्रुता के कारण अपने प्राण बलिदान करने पड़े। इसलिये सिक्ख मुग़ल साम्राज्य के घोर शत्रु हो गये। छठे **गुरु हर गोबिन्द** (Har Govind) जी पहले गुरु थे जिन्हों ने समय की आवश्यकता के अनुसार सिक्खों को सैनिक शिक्षा दी। जहाँगीर ने किसी कारण अप्रसन्न होकर गुरु हरगोविन्द जी को कुछ समय ग्वालियर के दुर्ग में बन्दी बनाये रखा। जेल से मुक्त होने के बाद उन्होंने मुग़लों के विरुद्ध लड़ाइयाँ लड़ीं और उन्हें सफलता भी प्राप्त हुई। सातवें गुरु **हरराय** (Har Rai) जी थे, आठवें गुरु **हरकिशन** (Har Kishan) जी थे, जिनकी छोटी अवस्था में ही चेचक के रोग के कारण मृत्यु हो गई। नवें गुरु **तेग़बहादुर** (Tegh Bahadur)
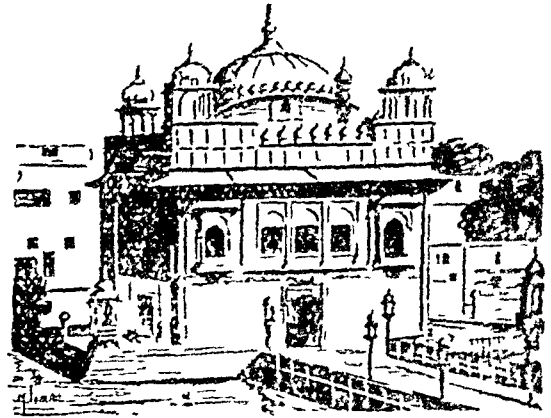
दरबार साहिब, अमृतसर

जी थे। उन्होंने सिक्ख धर्म का पर्याप्त प्रचार किया। वह अधिकतर आनन्दपुर साहिब में रहा करते थे। अन्ततः औरङ्गजेब के आदेश से इनका देहली में वध कर दिया गया।

☞ **गुरु गोविन्द सिंह, 1666–1708**—सिक्खों के दसवें और अन्तिम गुरु गोविन्दसिंह (Gobind Singh) जी थे। उन्होंने तो इस सम्प्रदाय की काया पलट दी। वह 1666 ई० में पटना में उत्पन्न हुये और अपने पिता गुरु तेगबहादुर जी के बलिदान के बाद छोटी सी आयु में ही गद्दी पर बैठे। इसके बाद बीस वर्ष तक वह पहाड़ों में रह कर अपनी शक्ति को दृढ़ करते रहे। गुरु गोविन्दसिंह जी ने सिक्खों को नये सिरे से संगठित किया और सिक्खों के लिये आवश्यक हुआ कि वे अमृतपान

गुरु गोविन्द सिंह जी

करने की रीति का पालन करें और केश, कड़ा, कच्छा, कृपान और कंघा अपने पास रखें। अब वे सिक्ख के स्थान पर सिंह कहलाने लगे और इस दल का नाम 'खालसा' रखा गया। इस प्रकार गुरु गोविन्द सिंह जी ने सिक्खों के धार्मिक दल को योद्धा दल बना दिया। गुरु गोविन्द सिंह जी के जीवन का अन्तिम भाग मुग़लों के साथ युद्ध लड़ने में बीता और इन युद्धों में उनके चारों पुत्र और कई आज्ञाकारी सिक्ख काम आये। परन्तु गुरु जी ने अधीनता स्वीकार न की। 1707 ई० में औरङ्गजेब की मृत्यु हो गई। इसके पश्चात् गुरु जी दक्षिण में गये। 1708 ई० में अबचल नगर (नान्देड़ के स्थान) पर जो दक्षिण में है, गुरु गोविन्द सिंह जी की मृत्यु हो गई। इस स्थान को सिक्ख श्री हुज़ूर साहिब कहते हैं। अपनी मृत्यु से पूर्व उन्होंने एक व्यक्ति बन्दा बैरागी को सिक्खों का नेता नियत किया।

बन्दा बैरागी

बन्दा बैरागी (Banda Bairagi) का जिसे *बन्दा बहादर* भी कहते हैं, मूल नाम लछमण देव था। वह जाति से राजपूत और पुँछ में स्थित *राजौड़ी* नामक स्थान का निवासी था। युवावस्था में ही वह बैरागी हो गया था और गोदावरी नदी के तीर पर रहा करता था। गुरु गोबिन्द सिंह साहिब जब दक्षिण गये, तो उनकी उससे भेंट हुई। उन्हो ने उसे फिर से क्षात्र-धर्म अपनाने का उपदेश दिया और उसे सिक्खों का सैनिक नेता नियुक्त किया। बन्दा बैरागी पंजाब में चला आया और सिक्खों की एक विशाल संख्या एकत्र करके मुग़ल साम्राज्य पर छापा मारने लगा। *सरहिंद प्रदेश को उसने नष्ट भ्रष्ट कर डाला और वहाँ का सूबेदार वज़ीर ख़ां मारा गया।* अन्त में 1716 ई० में फ़र्रूख सय्यर के शासनकाल में बन्दा अपने आठ सौ साथियों सहित पकड़ा गया और उसको तथा उसके साथियों को घोर कष्ट देकर वध कर दिया गया।

सिक्खो की बारह मिसलें (Misals)

बन्दा के वध के बाद सिक्खो का कोई नेता न रहा और पजाब में मुसलमान सूबेदारों ने उनके विरुद्ध कठोरता की नाति धारण की। इसलिये कुछ समय के लिये उन्हें पर्वतो और जंगलों का आश्रय लेना पड़ा, परन्तु उस समय भी सिक्ख अवसर की प्रतीक्षा में थे। इसलिये जब नादिरशाह और अहमद शाह अब्दाली के आक्रमणों के कारण पंजाब में चारों ओर हलचल मच गई, तो सिक्खो ने उस अवसर से लाभ उठाया और वे पर्वतीय और जङ्गली प्रदेशों से निकलकर मैदानी प्रदेशों में आ पहुँचे और छोटे-छोटे जत्थे बना कर शासको से लड़ाइयाँ लड़ने लगे। उन जत्थो को **मिसलें** कहते थे और प्रत्येक जत्थे का एक सरदार या जत्थेदार होता था। उन मिसलो ने पजाब के बहुत से प्रदेश पर अधिकार कर लिया और कई छोटी-छोटी स्वाधीन रियासतें स्थापित कर लीं। ये मिसलें कभी कभी आपस में लड़ती रहती थीं, परन्तु मुसलमानों के मुकाबले में इकट्ठी हो जाती थीं। इन मिसलों में से एक का सरदार

चढ़त सिंह था। उसके पोते महाराजा रणजीत सिंह ने शेष कुछ मिसलों पर विजय पाकर पंजाब में सिक्ख राज्य स्थापित किया जिसका आगे वर्णन किया जायगा।

नोट—बारह मिसलों के नाम ये थे—(१) आहलूवालिया (२) भगी (३) कन्हैया (४) सुकरचकिया (५) रामगढ़िया (६) नकई (७) फुलकियाँ (८) सिंहपुरिया (९) करोड़ सिंहिया (१०) निशानियाँ (११) डल्लेवालिया (१२) शहीदी।

पेशवाओं का उत्थान

RISE OF THE PESHWAS

Q. Who were the Peshwas ? What led to their rise to power ? (P. U. 1923-29)

प्रश्न—*पेशवा कौन थे ? उनका उत्थान किस प्रकार हुआ ?*

पेशवाओं का उत्थान

पेशवा वास्तव में मराठा गवर्नमेंट के प्रधान मन्त्री को कहते हैं, परन्तु शिवाजी के पोते साहू के शासन काल में वे मराठा साम्राज्य के वास्तविक शासक बन गये। इसका कारण यह हुआ कि शिवाजी का पोता साहू चिरकाल तक मुग़लों की कैद में रहने से विलास-प्रिय और निकम्मा हो गया था और उसमें राज्य-प्रबन्ध की योग्यता रत्ती भर न थी, इसलिये उसने शासन-सूत्र 1714 ई० में अपने प्रधान मन्त्री या पेशवा *बालाजी विश्वनाथ* के हाथों में सौंप दिया जिससे पेशवाओं का शासन आरम्भ हो गया। इस वंश में कुल सात पेशवा हुये जिन्होंने 1714 से 1818 ई० तक कोई एक सौ वर्ष राज्य किया। उनकी राजधानी पूना (Poona) थी।

पेशवाओं की वंशावली
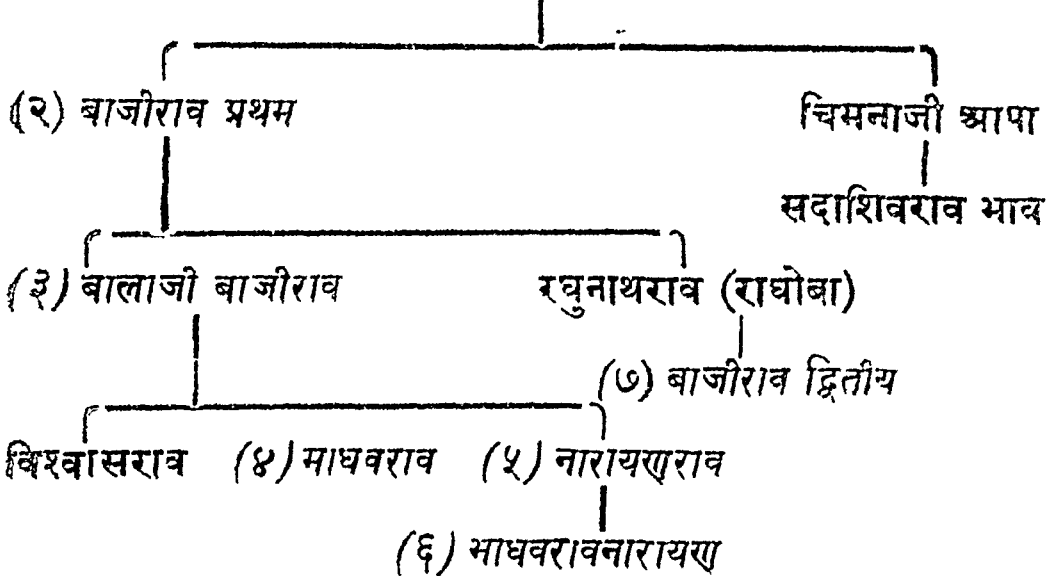
पेशवाओं के नाम

(१) बालाजी विश्वनाथ, (२) बाजीराव प्रथम, (३) बालाजी बाजीराव, (४) माधवराव, (५) नारायणराव, (६) माधवराव नारायण, (७) बाजीराव द्वितीय।

Q. Trace the growth of the Maratha power under the first three Peshwas. (P. U. 1917-32)

प्रश्न—*पहले तीन पेशवाओं के समय मे मराठा शक्ति की उन्नति का वृत्तान्त लिखो।*

बालाजी विश्वनाथ
1714—1720

बालाजी विश्वनाथ पेशवा वंश का संचालक था। वह एक योग्य और बुद्धिमान मनुष्य था। उसने अपने सुधारों से मराठा साम्राज्य का सुप्रबंध किया और पेशवा का पद पैतृक बना दिया। उसके शासन की सबसे प्रसिद्ध घटना सय्यद भाइयो की सहायता करना है। सय्यद भाइयों ने जिन्हें King-Makers भी कहते हैं उसे अपनी सहायता के लिये देहली बुलाया और उसकी सहायता से फ़रूंखसय्यर को राज्य से पृथक् कर दिया। इस सहायता के बदले

में मराठों को दक्षिण के सूबों से चौथ और सरदेश-मुखी उगाहने का अधिकार मिल गया। इस प्रकार पहिले पेशवा के शासन में सारे दक्षिण पर मराठों का अधिकार छा गया। बालाजी विश्वनाथ ने राज्य की आर्थिक दशा का भी सुधार किया। उसने मराठा सरदारों में संगठन पैदा करने केलिये यह निश्चय किया कि मराठा सरदार जो चौथ एकत्र करें उसमें से केवल ¼ कोष में भेजें और शेष ¾ आप ले लें। आरम्भ में तो यह रीति बड़ी सफल रही, परन्तु अन्त में यह मराठो के पतन का एक कारण बनी। 1720 ई० में बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु हो गई।

बाजीराव प्रथम 1720—1740

बालाजी विश्वनाथ के बाद उसका पुत्र **बाजीराव प्रथम** पेशवा बना। वह अपनी वीरता के कारण पेशवाओं में सब से योग्य माना जाता है। उसने मुगल साम्राज्य की कमज़ोरी को शीघ्र ही भॉप लिया। उसके पिता ने दक्षिण में मराठा राज्य को सुदृढ़ बनाने का यत्न किया था और बाजीराव ने उत्तरी भारत में मराठों का प्रभुत्व जमाना चाहा। उसकी नीति यह थी कि मुगल साम्राज्य की राजधानी पर आक्रमण किया जाये। उसने एक बार साहू को कहा था। "हमें मुगल वंश के वृक्ष के तने को काट देना चाहिये और शाखायें अपने आप सूखकर मर जाये गी।" अतः उसके समय में मराठों ने गुजरात और मालवा पर अधिकार कर लिया और बढ़ते हुए देहली तक पहुँच गये। निजामुलमुल्क दक्षिण से सेना लेकर मुगल बादशाह की सहायता के लिये बढ़ा। परन्तु मराठो ने उसे भूपाल के निकट पराजित किया। इस के बाद मराठों ने पुर्तगालियों से सालसेट और बसीन भी छीन लिये। इस प्रकार दूसरे पेशवा के शासनकाल में मराठो का राज्य बहुत बढ़ गया।

मराठा दल (Maratha Confederacy)—बाजीराव के शासन काल में कुछ एक मराठा सरदारों ने जो चौथ आदि उगाहया करते थे बहुत शक्ति पकड़ ली और अपने प्रदेशों में लगभग स्वतन्त्र बन बैठे। (१) राघोजी भोंसला ने नागपुर में (२) पिल्ला जी गायकवाड ने बड़ौदा में (३) मल्हार राव होल्कर ने इन्दौर में (४) और रानाजी सिंधिया ने

ग्वालियर में राज्य स्थापित कर लिये। पेशवा ने इन सब सरदारों को मिलाकर एक दल बनाया जिसे *मराठादल* (Maratha Confederacy) कहते थे। पेशवा उस दल का प्रधान होता था। 1740 ई० में बाजीराव की मृत्यु हो गई।

बालाजी बाजीराव
1740—1761

बाजीराव प्रथम की मृत्यु पर उसका बेटा **बालाजी बाजीराव** पेशवा बना। *उसके शासनकाल मे मराठा शक्ति उन्नति के उच्चतम शिखर पर थी।* भिन्न भिन्न मराठा सरदार चारों ओर नये-नये प्रदेशों पर विजय पा रहे थे। *राघोजी भोसला* ने मध्य भारत को मलियामेट किया और बङ्गाल पर आक्रमण किये, जिनसे विवश हो कर वहाँ के सूबेदार (अलीवर्दी खाँ) ने उड़ीसा का प्रान्त मराठों को सौंप दिया और बंगाल तथा बिहार के भूमिकर पर बारह लाख वार्षिक चौथ देना स्वीकार की। 1758 ई० मे पेशवा के भाई *राघोबा या रघुनाथ राव* ने पंजाब पर अधिकार कर लिया और अहमदशाह अब्दाली के वायसराय को वहाँ से निकाल दिया। अब मराठों का गेरुआ झण्डा अटक के दुर्ग पर बड़े गौरव से लहराने लगा। इसके पश्चात् पेशवा ने मुगलिया सरकार से भी चौथ की माँग स्वीकार करवा ली। *इस प्रकार तीसरे पेशवा के समय मे मराठो का शासन लगभग सारे भारत पर एक कोने से दूसरे कोने तक छा गया और जो प्रदेश उनके अधीन न थे वहा से वे चौथ उगाहाया करते थे।*

परन्तु ठीक उस समय जब कि मराठे लगभग सारे भारत के स्वामी बने हुये थे, अहमदशाह अब्दाली ने उन्हे पानीपत की तीसरी लडाई में बुरी तरह से पराजित किया और मराठा शक्ति को बहुत हानि पहुँचाई। पेशवा इसी शोक के कारण 1761 ई० में मर गया।

☞Q. State concisely the causes, main events and effects of the third battle of Panipat.(Important)

प्रश्न—*पानीपत की तीसरी लडाई के कारणों, प्रसिद्ध घटनाओं और परिणाम का संक्षेप से वर्णन करो।*

यह लड़ाई अफ़गानिस्तान के शासक अहमद शाह अब्दाली और मराठों के मध्य हुई।

पानीपत की तीसरी लड़ाई 1761

कारण—इस लड़ाई का कारण यह था कि पंजाब अफगानिस्तान के बादशाह *अहमदशाह अब्दाली* ने जीत रखा था और यह उसके साम्राज्य का एक प्रान्त था। परन्तु तीसरे पेशवा के शासन-काल में मराठों ने पेशवा के भाई *राघोबा* या रघुनाथ राव के नेतृत्व में पजाब पर 1758 ई० में अधिकार कर लिया और अहमदशाह अब्दाली के वाइसराय को वहाँ से निकाल दिया। इस पर अहमदशाह अब्दाली अफगानिस्तान से एक विशाल सेना के साथ मराठों के विरुद्ध बढा और 1761 ई० में पानीपत के ऐतिहासिक क्षेत्र में एक घोर युद्ध हुआ।

घटनायें—मराठा सेना का सेनापति पेशवा का चचेरा भाई *सदाशिवरावभाव* (भाव साहिब) था और उसका नायब पेशवा का पुत्र *विश्वास राव* था। उनके साथ दूसरे मराठा सरदार सिंधिया, गायकवाड़ होल्कर इत्यादि और भरतपुर का जाट सरदार *सूर्यमल* भी थे। *भाव* निस्सदेह एक बड़ा योग्य व्यक्ति था, परन्तु था बड़ा घमण्डी। उसे कई सरदारों ने जिनमें भरतपुर का जाट सरदार सूर्यमल भी था परामर्श दिया कि छापामार (Guerrilla) रीति से लड़े परन्तु उसने कोई ध्यान न दिया। इस पर सूर्यमल अपनी सेना सहित लौट गया। कुछ समय तो दोनों सेनायें एक दूसरे के सामने डेरे डाले पड़ी रहीं। परन्तु अहमदशाह अब्दाली ने मराठो के आने जाने के मार्ग को पूर्णतया रोक लिया। मराठो की भोजन सामग्री लगभग समाप्त हो गई। इस पर मराठो ने विवश होकर अहमदशाह अब्दाली की सेना पर धावा कर दिया। घमासान युद्ध हुआ, परन्तु मराठे जो खुले मैदान में डट कर लड़ना नहीं जानते थे बुरी तरह हारे। सदाशिव भाव और पेशवा का पुत्र विश्वास राव युद्ध में काम आये तथा अनेक वीर जरनैल और अगणित मराठा सैनिक खेत रहे। सिंधिया की टाँग में घाव आया और वह युद्ध-क्षेत्र से भाग गया। *महाराष्ट्र में ऐसा कोई*

भी घर न होगा जिसका कोई न कोई मनुष्य इस युद्ध में मारा न गया हो। पेशवा इस समाचार को पाकर स्वयं सेना के साथ युद्ध-क्षेत्र को चल पड़ा परन्तु मार्ग से ही लौट आया। उसे एक पत्र द्वारा विदित हुआ कि "*दो मोती टूट गए हैं, सत्ताईस सुवर्ण मुद्रा खो गई हैं और चाँदी तथा तांबे की हानि का तो अनुमान ही नहीं हो सकता।*" पेशवा इस लेख का अर्थ समझ गया और उसे ऐसा शोक हुआ कि वह कुछ समय बीमार रह कर मर गया। इस युद्ध के शीघ्र ही बाद अहमदशाह अपने देश को लौट गया।

परिणाम—(१) इस पराजय से मराठों की शक्ति और प्रभाव की कुछ समय के लिये समाप्ति हो गई तथा उनकी साम्राज्य-स्थापना की आशाओं पर पानी फिर गया।

(२) पठानों को इस विजय से कोई विशेष लाभ न हुआ और वे लड़ाई के बाद शीघ्र ही अपने देश को लौट गये।

(३) *मराठों की शक्ति क्षीण हो जाने से अंग्रेज़ो को अपनी शक्ति बढ़ाने का अवसर हाथ आ गया।*

(४) पंजाब से सिक्खों ने पठानों को निकाल दिया और वहाँ अपना प्रभुत्व जमा लिया।

☞ Q. Why has Panipat been an important battlefield in Indian History ? Briefly describe the three battles of Panipat and give their importance. (Important)

प्रश्न—*पानीपत भारत में क्यों प्रसिद्ध युद्धक्षेत्र रहा है? पानीपत की तीनों लड़ाइयों का संक्षिप्त वर्णन करो और उनका ऐतिहासिक महत्व लिखो।*

पानीपत क्यों प्रसिद्ध क्षेत्र रहा है

देहली चिरकाल तक एक प्रसिद्ध साम्राज्य की राजधानी रही है और देहली पर विजय पाने के लिये देहली के निकट ही किसी स्थान पर युद्ध लड़ा जाना आवश्यक है। पानीपत का मैदान देहली के निकट है और आक्रमणकारी सेनाओं के लिये

देहली पहुँचने के अधिक निकटवर्ती मार्ग में स्थित है। इस लिये यह लड़ाई का प्रसिद्ध क्षेत्र रहा है। यहाँ तीन प्रसिद्ध लड़ाइयाँ हुई हैं।

(१) पानीपत का प्रथम युद्ध—यह युद्ध 1526 ई० में बाबर और इब्राहीम लोधी के मध्य हुआ। इसमें बाबर की विजय हुई और इब्राहीम लोधी मारा गया। इस युद्ध का महत्वपूर्ण परिणाम यह हुआ कि *देहली का साम्राज्य पठानों के हाथों से छिन कर मुग़लो के हाथों में आ गया*, जो उस समय विदेशी आक्रमणकारी थे।

(२) पानीपत का दूसरा युद्ध—1556 ई० में अकबर और हेमू के मध्य हुआ। इसमें हेमू की हार हुई और वह पकड़ा जाकर वध कर दिया गया। इसका मुख्य परिणाम यह हुआ कि *मुग़ल साम्राज्य जो नष्ट हो चुका था फिर स्थापित हो गया*।

३) पानीपत का तीसरा युद्ध—यह युद्ध 1761 ई० में *अहमदशाह अब्दाली और मराठो* के मध्य हुआ। इसमें मराठे बुरी तरह हारे. यह युद्ध पहले दोनों युद्धों से अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे मराठों की शक्ति क्षीण हो गई और अङ्गरेजों को अपने पांव जमाने का *अवसर मिल गया*। यदि इस युद्ध में मराठो की जीत हो जाती तो सम्भव था कि भारत में अङ्गरेजों के पांव न जमते।

अंग्रेजी युग

BRITISH PERIOD

यूरोप की जातियों का आगमन

THE COMING OF THE EUROPEANS

प्राचीन काल से भारत और योरुप के मध्य व्यापारिक सम्बन्ध रहा है। यह व्यापार समुद्र तथा स्थल के मार्गों से हुआ करता था। परन्तु पन्द्रहवीं शताब्दी में जब इन मार्गों पर तुर्कों का अधिपत्य हो गया तो यह व्यापार यूरोप वालों के लिये लगभग बन्द हो गया। इस लिये यूरोपवासियों को यह धुन समाई कि वे भारत में पहुँचने के लिये कोई और मार्ग ढूँढें, जो तुर्कों की लूटमार से सुरक्षित हो। इस मार्ग को ढूढने का श्रेय *वास्को-ड-गामा* को प्राप्त हुआ।

वास्को-ड-गामा (Vasco-da-Gama) पुर्तगाल का एक समुद्री नाविक था।

वास्को-ड-गामा 1498 ई० में वह आशा अंतरीप (Cape of Good Hope) का चक्कर काटकर **कालीकट** की बन्दरगाह पर पहुँचने में सफल हो गया और इस प्रकार एक नये मार्ग का पता चला, जिसे *अन्तरीप मार्ग* (Cape Route) कहते हैं। वास्को-ड-गामा ने कालीकट के हिंदू राजा से जो *जमोरिन* (Zamorin) कहलाता था, पुर्तगालियों के लिये व्यापार करने की स्वीकृति प्राप्त कर ली और अगले वर्ष वापिस लौट गया।

वास्को-ड-गामा

इस मार्ग से सबसे प्रथम *पुर्तगाली* (Portuguese) और इसके पश्चात् उनकी देखा-देखी डच (Dutch) अर्थात् हालैंड निवासी,

अङ्गरेज (English) और फ्रांसीसी (French) व्यापार के अभिप्राय से भारत आ पहुँचे।

Q. Briefly describe the rise and fall of the Portuguese power in India.

प्रश्न—भारत में पुर्तगाली शक्ति के उत्थान और पतन का संक्षिप्त वर्णन करो।

पुर्तगाली (Portuguese)

चूँकि आशा अन्तरीप का मार्ग (Cape Route) पुर्तगालियों ने ढूँढा था, इसलिये यूरोपीय जातियों में सब से पहले व्यापार के लिये पुर्तगाली ही भारत में आये और उन्होंने पश्चिमी तट पर कई व्यापारिक कोठियाँ (कालीकट, कोचीन, कनानौर) स्थापित कर लीं। उन दिनों भारत का व्यापार अधिकतर अरब देश के मुसलमान व्यापारियों के हाथ में था। उन्होंने इन पुर्तगालियों का बड़ा विरोध किया। इसलिये पुर्तगाली भी उनसे बड़ा कठोर व्यवहार करते थे

पुर्तगालियों का प्रथम वाइसराय **फ्रांसिस्को आलमीडा** (Francisco Almeida) था। वह 1505 से 1509 तक यहाँ रहा। उसकी नीति यह थी कि पुर्तगालियों को भारतीय समुद्रों पर अधिकार जमाना चाहिये। उसने अरब के व्यापारियों को बुरी तरह हराया और इस प्रकार भारत का बहुत सारा व्यापार पुर्तगालियों के हाथों में आ गया।

अल्बुकर्क

आलमीडा के बाद **अल्बुकर्क** (Albuquerque) वाइसराय (1509-1515) नियत हुआ। वह पुर्तगालियों का सबसे योग्य वाइसराय था। उसने भारत में पुर्तगाली साम्राज्य स्थापित करने का

विचार किया। अतः उसने 1510 ई० में **गोआ** (Goa) को विजय कर के उसे राजधानी बनाया। इसके पश्चात् उसने कई अन्य स्थानों (मलक्का और हुर्मुज़) पर भी अधिकार कर लिया जिससे भारत सागर पर उनका अधिकार छा गया। उसने गोआ का प्रबन्ध बड़ी योग्यता के साथ किया और शिक्षाप्रसार के लिये विद्यालय खोले और सती-प्रथा को भी बंद करने का प्रयत्न किया परन्तु उसका व्यवहार मुसलमानों के साथ बड़ा कठोर था। 1515 ई० में उसकी मृत्यु हो गई और वह गोआ में दफ़नाया गया।

अल्बुकर्क के बाद भी विजय का यह क्रम चालू रहा और पुर्तगालियों ने कई और स्थान (दियू, दमन, बम्बई, लंका, इत्यादि) भी जीत लिये जिससे भारत के पश्चिमी तट पर उनका प्रभुत्व हो गया। सारी सोलहवीं शताब्दी में भारत सागर तथा भारत के व्यापार पर उनका एक मात्र अधिकार बना रहा। परन्तु उनकी यह शक्ति एक सौ वर्ष तक ही रह सकी और फिर इसका पतन हो गया।

इस पतन के कारण निम्नलिखित थे :—

पतन के कारण

(१) *अत्याचार*—पुर्तगाली अफसर बड़े अभिमानी और अत्याचारी थे। अपनी प्रजा के साथ उन का व्यवहार अच्छा न था। विशेषतया मुसलमानों के साथ वे दुर्व्यवहार करते थे।

(२) *अयोग्य उत्तराधिकारी*—अल्बुकर्क के उत्तराधिकारी अयोग्य थे। वे अपने राज्य का अच्छा प्रबन्ध न कर सके।

(३) *धर्मान्धता*—पुर्तगाली अपनी प्रजा को बलपूर्वक ईसाई बनाते थे और उनके राज्य में धार्मिक स्वतन्त्रता नाम मात्र न थी। इस से लोग उनसे घृणा करने लग गये।

(४) *सामुद्रिक डाके*—ये लोग समुद्री डाकू भी थे और अरब व्यापारियों के जहाजों को लूट लिया करते थे। इसके अतिरिक्त छोटे-छोटे बच्चों को दास बनाकर बेच देते थे।

(५) *विजयनगर का विनाश*—सोलहवीं शताब्दी में विजयनगर

राज्य का विनाश हो गया। इससे भी पुर्तगालियों की शक्ति को हानि पहुँची क्योंकि उस राज्य के साथ पुर्तगालियों का व्यापारिक सम्बन्ध था।

(६) अन्तर्विवाह—पुर्तगालियों ने भारतीय स्त्रियों के साथ विवाह किये। उनका अभिप्राय यह था कि एक ऐसी जाति उत्पन्न की जाय, जो भारतवर्ष के जलवायु को सहन कर सके और साथ ही मातृभूमि (पुर्तगाल) की भक्त हो। परन्तु इन विवाहों की सन्तानों ने न माँ की जाति के और न पिता की जाति के ही गुण ग्रहण किये। वे एक निकृष्ट जाति बन गये।

(७) स्पेन से संयुक्ति—1580 ई० में पुर्तगाल देश स्पेन के साथ मिल गया। इससे पुर्तगाल के छोटे से देश को स्पेन के उन युद्धों में सम्मिलित होना पड़ा जो वह योरुप में लड़ रहा था। इससे पुर्तगाल के साधन और रुपया इन युद्धों में व्यर्थ ही नष्ट हो गये और वह भारत में यथेष्ट सहायता न भेज सका। इस प्रकार *पुर्तगाल का स्पेन के साथ मेल उनकी भारत में शक्ति के पतन का एक बहुत बडा कारण सिद्ध हुआ।*

(८) प्रतिरोधियों का आना—पुर्तगालियों की अवनति का एक और बड़ा कारण यह था कि उनकी देखा-देखी अङ्गरेज तथा डच भारत में आ गये और क्योंकि उनकी जल शक्ति बडी अधिक थी इसलिये पुर्तगाली उनका मुकाबला न कर सके।

आजकल भारत में पुर्तगालियों के पास **गोआ** (Goa), दमन (Daman) और दिऊ (Diu) के प्रदेश हैं, जिनकी जन-संख्या लगभग पाँच लाख है।

Q. Give a brief account of the rise and fall of the Dutch in the East

प्रश्न—*पूर्व में डच लोगों के उत्थान और पतन का सक्षेप से वर्णन करो।*

हालैण्ड निवासियों को डच या वलन्देज कहते हैं। उन्हों ने भी पुर्तगालियों की उन्नति को देखकर 1602 ई० में कम्पनी बना कर पूर्व से व्यापार करना आरम्भ कर दिया और थोड़े ही समय में

डच
Dutch

पुर्तगालियो को भारतीय समुद्रो से निकाल दिया। *परन्तु डच लोगो का वास्तविक उद्देश्य गरम मसाले के द्वीपों* (East Indies) *पर अधिकार करना था क्योंकि उन दिनों गरम मसालों का व्यापार अत्यन्त लाभदायक* था अतः उन्होने जावा द्वीप को जीत कर **बटेविया** (Batavia) नगर को अपने पूर्वीय प्रदेशों की राजधानी बनाया और शीघ्र ही उन द्वीपो में से अपने शत्रुओ (पुर्तगालियों तथा अंग्रेजों) को निकाल भगाने में सफल हो गये।

भारत में भी उन्होंने कई व्यापारिक कोठियाँ स्थापित कर रखी थी और हुगली नदी के तट पर बंगाल में **चिन्सुरा** (Chinsura) उनके व्यापार का बड़ा केन्द्र था। परन्तु वहाँ अङ्गरेज़ों के मुकाबले में उनकी दाल न गली और धीरे-धीरे उनके अधिकृत सभी प्रदेश छिन गये। 1759 ई० में *अंगरेज़ो ने चिन्सुरा भी जीत लिया*। इस प्रकार डच लोगों की शक्ति समाप्त हो गई, परन्तु ईस्ट इण्डीज़ पर उनका अधिपत्य रहा। अब इन टापुओ को स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई है और इन्हे Indonesia कहते हैं।

Q. Briefly describe the growth of the English East-India Company till the end of the seventeenth century.

प्रश्न—*सत्रहवी शताब्दी के अन्त तक अंगरेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी के उत्थान का संक्षिप्त वर्णन करो।*

अङ्गरेज़ी ईस्ट इंडिया कम्पनी की उन्नति

1588 ई० में इंगलैंड ने स्पेन के सैनिक बेड़े को बुरी तरह हराया था, जिससे अङ्गरेज़ों की सामुद्रिक शक्ति बहुत बढ़ गई और उन्होने भी पूर्वी देशों के साथ आशा अन्तरीप के मार्ग से व्यापार करने का विचार किया। इसलिये 1600 ई० में लन्दन के थोड़े से व्यापारियों ने मिलकर अपनी रानी एलिज़बेथ से आज्ञा प्राप्त करके अङ्गरेज़ी **ईस्ट इंडिया कम्पनी** स्थापित की।

आरम्भ से इस कम्पनी ने गरम मसाले के द्वीपों पर अधिकार

जमाना चाहा, परन्तु वहाँ डच लोगों के मुकाबले में उनकी कोई चाल सफल न हुई। इसलिए विवश होकर उन्हे भारत की ओर मुँह करना पड़ा, परन्तु वहाँ पुर्तगालियों ने उनका घोर विरोध किया।

1608 ई० में *कप्तान हाकिन्स* (Captain Hawkins) इंगलैण्ड के के बादशाह की ओर से जहाँगीर के दरबार मे आया और उसने सूरत में व्यापारिक कोठी स्थापित करने की आज्ञा प्राप्त की, परन्तु पुर्तगालियो के विरोध के कारण यह आज्ञा रद्द हो गई। 1612 ई० में अङ्गरेजो ने पुर्तगालियों को सूरत के निकट (*सवाली के जल-युद्ध मे*) बुरी तरह हराया और उनकी शक्ति का नाश कर दिया।

1615 ई० में *सर टामस रो* (Sir Thomas Roe) इगलैण्ड राजा जेम्स प्रथम (James I) का दूत बनकर जहाँगीर के दरबार में आया। वह बडा योग्य और चतुर पुरुप था। वह लगभग तीन वर्ष यहाँ रहा और उसने कम्पनी के लिये बहुत से व्यापार-सम्बन्धी अधिकार प्राप्त किये। सूरत अंगरेजी व्यापार का केन्द्र बन गया। कम्पनी ने कई और कोठियाँ भी स्थापित कर लीं।

1640 ई० में कम्पनी ने पूर्वी तट पर थोड़ी सी भूमि लेकर मद्रास (Madras) नगर की नींव डाली और वहाँ *सेन्ट जार्ज* (St George) नाम का दुर्ग बनवाया। *कुछ समय पश्चात् यह नगर पूर्वी तट पर अगंरेजों का प्रधान केन्द्र बन गया।*

1650 ई० में कम्पनी के एक डाक्टर *बाटन* (Dr. Boughton) ने जो कुछ वर्षों से बगाल के मुगल सूबेदार के पास रह रहा था कम्पनी के लिये बङ्गाल में महसूल दिये बिना व्यापार करने की आज्ञा प्राप्त की. इसलिये हुगली और कई स्थानो पर अङ्गरेजों ने व्यापारी कोठियाँ स्थापित कर लीं।

1661 ई० में इङ्गलैण्ड के *राजा चार्ल्स द्वितीय* (Charles II) ने कम्पनी को अपना सिक्का चलाने, अपनी रक्षा के लिये दुर्ग बनाने, पूर्व में रहने वाले अङ्गरेजों पर अपना राज्य करने और आवश्यकता के समय लड़ाई लड़ने आदि के भी अधिकार दे दिये।

1668 ई० में चार्ल्स द्वितीय ने **बंबई** (Bombay) का नगर जो उसे अपने विवाह में पुर्तगाल के राजा की ओर से दहेज में मिला था १० पाउन्ड वार्षिक किराये पर कम्पनी को दे दिया। *समय पाकर पश्चिमी तट पर बंबई नगर सूरत के स्थान अङ्गरेजों का सब से बड़ा केन्द्र बन गया।*

1690 ई० में अङ्गरेज़ों ने हुगली नदी के तट पर **कलकत्ता** (Calcutta) नगर की नींव डाली और लगभग ६ वर्ष के बाद वहाँ अपने बादशाह के नाम पर *फ़ोर्ट विलियम* (Fort William) नामक दुर्ग बनवाया।

1698 ई० में इङ्गलैंड के कुछ व्यापारियों ने *एक नई कम्पनी* बना ली। ये दोनो कम्पनियाँ कुछ समय तक तो एक दूसरे का खूब प्रतिरोध करती रहीं, परन्तु अन्त में **1708** ई० में परस्पर मिलकर एक हो गई। **1717** ई० में बादशाह फर्रूख़ सय्यर ने इस कम्पनी को *बङ्गाल में बिना महसूल दिये अपना सागरी व्यापार करने की आज्ञा प्रदान की*। इस के बाद धीरे-धीरे इस संयुक्त कम्पनी ने भारत में अङ्गरेज़ी राज्य की नींव डाली। **1857** ई० में विद्रोह के बाद *ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन की समाप्ति कर दी गई और राज अङ्गरेजी सरकार ने सम्भाल लिया।*

Q. Write a short note on the French in India.

प्रश्न—*भारत में फ्रांसीसी ईस्ट इन्डिया कम्पनी का वर्णन करो।*

फ्रांसीसी
(French)

दूसरे देशों की देखा देखी फ्रांसीसियो ने भी 1664 ई० में एक व्यापारिक कम्पनी स्थापित की और तुरन्त ही *सूरत और मसोलीपट्टम* (Masaulipattam) में व्यापारिक कोठियाँ खोल लीं। 1674 ई० में उन्होने **पान्डीचेरी** (Pondicherry) की नींव डाली और उसे अपनी राजधानी बनाया। इसके बाद धीरे धीरे उन्हों ने अन्य कई स्थानों पर भी अधिकार कर लिया। बंगाल में उन का प्रसिद्ध स्थान **चन्द्रनगर** था।

1735 ई० से 1741 ई० तक *ड्यूमा* (Dumas) फ्रांस के अधिकृत

स्थानो का गवर्नर रहा और उसने फ्रांसीसी शक्ति को भली प्रकार उन्नत किया। उसका उत्तराधिकारी डुप्ले (Dupleix) एक बडा चतुर, दूरदर्शी और विचारशील व्यक्ति था। उसने व्यापार को उन्नत करने के स्थान भारत में फ्रांसीसी राज्य स्थापित करना चाहा। अङ्गरेज़ो ने उसका विरोध किया और उन दोनो में युद्ध छिड़ गया, जिसमे अन्त में अङ्गरेज़ो की सफलता हुई और फ्रांसीसी प्रभाव की समाप्ति हो गई। परन्तु निम्नलिखित चार स्थान इन दिनों भी फ्रांसीसियों के अधिकार में है :—

(१) माहे (Mahe) *(२) कारीकल* (Karikal) *(३) पाँडीचेरी* (Pondicherry) *(४) यनाओं* (Yanaon)।

अंग्रेज़ों और फ्राँसीसियों में पारस्परिक युद्ध

THE STRUGGLE BETWEEN THE ENGLISH AND THE FRENCH

☞Q Give a brief account of the struggle between the English and the French for empire in India in the eighteenth century (Important)

प्रश्न—*अठारवीं शताब्दी मे अङ्गरेजो और फ्रांसीसियों के मध्य भारत मे साम्राज्य स्थापित करने के लिये जो युद्ध हुए उनका संक्षिप्त वर्णन करो।*

युद्धों के कारण

अंग्रेजो और फ्रांसीसी कम्पनियाँ भारत के साथ व्यापार करने के विचार से स्थापित की गई थीं, परन्तु जब नादिरशाह के आक्रमण के पश्चात् उन्होंने मुगल साम्राज्य की निर्बलता का भाँपा तो दोनों दलों ने अपना अपना साम्राज्य स्थापित करना चाहा। इस चेष्टा का परिणाम यह हुआ कि उनके मध्य युद्ध छिड़ गया जो कोई बीस वर्ष चलता रहा। यह युद्ध करनाटक में लड़ा गया क्योंकि वहाँ दोनो कम्पनियो के पास कई अधिकृत स्थान थे। अन्त में इस युद्ध में अंग्रेजो की विजय हुई। युद्ध का यह क्रम तीन भागों में बाँटा जा सकता है, जिन्हें **कर्नाटक के तीन युद्ध** कहते हैं।

कारण—1740 ई० में योरुप में अंग्रेज़ों और फ्रांसीसियो के मध्य (आस्ट्रिया का सिंहासन सम्बन्धी) युद्ध छिड़ गया, जिस कारण भारत में भी इन दोनों कम्पनियों में लड़ाई छिड़ पड़ी।

कर्नाटक का पहला युद्ध 1746—1748

घटनायें—1746 ई० में फ्रांसीसी बेड़े ने **मद्रास** जीत लिया और उसके बाद फ्रांसीसियों ने *फ़ोर्ट सेन्ट डेविड* (Fort St. David) को भी जो पांडीचेरी के दक्षिण में एक अंग्रेज़ी स्थान था लेने का यत्न किया, किन्तु सफलता न हुई। इतने में इंगलैण्ड से सहायता आ पहुँची, जिस से अंग्रेज़ो का साहस बढ़ गया, और उन्होंने *पान्डीचेरी* पर आक्रमण किया, परन्तु भारी हानि उठाकर पीछे हटना पड़ा।

परिणाम—1748 ई० में यूरोप में *एक्स-ला शापैल* (Aix-la-Chapelle) के स्थान पर सन्धि हो गई, जिससे भारत में भी युद्ध बन्द हो गया और मद्रास फिर अंग्रेज़ों को मिल गया। इस प्रकार दोनो पक्षों की परिस्थिति लगभग समान रही।

अभी पहिले युद्ध को समाप्त हुये एक वर्ष ही हुआ था कि दूसरा युद्ध आरम्भ हो गया।

कारण—1748 ई० में हैदराबाद के शासक *निजामुलमुल्क आसफ़-जाह* की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद उसके पुत्र *नासिर जंग* और उसके दुहते *मुज-फ़्फ़र जंग* में गद्दी पाने के लिये झगड़ा उठ खड़ा हुआ। ठीक उसी समय कर्नाटक के सिंहासन के लिये भी झगड़ा छिड़ गया। *चन्दा साहिब* जो कर्नाटक के भूतपूर्व शासक का जामाता था, कर्नाटक के शासक *अनवरुद्दीन* के मुकाबले में सिंहासन का अधिकारी बन बैठा। *चन्दा साहिब* और *मुज़फ़्फ़रजंग* आपस में मिल गये और उन्होंने डूप्ले से सहायता माँगी। डूप्ले ने ऐसी दशा से लाभ उठाना चाहा और उसने उनकी सहायता करना स्वीकार किया।

कर्नाटक का दूसरा युद्ध 1749—1755

घटनायें—1749 ई० में मुज़फ्फर जंग, चन्दा साहिब और फ्रांसीसियों ने मिल कर अनवरुद्दीन को अम्बर (Ambur) के स्थान पर हराया। अनवरुद्दीन लड़ाई में मारा गया और उसका पुत्र मुहम्मद अली *त्रिचनापली* को भाग गया जहाँ उसे चन्दा साहिब ने घेर लिया। चन्दा साहिब फ्रांसीसियों की सहायता से शेष कर्नाटक का नवाब हो गया और उसने कुछ उपजाऊ प्रदेश फ्रांसीसियो को दे दिया।

फ्राँसीसियो के प्रभाव को इस प्रकार बढ़ते देखकर अंग्रेज़ो ने विरोधी पक्ष अर्थात् *नासिर जंग* और *मुहम्मद अली* को सहायता देने का निश्चय किया परन्तु हैदराबाद के सिंहासन के युद्ध में भी फ्रांसीसियो को ही सफलता हुई। युद्ध में *नासिर जङ्ग* और *मुजफ्फ़र जङ्ग* दोनों मारे गये और फ्राँसीसी सेनापति बुसे (Bussy) ने नासिर जंग के एक भाई *सलाबत जंग* को निजाम बना दिया और स्वयं उसकी रक्षा के लिये हैदराबाद में रहा। नये निज़ाम ने *उत्तरी सरकार* (Northern Sircars) का प्रदेश फ्रांसीसियो को दे दिया।

इस समय सारे दक्षिण मे फ्राँसीसी प्रभाव उन्नति पर था और अङ्गरेजो की अवस्था बड़ी दुर्बल थी परन्तु **क्लाईव** (Clive) ने जो कम्पनी की नौकरी में एक कमांडर था, और जिसके भाग्य में भारत में अंग्रेज़ी राज्य का बानी बनना लिखा था, एक युक्ति से युद्ध की दशा सर्वथा बदल दी और डूप्ले के मनोरथ मिट्टी में मिला दिये। उस समय चन्दा साहिब और फ्राँसीसियों ने मुहम्मद अली को त्रिचनापली में घेर रखा था और उसके बचाव की कोई सम्भावना नहीं दीखती थी। क्लाईव ने उस समय पर असाधारण दूरदर्शिता का प्रमाण दिया। चन्दा साहिब का ध्यान त्रिचनापली के घेरे से हटाने के लिये उसने पांच सौ सैनिकों की एक छोटी सी सेना साथ लेकर चन्दा साहिब की राजधानी **अरकाट** (Arcot) पर (1751 ई० में) अधिकार कर लिया। जब चन्दा साहिब को इस बात की सूचना मिली तो उसने एक सेना भेजी जिसने अरकाट के चारों ओर घेरा डाल दिया। क्लाईव ५३ दिन तक डटा रहा। इतने में अंग्रेज़ी सेना आ पहुँची और चन्दा

साहिब की भेजी हुई सेना को घेरा उठाना पड़ा। क्लाईव ने आगे बढ़ कर *त्रिचनापली* के स्थान पर चन्दा साहिब को हरा दिया। अन्त में चन्दा *साहिब* भाग निकला और उसका वध हो गया। अंग्रेज़ों ने *मुहम्मद अली* को कर्नाटक का नवाब बना दिया। इस पराजय के पश्चात् फ्रांसीसी सरकार ने डूप्ले को वापिस बुला लिया और भारत में फ्रांसीसी राज्य स्थापित करने की सारी आशाओं पर पानी फिर गया। डूप्ले के उत्तराधिकारी ने आते ही अंग्रेज़ो से सन्धि कर ली।

परिणाम—1755 ई० में *पांडीचेरी के सन्धिपत्र* के आधार पर दोनो कम्पनियों में सन्धि हो गई। दोनों पक्षों ने देशी शासकों के झगड़ों में हस्ताक्षेप करना बन्द कर दिया। मुहम्मद अली को कर्नाटक का नवाब मान लिया गया। *इस सन्धि से अंग्रेज़ो की शक्ति बढ़ गई।*

अभी इस युद्ध को समाप्त हुये दो वर्ष हुये थे कि तीसरा युद्ध आरम्भ हो गया।

कर्नाटक का तीसरा युद्ध 1758—63

कारण—1756 ई० में यूरोप में अंग्रेज़ो और फ्रांसीसियों के मध्य युद्ध छिड़ गया, जो सप्तवर्षीय युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। इस पर भारत में भी दोनों विरोधी-दलों में युद्ध छिड़ गया।

घटनायें—फ्रांसीसी सरकार ने *काउंट-ड-लाली* (Count-de-Lally) को गवर्नर और कमांडर-इन-चीफ़ बना कर भेजा। वह 1758 ई० में भारत पहुँचा। परन्तु उस समय तक अंग्रेज़ बंगाल विजय कर चुके थे और उनकी शक्ति बहुत बढ़ गई थी। लाली ने आते ही *फ़ोर्ट सेंट डेविड* पर अधिकार कर लिया और फिर मद्रास पर अधिकार पाने के लिये उस ने फ्रांसीसी सेनापति बुसे (Bussy) को हैदराबाद से बुला भेजा। *यह उसकी बड़ी भारी भूल सिद्ध हुई*, क्योंकि बुसे की अनुपस्थिति में अंग्रेज़ों ने उत्तरी सरकार पर विजय पा ली और *निज़ाम सलावत जङ्ग* अंग्रेज़ों से मिल गया। इस प्रकार हैदराबाद में *फ्रांसीसी प्रभाव सर्वथा नष्ट हो गया।*

अब लाली और बुसे ने मिलकर *मद्रास* पर आक्रमण किया परन्तु

सफलता न हुई। 1760 ई० में अंग्रेज़ी सेनापति सर आयर कूट (Sir Eyer Coote) ने फ्रांसीसियों को वंदिवाश (Wandiwash) के स्थान पर बुरी तरह हराया। इसके दूसरे वर्ष अर्थात 1761 ई० में *अङ्गरेजों ने पांडीचेरी (Pondicherry) पर अधिकार कर लिया और भारत से फ्रांसीसी प्रभुत्व सर्वथा लोप हो गया।*

परिणाम—1763 ई० में पेरिस (Paris) के संधि-पत्र के आधार पर युद्ध बन्द हो गया। पांडीचेरी तथा कई अन्य विजित प्रदेश फ्रांसीसियों को लौटा दिये गये परन्तु उसके बाद फ्रांसीसी भारत में अंग्रेज़ो का मुकाबला न कर सके। वे केवल व्यापार के लिये यहाँ रहने लगे। अब *अंग्रेजों के लिये केवल भारतीय शक्तियों से मुकाबला करना शेष रह गया।*

☞Q. Account for the success of the English and failure of the French in their struggle for supremacy in the Deccan (P. U. 1932-46-54) (Important)

प्रश्न—*अङ्गरेजों और फ्रांसीसियों के युद्ध में अङ्गरेजों की सफलता और फ्रांसीसियों की असफलता के कारण लिखो।*

अंग्रेज़ों और फ्रांसीसियों की पारस्परिक लड़ाइयों में अंग्रेज़ो की सफलता और फ्रांसीसियों की असफलता के मुख्य कारण निम्नलिखित थे:—

अंग्रेज़ों की सफलता के कारण

(१) अच्छी आर्थिक दशा—अंग्रेज़ी कम्पनी व्यापार के कारण धन से भरपूर हो गई थी इस लिये वह युद्ध को सफलतापूर्वक निभा सकी। इसके प्रतिकूल फ्रांसीसी कम्पनी की आर्थिक दशा बहुत शिथिल थी जिससे वह उचित प्रबन्ध न कर सकी। रुपये के अभाव से डूप्ले और लाली की आशायें निष्फल गई।

(२) गवर्नमेंट की सहायता—अंग्रेज़ी कम्पनी यद्यपि एक प्राइवेट कम्पनी थी, तो भी अंग्रेज़ी गवर्नमेंट और अंग्रेज़ी जाति उसकी सहायक थी। इसके प्रतिकूल फ्रांसीसी कम्पनी यद्यपि फ्रांसीसी राज्य का एक विभाग था तो भी फ्रांसीसी शासन उसकी उचित सहायता न करता था, वरन कभी-कभी अनुचित हस्ताक्षेप किया करता था।

(३) **व्यापारिक उद्देश्य**—अंग्रेज क्षण भर के लिये इस बात को नहीं भूले कि उनका उद्देश्य व्यापारिक उन्नति भी है। इसलिये युद्ध काल में भी वे व्यापार द्वारा लाभ उठाते रहे। इसके प्रतिकूल फ्रांसीसी कम्पनी के कर्मचारी व्यापार की ओर ध्यान न देकर व्यर्थ युद्धों में धन नष्ट करते रहे।

(४) **अच्छे व्यापारी स्थान**—अंग्रेजी कम्पनी की व्यापारिक कोठियाँ फ्रॉसीसी कोठियों से अधिक अच्छी थीं। बम्बई माहे की अपेक्षा, *मद्रास* पांडीचेरी की अपेक्षा, और *कलकत्ता* चन्द्रनगर की अपेक्षा अच्छे व्यापारिक स्थान थे।

(५) **जल-शक्ति**—*अंगरेजो की सफलता का सबसे मुख्य कारण उनकी जलशक्ति थी।* समस्त समुद्री मार्ग उनके अधिकार में थे, जिन से वे सेनाये तथा सामग्री बड़ी सुगमता से भारत में पहुँचा सकते थे, परन्तु फ्रॉसीसी ऐसा नहीं कर सकते थे। *फ्रॉसीसियो के पास भारत में कोई अच्छा समुद्री बेड़ा न था।*

(६) **बंगाल विजय**—बंगाल का उपजाऊ प्रदेश 1757 ई० में अंग्रेजों के अधिकार में आ गया था। वहाँ से उन्हे रुपया और सैनिक बड़ी सुगमता से मिल जाते थे। इसके प्रतिकूल फ्रॉसीसियों के पास कोई उपयुक्त केन्द्र न था। उनका केन्द्र *मारीशस* (Mauritius) भारत से दूर था।

(७) **अंग्रेजों में सहयोग**—अंग्रेज अधिकारी अधिक योग्य थे। उनकी आपस में बड़ी एकता थी। वे प्रत्येक कार्य मिल कर करते थे। इसके प्रतिकूल फ्रॉसीसी अधिकारी आपस में ईर्ष्या-द्वेष रखते थे, वे झगड़ते रहते थे और कठिनाई पड़ने पर एक दूसरे की सहायता न करते थे। *कई अवसरो पर फ्रॉसीसी जल सेना ने स्थली सेनाओं का साथ न दिया।*

(८) **डूप्ले की पदच्युति**—फ्रॉसीसी शासन ने डूप्ले को ऐसे समय पदच्युत कर दिया जब उसकी भारत में उपस्थिति अत्यन्त आवश्यक थी। भारत में फ्रॉसीसी शासन को दृढ़ नींव पर स्थापन करने के लिये उसकी सारी आशायें व्यर्थ गई।

(६) लाली की भूल—लाली का बुसे को हैदराबाद से बुलाना एक भारी राजनैतिक भूल सिद्ध हुई क्योंकि इससे दक्षिण में फ्राँसीसी प्रभाव की समाप्ति हो गई। अंग्रेज़ो ने निज़ाम को अपनी ओर कर लिया और कर्नल फोर्ड (Col. Forde) ने उत्तरी सरकार का प्रदेश विजय कर लिया। इसके अतिरिक्त लाली बड़ा घमण्डी था।

(१०) यूरोपीय अवस्था--उन दिनो फ्राँस यूरोप के आधे देशों के साथ युद्ध में लगा हुआ था और उसके साधन उन युद्धों मे छिन्न-भिन्न हो गये थे। परन्तु इङ्गलैंड उन युद्धों से पृथक् रहा था और उसके मनुष्य और साधन सुरक्षित थे।

(११) पिट की नीति—अंग्रेज़ो की सफलता का एक मुख्य कारण इङ्गलैंड के युद्ध-मन्त्री (Pitt) की योग्यता थी। उसने युद्ध का प्रबन्ध इस विधि से किया कि फ्राँस का पूर्ण ध्यान यूरोप की घटनाओं में लगा रहा और उसके लिये भारत में सहायता भेजना कठिन हो गया।

Q. Briefly describe the career of Dupleix in India and account for his failure to set up a French empire. (P.U 1937)

प्रश्न—डूप्ले पर सक्षिप्त नोट लिखो और बताओ कि वह भारत मे फ्राँसीसी साम्राज्य क्यों स्थापित न कर सका।

डूप्ले भारत में फ्राँसीसियों का योग्यतम गवर्नर जनरल था। वह पहले पहल चन्द्रनगर का गवर्नर नियुक्त होकर भारत में आया। 1742 ई० में वह भारत में फ्राँसीसी प्रदेशों का गवर्नर जनरल बना दिया गया। इस पद पर वह १३ वर्ष रहा। *उसके जीवन का मुख्य उद्देश्य यह था कि वह भारत से अंगरेज़ों को निकाल कर यहाँ विशाल फ्राँसीसी साम्राज्य स्थापित*

डूप्ले
Dupleix

करे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये उसने दो काम किये। एक तो भारतीय सैनिकों को भर्ती करके यूरोपीय ढंग से कवायद सिखाना आरम्भ किया। दूसरे, देशी रियासतों के झगड़े में हस्तक्षेप करके फ्राँसीसी प्रभाव बढ़ाना चाहा।

डूप्ले को अपने उद्देश्य में कुछ समय के लिये तो आशा से बढ़कर सफलता हुई और अर्काट के घेरे तक उसने समस्त दक्षिणी भारत में फ्राँसीसी प्रभुत्व को पूर्ण रूप से जमा दिया। परन्तु क्लाईव के समय पर युद्ध में आ जाने से उसकी आशाओं पर पानी फिर गया और उसे अपने उद्देश्य में असफलता हुई। इस असफलता के बाद 1754 ई० में डूप्ले वापस फ्रांस बुला लिया गया जहाँ उसका बड़ा खेद-जनक अन्त हुआ और दस वर्ष के बाद भयानक निर्धनता और निराश्रयता में उस की मृत्यु हो गई।

डूप्ले निस्सन्देह एक विचारशील, तीव्र-बुद्धि और अपने समय का योग्यतम फ्राँसीसी नीतिज्ञ था। वह सच्चा देश भक्त था। उसने अपनी जाति के गौरव को बढ़ाने के लिये अपना यौवन, अपना धन और अपना जीवन आहुति कर दिया, परन्तु इसमें वह असफल रहा। यदि वह अपने उद्देश्य में सफल हो जाता तो संभवतः भारतवर्ष में अंग्रेज़ी राज्य के स्थान पर फ्राँसीसी राज्य स्थापित होता।

असफलता के कारण—डूप्ले की असफलता के बड़े बड़े कारण निम्नलिखित थे:—

(१) फ्राँस की सरकार ने डूप्ले की समय पर सहायता न की और वह अपनी सेना के लिये पर्याप्त धन राशि न ले सका।

(२) डूप्ले के अधीन फ्राँसीसी कर्मचारियों में एकता न थी, वे एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या द्वेष रखते थे।

(३) डूप्ले स्वयं साहसी योद्धा न था और उस में कुछ अंश तक अभिमान भी था।

(४) डूप्ले को अपनी सफलता का इतना अधिक विश्वास था कि उसने कभी अपनी हार का विचार ही न किया था।

(५) परन्तु डूप्ले की असफलता का मुख्य कारण यह था कि अंगरेज़ों की जलशक्ति फ्राँसीसियों की जलशक्ति से अधिक थी।

बंगाल विजय

(CONQUEST OF BENGAL)

बंगाल विजय — बंगाल वास्तव में 1757 ई० में प्लासी की लड़ाई से अंग्रेजी राज्य में सम्मिलित हुआ और जो थोड़ी बहुत कमी रह गई थी वह बक्सर की लड़ाई ने पूरी कर दी। बंगाल विजय का यश क्लाईव को ही है।

बङ्गाल-प्रान्त जिसमें उन दिनों वर्तमान बिहार और उड़ीसा भी सम्मिलित थे मुगल सम्राट् *मुहम्मद शाह रंगीले* के समय में **अलीवर्दी खाँ** के अधीन मुगल साम्राज्य से स्वतन्त्र हो गया था। इसकी राजधानी मुर्शिदाबाद (Murshidabad) थी। 1756 ई० में अलीवर्दी खाँ का दोहता *सिराजुद्दौला* (Siraj-ud-Daula) जो एक नवयुवक था, बङ्गाल का नवाब बना। राजगद्दी पर बैठते ही उसका अंग्रेजों से झगड़ा हो गया और अगले ही वर्ष प्लासी के स्थान पर उन में लड़ाई हुई जिस में सिराजुद्दौला की हार हुई और बङ्गाल पर अंग्रेजी प्रभुत्व स्थापित हो गया।

सिराजुद्दौला

☞ Q. Give the causes, events and results of the Battle of Plassey. (P U. 1942-51) (V. Important)

प्रश्न—*प्लासी की लड़ाई के कारण, घटनायें तथा परिणाम लिखो।*

Battle of Plassey — यह लड़ाई 1757 ई० में बंगाल के नवाब *सिराजुद्दौला* और अंग्रेजों के बीच प्लासी के स्थान पर हुई। इसके कारण निम्नलिखित थे :—

कारण—*(1) नवाब का कलकत्ता पर आधिपत्य*—1756 ई० में सिराजुद्दौला बङ्गाल का नवाब बना। सिंहासनारूढ़ होते ही उसका अंग्रेजों से झगड़ा हो गया, जिसका एक कारण यह था कि उन दिनों अंग्रेज फ्रांसीसियों के साथ युद्ध छिड़ जाने के

भय से कलकत्ता में अपने किले (Fort William) की मरम्मत करवा रहे थे। सराजुद्दौला ने उन्हें रोका परन्तु वे न माने। दूसरे, उन्होने बंगाल के एक धनाढ्य व्यक्ति *किशनदास* को जिससे नवाब अप्रसन्न था, अपने यहाँ आश्रय दिया और नवाब के कहने पर भी उसे उस के समर्पण न किया। तीसरे, अंग्रेज़ अपने *व्यापारिक अधिकारों* का अनुचित प्रयोग कर रहे थे। इन कारणों से नवाब को बहुत क्रोध आया। उसने बहुत बड़ी सेना के साथ अंग्रेज़ों के नगर कलकत्ता पर चढ़ाई कर दी और उसे विजय कर लिया।*

(२) अंग्रेजों का कलकत्ता वापिस लेना—कलकत्ते पर नवाब का आधिपत्य हो जाने का समाचार जब मद्रास पहुँचा तो क्लाईव जो उन्हीं दिनों इंगलैंड से लौट कर आया था तथा जल-सेनापति *वाटसन* (Admiral Watson) सेना लेकर कलकत्ता पहुँचे और जाते ही कलकत्ता जीत लिया। इस पर नवाब ने घबरा कर सन्धि कर ली और कम्पनी के सभी व्यापारिक अधिकार लौटा दिये तथा हानिपूर्ति की प्रतिज्ञा की।

(३) चन्द्रनगर पर अधिकार—क्लाईव को सिराजुद्दौला पर संदेह था। उसका विचार था कि वह अंग्रेज़ों के विरुद्ध चन्द्रनगर के फ्राँसीसियों से मिल जायगा। अतः क्लाईव ने चन्द्रनगर पर धावा बोल कर उस पर अधिकार कर लिया।

(४) मीरजाफ़र से साजबाज—क्लाईव ने अब सिराजुद्दौला की नवाबी का अन्त कर देना चाहा और समय भी बड़ा अच्छा था। नवाब के कुछ मन्त्री तथा सरदार उसके विरुद्ध हो गये हुये थे और वे *मीरजाफ़र* को जो सिराजुद्दौला की सेनाओं का प्रधान सेनापति था, नवाब बनाना

---

*कुछ इतिहासज्ञ कहते हैं कि कलकत्ते मे १४६ अङ्गरेज बन्दियों को फोर्ट विलियम की एक तङ्ग और अँधेरी कोठरी में बन्द कर दिया गया। जून का महीना था और गर्मी कठिन थी। दूसरे दिन जब द्वार खोला गया तो उनमे से केवल २३ व्यक्ति जीवित निकले। इस दुर्घटना को ब्लैक होल काण्ड (Black Hole Tragedy) कहते हैं। परन्तु यह घटना झूठी प्रतीत होती है और ऐसा प्रतीत होता है कि वह अङ्गरेज़ों को उभारने के लिये घड़ी गई थी।

चाहते थे। कलकत्ता के एक व्यापारी अमींचंद द्वारा क्लाईव भी इस षड्यन्त्र में सम्मिलित हो गया। जब सारी बातचीत पूर्ण रूप से निश्चित हो गई तो अमीचन्द ने धमकाना आरम्भ कर दिया कि यदि उसे तीस लाख रुपया देने की प्रतिज्ञा न की गई तो वह सारा भेद खोल देगा। तब क्लाईव ने धोखे से काम लिया। प्रतिज्ञा-पत्र की दो प्रतियाँ तैयार कीं, एक असली दूसरी नकली। असली प्रतिज्ञा-पत्र में माँगी गई रकम का संकेत मात्र भी न था परन्तु नकली में रुपया दिये जाने की शर्त लिख दी गई और उसपर वाटसन के जाली हस्ताक्षर भी कर दिये गए। इस पर अमींचन्द का मुँह बंद कर दिया गया।

(५) तत्कालिक कारण—मीर जाफर को बंगाल का गवर्नर बनाने और सिराजुद्दौला को सिंहासन से उतारने का षड्यन्त्र तैयार हो गया तो क्लाईव ने सिराजुद्दौला को एक पत्र लिखा जिसमें उस पर पहले सन्धिपत्र के विरुद्ध फ्राँसीसियों के साथ गुप्त रूप से जोड़ तोड़ करने का दोष लगाया। इस पत्र का उत्तर लिये बिना ही क्लाईव तीन सहस्र सैनिकों के साथ नवाब के विरुद्ध बढ़ा और *प्लासी* (Plassey) के स्थान पर पहुँचा जहाँ नवाब पचास सहस्र पैदल सेना, अठारह सहस्र घुड़-सवारों तथा कुछ फ्राँसीसी सैनिकों के साथ पहले ही डेरा डाले हुए था।

घटनायें—23 जून 1757 ई० को दोपहर के समय प्लासी की प्रसिद्ध लड़ाई लड़ी गई। दोपहर के पश्चात् अंग्रेज़ी सेना ने धावा बोल दिया। थोड़े से फ्रासीसियों ने जो नवाब की सेना में थे अङ्गरेज़ों का मुकाबला किया, परन्तु हार खाई। देश द्रोही *मीर जाफ़र* ने लड़ाई में कोई भाग न लिया परन्तु पृथक् खड़ा रहा। नवाब के एक और जरनल *राय दुर्लभ* ने भी धोखा दिया। नवाब की सेनाओं की पूर्ण पराजय हुई। नवाब युद्ध-भूमि से भाग निकला, परन्तु पकड़ लिया गया और मीर जाफ़र के पुत्र मीरन ने उसका वध कर दिया। नवाब के *सैनिक अफ़सरों की धोखेबाज़ी से अंग्रेज़ जीत गये।*

परिणाम—(१) सिराजुद्दौला मारा गया और मीर जाफ़र बंगाल का नवाब बना दिया गया।

(२) मीर जाफर ने क्लाईव तथा कम्पनी को बहुत सा धन दिया।

(३) कम्पनी को चौबीस परगने के प्रदेश की जमींदारी प्रदान की गई।

ऐतिहासिक महत्व—प्लासी की लड़ाई ऐसी लड़ाई न थी जिसमें वीरता के कर्त्तव्य दिखाये गये हों तो भी *राजनैतिक दृष्टि से उसकी गणना इतिहास की अत्यंत प्रसिद्ध लड़ाइयो मे की जाती है।* इस लड़ाई से बगाल जैसे उपजाऊ तथा धनपूर्ण प्रान्त पर अंग्रेज़ों का अधिकार हो गया और इसी प्रान्त के धन से अंग्रेज़ दक्षिण में फ्रांसीसियो के विरुद्ध सफल हुये। *वास्तव में प्लासी की लड़ाई से भारत विजय की कुँजी अंगरेज़ो के हाथ लग गई। भारतवर्ष मे अंगरेजी राज्य का आरम्भ इस लड़ाई से माना जाता रहा है।*

नोट—1764 ई० में बक्सर (Buxar) की लड़ाई हुई, जिसके परिणाम स्वरूप कम्पनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी मिल गई। इस प्रकार सारे बंगाल में अंगरेज़ी राज्य हो गया।

मीर जाफ़र और मीर कासिम

MIR JAFAR AND MIR QASIM

Q. Write notes on (a) Mir Jafar (b) Mir Qasim.

प्रश्न—*मीर जाफर और मीर कासिम पर संक्षिप्त नोट लिखो।*

मीर जाफर
(Mir Jafar)
1757—1761

मीर जाफर बगाल के नवाब अलीवर्दी खाँ का बहनोई और नवाब सिराजुद्दौला की सेनाओ का प्रधान सेनापति था। वह एक देश द्रोही तथा विश्वासघाती था। प्लासी की लड़ाई के पश्चात् 1757 ई० मे अंग्रेजो ने उसे बंगाल का नवाब बना दिया परन्तु वह केवल नाम-मात्र का नवाब था। वास्तव में सारा शासन क्लाईव के हाथों में था। मीर जाफर किसी प्रकार भी यह न चाहता था कि वह अंग्रेज़ो के हाथों में केवल कठपुतली बना रहे। अतः उसने स्वतन्त्र होने के लिये चिन्सुरा के डच लोगों से बातचीत की किन्तु क्लाईव ने उन्हे हरा दिया।

मीर जाफर ने नवाब बनने के समय अंग्रेज़ों को बहुत भेंट दी थी

मीर जाफर

और अभी प्रतिज्ञा के अनुसार कम्पनी को बहुत सा धन देना था, परन्तु उसका कोष शून्य हो चुका था, इसलिये न तो वह अपनी प्रतिज्ञायें ही पूरी कर सका और न राज्य का प्रबन्ध ही भली भान्ति कर सका। अन्त से 1761 ई० में वह गद्दी से उतार दिया गया और उसके जामाता मीर कासिम को नवाब बनाया गया। 1763 ई० में मीर जाफर, मीर कासिम के पदच्युत होने पर, दोबारा नवाब बना। परन्तु १७६५ ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

मीर कासिम मीर जाफर का जामाता था। 1761 ई० में उसे अंग्रेज अधिकारियों ने बंगाल का नवाब बनाया। इसके बदले में मीर कासिम ने अंगरेजों को बर्दवान, *मिदनापुर* और *चिटागांग* के जिले दे दिये और कम्पनी के नौकरों को बहुत सा धन भी दिया।

मीर कासिम
Mir Qasim
1761—1763

मीर कासिम एक योग्य शासक था। उसने बंगाल की दशा को सुधारना चाहा। उसने अंग्रेजी प्रभाव से मुक्त होने के लिये मुर्शिदाबाद के स्थान मुंघेर (Monghyr) को अपनी राजधानी बनाया। परन्तु अंग्रेजों ने उसे भी शान्तिपूर्वक शासन करने का समय न दिया। कम्पनी को बंगाल में

बिना महसूल व्यापार करने की आज्ञा मिली हुई थी परन्तु अब कम्पनी के कर्मचारी भी अपना निजी व्यापार बिना महसूल दिये, करने लग गये थे। न केवल यही परन्तु वे भारतीय व्यापारियों से कुछ धन ले कर उन्हें परवाने लिख देते थे। इन बातों से नवाब की आय घटने लगी। उसने कलकत्ता कौंसिल से शिकायत की परन्तु उन्हों ने एक न सुनी। इस पर नवाब ने सभी व्यापारियों से महसूल लेना बन्द कर दिया।

इससे अंग्रेज़ बुरी तरह भड़क उठे। तब मीर कासिम से युद्ध छिड़ गया और उसे पदच्युत किया गया। युद्ध में मीर कासिम की पराजय हुई और वह भाग कर अवध के नवाब* के पास चला गया और अंग्रेज़ अधिकारियों ने मीर जाफ़र को दोबारा राजसिंहासन पर बिठा दिया। *मीर कासिम* ने अवध के नवाब *शुजाउद्दौला* और सम्राट् *शाह आलम* को साथ मिला कर अंग्रेज़ों के विरुद्ध युद्ध लड़ा परन्तु बक्सर के स्थान पर पराजित होकर भाग निकला और उसके कई वर्ष बाद मर गया।

☞Q State concisely the causes, main events and results of the Battle of Buxar. (P U. 1939)
(Important).

प्रश्न—*बक्सर की लड़ाई के कारण, विशेष घटनायें और उसके परिणाम लिखो।*

बक्सर की लड़ाई 1764 ई० में हुई। इसमें एक ओर अंग्रेज थे और दूसरी ओर *शाहआलम*, *शुजाउद्दौला* और *मीर कासिम* थे।

बक्सर की लड़ाई
1764

कारण—मीर कासिम बंगाल का नवाब था। वह अपने काम में अंग्रेज़ों के अनुचित हस्तक्षेप को सहन न कर सका। इस कारण उस का अंग्रेज़ों से झगड़ा हो गया। अंग्रेज़ों ने उसे हरा कर सिंहासन से उतार दिया। मीर कासिम भाग कर अवध के नवाब *शुजाउद्दौला* के पास पहुँचा। उन दिनों मुगल सम्राट *शाहआलम*

*अवध का नवाब मुग़ल सम्राट् का महामन्त्री (वज़ीर) भी था।

भी वहीं रहता था। शाह आलम और शुजाउद्दौला ने उसकी सहायता करने का निश्चय किया। इसलिये *शुजाउद्दौला, शाह आलम* और *मीर क़ासिम* तीनों ने मिलकर बंगाल पर चढ़ाई की।

घटनायें—अंग्रेजी सेनापति मेजर *मनरो* (Major Munro) ने बक्सर (Buxar) के स्थान पर उनका सामना किया और उन्हें बुरी तरह हराया। *मीर क़ासिम* भाग गया और उसका कुछ पता न मिला। *शाह आलम* और *शुजाउद्दौला* ने अपने आप को अंग्रेजों के समर्पण कर दिया। इस प्रकार भारतवर्ष का मुगल सम्राट् हार गया।

परिणाम—1765 ई० में क्लाईव ने शाह आलम और शुजाउद्दौला के साथ *इलाहाबाद की सन्धि* (Treaty of Allahabad) की। उस के अनुसार (i) शुजाउद्दौला को पचास लाख रुपये के बदले अवध प्रान्त लौटा दिया गया, किन्तु कड़ा और इलाहाबाद के ज़िले उससे ले लिये गये। उसे एक सेना भी दी गई जिसका खर्च उसके ज़िम्मे था। (ii) मुगल सम्राट् शाहआलम ने अंग्रेजों को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की *दीवानी* दे दी। इसके बदले में कम्पनी ने उसे २६ लाख रुपया वार्षिक पेंशन देना स्वीकार किया और *कड़ा* तथा *इलाहाबाद* के दो ज़िले भी उसे दे दिये।

महत्व (Importance)—*दीवानी के अधिकार मिल जाने से सारे बंगाल में अंग्रेजी राज्य हो गया और उसके पश्चात् अंग्रेज सारे उत्तरी भारत में सबसे अधिक प्रभावशाली गिने जाने लगे। सच तो यह है कि प्लासी की रही सही कमी बक्सर ने पूरी कर दी। इस लड़ाई में भारत का मुग़ल सम्राट् और अवध का नवाब जो मुग़ल साम्राज्य का महामन्त्री भी था दोनों हार गये।* अपने परिणाम के विचार से बक्सर की लड़ाई प्लासी की लड़ाई की अपेक्षा अधिक महत्वशाली है।

क्लाईव

ROBERT CLIVE

☞ Q. Describe the early career of Clive and give a brief account of his first and second administra-

tions of Bengal. (P. U. 1925-41-45) (Important)

प्रश्न—*क्लाईव के आरम्भिक जीवन और बंगाल में गवर्नरी के पद का संक्षिप्त वर्णन करो।*

राबर्ट क्लाईव *जो भारत मे अंगरेज़ी राज्य का बानी माना जाता है* 1725 ई० में इंगलैंड के एक छोटे से ग्राम में उत्पन्न हुआ था। उसे पढ़ने में तनिक भी रुचि न थी। इसलिये 1744 ई० में जब कि उसकी आयु १६ वर्ष की थी, वह कम्पनी की अधीनता में क्लर्क के रूप में भारतवर्ष चला आया।

राबर्ट क्लाईव

क्लर्क के रूप में—थोड़े समय तक उसने मद्रास में क्लर्क के रूप में काम किया, किन्तु इस काम से शीघ्र ही उसका मन उचट गया, यहाँ तक कि दो बार उसने पिस्तौल से आत्महत्या का प्रयत्न भी किया परन्तु पिस्तौल न चली और उसने विचार किया कि परमात्मा ने उसे किसी बड़े काम के लिये बचा लिया है। इसके बाद वह सेना में भरती हो गया और शीघ्र ही उसने वीरता के कई कार्य किये।

क्लाईव

सैनिक के रूप में—कर्नाटक के दूसरे युद्ध में उसने अपने पराक्रम दिखाये। ठीक उस समय जब कि डूप्ले के मनोरथ सफल होने को ही थे **अर्काट** (Arcot) पर अधिकार कर के युद्ध की दशा बिल्कुल बदल दी और इस *प्रकार से उसने अंगरेज़ी प्रभाव को दक्षिण मे नष्ट होने से बचा लिया।* 1753 ई० में क्लाईव स्वास्थ्य बिगड़ जाने के कारण इंगलैंड लौट गया। वहाँ उसका सम्मान किया गया और उसे एक जड़ाऊ तलवार भेंट की गई।

1756 ई० में क्लाईव (फ़ोर्ट सेंट डेविड का गवर्नर बन कर) दोबारा

भारत आया। 1757 ई० में उसने प्लासी का युद्ध जीता जिससे अंग्रेज़ो के पाव बङ्गाल में पक्के जम गये और बङ्गाल तथा दक्षिण में अंग्रेजो की शक्ति संगठित हो गई। अब क्लाईव बंगाल मे अंगरेज़ी अधिकृत प्रदेशों का गवर्नर नियुक्त किया गया।

गवर्नरी का पहला शासन काल 1757—1760

1757 ई० से 1760 ई० तक क्लाईव पहली बार बंगाल का गवर्नर रहा। इस काल की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित थी :—

(१) शाह आलम का आक्रमण—मुगल राजकुमार अली गौहर ने जो बाद में शाह आलम के नाम से बादशाह बना, अवध के नवाब शुजाउद्दौला की सहायता से बिहार पर आक्रमण किया, परन्तु क्लाईव ने उसे पराजित करके पीछे हटा दिया। इस पर मीर जाफर ने प्रसन्न होकर क्लाईव को एक जागीर दी जिसकी वार्षिक आय £30000 थी।

(२) डच शक्ति का अंत—मीर जाफर ने अंग्रेज़ों से स्वतन्त्र होने के लिये चिन्सुरा के डच लोगो से षड्यन्त्र किया, परन्तु क्लाईव ने उन्हें हराया और भारत में उनकी शक्ति का अन्त कर दिया।

(३) उत्तरी सरकार मे फ्रासीसियो की हार—क्लाईव ने बंगाल से एक सेना कर्नल फोर्ड (Col. Forde) के अधीन उत्तरी सरकार में भेजी जिसने वहाँ फ्रांसीसों को हरा दिया।

इस प्रकार क्लाईव ने बंगाल और दक्षिण मे अङ्गरेजो की शक्ति सगठित कर दी। काम काज की अधिकता के कारण उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया था इसलिये वह 1760 ई० में इगलैंड लौट गया। वहाँ उसका बड़ा सत्कार किया गया और उसे लार्ड (Lord) बनाया गया। वह पार्लियामेंट का मेम्बर भी चुना गया।

क्लाईव भारत से पाँच वर्ष अनुपस्थित रहा। उसकी अनुपस्थिति मे बंगाल में अन्धेर गर्दी मच गई। कम्पनी के नौकर *निजी व्यापार* में लग गये और उचित तथा अनुचित ढंगों से धन कमाने लगे। इससे

कम्पनी के काम-काज की अत्यन्त हानि हुई। इस अवस्था में कम्पनी के डाइरेक्टरों ने लार्ड क्लाईव को दोबारा बंगाल का गवर्नर बना कर भारत में भेजा कि वह कम्पनी की अवस्था को सुधार सके। 1765 ई० में क्लाईव बंगाल में पहुँचा और डेढ़ वर्ष तक गवर्नर रहा। इस गवर्नर पद की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित हैं :—

गवर्नरी का दूसरा शासन-काल 1765—1767

(१) इलाहाबाद का सन्धि-पत्र (Treaty of Allahabad)—क्लाईव ने सबसे पहले शाहआलम और शुजाउद्दौला के साथ इलाहाबाद के स्थान पर 1765 ई० में सन्धि-पत्र किया। यह बड़ा महत्वशाली सन्धि पत्र था। इस की एक धारा के अनुसार शाह आलम ने कम्पनी को *बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी अर्थात् भूमिकर (लगान) के प्राप्त करने के अधिकार दे दिये*। इसके बदले में कम्पनी ने उसे २६ लाख रुपया वार्षिक पैंशन देना स्वीकार किया और कड़ा तथा इलाहाबाद के दो ज़िले भी दे दिये। *दीवानी के अधिकार मिल जाने से बंगाल पर अंग्रेज़ो का अधिपत्य स्थापित हो गया।*

(२) बंगाल मे द्वैत शासन (Dual Government)—दीवानी अधिकार प्राप्त करने के बाद बंगाल, बिहार और उड़ीसा में एक नवीन राज्य-प्रबन्ध प्रचलित हुआ, जिसे *द्वैत शासन* (Dual Government) कहते हैं। इससे राज्य-प्रबन्ध दो भागों में बँट गया। देश-रक्षा का काम कम्पनी ने अपने कन्धों पर लिया और शेष प्रबन्ध नवाब के हाथों में रहने दिया तथा उसे प्रबन्ध चलाने के लिये* ५३ लाख रुपया वार्षिक देना स्वीकार किया, किन्तु यह शासनविधि सफल न हो सकी।

(३) सुधार (Reforms)—क्लाईव ने निम्नलिखित सुधार किये :—

(i) कम्पनी के कर्मचारियों को भारतियों से भेंट आदि लेने का निषेध कर दिया।

(ii) कम्पनी के कर्मचारियों का निजी व्यापार बन्द कर दिया।

(iii) कम्पनी के कर्मचारियो के वेतन बढ़ा दिये और बड़े-बड़े

---

*दो वर्ष बाद यह रुपया घटाकर ३२,००००० रु० कर दिया गया।

कर्मचारियों को प्रसन्न करने के लिये क्लाईव ने उन्हे नमक, पान और तम्बाकू के व्यापार का एकाधिकार दे दिया परन्तु दो वर्ष बाद यह अधिकार बन्द कर दिया गया।

(iv) सैनिक अधिकारियो का डबल भत्ता* बन्द कर दिया। इस का कारण यह था कि पहले यह भत्ता बगाल के नवाब के कोप से मिलता था और अब दीवानी मिल जाने से कम्पनी को अपने कोप से देना पड़ता था।

डबल भत्ते के बन्द किये जाने से सैनिक अधिकारियो में एक विद्रोह उठ खड़ा हुआ, परन्तु क्लाईव ने बड़े धैर्य से उस विद्रोह को तुरन्त दबा दिया।

क्लाईव का लौटना—1767 ई० में क्लाईव स्वास्थ्य बिगड़ जाने के कारण इंगलैंड लौट गया। वहाँ उसके विरुद्ध घूँसखोरी के अपराध में अभियोग चलाया गया। पार्लियामेंट ने उसे सम्मान सहित बरी कर दिया। परन्तु इस अभियोग से उसके हृदय पर ऐसा प्रभाव हुआ कि 1774 ई० में जब उसकी आयु पचास वर्ष की थी उसने आत्महत्या कर ली।

क्लाईव का चरित्र

क्लाईव अत्यन्त साहसी, धैर्यवान तथा दूरदर्शी व्यक्ति था। उसे अपने देश तथा अपनी जाति से प्रेम था। वह वीर योद्धा था और कठोर से कठोर विपत्ति के समय भी रत्ती भर न घबराता था। इगलैंड के महामंत्री पिट (Pitt) के शब्दों में वह "Heaven-born General" था। इसके अतिरिक्त वह उच्चकोटि का नीतिज्ञ भी था। उसने साहस और बल से भारत में अंग्रेजी राज्य की नींव डाली।

परन्तु वह त्रुटियों से रहित न था। उसके विरुद्ध दो बड़े दोष अरोपण किये जाते हैं। एक यह कि उसने अनुचित ढग से भेंट

*डबल भत्ता एक अलाउन्स था जो फौजी कर्मचारियो को लड़ाई के समय मिला करता था, परन्तु यह अलाउन्स शान्ति के समय में भी मिलने लग गया था।

ग्रहण की और अपने लिये असंख्य धन एकत्रित किया। दूसरे उसने वाटसन के जाली हस्ताक्षर करवाये और अमीचन्द को धोखा दिया। इन त्रुटियों के होते हुये भी इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि *क्लाईव ने अपने देश की असीम सेवा की और कम्पनी के नाम तथा शक्ति को चार चाँद लगा दिये। वह सचमुच भारतवर्ष में अंगरेज़ी राज्य का बानी था।*

Q. Write a short note on the Dual Government of Clive.

प्रश्न—*क्लाईव के द्वैत शासन पर संक्षिप्त नोट लिखो।*

द्वैत शासन

1765 ई० में इलाहाबाद के सन्धि-पत्र के आधार पर कम्पनी को बंगाल, *बिहार* और *उड़ीसा* की दीवानी अर्थात् लगान प्राप्त करने का अधिकार मिल गया था। इस प्रकार बंगाल का शासन पूर्णतया अंग्रेज़ों के हाथ में आ चुका था। परन्तु कम्पनी इतने बड़े प्रदेश का प्रबन्ध हाथ में लेने को तैयार न थी, क्योंकि इतने बड़े प्रदेश का प्रबन्ध करने के लिये उसके पास यथेष्ट योग्य तथा अनुभवी कर्मचारी न थे। इस लिये बंगाल का शासन दो भागों में बँट गया। इस नवीन प्रबन्ध को द्वैत *शासन* अर्थात् दो शक्तियों का शासन कहते हैं।

इस द्वैत शासन के अनुसार देश *रक्षा* का भार तो कम्पनी ने अपने हाथो मे लिया और शेष *सारा प्रबन्ध* नवाब के हाथों में रहने दिया तथा उसे ५३ लाख रुपया वार्षिक व्यय के लिये देना स्वीकार किया। द्वैत शासन का यह ढंग सात वर्ष तक प्रचलित रहा।

क्लाईव का यह शासन प्रबन्ध अर्थात द्वैत शासन *सर्वथा अधूरा तथा असंतोषजनक सिद्ध हुआ।* इसका कारण यह था कि सब अधिकार कम्पनी के हाथो में थे किन्तु ज़िम्मेवारी सारी नवाब की थी। *नवाब में शासन प्रबन्ध की योग्यता न थी और कम्पनी प्रबन्ध को अच्छा बनाने के लिये तैयार न थी।* इस लिये क्लाईव के लौटते ही बंगाल में घोर अशान्ति और अत्याचार का राज्य छा गया। प्रजा की बड़ी दुर्दशा हो गई और नट खट अधिकारियो ने भारतीयो पर बड़े घोर

अत्याचार किये। 1769-70 ई० में बङ्गाल में भयानक अकाल पड़ा। अंत मे 1772 ई० मे वारन हेस्टिंग्ज ने द्वैत शासन की समाप्ति कर दी और बंगाल का सारा प्रबन्ध अपने हाथो मे ले लिया।

Q. Discuss the statement that Clive was the founder of the British rule in India.

प्रश्न—स्पष्ट करो कि क्लाईव भारत मे अंगरेजी राज्य का संस्थापक था।

भारत में अङ्गरेज़ी राज्य का बानी वास्तव में क्लाईव ही था।

क्लाईव अङ्गरेज़ी राज्य का बानी

उसने अपनी वीरता, साहस और धैर्य से अङ्गरेजी ईस्ट इण्डिया कम्पनी को जो सर्वथा एक व्यापारी कम्पनी थी शासक शक्ति बना दिया और वह फिर धीरे-धीरे ऐसा प्रबल साम्राज्य बन गई जिसकी उपमा संसार में नहीं मिलती।

(१) कर्नाटक के दूसरे युद्ध में जब अङ्गरेज़ों की अवस्था बड़ी शोचनीय थी और ऐसा प्रतीत होता था कि डूप्ले को अपनी आशाओं में सफलता होगी, क्लाईव ने **अरकाट** पर अधिकार करके उसकी सभी आशाओं पर पानी फेर दिया और अङ्गरेजी प्रभाव को दक्षिण मे नष्ट होने से बचा लिया।

(२) 1757 ई० में क्लाईव ने **प्लासी** की प्रसिद्ध लड़ाई जीत कर भारत में अङ्गरेजी साम्राज्य की नीव शिला रख दी। बगाल में प्रभाव जम जाने के कारण अङ्गरेज़ो को अपने शत्रुओ के विरुद्ध बड़ी सहायता मिल सकी और वे शीघ्र ही फ्रांसीसी प्रभाव को नष्ट करने में सफल हो गये।

(३) 1765 ई० में क्लाईव ने शाह आलम द्वितीय के साथ इलाहाबाद की सन्धि की जिसके द्वारा अङ्गरेज़ो को बगाल, बिहार और उड़ीसा की **दीवानी** मिल गई अर्थात् उन्हे इन प्रान्तो से भूमिकर प्राप्त करने का अधिकार मिल गया। इस घटना से भारत मे अङ्गरेजी साम्राज्य की नींव सुदृढ़ हो गई।

(४) उसने मुगल सम्राट् **शाह आलम** को अपने अधिकार में कर

लिया जिससे वह कम्पनी के लिये हर प्रकार के अधिकार प्राप्त कर सकता था। अवध उसने नवाब को लौटा दिया जिससे बंगाल की सीमा मराठों के आक्रमणों से सुरक्षित हो गई।

(५) क्लाईव ने अपने **सुधारों** से कम्पनी के प्रबन्ध को सुन्दरता पूर्वक संगठित कर दिया।

संक्षेपतः क्लाईव तीन बार भारतवर्ष आया और उसने हर बार कोई महत्वपूर्ण काम ही किया। *पहली बार उसने दक्षिण में कम्पनी की सत्ता को दृढ़ किया, दूसरी बार उसने बंगाल विजय किया, और तीसरी बार उसने कम्पनी को राजनैतिक शक्ति बना दिया।*

ऊपर लिखी बातों से स्पष्ट सिद्ध होता है कि भारत में अंग्रेज़ी साम्राज्य का संस्थापक क्लाईव ही था।

हैदर अली

HAIDAR ALI

☞ Q. Give a brief account of the career and work of Haidar Ali. (P. U. 1933-40-44) (Important)

प्रश्न—*हैदर अली के जीवन और पराक्रमों का संक्षिप्त वर्णन करो।*

आरम्भिक जीवन—*हैदर अली अठारहवीं शताब्दी में मैसूर रियासत का प्रसिद्ध सुल्तान और अङ्गरेजों का एक प्रबल शत्रु हो चुका है।* वह एक साधारण व्यक्ति था।

हैदर अली

उसका जन्म 1722 ई० में हुआ। उस का पिता मैसूर की सेना में फौजदार था। हैदर अली ने अपना जीवन मैसूर की सेना में एक साधारण सैनिक की भाँति आरम्भ किया, परन्तु वह अपनी योग्यता के कारण उन्नति करते करते सेनापति के उच्च पद पर जा पहुँचा। 1766 ई० में मैसूर के

हैदर अली

राजा की मृत्यु पर उसने राजसिंहासन पर अधिकार कर लिया और मैसूर का सुल्तान बन बैठा।

चरित्र (Character)—हैदर अली एक अत्यन्त योग्य शासक तथा चतुर सेनापति था। यद्यपि वह अनपढ़ था, किन्तु था बड़ा बुद्धिमान। उसकी स्मरण शक्ति असाधारण थी। जिस बात को वह एक बार सुन लेता उसे कभी न भूलता था। बड़े-बड़े लेखे ज़बानी कर लेता था और पाँच भाषायें सुगमता से बोल सकता था। वह जातीय पक्षपात से रहित और मनुष्य परखने में उच्चकोटि का व्यक्ति था। उस ने हिंदुओं को ऊंचे पदों पर नियुक्त कर रखा था। उस में घमण्ड लेशमात्र भी न था। वह निर्धनों की हर प्रकार से सहायता करता था।

राज्य प्रबन्ध (Administration)—हैदर अली राज्य के कार्य का संचालन शीघ्रता पूर्वक तथा नियमानुसार करता था और प्रत्येक विभाग की देखभाल स्वयं करता था। वह कभी निकम्मा न बैठता था और न्याय में पक्षपात से काम न लेता था तथा अपराधियों को चाहे वे उसके मन्त्री ही क्यों न हों, शिक्षाप्रद दण्ड देता था। वह हिन्दुओं तथा मुसलमानों में कोई भेद न समझता था। सरकारी विभाग में नौकरी योग्यता के आधार पर देता था।

हैदर अली अंग्रेज़ों का प्रबल शत्रु था और उसने उनके विरुद्ध दो युद्ध लड़े, जिन्हे मैसूर का पहला तथा दूसरा युद्ध कहते हैं। दूसरे युद्ध के मध्य में हैदर अली 1782 ई० में बीमार होकर मर गया।

Q. Briefly describe the First Mysore War.

प्रश्न—*मैसूर के पहले युद्ध का संक्षेप से वर्णन करो।*

यह युद्ध हैदर अली तथा अंग्रेज़ों के मध्य हुआ।

मैसूर का पहला युद्ध
1767—69

कारण—इस युद्ध का कारण यह था कि हैदर अली की उन्नति दक्षिण की दूसरी शक्तियों के लिये भय का कारण थी। इसलिये निज़ाम, अंग्रेज़ों और मराठों ने उसके विरुद्ध एकता कर ली।

घटनायें—हैदर अली बहुत बुद्धिमान् राज-

नीतिज्ञ था। उसने *मराठों* को कुछ दे दिला कर अङ्गरेज़ों से पृथक् कर दिया और *निज़ाम* को भी अपनी ओर गाँठ लिया। फिर निज़ाम और हैदर अली की सम्मिलित सेनाओं ने अंग्रेज़ों पर आक्रमण किया परन्तु अंग्रेज़ अफ़सर *कर्नल स्मिथ* (Col. Smith) ने 1765 ई० में *ट्रिनोमली* (Trinomali) और *चंगामा* (Changama) के स्थानों पर उन्हें पराजित किया। इसके बाद निज़ाम हैदर अली का साथ छोड़ कर, अंग्रेज़ों से मिल गया और अंग्रेज़ों ने आवश्यकता पड़ने पर उसकी सहायता करने का वचन दिया। परन्तु हैदर अली अकेला ही कर्नाटक को उजाड़ता हुआ मद्रास जा पहुँचा। मद्रास की सरकार ने भयभीत होकर हैदर अली की माँगी हुई शर्तों पर सन्धि कर ली। इससे हैदर अली का प्रभाव बहुत बढ़ गया।

परिणाम—मद्रास के सन्धि-पत्र के आधार पर दोनों दलों ने एक दूसरे के विजित प्रदेश लौटा दिये *और अङ्गरेज़ो ने हैदर अली को विश्वास दिलाया कि वे आवश्यकता पड़ने पर उसकी सहायता करेंगे।*

नोट—1771 ई० में मराठों ने मैसूर पर चढ़ाई की। हैदर अली ने अङ्गरेज़ों से सहायता की प्रार्थना की, परन्तु उन्होंने इनकार कर दिया। इस प्रतिज्ञा भंग के कारण हैदर अली अङ्गरेज़ों का घोर शत्रु बन गया।

वारन हेस्टिंग्ज़ गवर्नर बंगाल

WARREN HASTINGS
GOVERNOR OF BENEAL
1772—1774

घटनायें

(१) सुधार, (२) रुहेलो के साथ युद्ध, (३) रैगुलेटिंग ऐक्ट।

हेस्टिंग्ज़ की नियुक्ति

क्लाइव की भांति वारन हेस्टिंग्ज़ भी लगभग अठारह वर्ष की आयु में एक क्लर्क बन कर भारत में आया था. परन्तु अपनी योग्यता तथा कर्तव्य-शीलता के कारण धीरे-धीरे उन्नति करता हुआ गवर्नर के

उच्च पद पर नियुक्त हुआ। उस समय उसकी आयु ४० वर्ष की थी।

हेस्टिंग्ज़ के गवर्नर नियुक्त होने के समय बंगाल की दशा बड़ी ख़राब थी। द्वैत शासन के कारण सारा प्रबन्ध छिन्न-भिन्न हो चुका था। भूमिकर उगाहने का कोई उचित प्रबन्ध न था। कोष लगभग शून्य हो चुका था, देश में अकाल पड़ा हुआ था। न्याय विभाग का प्रबन्ध बहुत ही ख़राब था। प्रत्येक प्रदेश में डाकू और ठग फिर रहे थे। *इसलिये वारन हेस्टिंग्ज ने सबसे पहले द्वैत शासन की समाप्ति कर दी और राज्य प्रबन्ध सुधारने के लिये कई सुधार प्रचलित किये।*

वारन हेस्टिंग्ज़

Q. Briefly describe the reforms of Warren Hastings.

प्रश्न—*संक्षेप से वारन हेस्टिंग्ज के सुधारों का वर्णन करो।*

वारन हेस्टिंग्ज़ के सुधार निम्नलिखित हैं :—

सुधार

(क) द्वैत शासन का अन्त—वारन हेस्टिंग्ज़ ने सबसे पहले *क्लाईव के द्वैत शासन का अन्त कर दिया और पूर्णरूप से सारे बंगाल पर अङ्गरेजी राज्य स्थापित कर दिया।* उसने मुर्शिदाबाद के स्थान कलकत्ता को राजधानी बनाया।

(ख) लगान में सुधार (Revenue Reforms)—हेस्टिंग्ज़ ने लगान का प्रबन्ध अच्छा बनाने के लिये निम्नलिखित कार्य किये :—

(१) भूमि का लगान पंचवर्षीय कर दिया और भूमि सब से अधिक ठेका देने वाले को दी जाने लगी। तत्पश्चात् यह ठेका वार्षिक कर दिया गया।

(२) भूमिकर उगाहने के लिये प्रत्येक जिले में अङ्गरेज़ क्लैक्टर

(Collector) नियत किया गया। उसकी सहायता के लिये देशी कर्मचारी नियुक्त किये गये।

(३) मुर्शिदाबाद के स्थान कलकत्ता में एक रेविन्यू बोर्ड (Revenue Board) स्थापित किया गया इसलिये कि भूमिकर का ठीक-ठीक लेखा रखा जा सके।

(ग) न्याय सुधार (Judicial Reforms)—न्याय विभाग का प्रबन्ध ठीक करने के लिये हेस्टिंग्ज़ ने निम्नलिखित परिवर्तन किये :—

(१) प्रत्येक ज़िले में एक *दीवानी* और एक *फ़ौजदारी* न्यायालय (अदालत) स्थापित किया। दीवानी न्यायालय का अंग्रेज़ जज ही कलैक्टर होता था, जो लगान भी उगाहाया करता था।

(२) कलकत्ते में अपील के दो न्यायालय स्थापित किये—*सदर दीवानी अदालत* जो आर्थिक तथा दीवानी अभियोगों की अपील का निर्णय करती थी और दूसरी *सदर निजामत अदालत थी*।

(३) हिन्दुओं और मुसलमानों के राजनियमों का एक *सरल संग्रह* किया गया इसलिये कि उसके अनुसार अभियोगों का निर्णय किया जा सके।

(४) उसने चोरों और डाकुओं का भी दमन किया जिससे जीवन सुरक्षित हो गया।

(घ) व्यय में कटौती (Economics)—(१) बंगाल के नवाब का शुल्क जो पहले ही ३२ लाख रह गया था घटा कर आधा अर्थात् १६ लाख कर दिया गया।

(२) शाह आलम का २६ लाख रुपये का वार्षिक शुल्क बन्द कर दिया गया, क्योंकि वह (1772 ई० में) अंग्रेजों की शरण छोड़ कर मराठों की संरक्षता में देहली चला गया था।

(३) कड़ा और इलाहाबाद के जिले शाह आलम से लौटा लिये गये और वे अवध के नवाब शुजाउद्दौला के हाथ ५० लाख रुपये में बेच दिये गये।

(४) रुहेलों के विरुद्ध शुजाउद्दौला की सहायता करने के बदले ४० लाख रुपया कम्पनी के लिये प्राप्त किया गया।

Q. Give a brief account of the Rohilla War.

प्रश्न—*रुहेलों के युद्ध का संक्षिप्त वर्णन करो।*

रुहेलों का युद्ध 1774

रुहेले युद्ध प्रिय अफ़ग़ान थे जो अफगानिस्तान से आकर अवध के उत्तर-पश्चिमी प्रदेश में बस गये थे। उनके नाम पर इस प्रदेश का नाम रुहेलखण्ड पड गया था। उनका सरदार एक व्यक्ति **हाफिज रहमत खाँ** था। मराठे उनके उपजाऊ देश पर प्रायः छापा मारा करते थे। इसलिये उन्हों ने अवध के नवाब शुजाउद्दौला से मराठों के विरुद्ध सहायता माँगी और इस सहायता के बदले ४० लाख रुपया देने की प्रतिज्ञा की।

1773 ई० में मराठो ने रुहेलों पर आक्रमण किया, परन्तु अवध के नवाब की सेनाओं को देखकर वे विना युद्ध लड़े लौट गये। अब नवाब शुजाउद्दौला ने अपनी रकम माँगी, किन्तु क्योंकि नवाब की सेना ने कोई लड़ाई तो की न थी, अतः रुहेलों ने टालमटोल की। इस पर नवाब ने बदला लेने के लिये हेस्टिंग्ज़ से सहायता माँगी और विश्वास दिलाया कि युद्ध का सारा व्यय भी उसके ज़िम्मे होगा और वह कम्पनी को ४० लाख रुपया भी देगा। हेस्टिंग्ज़ ने जिसे धन की अत्यन्त आवश्यकता थी, अंग्रेज़ी सेना का एक दस्ता भेज दिया। रुहेलों को *मीरापुर कटड़ा* के स्थान पर हार हुई और उनका सरदार *हाफ़िज़ रहमत खाँ* मारा गया। हज़ारों रुहेले देश छोड़ कर चले गये, और रुहेलखण्ड अवध में मिला लिया गया।

नोट—हेस्टिंग्ज का रुहेलों के विरुद्ध अवध के नवाब की सहायता करना चरित्रिक दृष्टिकोण से सर्वथा अनुचित था, क्योंकि रुहेलों ने कम्पनी के विरुद्ध कभी भी कोई कार्य नहीं किया था, परन्तु राजनैतिक दृष्टि से इसके पक्ष में इतना कहा जा सकता है कि कम्पनी को पर्याप्त धनराशि हाथ लग गई और रुहेलखण्ड का प्रदेश अवध के नवाब के अधीन हो जाने से अङ्गरेजों की उत्तर-पश्चिमी सीमा सुरक्षित हो गई

☞ Q What circumstances led to the passing of

the Regulating Act? Describe its main provisions and defects. (Important)

प्रश्न—*रैगुलेटिंग ऐक्ट के पास होने के क्या कारण थे? इस ऐक्ट की प्रसिद्ध धारायें और त्रुटियां लिखो।*

रैगुलेटिंग ऐक्ट 1773

रैगुलेटिंग ऐक्ट एक कानून था जिसका उद्देश्य कम्पनी की राजनैतिक अवस्था को सुधारना और उसके लिये एक विधान तैयार करना था।

कारण–(१) रैगुलेटिंग ऐक्ट के पास होने का एक कारण यह था कि अङ्गरेज़ी कम्पनी अब केवल व्यापारिक कम्पनी ही नहीं रही थी, वरन् कुछ एक प्रदेश जीत कर वह शासक कम्पनी बन चुकी थी। इसलिये पार्लियामेंट ने उचित समझा कि कम्पनी के काम की देख-भाल की जाय।

(२) दूसरा कारण यह था कि कम्पनी के कर्मचारी निज के व्यापार से धन कमाते थे जिसके कारण कम्पनी की आर्थिक दशा इतनी गिर चुकी थी कि 1772 ई० में कम्पनी के संचालकों ने इंगलैंड की सरकार से अपना काम चालू रख सकने के लिये दस लाख पाउण्ड ऋण माँगा और जब कम्पनी के काम की पड़ताल की गई तो पता चला कि दशा अत्यन्त शिथिल है। इसलिये पार्लियामेंट ने कम्पनी के काम-काज को अच्छा बनाने के लिये 1773 ई० में रैगुलेटिंग ऐक्ट पास किया।

रैगुलेटिंग ऐक्ट की धारायें (Provisions)—

(१) गवर्नर जनरल की नियुक्ति—बंगाल के गवर्नर को बंगाल का गवर्नर जनरल बना दिया गया।

(२) प्रबन्धक कौन्सिल की स्थापना—गवर्नर जनरल की सहायता के लिये चार मेम्बरों की एक कौंसिल बनाई गई। गवर्नर जनरल को बहुमत का निर्णय मानना आवश्यक था, परन्तु उसे कास्टिंग वोट (Casting Vote) का अधिकार था। पहिले चार मेम्बर पाँच वर्षों के लिये सरकार ने आप ही नियत कर दिये थे।

(३) गवर्नर की अधीनता—बम्बई तथा मद्रास प्रान्तों के गवर्नर

वैदेशिक नीति अर्थात् युद्ध और सन्धि के विषयो में गवर्नर जनरल के अधीन कर दिये गये, परन्तु उन्हे यह अधिकार दिया गया कि विशेष आवश्यकता के समय वे अपनी इच्छानुसार काम कर सकते है।

(४) सुप्रीम कोर्ट की स्थापना—कलकत्ते में एक सुप्रीम कोर्ट (Supreme Court) स्थापित की गई, जिसमें चीफ जस्टिस के अतिरिक्त तीन और जज थे। पहिला चीफ जस्टिस इम्पे (Sir Elijah Impey) था।

(५) आवश्यक पत्रो की पेशी—कम्पनी के डाइरैक्टरो के लिये यह अनिवार्य हो गया कि वे दीवानी तथा फौजदारी विषयों सम्बन्धी आवश्यक पत्र इगलैंड की सरकार को पेश किया करे।

रैगुलेटिंग ऐक्ट की त्रुटियाँ (Defects) :—

रैगुलेटिंग ऐक्ट में कई त्रुटियाँ थीं, जिनके कारण यह अपूर्ण तथा अधूरा सिद्ध हुआ।

(१) इनमें सबसे बड़ी त्रुटि यह थी कि गवर्नर जनरल को अपनी कौंसिल पर पूरा अधिकार न था और चूँकि प्रत्येक बात का निर्णय बहुमत से होता था इसलिये कौंसिल के मेम्बर गवर्नर जनरल के विरुद्ध जो चाहे कर सकते थे। इससे केन्द्रीय सरकार में शिथिलता आ गई।

(२) बम्बई और मद्रास के गवर्नर यद्यपि वैदेशिक नीति में गवर्नर जनरल के अधीन थे, परन्तु आवश्यकता की ओट में अपनी इच्छानुसार काम कर लिया करते थे। अतएव गवर्नर जनरल को उन पर पूरा काबू न था।

(३) इस ऐक्ट में यह भी स्पष्ट नहीं किया गया था कि सुप्रीम कोर्ट के क्या अधिकार होंगे और उसका सम्बन्ध कम्पनी की स्थापित की हुई अदालतो के साथ क्या होगा।

इन त्रुटियो के होते हुये भी रैगुलेटिंग ऐक्ट अङ्गरेज़ी शासन प्रणाली की नीव थी।

वारन हेस्टिंग्ज़—प्रथम गवर्नर जनरल

WARREN HASTINGS
FIRST GOVERNOR-GENERAL
1774—1785

घटनायें

(१) कौंसिल से झगड़ा, (२) नन्दकुमार को प्राण दण्ड, (३) मराठों का प्रथम युद्ध, (४) मैसूर का दूसरा युद्ध, (५) चेतसिंह से झगडा, (६) अवध की बेगमों की घटना, (७) पिट्स इण्डिया ऐक्ट।

कौंसिल से झगड़ा

रैगुलेटिंग ऐक्ट 1774 ई० में लागू किया गया और प्रथम गवर्नर जनरल वारन हेस्टिंग्ज़ बना। उसकी कौंसिल के चार मेम्बर *फ्रांसिस* (Francis), *क्लेवरिंग* (Clavering), *मानसन* (Monson), और *बारवैल* (Barwell) नियुक्त किये गये, परन्तु बारवैल को छोड़ कर अन्य सभी उसके विरोधी थे और चूँकि कौंसिल में उनका बहुमत था इसलिये हेस्टिंग्ज़ को महान् कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परन्तु दो वर्ष के पश्चात् *मानसन* मर गया और उससे अगले वर्ष *क्लेवरिंग* चलता बना। इससे हेस्टिंग्ज़ को कौंसिल में बहुमत प्राप्त हो गया। 1780 ई० में *फ्रांसिस* भी हेस्टिंग्ज़ के साथ लड़ाई (Dual) में घायल होकर इंगलैंड लौट गया और हेस्टिंग्ज़ को विरोधियो से मुक्ति मिली।

Q. Write a short note on Nand Kumar.

प्रश्न—नन्दकुमार पर एक संक्षिप्त नोट लिखो।

नन्दकुमार

राजा नन्दकुमार एक उच्चवंशीय बंगाली ब्राह्मण था और किसी कारण गवर्नर जनरलसे शत्रुता रखता था। 1775 ई० में उसने हेस्टिंग्ज़ पर यह दोष लगाया कि उसने मीर जाफर की विधवा (मुनी बेगम) से साढ़े तीन लाख रुपया घूँस ली है। जब कौंसिल ने हेस्टिंग्ज़ से इस सम्बन्ध में पूछताछ की तो उसने उत्तर देने से इनकार कर दिया और नन्दकुमार के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने का अभियोग चला दिया, परन्तु अभी इस अभियोग का निर्णय नहीं हुआ था कि कलकत्ते के एक सेठ मोहन

प्रसाद (Mohan Prasad) ने नन्दकुमार के विरुद्ध जालसाजी का मुकद्दमा चला दिया और उसे सुप्रीम कोर्ट से प्राणदण्ड मिला।

नन्दकुमार को प्राण-दण्ड दिये जाने के पश्चात् कई व्यक्तियों ने यह दोष लगाया कि चूँकि चीफ जस्टिस इम्पे और वारन हेस्टिंग्ज़ पुराने सहपाठी थे इसलिये चीफ जस्टिस ने वारन हेस्टिंग्ज़ का पक्षपात करते हुये नन्दकुमार को प्राणदण्ड दिया है। यह बात झूठी प्रतीत होती है, किन्तु झूठ हो या सच, इसका एक प्रभाव यह हुआ कि लोग वारन हेस्टिंग्ज़ से डरने लगे और किसी को इतना साहस न हुआ कि वारन हेस्टिंग्ज़ पर कोई दोष लगाये।

Q Describe briefly the causes, main events and results of the first Maratha War

प्रश्न—*मराठो के प्रथम युद्ध के कारण, प्रसिद्ध घटनाये तथा परिणाम लिखो।*

मराठो का प्रथम युद्ध 1775—82

कारण—1772 ई० में *नारायण राव* मराठो का (पाँचवाँ) पेशवा बना, परन्तु उसके चाचा *राघोबा (रघुनाथ राव)* ने जो पेशवा बनने का बड़ा अभिलाषी था, उसका वध करवा दिया और स्वयं पेशवा बन गया। *नाना फर्नवीस* ने जो पूना में एक प्रभावशाली मराठा सरदार था, उसका विरोध किया और नारायण राव के पुत्र *माधव राव नारायण* को जिसका जन्म अपने पिता की मृत्यु के पश्चात हुआ था पेशवा बना दिया और राज्य प्रबन्ध के लिये एक कौंसिल नियुक्त कर दी। बहुत से मराठा सरदार नाना फर्नवीस के साथ मिल गये। इस प्रकार

नाना फर्नवीस

अपनी आशाओं में असफल होने के बाद राघोबा ने बम्बई की अंग्रेज़ी सरकार से सहायता माँगी और *सूरत* (Surat) में सन्धि पत्र निश्चित हुआ जिसमें निर्णय हुआ कि *राघोबा इस सहायता के बदले में सालसट और बसीन के प्रदेश अंगरेजो को दे देगा*। इस सन्धि के तुरन्त पश्चात् अंग्रेज़ो ने सालसट पर अधिकार कर लिया। परन्तु बङ्गाल की सरकार ने इस सन्धि को अस्वीकार कर दिया, क्योंकि यह उनकी स्वीकृति के बिना हुई थी और उन्हो ने नाना फर्नवीस के साथ 1776 ई० में *पुरन्धर* (Purandhar) के स्थान पर एक नई सन्धि कर ली, जिसमें यह निश्चय हुआ कि यदि सालसट द्वीप अंग्रेज़ों के पास रहने दिया जाय तो वे राघोबा की सहायता नहीं करेंगे। परन्तु इतने में सूरत में किये गये समझौते के सम्बन्ध में इंगलैंड से डाइरेक्टरो की स्वीकृति मिल गई इसलिये अंग्रेज़ी सरकार को राघोबा का ही साथ देना पड़ा।

घटनाएं—अंग्रेज़ी सेना का एक दस्ता राघोबा की सहायता के लिए बम्बई से पूना की ओर चल पड़ा, किन्तु उसे मार्ग में ही पूर्ण पराजय हुई और अंग्रेज अधिकारियों को *वरगॉव* (Wargaon) के स्थान पर एक अपमानसूचक समझौता करना पड़ा। परन्तु हेस्टिंग्ज़ ने उस समझौते को अस्वीकार कर दिया और युद्ध जारी रहा। अब हेस्टिंग्ज़ ने मराठों के विरुद्ध बंगाल से दो सेनायें भेजीं।

एक सेना जरनैल *गोडार्ड* (Goddard) के अधीन पूना की ओर बढी। मार्ग में उसने *अहमदाबाद* जीत लिया और गायकवाड़ ने उससे मित्रता की सन्धि कर ली। परन्तु पूना में नाना फर्नवीस ने इस सेना को करारी हार दी।

दूसरी सेना *मेजर पोपहम* (Popham) के अधीन प्रसिद्ध मराठा सरदार *महादाजी सिन्धिया** के विरुद्ध बढ़ी। सिन्धिया को हार हुई

---

*महादाजी सिन्धिया उस समय मराठो में सबसे योग्य और शक्तिशाली सरदार था। उसने देहली और आगरा पर अधिकार कर रखा था और मुग़ल सम्राट् शाह आलम भी उसके वश में था।

और अङ्गरेज़ी सेना ने उसकी राजधानी *ग्वालियर* को जीत लिया। इस पर सिन्धिया ने अंग्रेज़ो से सन्धि कर ली।

अब वारन हेस्टिंग्ज़ युद्ध को समाप्त करना चाहता था, क्योंकि एक तो व्यय अधिक बढ़ रहा था और दूसरे दक्षिण में *हैदर अली* का प्रभाव बहुत बढ़ता जा रहा था *निजाम* भी अगरेज़ो के विरुद्ध हो गया था। अतः सिन्धिया की मध्यस्थता से 1782 में युद्ध बन्द हो गया और *सालबाई* का सन्धिपत्र निर्धारित हुआ।

परिणाम—1782 ई० के *सालबाई* (Salbai) के सन्धि पत्र द्वारा (१) माधव राव नारायण को पेशवा स्वीकार कर लिया गया, (२) सालसट द्वीप पर अंग्रेज़ों का अधिकार हो गया परन्तु शेष सब विजित प्रदेश अंग्रेज़ो को लौटा दिये। (३) राघोबा की तीन लाख रुपये वार्षिक वृत्ति (Pension) नियत कर दी गई।

महत्व—*इस सन्धि के हो जाने से अंगरेज़ो और मराठों के बीच २० वर्ष तक शान्ति रही और अंगरेजो को हैदर अली और निजाम की शक्ति को तोड़ने का अवसर मिल गया।*

Q Briefly describe the causes, main events, and results of the Second Mysore War.

प्रश्न—*मैसूर के दूसरे युद्ध के कारण, प्रसिद्ध घटनाये तथा परिणाम लिखो। यह युद्ध अग्रेज़ो और हैदर अली के बीच हुआ।*

मैसूर का दूसरा युद्ध 1780—1784

कारण—(१) मैसूर के प्रथम युद्ध के पश्चात् (1769 ई० में) अग्रेज़ों ने मैसूर के सुल्तान हैदर अली से प्रतिज्ञा की थी कि यदि किसी शत्रु ने उस पर आक्रमण किया तो वे उसकी सहायता करेंगे, किन्तु उस प्रतिज्ञा के कुछ समय पश्चात् जब मराठो ने उस पर आक्रमण किया तो अग्रेज़ो ने उसकी सहायता न की। इससे हैदर अली बहुत रुष्ट था।

(२) अमेरिका की स्वतन्त्रता के युद्ध में जो इङ्गलैंड और अमेरिका के बस्ती वासियों के मध्य हुआ, फ्रांस (1778 ई० में) में इंगलैंड

के विरोधी पक्ष में सम्मिलित हो गया। इस पर अंग्रेज़ो ने भारत में फ्राँसीसियों के प्रदेशों पर अधिकार कर लिया। उनमें बन्दरगाह *माहे* (Mahe) भी थी, जिससे हैदर अली का बहुत लाभ था। इस लिये उसने अंग्रेज़ों से *माहे* को ख़ाली कर देने को कहा, परन्तु अंग्रेज़ो ने उसकी परवाह न की। इस पर हैदर अली ने युद्ध छेड़ दिया।

घटनायें—हैदर अली ने एक विशाल सेना के साथ *करनाटक* पर आक्रमण किया और सारे प्रदेश को तहस-नहस कर डाला। अंग्रेज़ *कर्नल बेली* (Col. Baillie) की पराजय हुई और बक्सर *विजेता मेजर मनरो* (Major Munro) भी अपनी तोपें कांजीवरम के एक तालाब में फैंक कर स्वयं मद्रास भाग गया। इसके पश्चात् *सर आयर कूट* (Sir Eyer Coote) हैदर अली के विरुद्ध बढ़ा और उस ने *पोर्टोनोवो*, *पोलीलूर*, और *सोलनगढ़* स्थानों पर हैदर अली को हराया। उस समय फ्राँस से एक सहायक सेना आ पहुँची, जिससे हैदर अली का साहस बढ़ गया, किन्तु अभी युद्ध हो रहा था कि 1782 ई० में हैदर अली की नासूर के कारण मृत्यु हो गई।

हैदर अली की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र *टीपू सुल्तान* ने युद्ध चालू रखा तथा कई एक प्रदेश भी जीते। अन्त में 1784 ई० में *मंगलोर* के सन्धिपत्र द्वारा दोनों पक्षों में सन्धि हो गई।

परिणाम—*मंगलोर* (Mangalore) के *सन्धि-पत्र द्वारा* एक दूसरे के विजित प्रदेश तथा बन्दी सैनिक लौटा दिये गये।

Q. Write a short note on the money difficulties and money exactions of Warren Hastings.

(P. U. 1930)

प्रश्न—*वारन हेस्टिंग्ज़ की आर्थिक कठिनाइयों और बलपूर्वक रुपया उगाहने के उपायो पर नोट लिखो।*

वारन हेस्टिंग्ज़ को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था, जिसका कारण यह था कि मराटों तथा हैदर अली के विरुद्ध लड़े गये युद्धो पर बहुत सा धन व्यय हो गया था। इसके अतिरिक्त

आर्थिक कठिनाइयाँ

शासन प्रबन्ध के लिये भी धन की आवश्यकता थी। उधर कम्पनी के डाइरेक्टरों की ओर से भी रुपये की माँग बढ़ रही थी। इस लिये रुपये की आवश्यकता से विवश हो कर हेस्टिंग्ज़ ने कुछ एक अनुचित उपायों से रुपया प्राप्त किया। इन उपायो में से दो विशेषतया उल्लेखनीय हैं :-

(१) चेतसिंह से झगड़ा (Raja Chet Singh)—चेतसिंह अवध के नवाब के अधीन *बनारस* का राजा था। वह प्रति वर्ष साढ़े बाईस लाख रुपया नवाब को "कर" देता था। परन्तु एक सन्धि-पत्र के अनुसार नवाब ने बनारस का प्रदेश कम्पनी को दे दिया था। जिससे चेतसिंह कम्पनी के अधीन करदायी राजा बन गया। हेस्टिंग्ज़ ने आर्थिक कठिनाइयों से विवश होकर उससे 1778 ई० में युद्ध के व्यय के लिये पाँच लाख रुपया वार्षिक और माँगा। चेतसिह ने दो वर्ष तो यह रुपया दिया, परन्तु फिर टाल मटोल की। इस पर हेस्टिंग्ज़ ने राजा पर *पचास लाख* रुपया दण्ड लगा दिया और उसे उगाहने स्वयं बनारस पहुँचा और राजा को बन्दी बना लिया। इस घटना से प्रजा वारन हेस्टिंग्ज़ के विरुद्ध भड़क उठी और वारन हेस्टिंग्ज़ को प्राण बचा कर *चुनार* (Chunar) भाग जाना पड़ा। राजा चेतसिंह भी अंग्रेजों की कैद से भाग निकला। अंग्रेजो ने इस उपद्रव को तो दबा दिया परन्तु इस झगड़े से कम्पनी को कोई विशेष रुपया हाथ न लगा। इतना अवश्य हुआ कि चेतसिह से राज्य छीन करके उस के भाँजे को राजा बना दिया गया और कर की राशि बढ़ा कर चालीस लाख रुपया वार्षिक कर दी गई।

(२) अवध की बेगमों की घटना—(Begums of Oudh)—जब बनारस से कोई धन राशि हाथ न लगी, तो हेस्टिंग्ज़ ने दूसरा उपाय सोचा। अवध के नवाब *आसफुद्दौला* (शुजाउद्दौला के पुत्र) ने अंग्रेजों का बहुत रुपया देना था, क्योंकि उसने पिछले कई वर्षों से अपने प्रान्त में स्थित अङ्गरेज़ी सेना का व्यय नहीं चुकाया था। हेस्टिंग्ज़ ने उससे रुपया माँगा, किन्तु उसने उत्तर दिया कि मेरे पास रुपया नहीं है, क्योंकि मेरी *माता* और *दादी* (Begums of Oudh) ने सारा

रुपया अपने अधिकार में कर लिया है। यदि आप बेगमों से रुपया प्राप्त करने में मेरी सहायता करें तो मैं अपना सारा ऋण चुकता कर दूँगा। हेस्टिंग्ज़ का विचार था कि बेगमों ने चेतसिंह के विद्रोह में उसकी सहायता की थी अतएव उसने इस काम में नवाब की सहायता की और बेगमों को तंग करके ७६ लाख रुपया प्राप्त कर लिया।

नोट—हेस्टिंग्ज के उपरिलिखित दोनों कार्य अनुचित थे। उसने बेगमों तथा चेतसिंह पर अत्याचार किया, इसलिये जब वह इंगलैंड लौटा तो उस पर इन दोषो तथा इनके अतिरिक्त रुहेलो के युद्ध में अवध के नवाब की सहायता करने, तथा नन्दकुमार को फासी पर लटकाने के आधार पर मुकद्दमा चलाया गया, जो लगभग सात वर्ष तक चलता रहा। इसमे उसका सारा उपार्जित धन व्यय हो गया, किन्तु अन्त में वह दोष मुक्त कर दिया गया और कम्पनी ने उसकी वृत्ति नियत कर दी।

☞ Q. Write a short note on Pitt's India Act. (Important)

प्रश्न—*पिट्स इण्डिया ऐक्ट पर नोट लिखो।*

कारण—(१) रेगुलेटिग ऐक्ट में कई त्रुटियाँ रह गई थीं। इस लिये 1784 ई० में इंगलैंड के प्रधान मन्त्री पिट् (Pitt) ने भारत के शासन प्रबन्ध को अच्छा बनाने के लिये एक नया राज्य नियम बनाया।

पिट्स इंडिया ऐक्ट

(२) दूसरा कारण यह था कि 1783 ई० में अमेरिका अंग्रेज़ी सरकार की अधीनता से स्वतन्त्र हो गया था और पार्लियामेंट को भय था कि कहीं भारत भी हाथ से न जाता रहे, इसलिये वह ईस्ट इंडिया कम्पनी पर अधिकार पाना चाहती थी।

धारायें (Provisions)—(१) इस ऐक्ट की विशेष बात यह थी कि कम्पनी का व्यापारिक प्रबन्ध राजनैतिक प्रबन्ध से पृथक् कर दिया गया। *व्यापारिक प्रबन्ध* तो कम्पनी के संचालकों के अधीन ही रहने दिया गया, परन्तु *राजनैतिक प्रबन्ध* छः मेम्बरों के एक बोर्ड (सभा) को सौंप दिया गया, जिसे *बोर्ड आफ कन्ट्रोल* (Board of

Control) कहते थे। इन सदस्यों की नियुक्ति सम्राट् स्वयं करता था।

(२) गवर्नर जनरल की कौंसल के मम्बरों की सख्या चार के स्थान पर तीन कर दी गई।

(३) गवर्नर जनरल को बम्बई और मद्रास की गवर्नमेंटों पर पूर्ण अधिकार दिया गया।

(४) यह भी निर्णय हुआ कि कम्पनी को देशी राजाओं के सम्बन्ध में हस्ताक्षेप नहीं करना चाहिये।

इस ऐक्ट के पास होने से कम्पनी के काम में *पार्लियामेंट को हस्ताक्षेप करने का विस्तृत अधिकार मिल गया।* यह ऐक्ट थोड़े बहुत परिवर्तनों के साथ 1858 ई० तक रहा।

नोट—एक अन्य कानून द्वारा गवर्नर जनरल को विशेष आवश्यकता के समय कौंसिल के बहुमत को अस्वीकार कर देने का भी अधिकार मिल गया।

Q. How far was Warren Hastings responsible for the establishment of the British rule in India?

प्रश्न—*स्पष्टतापूर्वक लिखो कि भारत में अंगरेज़ी राज्य स्थापित करने मे हेस्टिंग्ज़ का हाथ कहा तक है? अर्थात् वारन हेस्टिंग्ज़ के प्रसिद्ध पराक्रमो का वर्णन करो।*

वारन हेस्टिंग्ज़ के पराक्रम

वारन हेस्टिंग्ज़ एक बड़ा योग्य व्यक्ति था। उसकी गणना भारत के बहुत बड़े गवर्नर जनरलो और इंगलैंड के प्रथम श्रेणी के राजनीतिज्ञो में होती है। उसका सबसे बड़ा काम यह है कि उसने कम्पनी के प्रदेशों को *बड़ी कठिनाई के समय छिन जाने से बचा लिया और विजित प्रदेशो में एक अच्छा शासन स्थापित किया।*

वारन हेस्टिंग्ज़ के गवर्नर नियुक्त होने के समय क्लाइव के द्वैत-शासन (Dual Government) के कारण बंगाल में बड़ी अशान्ति फैली हुई थी। शासन प्रबन्ध अत्यन्त अधूरा था। न कोई कानून था और न कोई शासन रीति का ढंग। कोष खाली था। भूमिकर उगाहने का कोई उचित प्रबन्ध न था और न्याय विभाग की अवस्था तो बहुत ही बुरी थी।

वारन हेस्टिंग्ज़ ने आते ही द्वैत शासन की समाप्ति कर दी और उपयोगी सुधार प्रचलित किये। उसने भूमिकर उगाहने का बहुत अच्छा प्रबन्ध किया। प्रत्येक ज़िले में अंग्रेज़ी कलेक्टर नियुक्त किये। दीवानी तथा फ़ौजदारी अदालतें स्थापित कीं। कानून का एक संग्रह तैयार किया और कई प्रकार के व्यय घटाकर कम्पनी की आर्थिक दशा का सुधार किया। *इस प्रकार उसने देश में कुप्रबन्ध को समाप्त करके एक नियमबद्ध शासन स्थापित किया।*

इसके अतिरिक्त यह समय कम्पनी तथा हेस्टिंग्ज़ के लिये कठोर चिन्ता का समय था। मराठे और हैदर अली अंग्रेज़ों के शत्रु थे, उधर इंगलैंड अमेरिका की स्वतन्त्रता के युद्ध में उलझा हुआ था और वहाँ से किसी प्रकार की सहायता नहीं पहुँच सकती थी। इस पर विशेष यह कि हेस्टिंग्ज़ की अपनी कौंसल उसके विरुद्ध थी। परन्तु हेस्टिंग्ज़ ने ऐसे समय में साहस और धैर्य से काम लिया। उसने मराठों और हैदर अली का बड़ी वीरता से सामना किया और कम्पनी के प्रदेशों को नष्ट होने से बचा लिया। सत्य तो यह है कि अंग्रेज़ी राज्य की नींव को सुदृढ़ करने वाला हेस्टिंग्ज़ ही था। *इस कारण हेस्टिंग्ज भारत में अङ्गरेजी शासन के संस्थापकों में एक उच्च पदवी रखता है।*

लार्ड कार्नवालिस

(LORD CORNWALLIS)

1786—1793

घटनायें—*(१) सुधार (२) स्थायी बन्दोबस्त (३) मैसूर का युद्ध।*

☞ Q. Give a brief account of the administration of Lord Cornwallis with special reference to his judicial and revenue reforms.

(P U 1918-20-25-34-38-48-50) (V. Important)

प्रश्न—*लार्ड कार्नवालिस के शासन काल का हाल लिखो और उन के सुधारों का वर्णन करो।*

कार्नवालिस इंगलैंड का एक धनवान् और प्रभावशाली ज़मींदार था। वह गवर्नर जनरल के पद के अतिरिक्त कमाण्डर - इन - चीफ़ (सेना-पति) भी नियुक्त होकर आया था और उसे एक नये कानून द्वारा अपनी कौंसिल की सम्मति को अस्वीकृत करने का अधिकार भी मिल गया था।

कार्नवालिस की नियुक्ति

लार्ड कार्नवालिस

लार्ड कार्नवालिस का नाम सुधारों के कारण विशेष रूप से प्रसिद्ध हो गया है। उसके ये सुधार तीन भागों में बाँटे जा सकते हैं।

सुधार (Reforms)

(१) घूँसखोरी को रोकना। (२) न्याय सम्बन्धी सुधार।
(३) भूमि-कर सम्बन्धी सुधार अर्थात् बंगाल का स्थायी बन्दोबस्त।

(१) घूँसखोरी को रोकना—

उस समय कम्पनी के नौकरों के वेतन बड़े थोड़े थे और पैन्शन का भी कोई नियम न था। इसलिये कम्पनी के नौकर अपनी आय को बढ़ाने के लिये निजी व्यापार भी करते थे और घूँस भी बहुत लेते थे। कार्नवालिस ने आते ही इस दोष को दूर किया। उसने वेतनों में उचित वृद्धि की और निजी व्यापार तथा घूँसखोरी को रोकने के लिये कठोर नियम बनाये।

(२) न्याय सम्बन्धी सुधार (Judicial Reforms)

(१) डिस्ट्रिक्ट जजों की नियुक्ति—कार्नवालिस के आने से पहले कलेक्टर के ज़िम्मे दो काम थे। वह ज़िला का भूमिकर भी उगाहाया करता था और दीवानी अदालत का जज भी होता था। कार्नवालिस

ने ये दोनों काम पृथक् कर दिये। कलेक्टर का काम केवल लगान उगाहना ही नियत किया गया और दीवानी अदालतों के लिये पृथक् डिस्ट्रिक्ट जज नियुक्त किये गये।

(२) *अपील की अदालतें*—इन डिस्ट्रिक्ट अदालतों के विरुद्ध अपील सुनने के लिये चार बड़ी अदालतें *कलकत्ता* (Calcutta), *ढाका* (Dacca); *मुर्शिदाबाद* (Murshidabad) और *पटना* (Patna) में स्थापित की गईं परन्तु अपील की अन्तिम अदालतें पहले की भाँति सदर दीवानी अदालत और सदर निज़ामत अदालत ही रहीं।

(३) *कठोर दण्डों का हटाना*—प्राचीन काल के कठोर दण्ड हाथ-पाँव काट देना आदि हटा दिये गये।

(४) *दण्ड विधान*—एक नया दण्ड विधान प्रचलित किया गया जिसे *कार्नवालिस कोड* (Cornwallis Code) कहते थे।

(५) *पुलिस सुधार*—पुलिस विभाग मे सुधार किये गये। कार्नवालिस से पूर्व पुलिस का काम अर्थात् शान्ति स्थापित रखना, सन्देह-युक्त मनुष्यो को गरिफ्तार करना, इत्यादि प्रायः ज़मींदारो के हाथो में था। कार्नवालिस ने यह काम उन से ले लिया। पुलिस के प्रबन्ध के लिये प्रत्येक ज़िला कई थानों मे बाँटा गया और प्रत्येक थाने में एक-एक *दारोग़ा* नियुक्त किया गया जिसके अधीन सिपाही होते थे। ये सब दारोगे ज़िले के एक बड़े पुलिस अफसर के अधीन होते थे।

कार्नवालिस के सुधार अत्यन्त लाभकारी थे। उसने *न्याय-विभाग को सुदृढ़ कर दिया*, और घूँसख़ोरी का अन्त किया। परन्तु उसने *एक भारी भूल* की जो उसने यह प्रथा चला दी कि *भारतवासी किसी ऊँचे पद पर नियुक्त न किये जावें क्योकि उसे उनकी योग्यता पर विश्वास न था*। इससे सारा शासन प्रबन्ध अंग्रेज़ अधिकारियों को ही करना पड़ा जिससे यह बहुत महगा हो गया।

(३) ☞ **स्थायी बन्दोबस्त**—

कार्नवालिस के शासन काल की सबसे प्रसिद्ध घटना बङ्गाल का स्थायी बन्दोबस्त (Permanent Settlement of Bengal) है। अंग्रेज़ी

शासन स्थापित होने से पहले भूमि-कर उगाहने की यह रीति थी कि अधिकारी जिन्हे *जमींदार* कहते थे, कृषकों से लगान उगाह कर राज-कोष में जमा कर देते थे और अपना कमीशन रख लेते थे। धीरे-धीरे ज़मींदार का पद पैतृक हो गया।

जब इलाहाबाद के सन्धिपत्र के अनुसार 1765 में बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी अंग्रेज़ों को मिली तो *क्लाईव* ने लगान उगाहने के पुराने ढङ्ग में कोई परिवर्तन न किया, किन्तु *वारन हेस्टिंग्ज* ने आय बढ़ाने के लिये भूमियाँ ठेके पर देनी आरम्भ कर दीं अर्थात जो व्यक्ति अधिक बोली दे वह ज़मींदार नियुक्त हो जाये। पहले-पहल (1772 ई० में) तो यह ठेका पाँच वर्ष के लिये दिया गया, फिर वार्षिक कर दिया गया, किन्तु यह रीति अत्यन्त असन्तोषजनक सिद्ध हुई। इसमें निम्नलिखित त्रुटियाँ थीं।

(१) ज़मींदार नीलामी के समय इतनी अधिक बोली दे देते थे कि वे उस रकम को भूमि की आय से पूरा न कर सकते थे। इससे सरकार की आय अनिश्चित हो गई और ज़मींदार भी निर्धन हो गये।

(२) चूँकि किसी जमींदार को विश्वास न होता था कि अगले वर्ष इस जमीन का ठेका उसे मिलेगा या नहीं, इसलिये वे भूमि की दशा सुधारने में ध्यान न देते थे।

(३) उन्हे यह भी भय था कि भूमि की दशा सुधर जाने पर ठेके की रकम बढ़ा दी जायगी।

इसका परिणाम यह हुआ कि बहुत सी भूमियाँ ऊसर हो गईं। इसलिये कम्पनी के संचालकों ने इस रीति को पसन्द न किया। जब *लार्ड कार्नवालिस* गवर्नर जनरल बनकर आया तो पूर्ण सोच विचार के पश्चात इस परिणाम पर पहुँचा कि भूमि की दशा को सुधारने और कम्पनी की आय को निश्चित बनाने के लिये यह आवश्यक है कि जमींदारों को इस बात का विश्वास दिलाया जाय कि *भूमि सदा के लिये उनके पास रहेगी और भूमि की दशा सुधारने की अवस्था में भूमि-कर बढ़ाया नही जायगा*। इसलिये **1793** ई० में *लार्ड कार्नवालिस* ने भूमि

पर ज़मीदारो का अधिकार मान लिया और राजकीय टैक्स भी सदा के लिये एक ही निश्चित कर दिया। इस प्रबन्ध को स्थायी बन्दोबस्त कहते हैं।

स्थायी बन्दोबस्त के लाभ (Merits) :—

(१) क्योंकि भूमि-कर की रकम सदा के लिये निश्चित हो गई इसलिये अब ज़मींदारों ने अपनी भूमियों को सुधारना आरम्भ किया और खेती बाड़ी अधिक होने लग गई। बहुत सी ऊसर भूमियाँ भी उपजाऊ बन गईं।

(२) सरकार की आय जो पहिले अनिश्चित होती थी, अब स्थाई तथा निश्चित हो गई और वार्षिक बजट (Budget) बनाना सुगम हो गया।

(३) सरकार को समय समय पर लगान नियत करने के झंझट से छुटकारा मिल गया।

(४) बंगाल भारत में सबसे अधिक उपजाऊ प्रान्त बन गया। ज़मींदार धनवान हो गये और भयंकर अकाल पहले की अपेक्षा घट गये।

(५) ज़मींदारों के धनवान बन जाने से व्यापार में भी उन्नति हो गई।

(६) सबसे बड़ा राजनैतिक लाभ यह हुआ कि बङ्गाल में ज़मींदारों की एक राजभक्त श्रेणी स्थापित हो गई क्योंकि वे इस राज्य की कृपा से ही धनाढ्य बने थे। इन लोगों ने 1857 ई० के विद्रोह में सरकार की बहुत सहायता की।

स्थायी बन्दोबस्त की हानियाँ (Demerits) :—

(१) स्थाई बन्दोबस्त से यद्यपि ज़मींदारों को लाभ हुआ किन्तु कृषकों की दशा पहले की अपेक्षा बिगड़ गई, क्योंकि इस सम्बन्ध में कोई नियम न था कि ज़मींदार कृपको से कितनी रकम उगाहे। उन बेचारों का जीवन ज़मींदारों की दया पर निर्भर हो गया और उनकी रक्षा के लिये बाद में कई नियम बनाने पड़े।

(२) सरकार का व्यय प्रतिदिन बढ़ता जाता था, किन्तु उसकी आय की रकम नियत होने से सरकार को हानि उठानी पड़ी।

(३) इस हानि को पूरा करने के लिये सरकार को दूसरे प्रान्तो पर अधिक कर लगाने पड़े।

☞ *संक्षेपतया, इस स्थायी बन्दोबसत से केवल जिमीदारों को लाभ हुआ और कम्पनी तथा कृषको के लाभ को बलिदान करना पडा।*

मैसूर का तीसरा युद्ध (Third Mysore War) 1790–92—लार्ड कार्नवालिस के समय की एक प्रसिद्ध घटना मैसूर का तीसरा युद्ध है जो अंग्रेजों और मैसूर के नवाब *टीपू सुल्तान* में हुआ।

कारण—उन दिनो टीपू सुल्तान और कम्पनी में शत्रुता थी और युद्ध के छिड़ जाने का भय था। टीपू सागरी किनारे पर अपना अधिकार करना चाहता था ताकि युद्ध छिड़ने पर वह फ्राँसीसियो से सहायता प्राप्त कर सके। इस कारण 1798 ई० में टीपू सुल्तान ने ट्रावनकोर (Travancore) की हिन्दू रियासत पर आक्रमण कर दिया। वहाँ का राजा अंग्रेजो के संरक्षण में था, इसलिये उसने कार्नवालिस से सहायता की प्रार्थना की। कार्नवालिस ने मराठों और निज़ाम को साथ मिला कर टीपू के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी।

टीपू

घटनायें—पहिले वर्ष तो अंग्रेजों को असफलता हुई। इसलिये दूसरे वर्ष लार्ड कार्नवालिस ने सेना का संचालन स्वयं किया। उसने *बंगलौर* (Bangalore) पर अधिकार कर लिया तथा आगे बढ़कर टीपू को *अरीकेरा* (Arikera) के स्थान पर पराजित किया, परन्तु भोजन सामग्री की कमी के कारण गवर्नर जनरल को पीछे हटना पड़ा। 1792 ई० में कार्नवालिस ने फिर युद्ध आरम्भ कर दिया और टीपू को श्रृङ्गापट्टम में घेर लिया। अन्त में विजय की आशा न देखकर टीपू

ने श्रृंङ्गापट्टम के स्थान पर सन्धि कर ली।

श्रृंङ्गापट्टम का सन्धि पत्र, 1792 ई० —इस सन्धि-पत्र द्वारा टीपू ने अपना आधा राज्य अंग्रेजों को दे दिया और तीन करोड़ रुपया युद्ध के दण्ड स्वरूप तथा दो पुत्र ज़मानत के तौर पर दिये। इस संधि से मैसूर का राज्य उत्तर को छोड़ कर शेष तीनों ओर से अंग्रेजी राज्य से घिर गया।

नोट—विजित प्रदेश विजेताओं ने आपस मे बाँट लिया। डिन्डीगुल, बारा महल और मालाबार के जिले अङ्गरेजों को मिले। मैसूर का कुछ भाग निजाम को और मराठों को मिला।

सर जान शोर

SIR JOHN SHORE

1793—1798

लार्ड कार्नवालिस के बाद सर जान शोर गवर्नर जनरल नियुक्त हुआ। वह देशी राज्यों मे किसी प्रकार का हस्ताक्षेप नहीं करना चाहता था। मराठे उन दिनो उन्नति पर थे। जब उन्हे विश्वास हो गया कि सर जान शोर देशी राज्यों के झगड़ों में हस्ताक्षेप नहीं करेगा तो उन्होंने निज़ाम पर आक्रमण कर दिया क्योंकि निज़ाम ने चौथ की रकम नहीं चुकाई थी। निज़ाम ने किसी पहले सन्धि-पत्र की शर्तों के अनुसार अंग्रेजों से सहायता की प्रार्थना की पर सर जान शोर ने साफ इनकार कर दिया। निज़ाम को *खारदा या कुर्दला* (Kharda or Kurdala) के स्थान पर करारी हार हुई। इस से मराठों की शक्ति बहुत बढ़ गई। साथ ही निज़ाम को अङ्गरेजों पर विश्वास न रहा और उसने अंग्रेज़ अफसरों को निकाल कर फ्रांसीसी अफसर रख लिये।

खारदा की लड़ाई 1795

लार्ड वैलज़ली

(LORD WELLESLEY)

1798—1805

घटनायें

(१) सबसिडिएरी सिस्टम, (२) मैसूर का चौथा युद्ध, (३) बसीन की सन्धि, (४) मराठो का दूसरा युद्ध, (५) मराठों का तीसरा युद्ध, (६) सम्मिश्रण ।

लार्ड वैलज़ली — **लार्ड वैलज़ली** 1798 ई० से 1805 ई० तक भारत में अंग्रेजी प्रदेशो का गवर्नर जनरल रहा । वह एक अत्यत योग्य तथा बुद्धिमान शासक था । उसकी गणना भारत के प्रथम श्रेणी के गवर्नर जनरलों में की जाती है । उसका सब से मुख्य कार्य यह है कि उसने कम्पनी को भारत में सर्वोच्च शक्ति बना दिया ।

लार्ड वैलजली

वैलजली की नीति (Policy) — वैलज़ली की नियुक्ति के समय कम्पनी की दशा बड़ी मंदी थी इस का कारण यह था कि सर जान शोर की हस्ताक्षेप की नीति ने कम्पनी के लिये बड़ी कठिनाइयाँ पैदा कर दी थीं ।

(१) निज़ाम (Nizam) हैदराबाद को मराठों ने हरा दिया था और वह अंग्रेजों से सहायता न मिलने के कारण उन का शत्रु बना हुआ था । (२) टीपू सुल्तान (Tipu) ने अपने साधनो को बहुत बढ़ा लिया था । वह अपनी पहली पराजय का बदला लेना चाहता था और इस

उद्देश्य के लिये फ्रांसीसियों के साथ तानबान कर रहा (३) था काबुल का अमीर शाहज़मान भी भारत पर आक्रमण की तैयारियाँ कर रहा था। (४) *मराठे* (Marathas) मध्य भारत में खूब शक्तिवान् थे और (५) सबसे बुरी बात यह थी कि देशी राजाओं के दरबारों में *फ्रांसीसी प्रभाव* अत्याधिक बढ़ गया था। (६) इस पर विशेषता यह कि उस समय योरुप में इंगलैंड फ्रांस के विरुद्ध जीवन और मृत्यु के संग्राम में फंसा हुआ था और फ्राँसीसी सेनापति *नैपोलियन बोनापार्ट* (Napoleon Bonaparte) भारत विजय की कामना से मिस्र तक आ पहुँचा था।
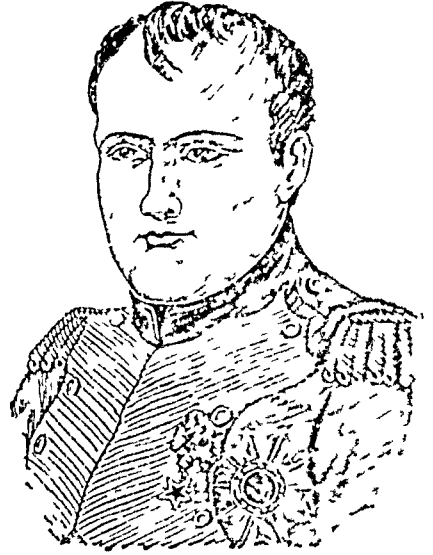
नैपोलियन

वैलज़ाली ने यहाँ पहुँचने से पहले ही कम्पनी की इस चिन्ताजनक अवस्था पर विचार किया था और वह इस परिणाम पर पहुँच चुका था कि अंग्रेज़ों की स्थिति के लिये यह आवश्यक है कि वे भारत में सर्वोच्च अधिकारी होकर रहें। *इसलिये उसने अहस्तक्षेप की नीति का परित्याग करके हस्तक्षेप की नीति* (Forward Policy) *को अपनाया और सबसिडियरी सिस्टम को अपनी नीति का मुख्य आधार बनाया।*

☞ Q. Write a short note on the Subsidiary System. (V. Important)

प्रश्न—*सबसिडियरी सिस्टम पर संक्षिप्त नोट लिखो।*

सबसिडियरी सिस्टम

लार्ड वैलज़ाली ने अंग्रेजी प्रभाव को सर्वोच्च बनाने और फ्राँसीसी प्रभाव का अन्त करने के लिये एक *विशेष योजना तैयार की* जो सबसिडियरी सिस्टम या सहायक सन्धि के नाम से प्रसिद्ध है।

शर्तें—सन्धि को अपनाने वाले राजाओं या नवाबों के लिये निम्नलिखित शर्तों का मानना आवश्यक था :—

(१) वे कम्पनी को अपना सर्वोच्च प्रभु स्वीकार करें।

(२) अंग्रेजों के अतिरिक्त किसी यूरोपियन को अपने यहाँ नौकर न रखें और जो पहले से हैं उन्हें निकाल दें।

(३) किसी और शासक के साथ अंग्रेजी सरकार की अनुमति के बिना सन्धि या युद्ध न करें।

(४) अपने दरबार में अंग्रेजी रैजीडेंट (Resident) रखें।

(५) यदि उनके बीच कोई आपसी झगड़ा उठ खड़ा हो तो अंग्रेजों को पंच मानें।

(६) अपने प्रदेश में एक अंग्रेजी सेना रखें और इसका व्यय दें। (बाद में नकद व्यय देने के स्थान पर कोई प्रदेश दिया जाने लगा)।

(७) इन शर्तों को मानने के बदले में कम्पनी ने उस राज्य को वाह्य आक्रमणों और भीतरी विद्रोहों से बचाने का ज़िम्मा लिया।

किस किस ने माना—वैलज़ली ने सब बड़ी बड़ी रियासतों को सबसिडियरी सिस्टम स्वीकार करने को कहा और उसे अपने उद्देश्य में पर्याप्त सफलता हुई।

(१) सबसे प्रथम **निज़ाम** हैदराबाद ने इसे अपनाया, क्योंकि वह मराठों से हार खाकर निर्बल हो गया था। इस प्रकार वह अंग्रेज़ों के सर्वथा अधीन हो गया।

(२) वैलजली द्वारा विवश किये जाने पर **अवध** के *नवाब* ने भी उसे मान लिया और *रुहेलखण्ड, गोरखपुर* तथा *दोआब* का अपना प्रदेश कम्पनी को दे दिया।

(३) टीपू सुल्तान ने इसे मानने से निषेध कर दिया। इसलिये उस के विरुद्ध युद्ध छिड़ गया। वह मैसूर के चौथे युद्ध मे मारा गया और *मैसूर के राजा* **कृष्ण** ने इसे अपना लिया। इस प्रकार मैसूर भी कम्पनी के अधीन हो गया।

(४) **पेशवा** *बाजीराव द्वितीय* ने होल्कर के हाथों हार खाकर बम्बई सरकार के साथ बसीन की सन्धि की और सबसिडियरी सिस्टम को मान

लिया। इस प्रकार मराठा राज्य का शिरोमणि भी अङ्गरेज़ों के अधीन हो गया।

(५) **भोंसला** और **सिन्धिया** ने मराठों के दूसरे युद्ध में हार खाकर उसे स्वीकार कर लिया।

(६) इसके अतिरिक्त **गायकवाड़** तथा कई **राजपूत** *रियासतों* ने इसे स्वीकार कर लिया।

लाभ—यह रीति अंगरेज़ों के लिये अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुई। इससे उनकी स्थिति सुरक्षित हो गई। बहुत सी रियासतों पर अङ्गरेज़ी सरकार का प्रभाव जम गया और वे आपस में अङ्गरेज़ों के विरुद्ध सन्धि आदि करने में असमर्थ हो गई। फ्राँसीसी प्रभाव का अन्त हो गया। अंग्रेज़ों की आवश्यकता के लिये एक शिक्षित सेना अंग्रेज़ी सरकार का व्यय हुए बिना तैयार हो गई। संक्षेपतया यह कि कम्पनी *देश* में सर्वोच्च *शक्ति बन गई*।

त्रुटियाँ—परन्तु इस रीति में एक भारी त्रुटि भी थी और वह यह कि चूंकि राजाओं और नवाबों को बाह्य आक्रमणों और भीतरी विद्रोहों का भय न रहा, *इसलिये वे असावधान तथा विलास-प्रिय हो गये और राज्यों में अशान्ति फैल गई*। इसके *अतिरिक्त वे राजे और नवाब आत्म सम्मान भी खो बैठे। अन्ततः आगे चलकर ऐसे कई राज्यों को अङ्गरेजी राज्य में मिलाना पड़ा*।

☞ Q. State concisely the causes, main events and effects of the Fourth Mysore War. (P U. 1937)
(Important)

प्रश्न—*मैसूर के चौथे युद्ध के कारण प्रसिद्ध घटनायें और परिणाम संक्षेप से लिखो*।

यह युद्ध अंग्रेज़ों और टीपू सुल्तान के मध्य हुआ।

मैसूर का चौथा युद्ध 1799

कारण—(१) टीपू अंग्रेज़ों से अपनी पिछली हार का बदला लेने के लिये अपनी शक्ति बढ़ा रहा था और फ्राँसीसियों के साथ षड्यन्त्र कर

रहा था। वैलज़ली इस बात को सहन नहीं कर सकता था अतः उसने युद्ध की तैयारियाँ करनी आरम्भ कर दीं।

(२) वैलज़ली ने उसे सबसिडियरी सिस्टम अपना लेने को कहा, परन्तु उसने इनकार कर दिया। इस पर युद्ध छिड़ गया।

घटनायें—टीपू के विरुद्ध दो सेनायें भेजी गई। एक मद्रास से जनरल हैरिस (Harris) के अधीन और दूसरी बम्बई से जनरल स्टुअर्ट (Stuart) के अधीन। निज़ाम ने भी अपनी सहायक सेना गवर्नर जनरल के भाई *आर्थर वैलजली* (Arthur Wellesley) के अधीन भेजी। टीपू ने पहले बम्बई वाली सेना का सामना किया परन्तु *सदासीर* (Sadaseer) के स्थान पर हार खाई और फिर मद्रास वाली सेना का सामना किया परन्तु *मल्लावली* (Mallavali) के स्थान पर हार खाई। तब उसने अपने दुर्ग *श्रृङ्गापट्टम* का आश्रय लिया और वहीं लड़ता हुआ मारा गया। टीपू की मृत्यु से मैसूर से मुसलमानी राज्य का अन्त हो गया।

परिणाम—(१) इस युद्ध में अंग्रेज़ों के एक शक्तिशाली शत्रु टीपू सुल्तान का अन्त हो गया और फ्राँसीसी भारतीय सहायता से वञ्चित हो गये। (२) रियासत मैसूर का राज्य पुराने राज्य वञ्चित हिन्दू वंश के राजकुमार कृष्ण को सौंपा गया। (३) टीपू के लड़कों और परिवार को वैलोर (Vellore) भेज दिया गया। (४) रियासत मैसूर सबसिडियरी सिस्टम के अधीन हो गई और यह भी निश्चय हुआ कि यदि इस रियासत का प्रबन्ध अच्छा न हुआ तो कम्पनी प्रबन्ध अपने हाथों में ले लेगी।

Q. Write a short note on the Treaty of Bassein.

प्रश्न—*बसीन की सन्धि पर एक संक्षिप्त नोट लिखो।*

बसीन की सन्धि 1802

1800 ई० में योग्य मराठा नीतिज्ञ *नाना फ़र्नवीस* का देहान्त हो गया और उसके मरते ही मराठों में घरेलू युद्ध छिड़ गया। *दौलतराव सिन्धिया* और *जसवन्तराव होल्कर* जो उस समय मराठों में सबसे अधिक

शक्तिशाली सरदार थे। पेशवा बाजीराव द्वितीय को अपने-अपने प्रभाव में लाना चाहते थे। पेशवा ने सिंधिया का साथ दिया, परन्तु होल्कर ने पेशवा और सिन्धिया की संयुक्त सेनाओं को *पूना* (Poona) में बुरी तरह हराया। पेशवा भाग कर *बसीन* में अंग्रेज़ों की शरण में चला गया और वहाँ 31 दिसम्बर 1802 ई० को बसीन की सन्धि कर ली।

इस सन्धि-पत्र के द्वारा पेशवा ने सबसिडियरी सिस्टम की सब शर्तें मान लीं। उसने प्रतिज्ञा की कि :—

१. वह अंग्रेज़ों को सर्वोच्च प्रभु मानेगा।

२. अपने दरबार में एक रैज़ीडेण्ट रखेगा।

३. फ्रांसीसियों को अपने दरबार में नहीं रखेगा।

४. एक सहायक सेना अपने पास रखेगा जिसके व्यय के लिये २६ लाख रुपया वार्षिक आय वाले प्रदेश अंग्रेज़ों को देगा।

५. अंग्रेज़ों की आज्ञा के बिना किसी शासक से सन्धि या युद्ध नहीं करेगा।

६. गायकवाड़ और निज़ाम के साथ जो उसके झगड़े हैं उन में अंग्रेज़ों के द्वारा किये गये निर्णय को स्वीकार करेगा।

इस पर अंग्रेज़ों ने उसे पूना में कुशल-क्षेम से पहुँचा कर पेशवा की गद्दी पर बिठा दिया।

महत्व—यह सन्धिपत्र भारतवर्ष के अति प्रसिद्ध सन्धिपत्रों में गिना जाता है। कारण यह है कि *पेशवा के सबसिडियरी सिस्टम को स्वीकार कर लेने से प्रकट रूप में सब मराठा सरदारों की स्वतन्त्रता छिन गई।*

☞ Q. State concisely the causes main events and results of the Second Maratha War. (P.U. 1936-51) (Important)

प्रश्न—*मराठों के दूसरे युद्ध के कारण, प्रसिद्ध घटनायें तथा परिणाम सक्षिप्त रूप से लिखो।*

मराठों का दूसरा युद्ध 1803

कारण—सिन्धिया और भोसला ने वसीन के सन्धिपत्र को *मराठा जाति का अपमान समझा*, क्योंकि उनका विचार था कि पेशवा का अंग्रेज़ो की अधीनता स्वीकार कर लेना मानों सारी *मराठा जाति की स्वतन्त्रता का छिन जाना है*। इसलिये उन्होने अंग्रेज़ों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया, परन्तु होल्कर इस युद्ध से पृथक् रहा।

घटनायें—इस युद्ध के दो केन्द्र थे। (१) *दक्षिण* और (२) *उत्तरी भारत*।

दक्षिण में सेना की कमांड गवर्नर जनरल के भाई *सर आर्थर वैलजली* को (जो बाद में Duke of Wellington बना) सौंप दी गई। उसने सबसे पहले *अहमदनगर* (Ahmadnagar) पर अधिकार कर लिया और फिर मराठा सेनाओं को 1803 ई० में *असई* (Assaye) और *अरगॉव* (Argaon) के स्थानो पर हराया। इस पर भोसला ने *देवगाँव* (Deogaon) के सन्धिपत्र द्वारा सन्धि कर ली। *कटक* और *वालासोर* के प्रदेश अंग्रेज़ों को दे दिये और सबसिडियरी सिस्टम स्वीकार कर लिया।

उत्तरी भारत में सेना की कमान्ड *लार्ड लेक* (Lord Lake) को सौंप दी गई। उसने सिंधिया की सेनाओं को परास्त करके *अलीगढ़*, *देहली और आगरा* पर अधिकार जमा लिया। इससे देहली का मुग़ल वादशाह शाह आलम (Shah Alam) अंग्रेज़ो की शरण में आ गया। इसके थोड़े समय पश्चात् सिंधिया को *लासवाड़ी* (Laswari) (अलवर स्थित) के स्थान पर हार हुई और उसने *सुर्जी अर्जुनगाँव* (Surji Arjungaon) की सन्धि कर ली। इस सन्धिपत्र के अनुसार सिंधिया ने अहमदनगर, भड़ोच तथा गंगा और युमना के मध्य का अपना प्रदेश, और आगरा और देहली अंग्रेज़ो को दे दिये और सबसिडियरी सिस्टम स्वीकार कर लिया।

परिणाम—इस युद्ध से कम्पनी के अधिकृत देशों की संख्या वहुत बढ़ गई और मराठों की शक्ति घट गई। भोंसला और सिंधिया ने

MARATHA KINGDOMS

MUGHAL
KINGDOM
NEPAL
OUDH
SINDIA
BEHAR
HOLKAR
BENGAL
GEIKWAR
BHONSLAH
SEA
BAY OF
BENGAL
PEISHWA
NIZAM
MYSORE
CARNATIC
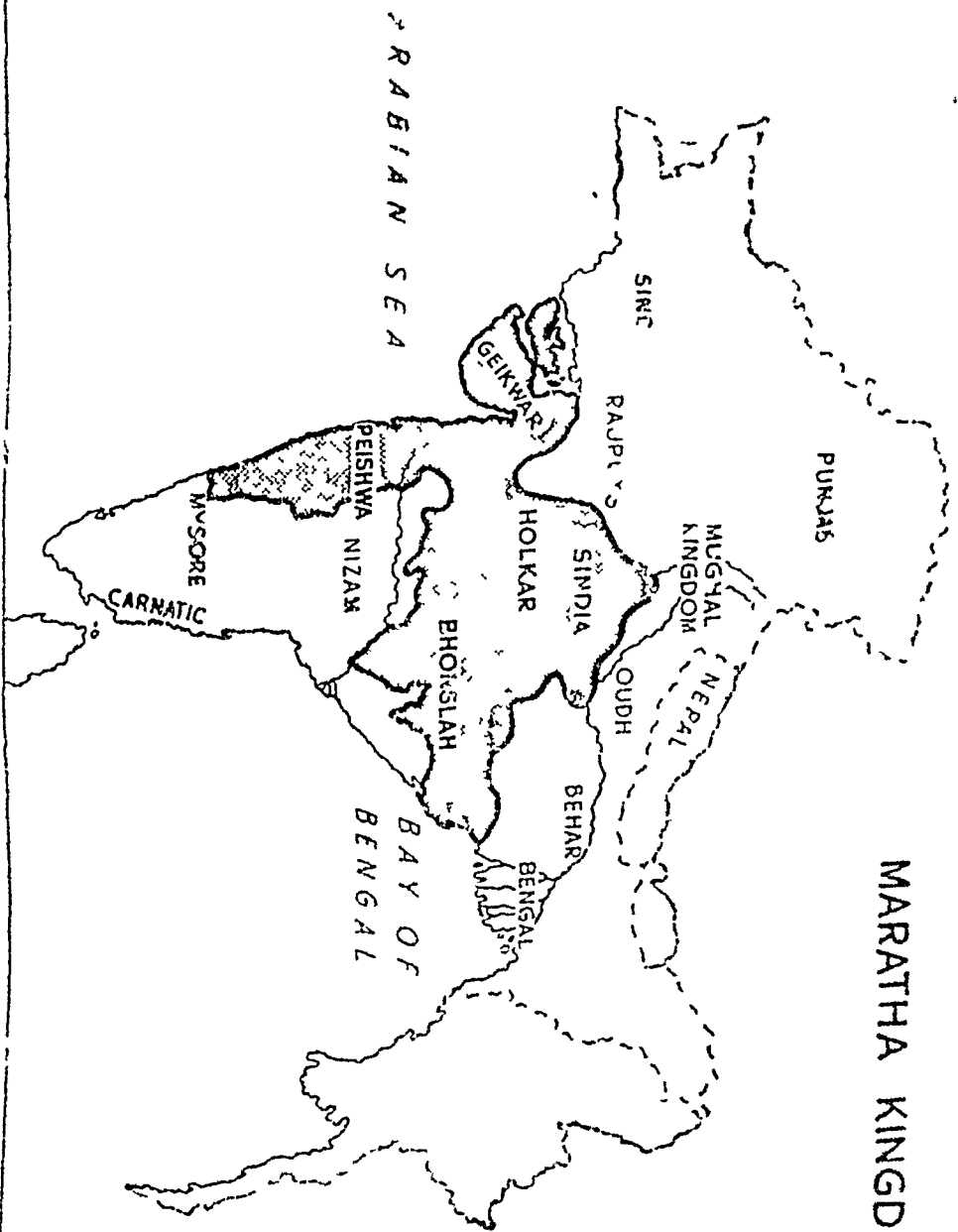
सबसिडियरी सिस्टम स्वीकार कर लिया।

Q. Briefly describe the Third Maratha War.

प्रश्न—*मराठो के तीसरे युद्ध का संक्षेप से वर्णन करो।*

होल्कर मराठो के दूसरे युद्ध में सम्मिलित नहीं हुआ था, परन्तु वह अपनी ओर से अंग्रेजो की रक्षा में आई राजपूत रियास्तो को नष्ट-भ्रष्ट कर रहा था और उनसे चौथ उगाह रहा था। जब उस ने *जयपुर* (Jaipur) *के राजा के प्रदेश पर हाथ मारना आरम्भ किया तो वैलज़ली ने उस के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया।*

मराठों का तीसरा युद्ध 1804—1805

घटनायें—होल्कर एक वीर शत्रु था। उसको आरम्भ मे अच्छी सफलता हुई और उसने *कर्नल मानसन* (Col. Monson) को जो उसके विरुद्ध भेजा गया था करारी हार दी। इसपर *भरतपुर का राजा* भी अङ्गरेज़ो की अधीनता से फिर गया और होल्कर के साथ मिल गया। दोनो ने मिलकर देहली पर घेरा डाल लिया, परन्तु सफलता न हुई। इसके पश्चात् *लार्ड लेक* उनके विरुद्ध बढ़ा और उसने होल्कर को *डीग* (Deeg) और *फ़रूखाबाद* (Farrukhabad) के स्थान पर परास्त किया और भरतपुर पर घेरा डाल दिया। इस दुर्ग पर चार बार हल्ला बोला गया, परन्तु प्रत्येक बार अंग्रेज़ो को परास्त होना पड़ा। अन्त में *भरतपुर* के राजा ने अंग्रेज़ो से सन्धि कर ली और होल्कर भाग कर *पंजाब* में रणजीत सिंह के पास चला गया।

होल्कर से युद्ध अभी हो ही रहा था कि वैलज़ली को वापस बुला लिया गया, क्योंकि कम्पनी के संचालक उसकी *हस्तक्षेप* की नीति से असन्तुष्ट थे। इस प्रकार होल्कर की शक्ति तोड़ी न जा सकी।

नोट—प्रायः इतिहास लेखक इस युद्ध को मराठों के दूसरे युद्ध का ही भाग समझते हैं।

Q. Write a note on the annexations of Lord Wellesley.

प्रश्न—*लार्ड वैलज़ली ने अंग्रेजी राज्य में कौन से प्रदेश सम्मिलित किये?*
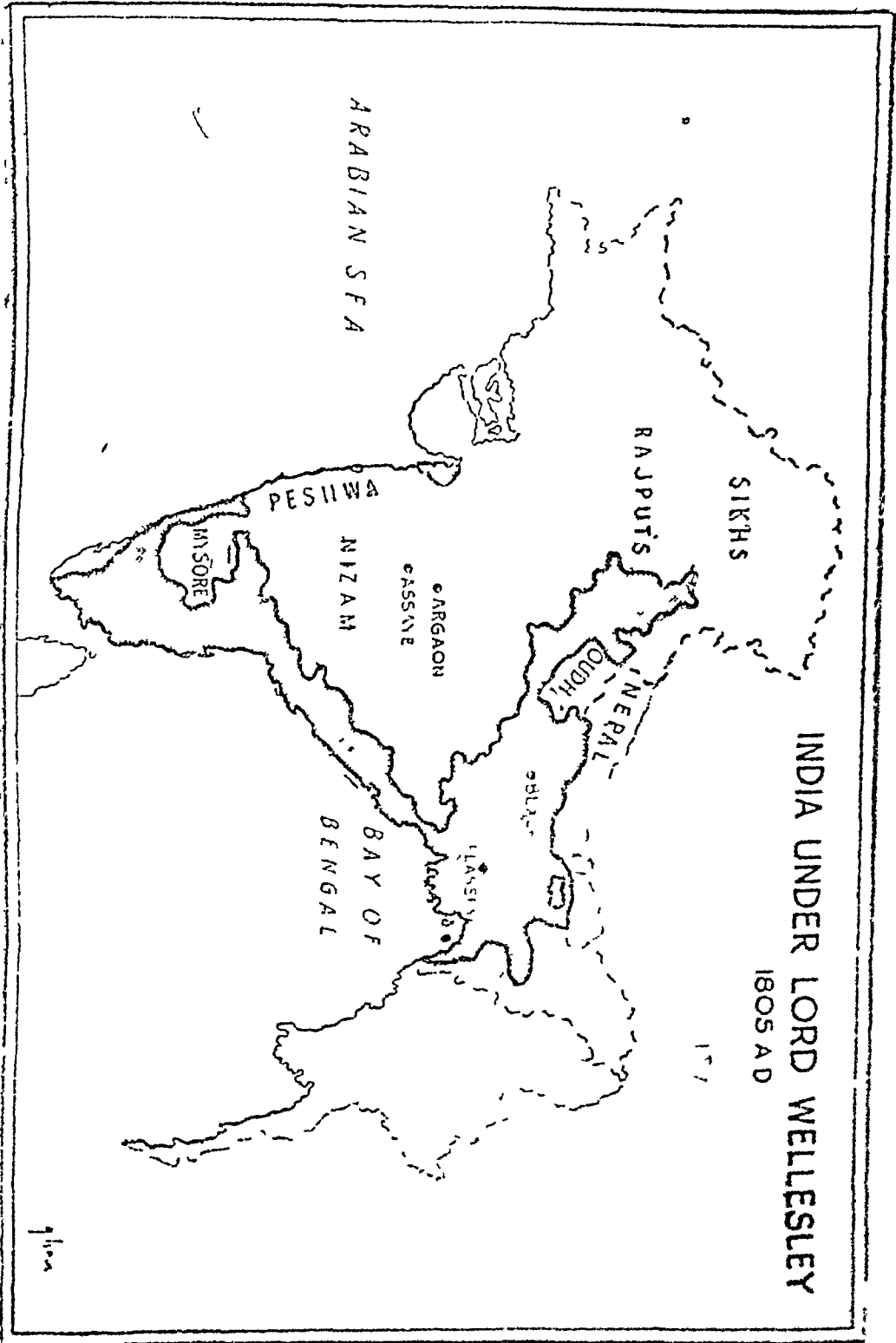
INDIA UNDER LORD WELLESLEY
1805 A D
SIKHS
RAJPUTS
NEPAL
OUDH
ARGAON
NIZAM
PESHWA
MYSORE
ARABIAN SEA
BAY OF BENGAL

वैलज़ली की यह भी नीति थी, कि वह छोटी-छोटी और शक्ति-हीन रियासतों को अंग्रेज़ी साम्राज्य में सम्मिलित कर ले। इसलिये उसने निम्नलिखित प्रदेश अंग्रेज़ी राज्य में सम्मिलित कर लिये।

सम्मिलित प्रदेश

(१) **तञ्जौर** (Tanjore)—तञ्जौर की रियासत में गद्दी के लिये झगड़ा उठ खड़ा हुआ। वैलज़ली ने उससे लाभ उठा कर वहाँ के राजा से रियासत का प्रबन्ध ले लिया और उसकी पेंशन नियत कर दी।

(२) **सूरत** (Surat)—सूरत के नवाब को भी पैन्शन देकर राज-गद्दी से पृथक् कर दिया गया और यह प्रदेश भी अंग्रेज़ी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया।

(३) **कर्नाटक** (Karnatak)—कर्नाटक का प्रदेश 1801 ई० में इस अपराध के आधार पर अंग्रेज़ी साम्राज्य में मिला लिया गया कि वहाँ का नवाब (उमदातुल उमरा) टीपू के साथ अंग्रेज़ों के विरुद्ध गुप्त रूप से पत्र-व्यवहार करता रहता था। नये नवाब को पैन्शन और उपाधि दे दी गई और उसे सिंहासन से पृथक् कर दिया गया।

नोट—तजौर के राजा और कर्नाटक के नवाब को अपनी उपाधियाँ रखने की आज्ञा दे दी गई थी।

(४) लार्ड वैलज़ली ने रियासतों के राजाओं या नवाबों से सहायक सेना के व्यय के लिये नकदी के स्थान में कोई प्रदेश लेना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार अवध के नवाब से *रुहेलखण्ड और गंगा तथा यमुना के मध्य प्रदेश का उत्तरी भाग* प्राप्त किया और हैदराबाद के निज़ाम से *बलारी तथा कड़ापा* के प्रदेश ले लिये।

(५) उपरिलिखित प्रदेशों के अतिरिक्त मैसूर के चौथे युद्ध से *कनारा* और *काइम्बेटोर* और मराठों के दूसरे युद्ध से कटक, *बालासोर*, *भड़ोच*, *अहमदनगर* आदि के प्रदेश प्राप्त किये।

☞ Q. How far is Lord Wellesley responsible

for the establishment of British supremacy in India ? (P. U. 1921-22-27-28-39) (Important)

Or

Briefly describe the outstanding achievements of Lord Wellesley. (P.U. 1944)

प्रश्न—*लार्ड वैलज़ली का भारतवर्ष में अङ्गरेजी साम्राज्य सुदृढ़ करने में क्या भाग है ?* *अथवा*

लार्ड वैलज़ली की प्रसिद्ध सफलताओं का वर्णन करो।

लार्ड वैलज़ली की सफलतायें

लार्ड वैलज़ली एक उच्च कोटि का नीतिज्ञ था। उसकी गणना भारतवर्ष के सर्वश्रेष्ठ गवर्नर जनरलों में की जाती है। उसकी सबसे बड़ी सफलता यह है कि *उसने कम्पनी के प्रभावशाली शत्रुओं का नाश कर दिया। बहुत सा प्रदेश अङ्गरेजी राज्य मे सम्मिलित किया और कम्पनी को भारतवर्ष मे सर्वोच्च शक्ति बना दिया।*

वैलज़ली की नियुक्ति के समय *कम्पनी की दशा बहुत असन्तोष-जनक थी।* सर जान शोर की अहस्ताक्षेप की नीति ने कम्पनी के लिये कई कठिनाइयाँ पैदा कर दी थीं। *निज़ाम* (Nizam) अंग्रेज़ो से सहायता न मिलने के कारण उनके विरुद्ध हो गया था। मैसूर का सुल्तान टीपू (Tipu) पहली पराजय का बदला लेने की चिन्ता में था और फ्रांसीसियो से गुप्त पत्र-व्यवहार कर रहा था। *मराठे* (Marathas) मध्य भारत में शक्तिशाली बन गये थे और देशी शासकों के दरबार में *फ्रॉसीसी प्रभाव* अधिक बढ़ा हुआ था। उधर फ्रांसीसी जरनैल *नैपोलियन बोनापार्ट* (Napoleon Bonaparte) भारतवर्ष पर विजय पाने के उद्देश्य से मिस्र तक पहुँच चुका था। *सारांश यह कि प्रत्येक दिशा में कम्पनी के शत्रु ही शत्रु थे।*

कम्पनी की ऐसी दुर्दशा देखकर वैलज़ली ने *हस्ताक्षेप की नीति* (Forward Policy) धारण कर ली और अंग्रेज़ी शक्ति को सर्वोच्च बनाने के लिये उसने *सबसिडियरी सिस्टम* (Subsidiary System) *को अपनी नीति का मुख्य आधार ठहराया।*

सबसे पहले *निज़ाम हैदराबाद* ने जो मराठों से परास्त होकर शक्तिहीन हो चुका था, इसको स्वीकार किया। उसके पश्चात् अवध के नवाब ने इसको मान लिया। इस प्रकार हैदराबाद और अवध की *रियासतें अंगरेज़ों के अधीन हो गई।*

टीपू सुल्तान को भी अंग्रेज़ों की अधीनता स्वीकार करने को कहा गया, परन्तु उसने इनकार कर दिया। इस कारण उसके विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया गया जिसको चौथा मैसूर का युद्ध कहते हैं। *टीपू* वीरता-पूर्वक लड़ता हुआ मारा गया। *इस प्रकार अङ्गरेजों के एक शक्तिशाली शत्रु का अन्त हो गया।* रियासत मैसूर के नवीन शासक *कृष्णा* ने सबसिडियरी सिस्टम को स्वीकार कर लिया।

मराठों के आपस के घरेलू युद्धों ने जो नाना फर्नवीस की मृत्यु पर आरम्भ हुये, वैलज़ली को उनके प्रभाव और शक्ति को क्षीण करने का भी अवसर दे दिया। 1802 ई० में अन्तिम पेशवा *बाजीराव द्वितीय* ने होल्कर के हाथों परास्त होकर *बसीन* (Bassein) की सन्धि कर ली और सबसिडियरी सिस्टम की सब शर्तें मान लीं। *इससे मराठा संघ* (Maratha Confederacy) *का शिरोमणि भी अङ्गरेजी राज्य के अधीन हो गया।*

सिंधिया और भोंसला ने बसीन के सन्धि-पत्र को राष्ट्रीय अपमान समझते हुए अंग्रेजों से युद्ध छेड़ दिया, जिसको मराठों का दूसरा युद्ध कहते हैं। इसमें उन्हें हार हुई और उन्होंने सबसिडियरी सिस्टम को स्वीकार कर लिया और वे भी अंग्रेज़ों के अधीन हो गये। उसके पश्चात् वैलज़ली ने *होल्कर* के विरुद्ध भी युद्ध घोषणा कर दी जिसको कई इतिहास लेखक मराठों का तीसरा युद्ध कहते हैं। इसमें होल्कर को बहुत हानि हुई। *इस प्रकार मराठों की शक्ति भी बहुत सीमा तक क्षीण हो गई।*

वैलज़ली ने न केवल शत्रुओं को ही एक एक करके समाप्त किया, परन्तु अंग्रेज़ी राज्य को भी विस्तृत किया। *कर्नाटक, तञ्जौर और सूरत* के प्रदेश अंग्रेज़ी राज्य में सम्मिलित कर लिये गये। इसके अतिरिक्त कई प्रदेश सहायक सेना के बदले में प्राप्त किये। वर्तमान *मद्रास प्रांत पर अंग्रेजी राज्य वैलजली के शासनकाल में ही हुआ।*

सारांश यह कि लार्ड वैलज़ली के सात वर्ष के शासनकाल मे भारतवर्ष का चित्र ही बदल गया। मैसूर को शक्ति का अन्त हो गया। हैदराबाद और अवध की रियासतें अंग्रेज़ों की अधीनता में आ गईं। मराठों की शक्ति को अत्यन्त हानि हुई। फ्रांसीसियों के प्रभाव और शक्ति की समाप्ति हो गई। *तञ्जौर, सूरत, कर्नाटक* और अन्य कई प्रदेश अंग्रेज़ी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिये गये। वर्तमान मद्रास प्रान्त पर अंग्रेज़ी राज्य हो गया। आगरा का प्रदेश भी अंग्रेज़ी राज्य में मिला लिया गया।

सच तो यह है कि वैलज़ली की नियुक्ति के समय अंग्रेज़ी राज्य भी भारतवर्ष मे एक राज्य था और वैलज़ली के लौटने के समय अंग्रेज़ी राज्य **ही** *केवल एक साम्राज्य था। वैलज़ली ने अपने कार्य से ईस्ट इण्डिया कम्पनी को व्यापारी कम्पनी से एक राजनैतिक शक्ति बना दिया।*

सर जार्ज बारलो

SIR GEORGE BARLOW

1805—1807

लार्ड वैलज़ली के चले जाने पर *लार्ड कार्नवालिस* दूसरी बार गवर्नर जनरल नियुक्त होकर आया परन्तु यहाँ आने के तीन ही मास के पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई और उसके स्थान पर कौंसिल का सीनियर मेम्बर *सर जार्ज बारलो* उसका उत्तराधिकारी नियुक्त हुआ।

सर जार्ज बारलो अहस्ताक्षेप की नीति का पोषक था। इसलिये उसने नियुक्त होते ही होल्कर के साथ सन्धि कर ली। उसके शासन-काल की सबसे प्रसिद्ध घटना *वैलोर का विद्रोह* (Mutiny of Vellore) है।

वैलोर का विद्रोह 1806

1806 ई० में मद्रास प्रदेश मे वैलोर के स्थान पर देशी सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया, और एक सौ से अधिक अंग्रेज़ी सिपाही और कुछ अफ़सर बध कर दिये। इस का कारण यह था कि सेना में कुछ नवीन नियम प्रचलित किये गये थे, जैसे

यह कि सिपाही पगड़ी के स्थान एक विशेष प्रकार की टोपी पहनें, अपनी दाढ़ी एक विशेष ढंग पर कटवाएँ और मस्तक पर तिलक आदि न लगाएँ। सिपाहियों ने समझा कि सम्भवतः सरकार हमको ईसाई बनाना चाहती है, अतः उन्होंने विद्रोह कर दिया। परन्तु यह विद्रोह दबा दिया गया और सारे नवीन नियमों का निषेध कर दिया गया। टीपू के पुत्रों पर जो उन दिनों वैलोर में रहते थे, संदेह हुआ कि उन्होंने सिपाहियों को भड़काया है, इसलिये उन्हें कलकत्ते भेज दिया गया और विलियम बैंटिक जो उस समय मद्रास का गवर्नर था इंगलैंण्ड वापिस बुला लिया गया।

लार्ड मिन्टो प्रथम

LORD MINTO I

1807—1813

Q. Briefly describe the chief events of the administration of Lord Minto I.

प्रश्न—*लार्ड मिन्टो प्रथम के शासनकाल की घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन करो।*

उत्तर—लार्ड मिन्टो के समय की प्रसिद्ध घटनाएँ निम्नलिखित हैं—

(१) ट्रावनकोर में विद्रोह— ट्रावनकोर की रियासत ने सबसिडियरी सिस्टम मान रखा था। वहाँ एक अंग्रेज रैज़ीडैंट रहता था। वह रियासत की बातों में हस्ताक्षेप करता था। 1808 ई० में ट्रावनकोर के दीवान ने रैज़ीडैंट के साथ मत-भेद होने के कारण विद्रोह कर दिया और कुछ अंग्रेज सैनिक मार दिये और रैज़ीडैंट पर भी आघात किया, परन्तु रैज़ीडैंट बच गया। यह विद्रोह शीघ्र ही दबा दिया गया और दीवान ने आत्महत्या कर ली।

(२) बुन्देलखण्ड में गड़बड़—बुन्देलखण्ड का प्रदेश मराठों के दूसरे युद्ध के बाद अंग्रेजी अधिकार में आ गया था। इस प्रदेश में वहाँ के स्थानीय सरदारों ने परस्पर के झगड़ों से ऊधम मचा रखा था।

मिन्टो को विवश होकर हस्ताक्षेप करना पड़ा। विद्रोही सरदारों की पराजय हुई और देश में शान्ति स्थापित हो गई।

(३) **अमृतसर को सन्धिपत्र**—पंजाब का महाराजा रणजीतसिंह उन दिनों अपनी शक्ति बढ़ा रहा था। उसने अवसर पाकर सतलुज नदी से पार की सिक्ख रियासतों को भी अपने राज्य में सम्मिलित करना चाहा। लार्ड मिन्टो इस बात को अंग्रेज़ो के लाभ के लिये हानिकारक समझता था। इसलिये उसने *सर चार्लस मैटकाफ़* (Sir Charles Metcalfe) को रणजीतसिंह के पास भेजा। 1809 ई० में अंग्रेज़ों और रणजीतसिंह के मध्य अमृतसर के स्थान पर एक सन्धि-पत्र लिखा गया। *इस सन्धिपत्र के द्वारा सतलुज नदी महाराजा रणजीतसिंह की सीमा नियत हुई।* रणजीतसिंह मरते समय तक उस सन्धि-पत्र पर स्थिर चित्त रहा।

(४) **अन्य देशों में राजदूत**—उन दिनो इंगलैंड और फ्रांस में युद्ध हो रहा था और इस बात का अत्यन्त भय था कि फ्रांसीसी भूमि के मार्ग से ईरान और अफ़ग़ानिस्तान की राह से भारतवर्ष पर आक्रमण न कर दें। इस भय की रोक-थाम के लिये लार्ड मिन्टो ने *ईरान के बादशाह अमीर काबुल* और *सिंध के अमीरो* के पास राजदूत भेजे। ईरान के शाह और सिंध के अमीरो ने तो अंग्रेज़ो के साथ मित्रता सम्बन्धी लेख कर लिये और उन्होंने प्रतिज्ञा की कि वे किसी यूरोपियन जाति को अपने देश में से नही लाँघने देंगे, परन्तु अफ़गानिस्तान में उन दिनो खलबली मची हुई थी। अमीर शाहशुजा भागकर पेशावर आया हुआ था, इसलिये अफ़ग़ानिस्तान के साथ कोई सन्धि न हो सकी।

(५) **जल युद्ध**—लार्ड मिन्टो ने एक जल-सेना भेजकर फ्रांसीसी द्वीपों *बूर्बान* (Bourbon) और *मारीशस* (Mauritius) पर अधिकार कर लिया, क्योकि ये टापू फ्रांसीसी जहाज़ों के अड्डे बने हुये थे जहाँ वे अंग्रेज़ो के जहाज़ो को लूट लिया करते थे। इसके अतिरिक्त वलन्देज़ों (डच जाति) से *जावा* (Java) का द्वीप जीत लिया गया। कारण यह

कि ये लोग उन दिनों फ्रांसीसियों के अधीन थे। परन्तु युद्ध के पश्चात मारीशस के अतिरिक्त शेप सर्व प्रदेश लौटा दिये गये।

(७) चार्टर 1813 ई०—1813 ई० में कम्पनी को नवीन अधिकार-पत्र मिला, जिसने (१) भारतवर्ष का व्यापार सब अंग्रेजों के लिये खोल दिया किन्तु चीन के व्यापार का अधिकार कम्पनी के पास ही रहने दिया। (२) इसके अतिरिक्त कम्पनी के लिये यह बात आवश्यक ठहराई गई कि वह भारतवर्ष में शिक्षा विस्तार के निमित्त एक लाख रुपया वार्षिक व्यय करे। (३) पादरियों और ईसाई धर्म के उपदेशकों को भी भारतवर्ष में धर्म प्रचार करने की आज्ञा मिल गई। (इससे पहले अङ्गरेजी सरकार ईसाई मत के प्रचार को अच्छी दृष्टि से नहीं देखती थी)।

☞Q Give an account of the rise and administration of Maharaja Ranjit Singh and briefly notice the fate of the Sikh Empire after his death.
(P U. 1933-40-44-48-50-52) (Important)

प्रश्न—*महाराजा रणजीतसिंह की उन्नति और राज्य प्रबन्ध का संक्षिप्त वर्णन लिखो और बताओ कि उसकी मृत्यु के पश्चात् सिक्ख राज्य का क्या परिणाम हुआ।*

महाराजा रणजीतसिंह (Ranjit Singh)

प्रारम्भिक जीवन (Early Life)—महाराजा रणजीतसिंह जिसे 'शेर-इ-पंजाब' भी कहते हैं पंजाब में *सिक्ख साम्राज्य का संस्थापक था। वह सुकर चकिया सिसल* के नेता महासिंह का सुपुत्र था। रणजीतसिंह का जन्म 1780 ई० में *गुजराँवाला* में हुआ था। बचपन में ही उसकी बाईं आँख चेचक से नष्ट हो गई थी। अभी उस की आयु बारह वर्ष की ही थी कि उसके पिता की मृत्यु हो गई और वह अपनी मिसल का सरदार बन गया। १६ वर्ष की आयु में उसका विवाह *कन्हैया मिसल* में हुआ और इन दो मिसलों के मिलाप से रणजीतसिंह की शक्ति और भी प्रबल हो गई।

विजयें (Conquests)—अब रणजीतसिंह ने अपने अधिकृत प्रदेशों की संख्या बढ़ानी आरम्भ कर दी। उन दिनों अफगानिस्तान में अहमद शाह अब्दाली का पोता *ज़मानशाह* (Zaman Shah) राज्य करता था। 1798 ई० में उसने पंजाब के कुछ भाग और लाहौर पर अधिकार कर लिया था परन्तु उसके अपने देश में विद्रोह हो पड़ने के कारण उसे तुरन्त लौटना पड़ा। इसी शीघ्रता के कारण उसकी कुछ तोपें जेहलम नदी में रह गई। रणजीतसिंह ने यह तोपें निकलवा कर उसके पास भिजवा दीं।

रणजीतसिंह

इससे प्रसन्न हो कर ज़मानशाह ने रणजीतसिंह को लाहौर पर अधिकार कर लेने की आज्ञा दे दी। अतः 1799 ई० में जब कि रणजीतसिंह की आयु उन्नीस वर्ष की थी उसने **लाहौर** (Lahore) पर अधिकार कर लिया और स्वयं राजा बन बैठा। इसके तीन वर्ष पश्चात् 1802 ई० में भंगी मिसल से **अमृतसर** (Amritsar) भी जीत लिया और इसके बाद थोड़े ही वर्षों में उसने कई अन्य स्थान जीत कर *सतलुज नदी तक सारा* **मध्य पंजाब** *अपने अधीन कर लिया*।

फिर उसने सतलुज नदी के पार सिक्ख रियासतों (नाभा, पटियाला, जींद, इत्यादि) पर भी अधिकार करना चाहा और सतलुज नदी को पार करके लुधियाना पर अधिकार कर लिया। सिक्ख रियासतों ने अंग्रेज़ों से रक्षा के लिये प्रार्थना की। लार्ड मिन्टो स्वयं भी रणजीतसिंह के इस हस्ताक्षेप को अंग्रेज़ों के लाभ के विरुद्ध समझता था, इस लिये उसने *सर चार्ल्स मैटकाफ़* (Sir Charles Metcalfe) को अमृतसर भेज कर 1809 ई० में रणजीतसिंह के साथ एक सन्धिपत्र किया जिसको ☞ *अमृतसर का संधिपत्र कहते हैं। इसके आधार पर*

सतलुज नदी रणजीतसिंह के राज्य की सीमा नियत हुई और सतलुज पार की सारी सिक्ख रियासतें अङ्गरेजी संरक्षकता मे आ गई। रणजीतसिंह ने मरते समय तक इस संधिपत्र को भली भांति निभाया।

अमृतसर का सन्धिपत्र हो जाने के कारण रणजीतसिंह अपना राज्य पूर्व की ओर नहीं बढ़ा सकता था, इसलिये उसने अपना ध्यान दूसरी दिशा में विशेषतया उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त के पठानों और दक्षिण-पश्चिम की ओर लगाया और कई लड़ाइयों के पश्चात् अटक, मुलतान, काश्मीर, हज़ारा, बन्नूं, डेराजात तथा पेशावर आदि जीत कर अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिये। इस प्रकार उसने एक शक्तिशाली सिक्ख साम्राज्य स्थापित किया और उसका उत्तम प्रबन्ध भी किया। 1839 ई० में रणजीतसिंह की मृत्यु हुई।

राज्य प्रबन्ध

प्रान्तीय प्रबन्ध—रणजीतसिंह ने अपने राज्य को चार प्रान्तों में विभक्त कर रखा था। लाहौर प्रान्त, मुलतान प्रान्त, काश्मीर प्रान्त और पेशावर प्रान्त। प्रत्येक प्रान्त के शासक को नाजिम कहते थे। प्रान्त कई ज़िलो में विभक्त थे। प्रत्येक ज़िले के प्रबन्ध के लिये अधिकारी नियुक्त थे जिन्हे कारदार * कहते थे। वे भूमिकर उगाहाया करते थे और अभियोगों का निर्णय भी करते थे और अपने इलाके में शान्ति स्थापित करने के लिये ज़िम्मेदार थे।

न्याय-विधान—न्याय की रीति अति सरल थी। कोई विशेष दण्ड-विधान नियत नही था। बहुत से अपराधों का दण्ड जुर्माना ही था, परन्तु कभी-कभी शरीर के अंग भी काट दिये जाते थे। कभी-कभी अपराधियों को गधे पर सवार करके नगर में फिराया जाता था।

गाँव में पंचायतें अभियोगों का निर्णय करती थीं और नगरो में कारदार न्याय करते थे। अन्तिम अपील महाराजा के पास होती थी। नौकरी देने में महाराजा सिक्ख, हिन्दू या मुसलमान का विचार न करता था। इसके सिविल अधिकारियों में फ़कीर अजीजुद्दीन, राजा दीनानाथ, दीवान

* ये कारदार आजकल के डिप्टी कमिश्नर की भांति हुआ करते थे।

सावनमल, राजा गुलाब सिंह और ध्यानसिंह अतिप्रसिद्ध थे। प्रजा उसके राज्य में सुखी थी।

आय के साधन—*आय का सबसे बड़ा साधन भूमि-कर था*, जो कि समस्त उपज के तीसरे भाग से लेकर आधे भाग तक उगाहाया जाता था। इसके अतिरिक्त *जुर्माना की रकम और टैक्स* भी आय के साधन थे। सारी वार्षिक आय ३ करोड़ के लगभग थी जिसका बहुत सा भाग सेना पर व्यय होता था।

सेना सम्बन्धी प्रबन्ध—रणजीतसिंह का सेना सम्बन्धी प्रबन्ध अत्युत्तम था। उसकी सेना (जो लगभग ८०,००० थी) बड़ी प्राक्रमी और शक्तिशाली थी और इसे इटली और फ्रांस के अफसरों ने यूरोप की रीतियों पर युद्धाभ्यास की शिक्षा दे रखी थी। रणजीतसिंह को घोड़ों का विशेष चाव था। उसके घुड़साल में सब प्रकार के घोड़े थे। इसके अतिरिक्त उसके पास उच्चकोटि का तोपखाना (५०० तोपें) भी था। सैनिक सरदारों में *सरदार हरिसिंह नलुवा* जो गुजरांवाले का रहने वाला था सबसे प्रसिद्ध था। उसने पठानो के विरुद्ध बहुत सफलता प्राप्त की। वह कई वर्षों तक जमरूद के दुर्ग का भी शासन करता रहा और अन्त में वहाँ ही पठानों के विरुद्ध लड़ता हुआ मारा गया।

रणजीत सिंह का चरित्र

रणजीतसिंह एक महा शूरवीर और निर्भीक सैनिक था और उसे युद्ध में विशेष रुचि थी। वह पक्का घुड़सवार और तलवार का धनी था। उसमें शासन प्रबन्ध की योग्यता भी कूट-कूट कर भरी हुई थी। यद्यपि वह पढ़ा-लिखा नहीं था तथापि वह विद्वानों और योद्धाओं का सम्मान करता था। वह अपने धर्म का बड़ा पक्का था परन्तु वह किसी मत से घृणा नहीं करता था। उसकी सेना को उसके साथ अत्यन्त प्रेम था। वह बड़ा कर्तव्यपरायण था और प्रत्येक काम ठीक समय पर करता था। उसने अपनी बुद्धि और बल से पंजाब में खालसा राज्य स्थापित किया। उसकी सफलता का सब से बड़ा

रहस्य उसकी सैनिक शक्ति और ईश्वर-प्रदत्त योग्यता थी।

पंजाब की दशा

1839 ई० में महाराजा रणजीतसिंह की मृत्यु हो गई और उसकी मृत्यु के साथ ही सिक्ख साम्राज्य में अशान्ति फैल गई। रणजीतसिंह का कोई भी उत्तराधिकारी ऐसा न निकला जो उस साम्राज्य को अपने अधीन रख सकता। परिणाम यह हुआ कि सेना का प्रभाव बढ़ गया क्योंकि सेना को समय पर वेतन नहीं मिलता था, इसलिये उसने सारे राज्य में ऊधम मचा रखा था। थोड़े से वर्षों में कई राजकुमार और कई मंत्री बध कर दिये गये। अन्त में 1843 ई० में महाराजा का सब से छोटा पुत्र दिलीपसिंह सिंहासन पर बैठा और उसकी माता रानी जिन्दाँ उसकी संरक्षिका नियुक्त हुई। किन्तु सिक्ख सरदार ख़ालसा सेना के प्रभाव से भयभीत थे। इसलिये उन्होंने उसकी शक्ति क्षीण करने के लिये उसे अङ्गरेज़ों के विरुद्ध लड़ने के लिये भड़काया और *सिक्खों का पहला युद्ध हुआ जिसमें सिक्ख हार गये और दोआबा बिस्त जालन्धर* (सतलुज और व्यास का मध्यवर्ती प्रदेश) अङ्गरेज़ों को मिल गया। 1848 ई० में *सिक्खों का दूसरा युद्ध हुआ, जिसमें सिक्ख पूर्ण रूप से परास्त हुये और मार्च 1849 ई० में पंजाब अङ्गरेजी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया।*

मारक्विस आफ़ हेस्टिंग्ज़

(MARQUESS OF HASTINGS)

1813—1823

घटनायें

(१) नेपाल का युद्ध (२) पिन्डारों का विनाश (३) मराठों का चौथा युद्ध।

Q. Give an account of the chief events of the Governor Generalship of Marquess of Hastings.

प्रश्न— *मारक्विस आफ़ हेस्टिंग्ज के शासन काल की प्रसिद्ध घटनाओं का संक्षेप से वर्णन करो।*

मारक्विस आफ हेस्टिंग्ज़ ५६ वर्ष की आयु में गवर्नर जनरल नियुक्त हुआ। वह पहले तो अहस्ताक्षेप की नीति का प्रबल पालक था, किंतु यहाँ की दशा ने उसे इस नीति को त्यागने पर विवश किया। उसकी नियुक्ति के समय *गोरखे* अङ्गरेज़ी प्रदेश पर हाथ मार रहे थे, *पिंडारो* ने लूट-मार मचा रखी थी और *मराठे* अङ्गरेज़ों की अधीनता से स्वतन्त्र होने का यत्न कर रहे थे। इसलिये हेस्टिंग्ज़ को बहुत युद्ध लड़ने पड़े। सब से पहले उसने नैपाल के गोरखों से युद्ध छेड़ा।

हेस्टिंग्ज़

नैपाल का युद्ध

कारण—नैपाल के गोरखे अपने देश की सीमा को विस्तृत करने के लिये *तराई* (Tarai) पर अधिकार जमा रहे थे। उनके साथ ही अङ्गरेज़ी प्रदेश था और दोनों की मध्यवर्ती सीमा निश्चित नहीं थी। इसलिये दोनो के बीच कई बार झड़पें हो पड़ती थीं। 1814 ई० में गोरखों ने तराई में दो ज़िलों *शिवराज* (Sheoraj) *तथा बटवाल* (Batwal) पर अधिकार कर लिया। अङ्गरेज़ इन दो ज़िलो को अपने अधीन समझते थे। जब लार्ड हेस्टिंग्ज़ ने उन ज़िलों को वापिस माँगा तो गोरखों ने इन्कार कर दिया। इस कारण से युद्ध घोषित कर दिया गया।

घटनायें—नैपाल पर चार भिन्न-भिन्न स्थानो से आक्रमण किया गया, किन्तु कुछ तो गोरखो की वीरता और कुछ देश की भौगोलिक अवस्था को न जानने के कारण अङ्गरेज़ों को पहले पहल असफलता हुई। अङ्गरेज़ी सेना के चार भागों में से तीन को पराजित होकर पीछे हटना पड़ा, परन्तु चौथे सेनादल ने जिसका सेनापति *जनरल अख़्तर*-

लोनी (Ochterlony) था नेपाल में घुसकर गोरखो के सेनापति *अमरसिंह* को *मलौन* के दुर्ग में परास्त किया। अख़तरलोनी अन्य स्थानो पर भी गोरखों को परास्त करता हुआ नेपाल की राजधानी खटमण्डू के निकट पहुँच गया। यह देखकर गोरखो ने सन्धि कर ली और सगौली का सन्धि पत्र लिखा गया।

परिणाम-सगौली (Sagauli) के *सन्धि-पत्र* 1816 ई० द्वारा (१) गोरखों ने गढ़वाल, कुमाओ और तराई के प्रदेश अङ्गरेज़ो को दे दिये। (२) एक अङ्गरेज़ रैज़ीडैण्ट अपने दरबार में रखना स्वीकार किया और (३) किसी योरपियन को अपने यहाँ रखने से निषेध कर दिया।

इस सन्धि-पत्र द्वारा अङ्गरेज़ी अधिकार में ऐसे पहाड़ी स्थान आ गये जहाँ इस समय शिमला, अलमोड़ा, नैनीताल आदि स्वास्थ्यप्रद स्थान बस गये हैं। इसके अतिरिक्त गोरखों और अङ्गरेज़ों में मित्रता स्थापित हो गई।

पिण्डारों का विनाश

पिंडारे लुटेरे होते थे जिनका काम रक्तपात और लूट-मार था। वे किसी विशेष जाति से सम्बन्ध न रखते थे। परन्तु उनमें प्रत्येक जाति और मत के व्यक्ति सम्मिलित थे। यह लोग अत्यन्त निर्दयी और दुराचारी थे। उनके टोले के टोले घोड़ों पर चढ़कर लूटमार के लिये घूमा करते थे। उनके हृदय-विदारक अत्याचारो से क्या पुरुष, क्या स्त्रियाँ, क्या निर्दोष बालक कोई भी सुरक्षित न थे। वे बहुधा मध्य भारत और राजपूताना के प्रदेशो मे लूटमार करते थे। उनके बड़े-बड़े सरदार *अमीर ख़ाँ*, *करीम ख़ाँ*, *वासिल मुहम्मद* और *चीतू* थे। इन लुटेरों को मराठा शासकों की सहायता भी प्राप्त थी। अमीर खाँ एक पठान था और राजपूताने की रियासतों में लूटमार किया करता था।

अङ्गरेज़ो की अहस्ताक्षेप की नीति से उनके साहस और भी बढ़ गये और उन्होंने अंग्रेज़ी प्रदेशो पर आक्रमण करने आरम्भ कर दिये। 1816 ई० में पिंडारो ने *'उत्तरी सरकार'* के प्रदेश को उजाड़ मारा।

अन्त में हेस्टिंग्ज़ ने उनके नाश का दृढ़ निश्चय किया। पहले तो उसने चतुराई से मराठों को पिण्डारों से पृथक् कर दिया और फिर एक लाख तेरह हज़ार सेना के साथ पिण्डारों को *मालवा* प्रदेश में चारों ओर से घेर लिया और थोड़े हो समय में उनको नष्ट कर दिया। *अमीर ख़ाँ* (Amir Khan) ने आरम्भ में ही अधीनता स्वीकार कर ली और उसे *टोंक* (Tonk) की रियासत दे दी गई। *करीम ख़ाँ* (Karim Khan) ने भी अधीनता मान ली। *वासिल मुहम्मद* (Wasil Mohd.) ने कैद में विष खाकर आत्म हत्या कर ली। *चीतू* (Chetu) भाग निकला परन्तु उसे वन में किसी शेर ने फाड़ डाला। इस प्रकार पिंडारो का अन्त हो गया। परन्तु उधर मराठो के साथ युद्ध छिड़ गया।

मराठों का चौथा युद्ध 1817—1818

कारण—*वास्तविक कारण*—पेशवा बाजीराव द्वितीय (Baji Rao II) बसीन के सन्धि-पत्र की शर्तों से असंतुष्ट था और वह मन ही मन कुढ़ता रहता था। वह अपने आपको अंग्रेज़ों की अधीनता से स्वतन्त्र करने के लिये बहुत समय से मराठा सरदारों के साथ गुप्त बातचीत कर रहा था और एक बार फिर भारत में मराठा राज्य स्थापित करने की अन्तिम चेष्टा करना चाहता था।

तात्कालिक कारण—इस युद्ध का तात्कालिक कारण यह हुआ कि पेशवा और गायकवाड़ के मध्य कुछ समय से कर के सम्बन्ध में कुछ झगड़ा था। 1815 ई० में गायकवाड़ का मन्त्री *गंगाधर शास्त्री* अंग्रेजों की ओर से रक्षा का विश्वास मिलने पर इस झगड़े को निपटाने के लिये पूना में गया, परन्तु पेशवा के मन्त्री *त्र्यम्बकजी* ने उसका वध करवा दिया। अंग्रेज़ी सरकार ने पेशवा को इस बात पर विवश किया कि *त्र्यम्बकजी* उन्हे सौंप दिया जाय। *त्र्यम्बकजी* बंदी बनाया गया, परन्तु वह शीघ्र ही कारागार से भाग निकला। उसके भाग निकलने में पेशवा पर सदेह किया गया। इसके अतिरिक्त पेशवा अपना खोया हुआ अधिकार प्राप्त करने के लिये मराठा सरदारों से गुप्त बातचीत कर रहा

INDIA UNDER LORD HASTINGS
1823 A D
SIKHS
NEPAL
OUDH
SIND
BENGAL
ARABIAN SEA
NIZAM
BAY OF
BENGAL
SITARA
MADRAS
MYSORE
TRAVINCORE
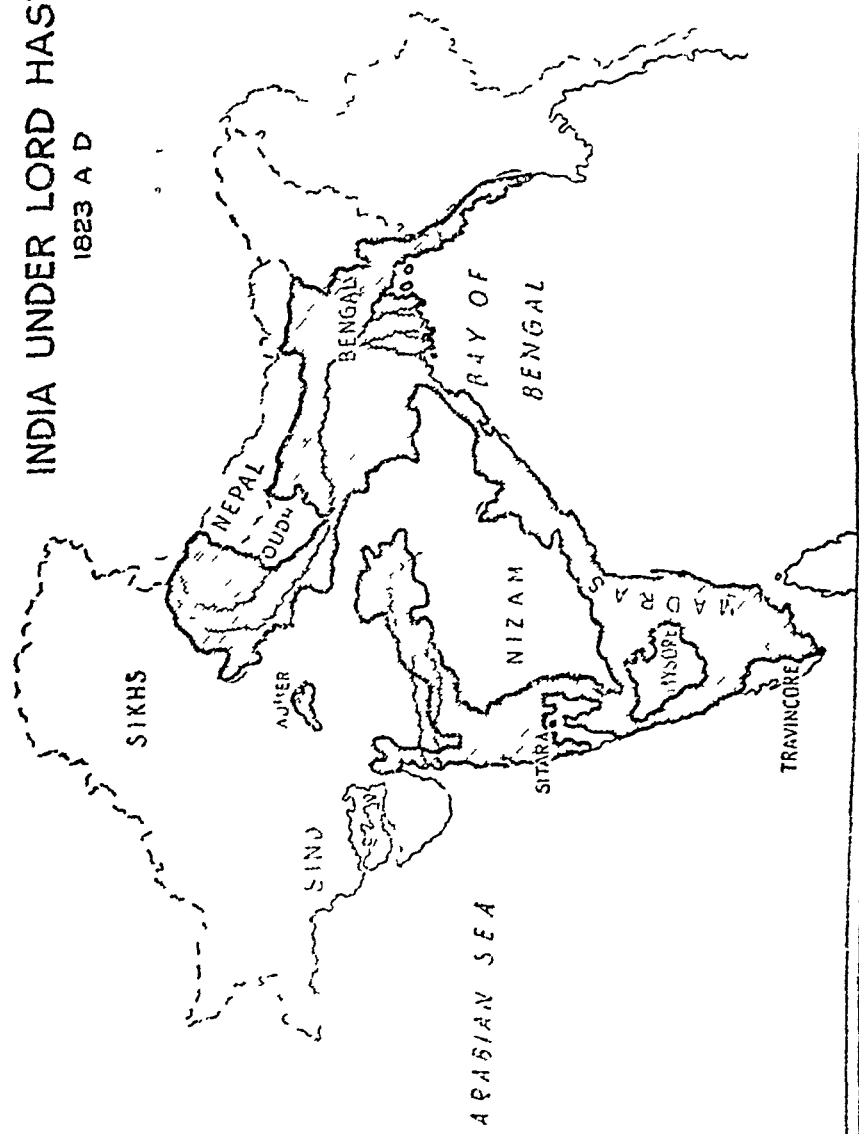
था अतः पूना के अङ्गरेज़ रैज़ीडैंट ने उसे एक नई सन्धि करने पर विवश किया, *जिसके द्वारा पेशवा को कुछ प्रदेश अङ्गरेजों को देना पड़ा और उसने मराठों की सरदारी का दावा छोड़ दिया। इस नवीन सन्धि से क्रुद्ध होकर पेशवा ने युद्ध कर दिया।*

घटनाएं—*पेशवा* ने पूना (Poona) रैज़ीडैंसी पर आक्रमण किया और उसे जला दिया। किन्तु अङ्गरेज़ी सेना ने उसको किरकी (Kirkee) के स्थान पर परास्त किया और वह दक्षिण की ओर भाग गया।

इसी समय में *आपा साहिब भोंसला तथा होल्कर* की सेना ने भी अङ्गरेज़ों के विरुद्ध युद्ध आरम्भ कर दिया। आपा साहिब भोंसला को *सीताबल्दी* (Sitabaldi) और *नागपुर* (Nagpur) के स्थान पर पराजय हुई और होल्कर की सेना ने *महिदपुर* (Mahidpur) के स्थान पर करारी हार खाई।

पेशवा ने अंग्रेज़ों के साथ युद्ध जारी रखा, परन्तु *कोरीगांव* (Koregaon) *तथा आशती* (Ashti) के स्थानो पर हार खाई और उसने अपने आप को अङ्गरेज़ों को सौंप दिया और युद्ध समाप्त हुआ।

परिणाम—*(१) पेशवा का सम्पूर्ण देश कम्पनी के अधिकार में आ गया और पेशवा को आठ लाख रुपया वार्षिक पैंशन देकर कानपुर के समीप बिठूर* (Bithur) *में भेज दिया गया। पेशवा की पदवी उड़ा दी गई।*

(२) सितारा की रियासत शिवाजी के एक वंशज को दे दी गई।

(३) भोंसला का बहुत-सा प्रदेश अङ्गरेज़ी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया (यह आजकल मध्य प्रदेश है)। भोंसला को गद्दी से उतार दिया और एक और राजा नियुक्त किया गया।

(४) होल्कर की शक्ति भी टूट गई और उसका लगभग आधा राज्य अङ्गरेज़ों ने ले लिया। उसने सबसिडियरी सिस्टम मान लिया।

(५) सिन्धिया ने युद्ध में कोई भाग नहीं लिया था। फिर भी उससे एक और सन्धिपत्र किया गया और उसने *अजमेर* (Ajmer) का प्रदेश अङ्गरेज़ों को दे दिया।

इस प्रकार मराठा शक्ति का अन्त हो गया और अंगरेजी राज्य देश में सर्वश्रेष्ठ बन गया। सत्य तो यह है कि मराठों के चौथे युद्ध से वैलजली का आरम्भ किया हुआ कार्य सम्पूर्ण हो गया। केवल सिन्ध और पंजाब को विजय करना बाकी रह गया।

नोट—प्रायः इतिहासकार इस युद्ध को मराठों का तीसरा युद्ध कहते हैं।

Q. What were the outstanding achievements of the Marquess of Hastings? (P U. 1939)

प्रश्न—*मारक्विस आफ़ हेस्टिंग्ज़ की सफलताओं का वर्णन करो।*

मारक्विस आफ हेस्टिंग्ज़ की गणना भारतवर्ष के सर्वश्रेष्ठ गवर्नर-जनरलों में की जाती है। उसकी सबसे प्रसिद्ध सफलता यह है कि *उसने वैलज़ली के कार्य को जो उसने भारत में कम्पनी की शक्ति को सर्वश्रेष्ठ बनाने केलिये आरम्भ किया था, सम्पूर्ण कर दिया।*

मारक्विस आफ हेस्टिंग्ज़ की सफलता

मारक्विस आफ हेस्टिंग्ज़ की नियुक्ति के समय कम्पनी के प्रभाव में बहुत कमी आ चुकी थी और भिन्न-भिन्न देशी राज्य निर्भय होकर अपनी शक्ति बढ़ा रहे थे। *इसका कारण वैलज़ली के उत्तराधिकारियों* (कार्नवालिस, बार्लो तथा मिन्टो) *की अहस्ताक्षेप की नीति थी।* परिणाम स्वरूप **गोरखे** अपने पहाड़ी प्रदेश नेपाल से बढ़ कर साथ के प्रदेशों पर हाथ मार रहे थे। मध्य भारत में **पिंडारों** ने अपने कठोर अत्याचारों द्वारा लोगों को अत्यन्त दुखी बना रखा था। उधर **मराठे** अंग्रेज़ो की अधीनता से स्वतन्त्र होने के लिये अन्तिम सम्मिलित प्रयत्न करने की चेष्टा में थे। और आपस में पत्र-व्यवहार कर रहे थे। जब हेस्टिंग्ज़ ने इस अवस्था पर विचार किया तो वैलजली की भान्ति हस्ताक्षेप करने की नीति धारण कर ली।

सबसे पहले हेस्टिंग्ज़ ने *गोरखों* की ओर ध्यान दिया और उनको पराजित करके उन्हें कम्पनी का मित्र बना लिया। इसके पश्चात् उसने *पिंडारों* की ओर ध्यान दिया, जिन्होंने मध्य भारत में लूट मचा रखी थी। उसने एक बलवान् सेना की सहायता से उनका सर्वनाश कर

दिया और वहाँ की जन्ता को सुख का श्वास लेना प्राप्त हो सका। इसी अवसर पर मराठों ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध युद्ध आरम्भ कर दिया। यह उनका अन्तिम युद्ध था, किन्तु हेस्टिंग्ज़ ने *पेशवा, भोंसला* तथा *होल्कर* इन सबको पराजित किया और मराठों की शक्ति नष्ट कर दी। पेशवा की उपाधि उड़ा दी गई और उसका लगभग सारा राज्य अंग्रेज़ी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया। *इस प्रकार आधुनिक बम्बई प्रान्त तथा मध्य प्रदेश के बहुत से भाग पर अंग्रेजों का राज्य स्थापित हो गया।* सारांश यह कि हेस्टिंग्ज़ ने कम्पनी को देश का शासक बना दिया और *इस प्रकार वैलज़ली के आरम्भ किये हुये कार्य को सम्पूर्ण किया।*

Q. What were the causes of the decline and downfall of the Maratha power ?

प्रश्न—*मराठा शक्ति के पतन के कारणों का वर्णन करो।*

मराठा-पतन के कारण—मराठा शक्ति के पतन के कारण निम्नलिखित थे :—

(१)शिवाजी के उत्तराधिकारी अयोग्य थे। उसका पुत्र *सम्भाजी* दुर्बल था और उसका पोता *साहू* मुग़लों की कैद में रहने के कारण विलासप्रिय और निकम्मा हो गया था। इस लिए उसने राज्य प्रबन्ध का कार्य पेशवाओं को सौंप दिया। *अन्तिम तीन-चार पेशवा भी अत्यन्त दुर्बल थे।*

(२) शिवाजी अफसरों को नकद वेतन दिया करता था, किन्तु पेशवा बालाजी विश्वनाथ ने *जागीरों* की रीति प्रचलित की। इस से मराठे सरदार शक्तिशाली हो गये और केन्द्रीय राज्य का प्रभाव क्षीण हो गया।

(३) मराठों में कोई अच्छा *आर्थिक* प्रबन्ध न था। उनके देश की भूमि उपजाऊ न होने के कारण वे चौथ इत्यादि टैकसों पर आश्रित थे और यह बात उनकी राजनैतिक उन्नति में एक बाधा थी।

(४) पानीपत की तीसरी लड़ाई में मराठों को करारी हार हुई। उससे मराठे कुछ समय के लिये अत्यन्त शक्तिहीन हो गये।

(५) पानीपत की तीसरी लड़ाई के पश्चात् मराठों का मुकाबला अंग्रेज़ों से हुआ, जो कि युद्ध-शक्ति तथा राजनीति में मराठों से कहीं

बढ़ कर थे।

(६) नाना फर्नवीस की मृत्यु के पश्चात मराठों में कोई ऐसा नीतिज्ञ न रहा जो राज्य-प्रबन्ध को कुटिल नीति में अंग्रेज़ों की समानता कर सकता।

(७) मराठा सरदारों में आपस में ईर्ष्या थी। जब तक सुयोग्य मराठा नीतिज्ञ नाना फ़र्नवीस जीवित रहा मराठों में संगठन रहा, परन्तु उसके मरते ही मराठा राज्य की योग्यता तथा नीति का भी अन्त हो गया और उनमें गृह युद्ध छिड़ गये जो मराठा साम्राज्य के लिये अत्यन्त हानिकारक सिद्ध हुये।

(८) जब तक मराठों के आक्रमण निकटवर्ती पहाड़ी प्रदेशों तक ही सीमित रहे, उनकी युद्ध-विधि (गुरीला ढंग) ऐसी थी जिसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता था। जब उनका साम्राज्य मैदानों में फैल गया तो उन्हें डट कर शत्रु का सामना करना पड़ा, परन्तु इन खुले मैदानों में युद्ध करके मराठे अंग्रेज़ों का मुकाबला न कर सके।

(९) मराठों का व्यवहार अपनी अमराठा प्रजा के साथ अच्छा न था, इसलिये उनके अधिकृत प्रदेशों में उनके राज्य की जड़ें पूर्णतया नहीं जम सकीं।

(१०) मराठों ने अपने राज्य की आर्थिक दशा सुधारने की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया।

लार्ड ऐमहर्स्ट

LORD AMHERST

1823—1828

लार्ड ऐमहर्स्ट 1823 ई० में गवर्नर जनरल नियुक्त हुआ। उसका शासनकाल निम्नलिखित दो घटनाओं के लिये प्रसिद्ध है।

(१) ब्रह्मा का पहला युद्ध (२) भरतपुर का घेरा।

☞Q. Briefly describe the causes, events, and results of the First Burmese War. (P.U 1936-38-40) (Important)

प्रश्न—*ब्रह्मा के प्रथम युद्ध के कारण प्रसिद्ध घटनाओं तथा परिणाम*

का सक्षेप में वर्णन करो।

कारण—ब्रह्मा निवासी अपने साम्राज्य को बढ़ा रहे थे और *मनीपुर* (Manipur), *आसाम* (Assam) तथा कई और भागो पर उन्होंने अधिकार कर लिया था। 1823 ई० में उन्होंने कम्पनी के एक छोटे से *टापू शाहपुरी* (Shahpuri) पर जो बंगाल की खाड़ी में चिटागॉग के समीप स्थित है अधिकार कर लिया। इस पर लार्ड ऐमहर्स्ट ने 1824 ई० में युद्ध घोषित कर दिया।

ब्रह्मा का पहला युद्ध
1824—1826

घटनायें—ब्रह्मा पर भूमि और समुद्र दोनो ओर से आक्रमण कर दिया गया। एक सेना भूमि-मार्ग से आसाम होती हुई ब्रह्मा पहुँचने के लिये चल पड़ी और दूसरी समुद्र के मार्ग से भेजी गई इसलिये कि रंगून पर विजय पाकर ईरावती नदी द्वारा ब्रह्मा की राजधानी *आवा* (Ava) तक पहुँचा जाय। मार्ग दुर्गम होने के कारण भूमि के मार्ग से जाने वाली सेना को कुछ भी सफलता प्राप्त न हुई, परन्तु दूसरी सेना ने *सर आरचीबाल्ड कैम्पबेल* (Sir Archibald Campbell) के सेनापतित्व में रंगून जीत लिया। ब्रह्मी जनरल *महा बन्दूला* (Maha Bandula) इस सेना के विरुद्ध बढ़ा, परन्तु वह हार गया और मारा गया। इतने में अङ्गरेजों ने आसाम भी जीत लिया। अङ्गरेजी सेनायें बढ़ती हुई आवा के निकट यंदूब (Yandabu) तक पहुँच गई। ब्रह्मियों ने अब संधि के लिये प्रार्थना की और 1826 ई० में *यन्दूब* का संधि-पत्र लिखा गया।

परिणाम—*यंदूब* (Yandabu) के *सन्धि-पत्र* द्वारा (१) *आसाम*, *अराकान* और *तनासरम* के प्रदेश अङ्गरेजों को मिल गये (२) एक करोड़ रुपया युद्ध की हानिपूर्ति मिला, (३) एक अङ्गरेजी रैजीडैण्ट ब्रह्मा में रहने लगा।

एक पृथक् सन्धि-पत्र के द्वारा अगरेजो को ब्रह्मा में व्यापारी सुवि-धाएँ प्राप्त हो गई।

1825 ई० में रियासत भरतपुर के राजा की मृत्यु पर सिंहा-सनारोहण के लिये झगड़ा आरम्भ हो गया। वास्तविक उत्तराधिकारी

भरतपुर का घेरा

के पक्ष वालों ने लार्ड ऐमहर्स्ट से सहायता की प्रार्थना की और उसने लार्ड कोम्बरमेयर (Combermere) को सेना देकर भरतपुर भेजा। दुर्ग को घेर लिया गया। अन्त में दुर्ग जीत लिया गया और वास्तविक उत्तराधिकारी को जो स्वर्गवासी राजा का पुत्र था राजगद्दी पर बिठा दिया गया। इस दुर्ग पर *विजय के कारण सारे देश में* अंगरेजों की धाक बंध गई क्योंकि यह दुर्ग अजेय समझा जाता था और लार्ड लेक भी इसे जीत न सका था।

लार्ड विलियम बैंटिंक

LORD WILLIAM BENTINCK

1828—1835

☞ Q. Briefly describe the social, administrative and educational reforms of Lord William Bentinck and mention the other events of his administration. (P U 1933-37 41-46-48-53) (V. Important)

प्रश्न—*लार्ड विलियम बैंटिंक के सामाजिक, शासन सम्बन्धी तथा शिक्षा सम्बन्धी सुधारों का संक्षिप्त वर्णन करो और शासनकाल की अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करो।*

विलियम बैंटिंक एक बड़ा योग्य व्यक्ति था। वह 1828 ई० में गवर्नर जनरल नियुक्त होकर आया।

इस समय पिछले युद्धों के कारण कम्पनी का कोष खाली था और विलियम बैंटिक की नियुक्ति का एक बड़ा कारण यह था कि वह आर्थिक विषयों का अच्छा जानकार था। *उसका नाम सुधारों के कारण भारतवर्ष के इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है।* वह पहला गवर्नर जनरल था जिसने इस नियम को

अपनाया कि अङ्गरेज़ी सरकार का सर्वप्रथम कर्तव्य प्रजा के सौभाग्य और सुख का ध्यान रखना है न कि देश पर अधिकार करना। बैंटिक के शासन-काल के प्रसिद्ध सुधार निम्नलिखित हैं :—

१. सामाजिक सुधार
Social Reforms

(१) सती की प्रथा का निषेध—*विलियम बैंटिक का सबसे बड़ा सामाजिक सुधार सती प्रथा को रोकना था।* सती-प्रथा हिन्दू स्त्री की पति-भक्ति का एक अनुपम आदर्श था, परन्तु समय बीतने पर इस प्रथा में बहुत सी बुराइयाँ उत्पन्न हो गई थी। धन सम्पत्ति के लोभ से विधवा स्त्रियों को सती होने पर विवश किया जाता था। यह बुराई बंगाल में विशेष रूप से ज़ोरों पर थी। यहाँ प्रति वर्ष सैंकड़ो विधवायें सती हो जाती थीं*। बैंटिक ने 1829 ई० में एक नियम प्रचलित किया जिसके द्वारा *सती होना घोर अपराध नियत किया गया और सती होने के लिये किसी स्त्री को उभारने वाले या सहायता करने वाले के लिये वही दण्ड नियत किया गया जो हत्या की चेष्टा करने वाले के लिये होता है।* इस शुभ कार्य में बंगाल के प्रसिद्ध सुधारक *राजा राम मोहन राय* (Raja Ram Mohan Roy) ने बहुत सहायता की।

राजा राम मोहन राय

(२) ठगी का अन्त—*बैंटिक का दूसरा प्रशंसनीय सामाजिक सुधार ठगी का अन्त है।* ठग लोग वैसे तो देश के प्रत्येक भाग में भेस बदल कर घूमा करते थे, परन्तु *मध्य भारत* में इनका विशेष प्रभाव था। उन लोगों ने गुप्त संकेत तथा विशेष भाषा प्रचलित कर रखी थी और उनकी कार्य-रीति यह थी

*1818 ई० में ८३९ विधवायें सती हुई।

कि जहाँ कहीं वे भूले-भटके यात्रियों को देख लेते, मीठी-मीठी बातों से उन्हें अपने जाल में फाँस लेते, अवसर पाकर उनका गला घोट देते और उनके पदार्थ तथा सम्पत्ति आदि लूट लेते थे। बैंटिक ने ठगी की समाप्ति का कार्य मेजर सलीमन (Major Sleeman) को सौंप दिया, जिसने लगभग छः वर्ष के समय में ठगी का पूर्णतया अन्त कर दिया। उन ठगों की भलाई के लिये जो बहुत बुरे न थे जबलपुर में एक शिल्पी स्कूल खोला गया जहाँ उन्हें शिल्पी काम सिखाया जाता था।

(३) कन्या वध का निषेध—काठियावाड़ और राजस्थान के कुछ भागों में रहने वाले राजपूतों में यह एक कुरीति प्रचलित थी कि वे कई कन्याओं की जन्म के समय ही हत्या कर देते थे। बैंटिक ने इस बुरी रीति का अन्त किया।

(४) मानव-बलि निषेध—उड़ीसा की असभ्य तथा जङ्गली जातियों में देवी पर मनुष्य की बलि चढ़ाने की कुप्रथा भी प्रचलित थी, बैंटिक ने उसका भी अन्त कर दिया।

लार्ड हेस्टिंग्ज और ऐमहर्स्ट के शासनकाल में कम्पनी का बहुत सा रुपया युद्धों में व्यय हो गया था। विलियम बैंटिक ने कम्पनी की आर्थिक अवस्था सुधारने के लिये निम्नलिखित कार्य किये :—

२. आर्थिक सुधार (Financial Reforms)

१—सिविल सर्विस (Civil Service) के वेतन घटा दिये गये।

(२) सेना विभाग में भी खर्च कम किया गया अर्थात् उन सैनिक अफसरों का भत्ता जो कलकत्ते के ४०० मील के अन्दर थे घटा कर आधा कर दिया गया।

(३) बंगाल के बहुत से ज़मींदार अपनी भूमियों को भूतपूर्व शासकों द्वारा पुरस्कार स्वरूप दी गई बतला कर उनका भूमि कर नहीं दिया करते थे। विलियम बैंटिक ने उन सबके अधिकार-पत्रों की पड़ताल की और जो ज़मींदार अपना अधिकार सिद्ध न कर सके उनकी भूमियों

पर भूमि-कर लगा दिया गया। (इससे जमींदार असन्तुष्ट हो गये और उन्होंने 1857 के *उपद्रव में भाग लिया*)।

(४) मालवा की अफीम पर कर लगा दिया गया और अफीम के ठेके का बहुत अच्छा प्रबन्ध किया गया। इससे सरकारी आय में वृद्धि हो गई।

शासन सम्बन्धी सुधार (Administrative Reforms)

(१) भारतवासियों को जिन्हें लार्ड कार्नवालिस के शासनकाल से लेकर उच्च पदवियों से वंचित किया गया था बड़ी बड़ी पदवियाँ दी जाने लगीं। इससे व्यय में भी बचत हो गई।

(२) न्यायालयों की त्रुटियों को दूर किया गया और कार्नवालिस द्वारा स्थापित प्रान्तीय न्यायालय उठा दिये गये।

(३) कलैक्टर और डिस्ट्रिक्ट जज की पदवियाँ (जो कार्नवालिस के समय में पृथक् कर दी गई थीं) सम्मिलित करके एक कर दी गई और बहुत से देशी मैजिस्ट्रेट नियुक्त किये गये।

(४) आगरा प्रदेश में जिसे उन दिनों उत्तर *पश्चिमी प्रान्त* कहते थे, ३० वर्षों के लिये नवीन बन्दोबस्त (Settlement) किया गया और इलाहाबाद में एक बोर्ड आफ रैविन्यू (Board of Revenue) भी स्थापित किया गया।

(५) कम्पनी के राज्य के बढ़ जाने से कलकत्ता की सुप्रीम कोर्ट को बहुत काम करना पड़ता था। इसलिये इलाहाबाद में एक *सदर अदालत* स्थापित की गई। इससे कलकत्ता की सुप्रीम कोर्ट का काम हलका हो गया।

(६) फारसी के स्थान में देशी भाषायें तथा अङ्गरेजी भाषा राजकीय भाषायें नियत की गईं।

(७) प्रबन्धक कौंसल में कानूनी सभासद की नवीन पदवी नियुक्त की गई। पहला कानूनी सभासद मैकाले (Macaulay) था।

(८) सेना का भी सुधार किया गया और बैंटिक स्वयं सेनापति के कार्यों को भी निभाने लगा।

1813 ई० से लेकर कम्पनी एक लाख रुपया वार्षिक भारतवर्ष में शिक्षा विस्तार के लिये व्यय करती थी, परन्तु वह रुपया केवल पूर्वी भाषाओं अर्थात संस्कृत, फारसी और अरबी की शिक्षा पर ही व्यय होता था। बैंटिक के शासन काल में इस बात पर बहुत वाद-विवाद हुआ कि शिक्षा किस भाषा में हो।

४. शिक्षा सम्बन्धी सुधार (Educational Reforms)

इस पर दो दल बन गये। एक दल जिसका नेता मैकाले (Macaulay) था अंग्रेज़ी भाषा के पक्ष में था, दूसरा दल जिसका नेता एच० एच० विलसन (H. H. Wilson) था पूर्वी भाषाओं के पक्ष में था। परन्तु क्योंकि अब भारतवासियों को भी ऊंची नौकरियाँ मिलनी शुरू हो गईं थीं इसलिये यह आवश्यक था कि वे भी अंग्रेज़ी भाषा जानते हों। *राजा राम मोहन राय भी* अंग्रेज़ी के पक्ष में थे। अन्त में मैकाले की सम्मति मान ली गई और 1835 ई० में सरकार ने घोषित किया कि *शिक्षा का माध्यम अङ्गरेजी होगी और भविष्य में रुपया अङ्गरेजी शिक्षा और पश्चिमी विज्ञान पर व्यय किया जायेगा।* यह निर्णय बाद में भारत वासियों के लिये बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ क्योंकि इससे *भारतवासियों में जातीयता की भावना उत्पन्न हो गई।*

इसके अतिरिक्त कलकत्ते में एक *मेडीकल कालिज* (Medical College) *खोला गया* और बम्बई में *एलफ़िन्सटन कालिज* (Elphin-ston College) स्थापित किया गया।

लार्ड विलियम बैंटिक देशी रियासतों के विषय में हस्ताक्षेप करने के पक्ष में न था, परन्तु निम्नलिखित अवसरों पर उसे हस्ताक्षेप करना ही पड़ा :—

रियासतों का अंगरेज़ी राज्य में मिलाना

(१) मैसूर (Mysore)—मैसूर का *राजा कृष्ण* जिसको लार्ड वैलज़ली ने राजगद्दी पर बिठाया था बड़ा होकर अत्यन्त अयोग्य और निर्दयी निकला। इसलिये 1831 ई० में बैंटिक ने उसे गद्दी से उतार दिया और मैसूर का प्रबन्ध अङ्गरेज़

अधिकारियो को सौंप दिया गया। ५० वर्ष पश्चात् लार्ड रिपन (Lord Ripon) ने 1881 ई० में यह रियासत कृष्ण के दत्तक पुत्र को लौटा दी।

(२) कछार (Kachhar)—कछार बंगाल के उत्तर-पूर्व में स्थित है। 1832 ई० में जब वहाँ के राजा की मृत्यु हो गई तो वहाँ के निवासियों की प्रार्थना पर कछार को ब्रिटिश साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया।

(३) कुर्ग (Coorg)—कुर्ग का प्रदेश मैसूर और अरब सागर के मध्य में स्थित है। वहाँ का राजा अत्यन्त कठोर और निर्दयी था, और उसका प्रबन्ध भी असन्तोषजनक था। बैंटिक ने राजा को राज-सिंहासन से उतार दिया और 1834 ई० में वहाँ के निवासियों की प्रार्थना पर कुर्ग अंग्रेज़ी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया।

रणजीतसिंह से भेंट

उन दिनों भारतवर्ष पर रूस के आक्रमण का भय था इसलिये विलियम बैंटिक ने पंजाब तथा सिंध के साथ पक्की मैत्री करनी चाही। 1831 ई० में रोपड़ (Rupar) के स्थान पर विलियम बैंटिक की महाराजा रणजीतसिंह से भेंट हुई। गवर्नर जनरल ने महाराजा रणजीतसिंह का प्रेम पूर्वक स्वागत किया और *अंगरेज़ों और सिक्खों के मध्य मित्रता स्थापित हो गई।*

सिंध के अमीरों से मित्रता

1832 ई० में विलियम बैंटिक ने सिंध के अमीरों से भी एक व्यापारिक सन्धि-पत्र किया और यह भी निश्चय हुआ कि दोनों पार्टियाँ एक दूसरे के देश पर आँखे न रखें और न कभी अङ्गरेज़ अपनी सेनायें सिंध में से गुज़ारें।

चार्टर (Charter)—1833 ई० में कम्पनी को नया चार्टर प्राप्त हुआ और कई एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुये।

(१) कम्पनी से व्यापार करने का अधिकार छीन लिया गया और कम्पनी केवल शासक कम्पनी रह गई।

(२) बङ्गाल का गवर्नर जनरल *समस्त भारत का गवर्नर जनरल* (Governor General of India) बना दिया गया और उसे समस्त देश के लिये कानून बनाने के अधिकार दे दिये गये।

(३) नियम बनाने के लिये गवर्नर जनरल की सभा में कानूनी सभासद की वृद्धि हुई। पहला कानूनी मेम्बर *मेकाले* (Macaulay) था।

(४) बम्बई तथा मद्रास की गवर्नमैंटें गवर्नर जनरल के अधीन कर दी गई और उनसे कानून बनाने के अधिकार छीन लिये गये।

(५) यह भी निश्चित हुआ कि कोई भारतवासी केवल अपने रंग-रूप, जाति, धर्म या जन्मभूमि के कारण किसी पदवी से जिसके वह योग्य हो वंचित नहीं रखा जायगा।

सर चार्ल्स मैटकाफ़

SIR CHARLES METCALFE

1835—1836

विलियम बैंटिक के पश्चात सर चार्ल्स-मैटकाफ को गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया। उसके शासन-काल की प्रसिद्ध घटना केवल यही है कि उसने *प्रेस (समाचार पत्रों) को पूर्णतया स्वतन्त्र कर दिया*। उसके कार्य को डाइरैक्टरों ने पसन्द न किया और इस कारण मैटकाफ ने त्याग-पत्र दे दिया।

लार्ड आकलैण्ड

(LORD AUCKLAND)

1836—1842

लार्ड एलिनबरा

(LORD ELLENBOROUGH)

1842—1844

☞ Q State concisely the causes, main events and results of the First Afghan War.
(P. U. 1939-40-47-51)

(Important)

प्रश्न—*अफ़ग़ानिस्तान के प्रथम युद्ध के कारण, प्रसिद्ध घटनायें तथा परिणाम संक्षेप से वर्णन करो।*

अफ़ग़ानिस्तान का प्रथम युद्ध लार्ड आकलैंड के शासन-काल की सबसे प्रसिद्ध घटना है। यह युद्ध आकलैंड के शासककाल में आरम्भ हुआ और उसके उत्तराधिकारी एलिनबरा के शासनकाल में समाप्त हुआ।

अफ़ग़ानिस्तान का प्रथम युद्ध 1839—1842

लार्ड आकलैंड

कारण—इस युद्ध का कारण *रूस के आक्रमण का भय था।* उन दिनों रूस मध्य एशिया में अपना प्रभाव बढ़ा रहा था और इस बात का भय था कि कहीं ऐसा न हो कि वह ईरान तथा अफ़ग़ानिस्तान के मार्ग से भारतवर्ष पर आक्रमण कर दे। इस भय को रोकने के लिये आकलैंड ने एक राजदूत काबुल के *अमीर दोस्त मुहम्मद ख़ाँ* (Dost Mohammad Khan) के दरबार में भेजा। अमीर भी अंग्रेज़ी सरकार से मैत्री करने का इच्छुक था। परन्तु उसने मित्रता के बदले यह माँग की कि अंग्रेज़ *उसे रणजीतसिंह से पेशावर वापिस दिला* दे। आकलैंड ने इस शर्त को स्वीकार न किया। इसलिये दोस्त मुहम्मद ख़ाँ ने अंग्रेज़ी दूत को लौटा दिया और

दोस्त मुहम्मद ख़ाँ

रूस से गुप्त पत्र-व्यवहार करने लगा। इस पर आकलैंड ने शाह शुजा (Shah Shujah) को जो सिंहासन का दावेदार था और जो उस समय लुधियाना में अंग्रेज़ों की शरण में था अफ़ग़ानिस्तान की राजगद्दी पर बिठाना चाहा और इस उद्देश्य के लिये रणजीतसिंह, शाहशुजा और अंग्रेज़ों के मध्य एक सन्धि हुई।

घटनायें—अंग्रेज़ी सेनाओं ने 1839 ई० में सिंध से होते हुए अफ़गानिस्तान मे प्रवेश किया और कन्धार (Kandhar), ग़ज़नी (Ghazni) और काबुल (Kabul) विजय कर लिए। दोस्त मुहम्मद ख़ाँ काबुल से भाग गया और शाहशुजा को काबुल के सिंहासन पर बिठा दिया गया। इसके पश्चात् दोस्त मुहम्मद ख़ाँ स्वयं अंग्रेज़ों की शरण में आ गया और उसे 1840 ई० में राजबन्दी बनाकर कल-कत्ते भेज दिया गया। अब थोड़ी सी सेना तो शाहशुजा की सहायता के लिए अफ़गानिस्तान की भिन्न-भिन्न छावनियों में रखी गई और शेष सारी भारतवर्ष लौट आई।

कुछ समय तो वहाँ शांति रही, परन्तु अफ़ग़ान लोग शाहशुजा को नहीं चाहते थे, क्योंकि उसने अंग्रेज़ों की सहायता द्वारा राज सिंहा-सन प्राप्त किया था। साथ ही अंग्रेज़ी सेना के दुर्व्यवहार ने भी पठानों को उत्तेजित कर दिया था। इसलिये देश भर में विद्रोह होने आरम्भ हो गये। पठानों ने दोस्त मुहम्मद ख़ाँ के पुत्र अकबर ख़ाँ (Akbar Khan) के नेतृत्व में पोलिटिकल एजेन्ट बर्नज (Burnes) का वध कर दिया। भेंट के समय अकबर ख़ाँ ने अंग्रेज़ी राजदूत मैकनाटन (Macnaghten) का भी वध कर दिया। इस के पश्चात् अङ्गरेजी सेना को, जिसकी संख्या सोलह सहस्र थी, पूर्णतया निहत्थे कर के वापिस भारतवर्ष लौट जाने की आज्ञा दे दी गई। परन्तु कुछ तो कठोर शीत के कारण और कुछ अफ़ग़ानों की गोलाबारी के कारण सम्पूर्ण सेना नष्ट हो गई। केवल एक व्यक्ति डाक्टर ब्राईडन (Dr. Brydon) बच कर जलालाबाद पहुँच गया। अब लार्ड आकलैंड का शासन समय समाप्त हो गया था। इसलिए वह वापिस चला गया और उसके स्थान

पर लार्ड एलिनबरा गवर्नर जनरल नियुक्त होकर आया।

एलिनबरा ने इस पराजय का बदला लेने के लिये सेनायें भेजीं जिन्होने जाते ही *ग़जनी* (Ghazni) और *काबुल* (Kabul) पर अधिकार कर लिया। काबुल के सबसे बड़े बाज़ार को तोपों से उड़ा दिया गया और युद्ध समाप्त हो गया।

परिणाम—(१) शाहशुजा का चूँकि वध हो चुका था, इसलिये दोस्त मुहम्मद खां को ही अमीर स्वीकार कर लिया गया।

(२) इस युद्ध में अङ्गरेजों को व्यर्थ में बहुत धन व जन की हानि उठानी पड़ी। इस युद्ध में लगभग डेढ़ करोड़ पौंड और बीस हजार जानें नष्ट हुई।

Q. Write in brief the story of the annexation of Sind. (P. U. 1931)

प्रश्न—*सिन्ध के अङ्गरेजी राज्य में सम्मिलित किये जाने का संक्षिप्त वर्णन करो।*

सिन्ध का अंगरेज़ी राज्य में सम्मिलित होना 1843 ई०

कुछ समय से कुछ बलोची सरदारों ने सिन्ध पर अधिकार करके वहाँ तीन स्वतत्र रियासतें (खैरपुर, हैदराबाद, मीरपुर) स्थापित कर रखी थीं। उन बलोची सरदारों को *सिन्ध के अमीर* कहते थे। सर्वप्रथम अङ्गरेज़ी गवर्नमेंट का सम्बन्ध उन अमीरों के साथ लार्ड मिण्टो प्रथम के शासनकाल में हुआ। क्योंकि उन दिनो भूमि मार्ग से भारतवर्ष पर फ्रांस से आक्रमण का भय था इसलिये *लार्ड मिण्टो* (Lord Minto) ने सिन्ध के अमीरों के साथ स्थायी मित्रता की सन्धि कर ली और अमीरो ने वचन दिया कि फ्रांसीसियो को अपने देश में से लाँघने नहीं देंगे।

विलियम बैंटिक के शासन में ब्रिटिश गवर्नमेंट ने सिन्ध के अमीरों के साथ (1832 ई० में) एक और सन्धि कर ली थी जिसके द्वारा अङ्गरेजों को सिन्ध में व्यापार करने की आज्ञा मिल गई और साथ ही यह निश्चित हुआ कि अङ्गरेज़ कभी अपनी सेनाएँ सिन्ध में से नहीं गुज़ारेंगे।

अफग़ानिस्तान के प्रथम युद्ध के समय इस सन्धि को प्रत्यक्ष रूप से भंग करते हुए सिन्ध के प्राँत से अङ्गरेज़ी सेनायें भेजी गईं। अङ्गरेज़ों की प्रतिज्ञा भग के उपरान्त और युद्ध में अङ्गरेज़ों को नष्ट होते देखकर भी सिन्ध के अमीर उनके आज्ञाकारी रहे परन्तु जब युद्ध समाप्त हुआ तो लार्ड एलिनबरा ने अमीरों पर यह निराधार दोष लगाया कि वे युद्ध में अङ्गरेज़ों के विरुद्ध षड़यन्त्र रचते रहे हैं और उसने सर चार्ल्स नेपियर (Sir Charles Napier) को इस सम्बन्ध में जाँच करने के सर्व अधिकार देकर सिन्ध भेजा। वास्तव में अङ्गरेज़ी सरकार सिन्ध को अपने अधिकार में लाना चाहती थी। इसका एक कारण तो यह था कि अफग़ानिस्तान के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही करने के लिये सिन्ध सुदृढ़ फौजी छावनी का काम दे सकता था। दूसरे, सिन्ध व्यापार के लिये भी लाभकारी था। तीसरे, लार्ड एलिनबरा एक बड़ी विजय प्राप्त करने का इच्छुक था, जिससे अफग़ानिस्तान की पराजय की अपकीर्ति को धो सके। चौथे, अङ्गरेज़ी सरकार नहीं चाहती थी कि भारतवर्ष की सीमा पर सिन्ध की एक दुर्बल रियासत स्थापित रहे।

चार्ल्स नेपियर भी सिन्ध पर अधिकार करने का उत्कट अभिलाषी था, इसलिये उसने सिन्ध पहुँच कर अपने कठोर व्यवहार और अनुचित मांगों द्वारा बलोचियों को अत्यन्त क्रुद्ध किया और उन्होंने अंग्रेज़ी रेज़ीडेंसी पर आक्रमण कर दिया। नेपियर तो यही चाहता था। अन्त में युद्ध छिड़ गया। अमीरों को **म्यानी** (Miani) और **दाबो** (Dabu) की लड़ाइयों में पूर्णतया पराजय प्राप्त हुई और सिन्ध 1843 ई० में अङ्गरेज़ी राज्य में सम्मिलित कर लिया गया।

लार्ड हार्डिंङ्ग प्रथम

(LORD HARDINGE)

1844—1848

लार्ड हार्डिंग एक बड़ा अनुभवी तथा युद्ध-कुशल सैनिक था। जब

RANJIT SINGH'S EMPIRE
SRINAGAR
CHILIANWALA
JAMMU
GUJRAT
KANGRA
DERA ISMAIL KHAN
LAHORE
AMRITSAR
SOBRAON
ALIWAL
FEROZSHAH
MUDKI
MULTAN
DERA GHAZI KHAN
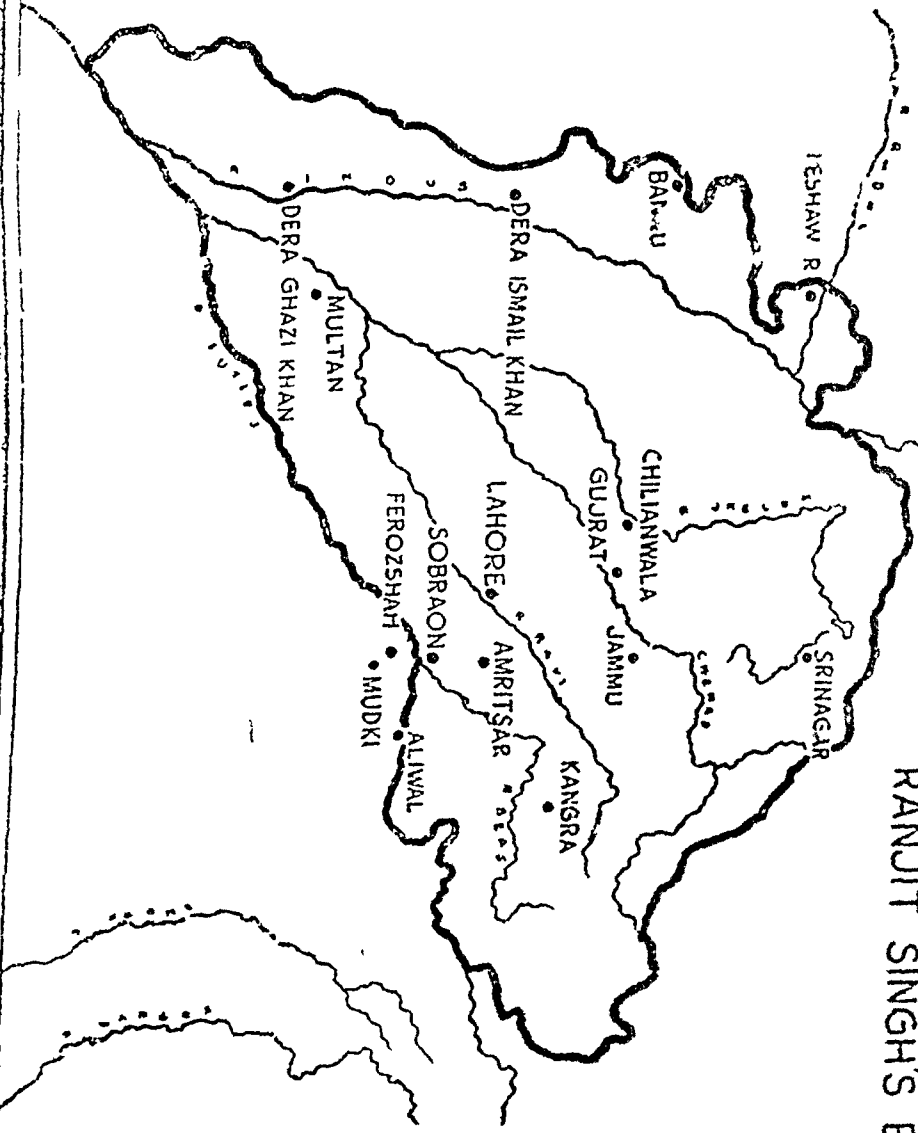
वह गवर्नर जनरल बन कर भारत में आया तो उस समय केवल पंजाब का ही स्वतंत्र राज्य शेष था। उसके शासन-काल की सबसे प्रसिद्ध घटना *सिक्खों का प्रथम युद्ध* है, किन्तु उसने शासन-काल के पहिले ही वर्ष में कई एक लाभकारी सुधार किये।

सुधार (Reforms)

(१) भारत की रेलों की स्कीम तैयार हो गई। (२) नहर गंगा के खोदने के विषय पर विचार किया गया। (३) शिक्षा को उन्नत किया गया और रुड़की में इंजीनियरिंग कालिज (Engineering College) स्थापित किया गया। (४) अधीन रियासतों में सती-प्रथा तथा कन्या-वध को रोकने का प्रयत्न किया गया। (५) उड़ीसा की असभ्य जातियों में देवी पर मनुष्यों की बलि चढ़ाने की रीति को समाप्त किया गया।

हार्डिंग प्रथम

☞ Q. Briefly describe the causes, main events and results of the First Sikh War. (P. U. 1937)

(Imporant)

प्रश्न—*सिक्खों के प्रथम युद्ध के कारण, प्रसिद्ध घटनाओं और परिणाम का वर्णन करो।*

सिक्खों का प्रथम युद्ध 1845—1846

कारण—(१) 1839 ई० में महाराजा रणजीतसिंह शेर-इ-पंजाब की मृत्यु हो गई और उसके मरते ही सिक्ख साम्राज्य की महानता का अन्त हो गया। खालसा सेना अधिक प्रभावशाली हो गई। पंजाब में खलबली फैल गई और छः वर्ष तक रक्त-पात तथा षड्यन्त्र होते रहे। अन्ततः 1843 ई० में महाराजा रणजीत सिंह का सबसे छोटा पुत्र दिलीप सिंह (Dilip Singh) जो

अभी नाबालिग था, राजसिंहासन पर बैठा और उसकी *माता रानी जिन्दां* उसकी संरक्षिका नियुक्त हुई। परन्तु रानी जिन्दाँ और अन्य कई सिक्ख सरदार खालसा सेना से भयभीत थे और वे चाहते थे कि अंग्रेज़ों से लड़ाकर उसे शक्तिहीन कर दिया जाय, इसलिये उन्होंने खालसा सेना को अंग्रेज़ी प्रदेशो पर आक्रमण करने के लिये उभारा।

(२) उधर अङ्गरेज़ों ने सतलुज पर अपनी सेना को सुदृढ़ करना आरम्भ कर दिया था, इससे सिक्खों के मन में अङ्गरेज़ों के विरुद्ध सन्देह होने लगा।

(३) सिन्ध के अङ्गरेज़ी राज्य में मिला लिये जाने से उनका सन्देह और भी पक्का हो गया।

(४) अफ़ग़ानिस्तान के प्रथम युद्ध में अङ्गरेज़ी सेनाओं की पराजय ने सिक्खों के हौसले बढ़ा दिये थे और अब उन्हे यह विश्वास हो गया था कि अङ्गरेज़ी सेनाओं को परास्त करना कुछ कठिन काम नहीं।

दिसम्बर 1845 ई० में सिक्ख सेना सतलुज नदी पार करके अङ्गरेज़ी प्रदेशों में घुस गई। यह देखकर लार्ड हार्डिंग ने युद्ध की घोषणा कर दी।

घटनायें—अङ्गरेज़ी सेना का सेनापति *सर ह्यू गाफ़* (Sir Hugh Gough) था परन्तु लार्ड हार्डिंग स्वयं भी युद्ध मे सम्मिलित हुआ। सिक्खों ने बड़ी वीरता से युद्ध लड़ा, परन्तु उनके सेना-नायक शुद्ध हृदय के न थे, अतः उन्हे पराजय हुई।

सबसे पहली लड़ाई *मुदकी* (Mudki) के स्थान पर हुई। यद्यपि सिक्खों ने बड़ी वीरता से सामना किया, तथापि वे पराजित हुये। दूसरी लड़ाई *फ़िरोज़शाह* (Ferozeshah) के स्थान पर हुई। यह बड़ी घमासान की लड़ाई थी। इसमें अंग्रेज़ों को बहुत हानि हुई, किन्तु अन्त में सिक्ख हार गये। तीसरी लड़ाई *अलीवाल* (Aliwal) के स्थान पर हुई और इसमें भी सिक्खों की पराजय हुई। इस युद्ध की अन्तिम और निर्णयकारी लड़ाई *सबराओ* (Sabraon) के स्थान पर हुई। एक भीषण लड़ाई के पश्चात् सिक्खों को पराजय प्राप्त हुई और उनके कई

सरदार मारे गये। प्रसिद्ध सिक्ख सरदार शामसिंह अटारी वाला भी इस युद्ध में वीरतापूर्वक लड़ता हुआ मारा गया और अन्त में लाहौर के सन्धि-पत्र द्वारा युद्ध समाप्त हुआ।

लाहौर का सन्धि-पत्र, 1846 ई०—इस सन्धि-पत्र की शर्तें निम्नलिखित थीं।

(१) सतलुज और व्यास का मध्यवर्ती प्रदेश अङ्गरेज़ों को दे दिया गया।

(२) सिक्ख सेना घटा कर केवल बीस सहस्र प्यादा और बारह सहस्र घुड़सवार कर दी गई।

(३) सर हैनरी लारैन्स (Sir Henry Lawrence) को लाहौर में रेज़ीडैन्ट नियुक्त किया गया।

(४) एक अङ्गरेजी सेना शान्ति स्थापना के लिये लाहौर में रखी गई।

(५) सिक्खों को युद्ध की हानि-पूर्ति के लिये डेढ़ करोड रुपया या ५० लाख रुपया और काश्मीर का प्रान्त अङ्गरेज़ों को देने का निश्चय किया गया।

नोट—सिक्खों के पास हानि-पूर्ति का रुपया देने के लिये केवल ५० लाख रुपया था। इस लिये उन्होंने काश्मीर का देश भी दे दिया। परन्तु अङ्गरेज़ों ने काश्मीर का देश डोगरा सरदार गुलाबसिंह को वेच दिया। गुलाबसिंह ख़ालसा दरबार की ओर से जम्मू का सूबेदार था, परंतु इस प्रकार वह स्वतंत्र राजा स्वीकार कर लिया गया।

लाहौर के संधिपत्र के शीघ्र ही पश्चात एक और संधिपत्र किया गया जिससे अङ्गरेज़ों को पंजाब में बहुत अधिकार प्राप्त हो गया और सारी शक्ति रेज़ीडैण्ट के हाथ आ गई।

लार्ड डलहौज़ी
(LORD DALHOUSIE)
1848—1856

लार्ड डलहौज़ी की गणना भारत के सर्वश्रेष्ट गवर्नर जनरलों

में की जाती है। इस पद पर नियुक्त होने के समय उसकी आयु ३६ वर्ष की थी। उसने अंग्रेज़ी साम्राज्य को बहुत विस्तृत किया और देश में कई सुधार प्रचलित किये। अधिक कार्य करने के कारण उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया और लौटने के चार वर्ष ही पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई।

लार्ड डलहौज़ी

☞ Q. Briefly describe the leading events of the administration of Lord Dalhousie. What do you know about his reforms? (P.U. 1926-42-44-47-49 53) (V. Important)

प्रश्न – *लार्ड डलहौजी के शासनकाल की प्रसिद्ध घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन करो तथा उसके सुधार लिखो।*

लार्ड डलहौज़ी के शासन काल की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित हैं :—

(१) सिक्खों का दूसरा युद्ध और पंजाब का अंग्रेजी राज्य में सम्मिलन (२) ब्रह्मा का दूसरा युद्ध (३) लैप्स की नीति (Doctrine of Lapse) *(४) सम्मिलित प्रदेश (५) पदवियों तथा पैन्शनों का बन्द करना (६) चार्टर* ऐक्ट 1853 ई० (७) *सुधार*।

सिक्खों का दूसरा युद्ध 1848—1849

कारण—(१) सिक्ख अपनी पहली पराजय से लज्जित हो रहे थे और अपनी खोई हुई स्वतन्त्रता को फिर से प्राप्त करने के लिये बहुत व्याकुल थे। उनका यह भी विचार था कि पहिले युद्ध में उनकी पराजय उन सेना नायकों के विश्वास घात के कारण हुई थी।

(२) बड़े-बड़े पदों पर अंग्रेज़ ही नियुक्त थे और वास्तव में राज्य

उनके ही अधिकार में था। सिक्ख इस बात से बहुत अप्रसन्न थे।

(३) रानी जिंदाँ पर यह अपराध लगाया गया कि वह अंग्रेज़ों को पंजाब से निकालने के लिये षड्यन्त्र रच रही है। इस आधार पर उसे देश निर्वासन कर दिया गया। सिक्खों ने इस बात को बहुत बुरा मनाया।

(४) *युद्ध का तात्कालिक कारण* **मूलराज का विद्रोह** *था*। दीवान मूलराज दरबार लाहौर की ओर से मुलतान का शासक था। जब उससे लेखा माँगा गया तो उसने त्याग-पत्र दे दिया। उसके स्थान पर सरदार *काहन सिंह* को नियुक्त किया गया, और दो अंग्रेज़ अधिकारी (Angew और Anderson) चार्ज दिलवाने के लिये उसके साथ गये, परन्तु उन अंग्रेज़ों का मुलतान में वध कर दिया गया। अंग्रेज़ों का यह विचार था कि इस वध में मूलराज का हाथ है। इसके पश्चात् दीवान मूलराज ने विद्रोह कर दिया। एक अंग्रेज़ अधिकारी ऐडवर्डज (Edwardes) ने थोड़ी सी सेना एकत्र करके मूलराज को मुलतान के दुर्ग में घेर लिया। जब यह सूचना लाहौर पहुँची तो खालसा दरबार ने एक व्यक्ति *शेरसिंह* को सेना देकर विद्रोह दबाने के लिये भेजा, परन्तु शेरसिंह मूलराज के साथ मिल गया। इस समय सारे पंजाब में विद्रोह फैल गया और सिक्खों ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध शस्त्र उठा लिये। उन्होंने दोस्त मुहम्मद खाँ को पेशावर लौटा देने का अविश्वासन देकर पठानों से भी सहायता प्राप्त की।

घटनाएँ—अंग्रेज़ी सेनाओं का सेनापति *लार्ड गाफ़* (Lord Gough) था। सर्वप्रथम चनाव नदी के तट पर *रामनगर* (Ram Nagar) और *सादुल्लापुर* (Sadullapur) के स्थान पर साधारण लड़ाइयाँ हुई परन्तु परिणाम कुछ न निकला। इस युद्ध की प्रथम प्रसिद्ध लड़ाई **चिलियाँ वाला** (Chilianwala) के स्थान पर हुई, जिसमें सिक्ख अत्यन्त वीरता के साथ लड़े और यद्यपि अन्त में विजय अंग्रेज़ों की हुई, तथापि उनको अत्यन्त हानि उठानी पड़ी। डल्हौज़ी ने इस लड़ाई के सम्बन्ध में लिखा था कि "हमे एक बड़ी विजय प्राप्त

हुई है परन्तु एक और ऐसी विजय हमारा नाश कर देगी।" जब इस लड़ाई की सूचना इंगलैंड पहुँची तो गाफ के स्थान पर सर चार्ल्स नेपियर (Sir Charles Napier) सिंध के विजेता को सेनापति बना कर भेजा गया, परन्तु उसके पहुँचने से पहिले ही गाफ ने सिक्खों को **गुजरात** (Gujrat) के स्थान पर एक निर्णयकारी पराजय देकर अपकीर्ति के कलंक को धो डाला। गुजरात की लड़ाई में तोपखाने का बड़ा प्रयोग हुआ था, इसलिये इसे तोपों की लड़ाई (Batule of the Guns) भी कहते हैं। इसी बीच में मुलतान पर भी अधिकार हो चुका था। अन्त में सिक्खो ने हथियार डाल दिये और युद्ध समाप्त हुआ।

परिणाम—(१) 29 मार्च 1849 ई० को पंजाब अंगरेजी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया।

(२) महाराजा दिलीपसिंह की ५० हज़ार पौंड वार्षिक पेंशन नियत हो गई और उसे इंगलैंड भेज दिया गया।

(३) मूलराज को हत्या के अभियोग में फाँसी का निर्देश हुआ, परन्तु कुछ समय के पश्चात् यह दण्ड काले पानी के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। परन्तु उसने मार्ग में आत्म हत्या कर ली।

कारण—ब्रह्मा के प्रथम युद्ध के पश्चात् बहुत से अङ्गरेज़ व्यापारी ब्रह्मा के दक्षिणी तट पर जाकर बस गये थे। परन्तु रंगून का बर्मी गवर्नर, उनसे अत्यन्त अनुचित व्यवहार करता था और उनके व्यापार में बाधा डालता था। इन व्यापारियों ने लार्ड डल्हौज़ी से शिकायत की। उसने ब्रह्मा के राजा को शिकायतें दूर करने और हानिपूर्ति के लिये लिखा, परन्तु उसने कुछ उत्तर न दिया। इस पर लार्ड डल्हौज़ी ने 1852 ई० में युद्ध घोषणा कर दी।

ब्रह्मा का दूसरा युद्ध 1852

घटनाएं—साधारण सी लड़ाई के पश्चात् रंगून (Rangoon) और प्रोम (Prome) पर विजय प्राप्त कर ली गई। इसके पश्चात पीगू (Pegu) का प्रदेश भी अङ्गरेज़ी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया और युद्ध समाप्त हो गया।

परिणाम—तनासरम, अराकान और पीगू को मिला कर लोयर ब्रह्मा (Lower Burma) के नाम से एक नये प्रान्त की स्थापना की गई, जिसकी राजधानी रंगून नियत हुई।

लार्ड डल्हौजी के राज्य-काल की एक प्रसिद्ध घटना यह है कि उसने *लैप्स की नीति* पर आचरण करते हुए कई देशी रियासतों को अंगरेज़ी राज्य में मिला लिया जिससे अङ्गरेज़ी राज्य में बड़ी वृद्धि हुई।

लैप्स की नीति
Doctrine of Lapse

लैप्स की नीति यह थी कि *"यदि किसी अधीन करदायी रियासत का राजा या नवाब पुत्रहीन मर जाय तो उसके दत्तक पुत्र को सिंहासन पर नहीं बिठाया जायगा, वरन् वह रियासत अङ्गरेजी साम्राज्य में सम्मिलित कर ली जायगी।"* यह कोई नवीन रीति न थी, परन्तु पहले से ही प्रचलित थी। (लार्ड विलियम बैंटिंक ने भी इस पर आचरण किया था)। बात केवल इतनी थी कि लार्ड डल्हौज़ी ने इस पर कठोरता से आचरण किया और किसी भी ऐसे अवसर को हाथ से जाने न दिया।

संयोग ऐसा हुआ कि लार्ड डल्हौजी के समय में बहुत सी रियासतों के राजाओं की जो पुत्र-हीन थे मृत्यु हो गई, जिससे सात रियासतें अङ्गरेजी साम्राज्य में सम्मिलित कर ली गईं। उनमें से अधिक प्रसिद्ध *सतारा* (Satara), *झांसी* (Jhansi) और *नागपुर* (Nagpur) थीं। शेष छोटी-छोटी रियासतें *जैतपुर* (बुन्देलखण्ड में), *सम्बलपुर* (उड़ीसा में), *बघाट* (शिमले के समीप) और *उदयपुर* (मध्य प्रदेश में) थीं।

इस नीति से देशी शासक अङ्गरेजी साम्राज्य से अप्रसन्न हो गये, और उन्हें यह भय उत्पन्न हो गया कि उनकी रियासतें भी शीघ्र ही या कुछ समय पश्चात् ब्रिटिश राज्य में सम्मिलित कर ली जायेंगी। लैप्स *की यह नीति विद्रोह का एक कारण बनी।*

लार्ड डल्हौजी ने लैप्स की नीति का प्रयोग कुछ रियासतों के शासकों की उपाधियों तथा पैन्शनों को छीनने में भी किया।

(१) *करनाटक के नवाब और तंजौर के राजा* की मृत्यु पर उनकी

पदवियां उड़ा दी गईं।

पदवियों और पैंशनों का बन्द करना

(२) पेशवा बाजीराव द्वितीय की मृत्यु पर उसकी आठ लाख रुपया वार्षिक पैन्शन उसके दत्तक पुत्र *नाना साहिब* को देने से निषेद किया गया।

(३) यह भी निश्चित हुआ कि मुग़ल बादशाह *बहादुरशाह द्वितीय* की मृत्यु पर उसकी सन्तान को दुर्ग और राज भवन त्याग करने पड़ेंगे।

सम्मिलित प्रदेश (Annexations)

लार्ड डल्हौज़ी ने अपने शासनकाल में कई प्रदेशों को अंग्रेज़ी साम्राज्य में सम्मिलित करके उसको अत्यन्त विस्तृत किया। उसके सम्मिलित प्रदेश निम्नलिखित भागों में विभक्त किये जा सकते हैं :—

(१) विजयों द्वारा सम्मिलित प्रदेश :—

पंजाब (Punjab) का प्रांत सिक्खों के दूसरे युद्ध के परिणाम स्वरूप और *पीगू* (Pegu) का प्रदेश ब्रह्मा के द्वितीय युद्ध के परिणाम स्वरूप अंग्रेज़ी साम्राज्य में सम्मिलित किये गये।

(२) लैप्प की नीति (Doctrine of Lapse) **द्वारा सम्मिलित प्रदेश :—**

लैप्स की नीति द्वारा सात रियासतें अंग्रेज़ी साम्राज्य में सम्मिलित कर ली गईं। उनमें से *सतारा, झाँसी* और *नागपुर* अधिक प्रसिद्ध हैं। शेष चार रियासतें जैतपुर, सम्बलपुर, उदयपुर* और बघाट* थीं।

(३) सहायक सेना के व्यय के बदले में प्राप्त प्रदेश :—

1853 ई० में **बरार** (Berar) का प्रदेश निज़ाम हैदराबाद ने सहायक सेना के व्यय को पूरा करने के लिये अंग्रेज़ों को दे दिया।

(४) कुप्रबन्ध के कारण सम्मिलित प्रदेश :—

अवध (Oudh) का प्रबन्ध असन्तोषजनक था और रियासत में

*उदयपुर और बघाट की रियासतें लार्ड कैनिंग ने वापिस लौटा दी थीं।

अशान्ति फैली हुई थी, अतः 1856 ई० में एक घोषणा द्वारा अवध को कुप्रबन्ध के कारण अंग्रेज़ी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया और वहाँ के नवाब *वाजिद अली शाह* को एक यथेष्ट पेन्शन देकर कलकत्ते भेज दिया गया। परन्तु इससे अवध में अशान्ति की एक लहर दौड़ गई।

चार्टर ऐक्ट (Charter Act) 1853

1853 ई० में कम्पनी को अधिकार-पत्र अन्तिम बार प्रदान किया गया। उस समय कुछ परिवर्तन किये गये। जैसे (१) पार्लियामेंट जब चाहे कंपनी का राज्य समाप्त कर दे, (२) गवर्नर जनरल को बंगाल के शासन से पृथक् कर दिया गया और उस प्रान्त के प्रबन्ध के लिये लैफ्टिनैन्ट गवर्नर नियुक्त कर दिया गया, (३) सिविल सर्विस के लिये लन्दन में मुकाबले की परीक्षा होनी नियत की गई, (४) राज्य नियम बनाने वाली एक सभा (Lagislative Council) भी बनाई गई जिसके सब मेम्बर सरकारी थे।

लार्ड डल्हौज़ी ने देश में कई लाभदायक **सुधार** प्रचलित किये।

सुधार (Reforms)

(१) **प्रजा हितार्थ निर्माण-विभाग**—लार्ड डल्हौज़ी ने Public Works Department (पबलिक वर्क्स् विभाग) स्थापित किया, जिस का उद्देश्य, सड़कों, नहरों, पुलों इत्यादि को बनाना और ठीक अवस्था में रखना है। इस विभाग ने कई सड़कें, नहरें और पुल बनवाये। गंगा नदी से *गंगा नहर* निकाली गई। प्रसिद्ध *जरनैली सड़क* (Grand Trunk Road) जो कलकत्ते से पेशावर तक जाती है और कई अन्य छोटी छोटी सड़कें इसी समय में बनाई गई।

(२) **डाक तथा तार का विभाग** (Post and Telegraph Department)—देश में स्थान-स्थान पर आधुनिक ढंग के डाकघर और तारघर स्थापित किये गये, जिससे समाचार पहुँचाने के कार्य में अधिक सुविधा हो गई। एक ही मोल (आधा आना) का टिकट लगा

कर पत्र भेजने की रीति इसी समय में आरम्भ हुई। थोड़े ही समय में प्रसिद्ध २ छावनियों को तार से मिला दिया गया।

(३) रेल (Railways)—रेलवे लाईन भी भारतवर्ष में डल्हौज़ी के समय में ही आरम्भ हुई, जिससे यात्रा करने में धीरे-धीरे बहुत सुविधा हो गई। 1853 ई० में बम्बई *तथा थाना* (Thana) के मध्य पहली रेलवे लाईन बनाई गई जो बीस मील लम्बी थी। अब तो सारे देश में रेलो का जाल सा बिछा हुआ है।

(४) शिक्षा-विभाग (Education)—लार्ड डल्हौज़ी ने शिक्षा विभाग की ओर विशेष ध्यान दिया। 1854 ई० में बोर्ड आफ कन्ट्रोल के सभापति *सर चार्ल्स वुड* (Sir Charles Wood) की शिक्षा सबधी रिपोर्ट भारतवर्ष पहुँची। *इस रिपोर्ट को वर्तमान शिक्षा प्रणाली की आधार शिला माना जाता है।* इसमें ये प्रस्ताव किये गये कि (१) प्रत्येक प्रान्त में एक-एक शिक्षा-विभाग स्थापित किया जाय, (२) उच्च शिक्षा के प्रबन्ध के लिये कलकत्ता, बम्बई और मद्रास आदि स्थानों में विश्व-विद्यालय खोले जायँ, (३) प्रत्येक ज़िले में एक सरकारी स्कूल खोला जाय, (४) प्रजा को देशी भाषा में भी शिक्षा दी जाये, (५) प्राइवेट स्कूलों को सरकारी सहायता दी जाये।

डल्हौज़ी ने इस रिपोर्ट पर अनुकरण किया और शिक्षा-विभाग स्थापित किये। (यूनीवर्सिटियाँ डल्हौजी के शासनकाल में नहीं खुलीं)।

(५) सामाजिक सुधार (Social Reforms) —(१) हिन्दू विधवाओं का पुनर्विवाह नियमानुसार नियत किया गया, (२) यह भी निश्चय किया गया कि यदि कोई व्यक्ति अपना मत परिवर्तन कर ले तो भी पैतृक सम्पत्ति का अधिकारी होगा।

(६) अन्य सुधार—लार्ड डल्हौज़ी ने सेना का भी सुधार किया और सैनिकों के आराम का प्रबन्ध किया। इसके अतिरिक्त उसने राज्य की आर्थिक दशा को भी पहले से अच्छा बना दिया।

Q. What were the outstanding achievements of Lord Dalhousie?

INDIA UNDER LORD DALHOUSIE
1856 A D
BALUCHISTAN
SIND
JHANSI
U P
NEPAL
BENGAL
ASSAM
U BURMA
BAY OF BENGAL
ARABIAN SEA
C P
NAGPUR
HYDERABAD
TRAVINCORE
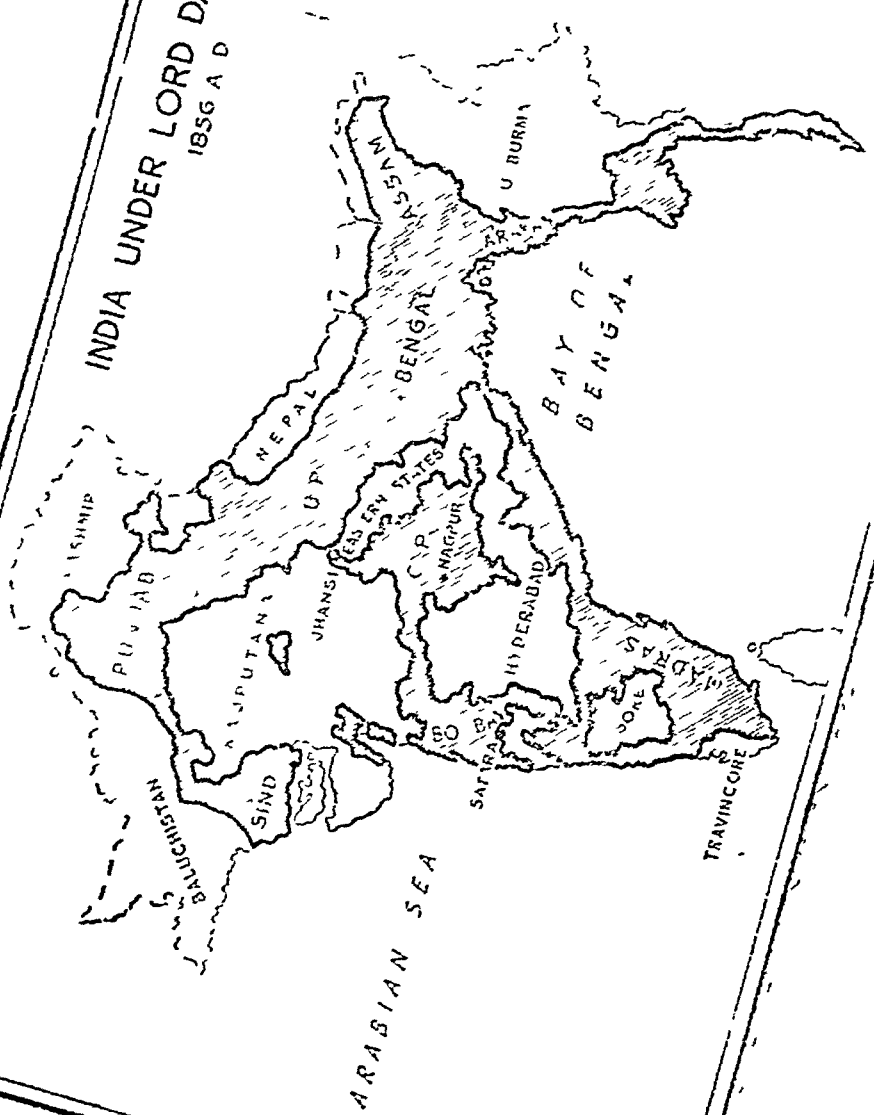
प्रश्न—*लार्ड डल्हौज़ी के प्रसिद्ध कार्यों का उल्लेख करो।*

लार्ड डल्हौज़ी के प्रसिद्ध कार्य

लार्ड डल्हौज़ी की गणना कम्पनी के सर्वश्रेष्ठ गवर्नर-जनरलों में की जाती है। उसका उल्लेखनीय कार्य *अंग्रेजी साम्राज्य को असाधारण रूप से विस्तृत करना और सुधारों को प्रचलित करना है।* लार्ड डल्हौज़ी को भारतवर्ष में आये हुये अभी तीन महीने ही हुये थे कि उसे सिक्खों जैसी सूरमा जाति से लड़ना पड़ा परन्तु डल्हौज़ी ने सिक्खों के मुकाबले के लिये प्रबल तैयारियाँ कीं और द्वितीय युद्ध (1848-49) में उन्हें पूर्ण रूप से पराजित किया और 1849 ई० में *पंजाब का प्रांत अङ्गरेज़ी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया।*

इसके पश्चात् उसे ब्रह्मा का द्वितीय युद्ध लड़ना पड़ा। इसके परिणाम स्वरूप पीगू और प्रोम पर अंग्रेज़ों का अधिकार हो गया और *लोअर ब्रह्मा का प्रान्त स्थापित किया गया।*

पंजाब और लोअर ब्रह्मा के अतिरिक्त डल्हौज़ी ने कई अन्य प्रदेश भी अंग्रेज़ी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिये। *सतारा, झाँसी, नागपुर* आदि सात रियासतें लैप्स की नीति (Doctrine of Lapse) द्वारा अंग्रेज़ी साम्राज्य में सम्मिलित कर ली गईं और अवध का प्रदेश कुप्रबन्ध के कारण और *बरार* (Berar) सहायक सेना के व्यय के स्थान पर अंग्रेज़ी राज्य में सम्मिलित किया गया। इस प्रकार डल्हौज़ी ने अंग्रेज़ी साम्राज्य को बहुत विस्तृत बनाया। इसके पश्चात् भारतवर्ष के चित्र में कोई अधिक परिवर्तन नहीं हुए।

अंग्रेज़ी साम्राज्य को विस्तृत करने के अतिरिक्त डल्हौज़ी ने कई सुधार प्रचलित किये। *निर्माण विभाग* (Public Works Department) *रेल, तार, डाक,* आदि के विभाग उसी ने स्थापित किये। रेल और तार के कारण सुदूर प्रान्तों में भारतवासियों का मेल-मिलाप बढ़ गया, जिससे जातीय भावों में वृद्धि आरम्भ हुई। *आधुनिक शिक्षा रीति* भी डल्हौज़ी के समय से ही आरम्भ हुई।

उससे पहले गवर्नर-जनरलों ने या तो अंग्रेज़ी प्रदेशों की संख्या

में बढ़ती की या वे सुधारों के कारण प्रसिद्ध हुए। लार्ड डल्हौजी ने सब से अधिक प्रदेश अङ्गरेज़ी साम्राज्य में सम्मिलित किये और सबसे अधिक सुधार प्रचलित किये। इस लिये वर्षों तक यह कहावत रही कि "आधुनिक भारत का निर्माता लार्ड डल्हौज़ी है।"

परन्तु इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि डल्हौज़ी के इतने सम्मिलित प्रदेशों और शीघ्रता से किये गये सुधारों ने देशी राजाओं और जनता को अंग्रेज़ी साम्राज्य के विरुद्ध कर दिया और जो विद्रोह लार्ड कैनिंग के समय में हुआ था, उसके लिये विशेषतया लार्ड डल्हौज़ी उत्तरदायी हैं।

लार्ड कैनिंग

(LORD CANNING)

1856—1858

लार्ड कैनिंग के समय की सबसे प्रसिद्ध घटना 1857 ई० का भारत-विद्रोह है जिसे भारत की स्वतन्त्रता का पहिला युद्ध भी कहते हैं।

☞ Q. Describe fully the causes, events and consequences of the Indian Mutiny (or the First War of Independence) Why was the Mutiny a failure ?
(P. U. 1927-33-35-40-44-46)
(V. Important)

लार्ड कैनिंग

प्रश्न—भारत-विद्रोह के कारण, घटनायें और परिणाम विस्तार पूर्वक वर्णन करो और बताओ कि यह विद्रोह क्यों असफल रहा ?

भारत विद्रोह वास्तव में सेना का विद्रोह था परन्तु यह ऐसे समय

पर हुआ जब कि जनता में लार्ड डलहौजी की नीति के कारण अशान्ति और सन्देह फैले हुए थे जिससे यह विद्रोह बहुत अधिक फैल गया। एक यह विचार भी है कि यह सेना का विद्रोह नहीं था वरन् *भारतवर्ष की स्वतन्त्रता का प्रथम युद्ध था।*

भारत विद्रोह 1857

इस विद्रोह के कारण चार भागों में विभक्त हो सकते हैं :—

विद्रोह के कारण

(१) *राजनैतिक* (Political)
(२) *धार्मिक* (Religious)
(३) *सामाजिक तथा आर्थिक* (Social and Economic)
(४) *सेना सम्बन्धी* (Military)

(१) राजनैतिक कारण (Political Causes)—*लार्ड डलहौजी की लैप्स की नीति ने सारे देशी राजाओं और नवाबों मे अशान्ति फैला रक्खी थी और वे असन्तुष्ट हो गये थे।*

(१) पेशवा का दत्तक पुत्र *नाना साहिब* (Nana Sahib) पेन्शन न मिलने के कारण अङ्गरेज़ों का कट्टर शत्रु बन गया था (२) झाँसी की युवा रानी *लक्ष्मीबाई* (Lakshmi Bai) दत्तक पुत्र बनाने की आज्ञा न मिलने के कारण अत्यन्त रुष्ट थी। (३) *अवध* के अङ्गरेज़ी राज्य में सम्मिलित हो जाने से वहाँ के मुसलमान असन्तुष्ट थे और वहाँ बड़ी अशान्ति फैली हुई थी। (४) देहली का बादशाह *बहादुर शाह* (Bahadur Shah) इस विचार से कि उसकी मृत्यु के पश्चात उस की सन्तान को राजभवन छोड़ना पड़ेगा, क्रोध से लाल पीला हो रहा था। (५) *सितारा और नागपुर* की रियासतों के अङ्गरेज़ी राज्य में सम्मिलित हो जाने से *मराठे* (Marathas) भी असन्तुष्ट थे।

(२) धार्मिक कारण (Religious Causes)—*भारत मे पश्चिमी सभ्यता के शीघ्रता से फैल जाने से बहुत सी जनता असन्तुष्ट हो गई थी।*

(१) सती प्रथा का निषेध, (२) ईसाई प्रचारकों का प्रचार, (३) पश्चिमी शिक्षा का विस्तार, (४) रेलवे का प्रचलन, (५) तार का क्रम,

(६) विधवा विवाह का नियम, (७) धर्म बदल लेने पर भी पैतृक सम्पत्ति का भागी होना, आदि, ऐसी बाते थीं जिन्हे जनता भय और सन्देह की दृष्टि से देखती थी। जनता का यह विचार था कि अंगरेज *शासक उनको ईसाई बनाने पर तुले हुये हैं। वे प्रायः कहा करते थे कि हमारा धर्म सुरक्षित नहीं।*

(३) सामाजिक तथा आर्थिक कारण (Social and Economic Causes)—*विद्रोह का एक कारण सामाजिक तथा आर्थिक अशान्ति भी थी।*

(१) लार्ड विलियम बैंटिक ने बंगाल में कई जागीरों पर भूमिकर लगा दिया था और कई जागीरें छीन ली थीं। इसलिये बंगाल के कई जागीरदार असन्तुष्ट थे। (२) लार्ड डल्हौज़ी के समय में भी दक्षिण में सहस्रों जागीरें छीन ली गई थीं, इससे भी अशान्ति फैल गई थी। (३) इसके अतिरिक्त जिन राजाओं और नवाबो को गद्दी से उतार दिया गया था उनके सेवको की आय और पेंशनखोरों की पेंशने लगभग बन्द हो गई थीं और वे बहुत अशान्त थे। विशेषकर अवध में बहुत अशान्ति फैल गई थी।

(४) सेना सम्बन्धी कारण (Military Causes)—*विद्रोह का सबसे मुख्य कारण भारतीय सेना की अप्रसन्नता थी।* (१) भारतीय सेना ने अपनी वीरता से भारतीय साम्राज्य अङ्गरेजो के लिये विजय कर दिया था परन्तु अब उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं होता था। (२) उनके वेतन थोड़े थे और भारतवासियों को चाहे वे कितने ही योग्य क्यो न हों ऊँचे सैनिक पदो से वचित रखा जाता था। (३) भारतीय सैनिकों को दूर देशों में भी युद्ध लड़ने के लिये भेजा जाता था परन्तु इसके लिए उन्हें कोई विशेष अलाउँस नहीं दिया जाता था। (४) लार्ड कैनिंग ने एक कानून जिसे General Service Enlistment Act (सर्व भरती नियम) कहते थे पास किया जिसके द्वारा भारतीय सेना को प्रत्येक स्थान पर लड़ने के लिये भेजा जा सकता था, परन्तु ब्राह्मण सैनिक

समुद्र को पार करना धर्म के विरुद्ध समझते थे। (५) बंगाल की सेना में अधिकतर अवध के सैनिक थे जो अवध के अंग्रेज़ी राज्य में मिलाये जाने के कारण अत्यन्त रुष्ट थे। (६) प्रथम अफ़ग़ान युद्ध में अंग्रेज़ों की पराजय ने उनकी वीरता तथा मान को बहुत घटा दिया था और अब भारतीय सैनिक यह सोचने लग गये थे कि अंग्रेज़ भी हार सकते हैं। (७) भारतीय सेना की संख्या की अधिकता ने उनके साहस और भी बढ़ा दिये थे। उस समय भारतीय सेना की संख्या अंग्रेज़ी सेना से पाँच गुना अधिक थी।

(५) तात्कालिक कारण (Immediate Cause)—उन दिनों सैनिकों को नवीन राइफ़ल (Enfield rifles) दिये गये थे जिन में **चरबी वाले कारतूस** (Greased Cartridges) प्रयोग में लाये जाते थे। केवल यही नहीं परन्तु कारतूसो को राइफल में चढाने से पूर्व मुख से काटना पड़ता था। यह लोकवाद फैल गया कि यह चरवी गाय और सूअर की है। बस फिर क्या था ? कई एक छावनियों में विद्रोह फूट पड़ा।

विद्रोह की घटनायें

आरम्भ—वैसे तो सबसे पहले बगाल में *बारकपुर* तथा *बरहामपुर* में गडबड़ हुई, परन्तु विद्रोह का आरम्भ *रविवार* **10** *मई* **1857** *ई०* *से* **मेरठ** के स्थान से माना जाता है। वहाँ 9 मई को कुछ (८५) सैनिकों ने चरबी वाले कारतूस प्रयोग में लाने से इन्कार कर दिया था और वे बन्दी बना लिये गये थे। **१० मई** को उनके साथियो ने विद्रोह कर दिया और अपने अङ्गरेज अधिकारियों का वध कर दिया, फिर कारागार पर आक्रमण करके बन्दियों को छुड़ा दिया और देहली पहुँचे। इस प्रकार विद्रोह का आरम्भ हुआ।

विद्रोह के बड़े-बड़े केन्द्र *देहली*, *कानपुर*, *लखनऊ* और *मध्यभारत* थे।

(१) देहली (Delh[illegible] के विद्रोहियों ने देहली प[illegible]

वृद्ध मुग़ल बादशाह [illegible] adur Shah) को

पर बैठा दिया और कई अङ्गरेज़ अधिकारी तथा सैनिक वध कर दिये। कई अन्य स्थानों से भी देशी सेनायें विद्रोही होकर देहली आ पहुँचीं, और विद्रोहियों ने देहली पर अधिकार कर लिया, परन्तु पंजाब सर जान लारेंस (Sir John Lawrence) के अधीन आज्ञाकारी बना रहा और अङ्गरेज़ो ने पंजाबी सेनाओ की सहायता से देहली का घेरा डाल दिया। तीस मास के घेरे के पश्चात एक सैनिक अफसर **निकलसन**

बहादुर शाह

(Nicholson) की अध्यक्षता में देहली पर अधिकार कर लिया गया, परन्तु ठीक विजय के समय निकलसन मारा गया। बहादुरशाह हुमायूँ के मकबरे से पकड़ा गया। उसके दो पुत्रों और एक पोते को उसके सामने गोली से उड़ा दिया गया और स्वयं उसे बन्दी बनाकर रंगून भेज दिया गया (जहाँ वह 1862 ई० में मर गया)। इस प्रकार [illegible] राज वंश का अन्त हो गया। अङ्गरेज़ी सेनाओं ने देहली को बुरी [illegible] लूटा।

(२) **कानपुर** (Kanpur)—कानपुर में विद्रोहियो का नेता अन्तिम पेशवा का दत्तक पुत्र **नाना साहिब** (Nana Sahib) था। उसने अपने पेशवा होने की घोषणा कर दी। अङ्गरेज़ों ने कुछ दिनो तक उसके साथ युद्ध किया। परन्तु अन्त में अपने आप को उसकी दया पर छोड़ दिया। उन्हें विश्वास दिलाया गया कि उन्हें कुशलता पूर्वक इलाहाबाद पहुँचा दिया जायगा। परन्तु जब वे गंगा नदी में नावों में सवार हो रहे थे तो क्रोध से प्रचण्ड भारतीय

सिपाहियों ने उनका वध कर दिया। अन्त में **जनरल हैवेलाक** (Havelock) कुछ सेना के साथ कानपुर पहुँचा और उसने नाना साहिब को पराजय किया, और वह भाग कर न जाने कहाँ चला गया।

(३) **लखनऊ** (Lucknow)—लखनऊ में विद्रोहियों ने चीफ कमिश्नर **सर हैनरी लारेंस** (Sir Henry Lawrence) और अन्य सारे अङ्गरेज़ों को रैज़ीडैन्सी में घेर लिया। सर हैनरी लारेंस तो शीघ्र ही मारा गया, परन्तु घिरे हुये व्यक्ति मुकाबले पर डटे रहे। इतने में जनरल **हैवेलाक** (Havelock) और **औटरम** (Outram) उनकी सहायता को आ पहुँचे। वे लड़ते-भिड़ते रेज़ीडैन्सी के भीतर घुस गये, परन्तु विद्रोहियों ने उन्हें भी घेर लिया। अन्त में **सर कोलिन कैम्पबेल** (Sir Colin Campbell) ने लखनऊ जीत लिया।

(४) **मध्य भारत** (Central India)—मध्य भारत और बुन्देलखंड में विद्रोहियो के नेता झाँसी की युवा **रानी लक्ष्मी बाई** (Lakshmi Bai) और नाना साहिब की सेनाओ का सेनापति **ताँतिया टोपी** थे। **सर ह्यू रोज़** (Sir Hugh Rose) उनके विरुद्ध बढ़ा। झाँसी की रानी ने *झांसी*, *कालपी* और *ग्वालियर* के स्थानो पर वीरता-पूर्वक मुकाबला किया परन्तु अन्त मे लड़ती हुई युद्ध-क्षेत्र में मारी गई। *ताँतिया टोपी* पराजित होकर भाग गया, परन्तु अन्त में पकड़ा गया और उसे फाँसी दे दी गई। इस प्रकार विद्रोह समाप्त हुआ।

लक्ष्मीबाई

(१) विद्रोह का सब से बड़ा महत्वपूर्ण परिणाम यह हुआ कि

विद्रोह के परिणाम

कम्पनी के राज्य की समाप्ति हो गई और भारतवर्ष सीधा इङ्गलैण्ड के शासक और पार्लियामेंट के अधीन हो गया।

अगस्त 1858 ई० में एक कानून पास हुआ, जिसके द्वारा बोर्ड आफ कंट्रोल और कोर्ट आफ डाइरैक्टर्ज़ हटा दिये गये और उनके स्थान पर *भारत सचिव* (Secretary of State for India) नियुक्त किया गया और उसकी सहायता के लिये 15 मैम्बरों की एक सभा बनाई गई जिसका नाम *इण्डिया कौंसिल* (India Council) रखा गया। गवर्नर-जनरल को *वाइसराय* (Viceroy) की पदवी दी गई। पहला वाइसराय लार्ड कैनिंग ही था।

तातिया टोपी

(२) अंग्रेज़ी सेना की संख्या अधिक की गई और तोपखाना उन्हीं के अधिकार में कर दिया गया। कई एक भारतीय जातियों को सेना में भरती होने से वंचित कर दिया गया।

(३) देशी राजाओं और नवाबों को विश्वास दिलाया गया कि उनके प्रदेश अंग्रेजी साम्राज्य में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और उन्हें पुत्र-हीन होने की अवस्था में किसी को गोद लेने का अधिकार दे दिया गया, *अर्थात लैप्स की नीति हटा दी गई*।

(४) प्रजा को धार्मिक स्वन्त्रता का विश्वास दिलाया गया।

विद्रोह की असफलता के बड़े-बड़े कारण निम्नलिखित थे :—

विद्रोह की असफलता का कारण

(१) विद्रोह के आरम्भ करने की नियत तिथि ३१ मई थी। परन्तु यह पहले ही आरम्भ हो गया। इससे सारा प्रोग्राम उलट गया।

(२) साधारण जनता ने इस विद्रोह में कोई विशेष सहायता नहीं की। इस कारण यह विद्रोह बहुत फैलने नहीं

पाया वरन् थोड़े से स्थानों तक सीमित रहा। दक्षिण में कोई विशेष हलचल नहीं हुई।

(३) बहुत से भारतीय राजाओं तथा नवाबों ने इस विद्रोह का विरोध किया और अंग्रेज़ी सरकार की जन तथा धन से पूरी-पूरी सहायता की। *सिंधिया, होल्कर, हैदराबाद का निज़ाम* और कई अन्य राजे न केवल विद्रोह में शामिल ही न हुए वरन् उन्होंने विद्रोह के दमन में सहायता दी। *गोरखों* तथा *पंजाबी सेनाओं* ने भी सरकार की मदद की। उत्तर पश्चिम में *पठान* भी शान्त रहे।

(४) ऐसा प्रतीत होता है कि इस विद्रोह की कोई भली प्रकार सोची हुई स्कीम नहीं थी। प्रत्येक भाग में विद्रोहियों के भिन्न-भिन्न लीडर थे। कोई एक लीडर न था। जिसको सब लोग चाहते हों। मुसलमान मुगल साम्राज्य को और हिन्दू मराठा राज्य को स्थापित करना चाहते थे।

(५) विद्रोहियों के नेता कोई विशेष योग्य पुरुष नहीं थे। वे अंग्रेज़ जरनैलों के मुकाबले में सैनिक तथा राजनैतिक रूप से दुर्बल थे।

(६) विद्रोही सिपाहियो के पास न तो लड़ने का पर्याप्त सामान ही था और न उनमें अंग्रेज़ों जितना अनुशासन ही था।

(७) अंग्रेज़ी सरकार का आने जाने के साधनों पर पूरा अधिपत्य था इस कारण वह सुगमता से सब स्थानों पर सहायता भेज सकती थी।

(८) समुद्रों पर अधिपत्य के कारण इङ्गलैण्ड से जन तथा सामग्री भारत में आसानी से पहुँच सकते थे।

☞ Q. Write a short note on Queen Victoria's Proclamation.

प्रश्न—*महारानी विक्टोरिया के घोषणा-पत्र पर संक्षिप्त नोट लिखो।*

महारानी विक्टोरिया की घोषणा 1858

विद्रोह समाप्त हो जाने के पश्चात् जब भारतवर्ष का शासन कम्पनी के हाथों से निकल कर सीधा अंग्रेजी साम्राज्य के अधीन हो गया तो महारानी विक्टोरिया की ओर से अत्यन्त महत्वपूर्ण घोषणा की

गई जो पहली नवम्बर 1858 ई० को इलाहाबाद में पढ़कर सुनाई गई। इस घोषणा की प्रसिद्ध बातें ये थीं :—

(१) देशी राजाओं और नवाबों को विश्वास दिलाया गया कि उनकी रियासतें अंग्रेजी साम्राज्य में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और उनके पुत्र हीन होने की अवस्था में उन्हें लड़का गोद लेने का पूर्ण अधिकार होगा।

(२) समस्त प्रजा को विश्वास दिलाया गया कि उनके धर्म में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जायेगा और सब को अपने धर्म पर चलने की पूर्ण स्वतंत्रता होगी।

(३) यह भी घोषित किया गया कि कोई भारतवासी केवल रंग तथा जाति के कारण ऐसे पद पर से वंचित नहीं रक्खा जायेगा जिसके कार्यों के निभाने की वह यथेष्ट योग्यता रखता हो।

(४) यह बात भी घोषित की गई कि उन सब विद्रोहियों को जिन्होंने अंग्रेजों के वध में भाग नहीं लिया, क्षमा कर दिया जायेगा।

(५) देशी राजाओं और नवाबों को यह विश्वास दिलाया गया कि जो सन्धि-पत्र उनके ईस्ट इण्डिया कम्पनी (East India Company) के साथ लिखे गये थे उनका अनुकरण और सम्मान किया जायेगा।

(६) यह भी वचन दिया गया कि भारतवर्ष की आर्थिक, व्यापारिक, शिल्पविद्या सम्बन्धी उन्नति के लिये, जिस प्रकार भी हो सकेगा, प्रयत्न किया जायगा।

नोट—कई लोग इस घोषणा को भारतीय स्वतन्त्रता का सबसे बड़ा चार्टर समझते हैं।

भारत अंगरेज़ी राज्य के अधीन
(INDIA UNDER THE CROWN)
वाइसरायों का शासन-काल
लार्ड कैनिंग-प्रथम वाइसराय
(LORD CANNING)
1858—1862

लार्ड कैनिंग — लार्ड कैनिग कम्पनी के अधीन अन्तिम गवर्नर जनरल और इंगलैंड के शासक की ओर से प्रथम वाइसराय था। वह विद्रोहियों को कठोर दण्ड देने की नीति के विरुद्ध था और जहाँ तक उससे हो सका उसने विद्रोहियों के साथ न्याय करने की चेष्टा की। इसी दया के कारण अङ्गरेज उसे उलाहना पूर्वक **'दयालु कैनिंग'** (Clemency Canning) कहा करते थे। कैनिग ने बहुत से सुधार किये :—

सुधार Reforms

(१) **सैनिक सुधार**—सेना का नवीन रीति से प्रबन्ध किया गया और कम्पनी की सेनायें तथा सरकारी सेनायें सम्मिलित करके एक कर दी गई। अङ्गरेजी सैनिकों की संख्या पहिले की अपेक्षा अधिक कर दी गई और तोपखाना (Artillery) भी अङ्गरेजी सेना के अधीन कर दिया गया।

(२) **बंगाल भूमि कानून**—बंगाल के स्थायी बन्दोबस्त में एक बड़ी त्रुटि यह थी कि जमींदार जितना चाहे कृषकों से भूमि का किराया ले सकते थे। 1859 ई० में एक कानून पास हुआ जिससे बंगाल के कृषकों की दशा अच्छी हो गई।

(३) **शिक्षा सुधार**—1857 ई० मे लार्ड कैनिग ने कलकत्ता, बम्बई तथा मद्रास में एक एक यूनिवर्सिटी स्थापित की थी। अब उसने शिक्षा के विस्तार के लिये भी प्रयत्न किया।

(४) **न्याय सुधार** — 1860 ई० में भारत दण्ड-विधान (Indian Penal Code) जिसे *लार्ड मैकाले* ने रचा था, कुछ संशोधनों के साथ प्रचलित किया गया। 1861 ई० में बम्बई, कलकत्ता और *मद्रास* में एक-एक हाई कोर्ट (High Court) स्थापित किया गया और कम्पनी की बड़ी अदालतें हटा दी गईं।

(५) **आर्थिक सुधार**—विद्रोह के कारण कम्पनी की आय में भारी कमी हो गई थी, इसलिये इंगलैंड से आर्थिक दशा सुधारक मँगाये गये, जिन्होंने कई टैक्स लगा कर और व्यय में बचत करके आर्थिक दशा को सुधारा।

(६) **इंडियन कौंसिल्ज ऐक्ट**—1861 ई० में इंडियन कौंसिल्ज ऐक्ट (Indian Councils Act) पास हुआ, जिसके द्वारा भारत की राज्य प्रणाली में निम्नलिखित परिवर्तन किये गये :—

(१) गवर्नर जनरल की एग्जैक्टिव कौंसिल (Executive Council) में भिन्न-भिन्न विभाग भिन्न-भिन्न सदस्यों को सौंप दिये गये जिस से कार्य अधिक सुगमता से होने लगा।

(२) गवर्नर जनरल की *नियम निर्माण सभा* (Legislative Council) में सभासदों की संख्या बढ़ा दी गई और यह निश्चित हुआ कि उनमें कम से कम आधे सभासद् असरकारी (Non-officials) होंगे। यह असरकारी सभासद् भी गवर्नमैंट ही नियुक्त करती थी।

(३) बंगाल, बम्बई तथा मद्रास के प्रान्तों को नियम बनाने के अधिकार फिर से दिये गये।

1862 ई० में लार्ड कैनिंग वापिस इंगलैंड चला गया और वहाँ थोड़े समय के पश्चात उसकी मृत्यु हो गई।

लार्ड एल्गिन प्रथम

(LORD ELGIN I)

1862—1863

कैनिंग के पश्चात् लार्ड एल्गिन प्रथम वाइसराय बना, परन्तु अभी एक वर्ष भी बीतने न पाया था कि 1863 ई० में *धर्मशाला* के

स्थान पर उसकी मृत्यु हो गई। उसके शासनकाल में उत्तर पश्चिमी सीमा पर *वहाबी मुसलमानो* ने विद्रोह किया और अङ्गरेज़ी सेना का वीरतापूर्वक सामना किया, परन्तु उन्हे हार खानी पड़ी।

सर जान लारैंस

(SIR JOHN LAWRENCE)

1864—1869

एल्गिन के पश्चात् सर जान लारैंस वाइसराय नियुक्त हुआ। वह पहले पंजाब का चीफ कमिश्नर रह चुका था और उसने विद्रोह (Mutiny) को दबाने में बड़ी सहायता की थी। उसके समय की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित है :—

(१) भूटान का युद्ध—भूटान वासी अङ्गरेज़ी प्रदेशों पर कभी-कभी आक्रमण कर दिया करते थे और वहाँ के रहने वालो को दास बनाकर ले जाते थे। उनको इस बात से रोकने के लिये सर जान लारैंस ने एक अंग्रेज़ अधिकारी को बातचीत के लिये भेजा। भूटानवासी उसे भी भगाकर ले गये। इसलिये युद्ध छिड़ गया। यह युद्ध शीघ्र समाप्त हो गया और भूटान वासियों ने *दवाड* (Duars) *का प्रदेश* अङ्गरेज़ों को दे दिया।

(२) उड़ीसा का अकाल—1866 ई० में उड़ीसा में एक भीषण अकाल पड़ा और लाखो व्यक्ति भूख के कारण मर गये। गवर्नमेंट उनकी सहायता का यथेष्ट प्रबन्ध करने मे असमर्थ रही। इसके पश्चात् सरकार ने उड़ीसा में आने-जाने के साधन सुगम बनाने आरम्भ किये, ताकि अकाल के अवसरों पर अन्न आदि पहुँचाने में सुविधा हो जाय।

(३) अफग़ान पालिसी—अफग़ानिस्तान के सम्बन्ध में सर जान लारैंस की नीति यह थी कि *वहा के अमीर के साथ मित्रता का सम्बन्ध तो रखा जाय*, परन्तु *उस देश के भीतरी विपयों मे किसी प्रकार का हस्ताक्षेप न किया जाय*। इसलिये जब 1863 ई० में काबुल के

अमीर दोस्त मुहम्मद खाँ की मृत्यु हो गई और उसके पुत्रों में राज-सिंहासन के लिए युद्ध आरम्भ हो गया और उसके एक पुत्र शेर अली ने अङ्गरेजों से सहायता माँगी तो लारेंस जान बूझ कर इस युद्ध से पृथक् रहा और उसने यह घोषित किया कि जो कोई पदाभिलाषी इस युद्ध में सफल होगा हम उसी को अमीर स्वीकार कर लेंगे। अन्त में जब शेरअली सफल हुआ तो लारेंस ने उसे अमीर स्वीकार कर लिया और उसको बहुत सा रुपया और युद्ध के लिये शस्त्र भी भेजे, परन्तु उसके साथ किसी प्रकार की स्थायी सन्धि करने से इन्कार कर दिया।

लार्ड मेयो

(LORD MAYO)

1869—1872

लार्ड मेयो बड़ा हँसमुख और मिलनसार वाइसराय था और इसी कारण देशी राजाओं में बड़ा सर्वप्रिय था। उसके शासन-काल की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित हैं:–

(१) शेर अली से मित्रता—अमीर शेरअली लारेंस के व्यवहार से अप्रसन्न था; लार्ड मेयो ने आते ही अमीर को न्योता भेजा और अम्बाला में एक धूमधाम का दरबार करके उसका भली प्रकार आदर-मान किया। शेरअली मेयो की इस अतिथि-सेवा और व्यवहार से अत्यन्त प्रसन्न हुआ, परन्तु वाइसराय ने उससे कोई स्थायी सन्धि नहीं की।

(२) चीफ्स कालिज—लार्ड मेयो ने राजकुमारों की शिक्षा के लिये पाठशालएँ खोलने की युक्ति सोची, किन्तु वह इस युक्ति को सम्पूर्ण न कर सका। आजकल इस प्रकार के कुछ महाविद्यालय हैं, जैसे मेयो कालिज अजमेर, राजकुमार कालिज राजकोट और एचिसन कालेज लाहौर। परन्तु अब इन कालिजों में कोई भी विद्यार्थी पढ़ सकता है यदि वह वहाँ की फीस दे सकता हो।

लार्ड मेयो का वध—1872 ई० में लार्ड मेयो का जब कि वह अण्डेमान द्वीप समूह का भ्रमण करके लौट रहा था, एक अफगान अपराधी *शेरअली* ने पोर्ट ब्लेयर की बन्दरगाह पर वध कर दिया।

लार्ड नार्थ ब्रुक
(LORD NORTHBROOK)
1872—1876

घटनायें

(१) शेरअली की अप्रसन्नता—लार्ड नार्थब्रुक मेयो की भांति सुशील तथा मिलनसार न था। उसके अप्रिय स्वभाव से अमीर *शेरअली* अंग्रेज़ों से अप्रसन्न हो गया और उसने रूसियों के साथ मित्रता बढ़ानी आरम्भ कर दी।

(२) गायकवाड़ का गद्दी से उतारा जाना—*मल्हारराव गायकवाड* बड़ौदा के शासक पर यह दोष लगाया गया कि उसने रैज़ीडैंट को विष देने का प्रयत्न किया है। इस अपराध का प्रमाण ता न मिल सका, परन्तु नार्थब्रुक ने उसे कुप्रबन्ध के कारण राजसिंहासन से उतार दिया।

(३) बिहार का अकाल—नार्थब्रुक के शासन-काल में बिहार में एक अकाल पड़ा, परन्तु सरकारी सहायता मिल जाने के कारण बहुत व्यक्ति न मरे।

(४) प्रिंस आफ़ वेल्ज़ का आगमन—1875 ई० में प्रिंस आफ़ वेल्ज़ जो तत्पश्चात् ऐडवर्ड सप्तम के नाम से राजा बना, भारत में सैर सपाटे के उद्देश्य से आया।

लार्ड लिटन
(LORD LYTTON)
1876—1880

☞Q. Describe the leading events of the Viceroyalty of Lord Lytton. (P.U. 1938) (Important)

प्रश्न—लार्ड लिटन के शासन-काल की प्रसिद्ध घटनायें लिखो।

लार्ड लिटन एक बड़ा योग्य विद्वान् था। परन्तु वह अच्छा शासक न था। उसके समय की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित थीं—

(१) देहली दरबार—पार्लियामेंट ने एक नियम द्वारा इंगलैंड की रानी के लिये कैसरा-इ-हिन्द की पदवी को स्वीकृत किया था। इसलिये लार्ड लिटन ने पहली जनवरी 1877 ई० को देहली में एक धूमधाम का दरबार किया, जिसमें महारानी विक्टोरिया के कैसरा-इ-हिन्द (Empress of India) होने की घोषणा की गई।

लार्ड लिटन

(२) दक्षिण में अकाल—उन्हीं दिनों में दक्षिण (मद्रास, मैसूर, हैदराबाद) में एक भीषण अकाल पड़ा और यद्यपि गवर्नमेंट ने अकाल पीड़ितों की सहायता के लिये अत्यन्त धन व्यय किया तो भी लग भग ५० लाख व्यक्ति इस दुर्भिक्ष की भेंट हो गये। तत्पश्चात् एक Famine Commission नियुक्त किया गया जिसने भविष्य में अकाल को रोकने के उपाय बताये।

(३) अलीगढ़ कालिज—1877 ई० में लार्ड लिटन ने अलीगढ़ में *मुहम्मेडन ऐंगलो ओरयंटल कालिज* (M. A. O. College) की नींव शिला रखी। इस विद्यालय के संचालक तथा कर्त्ताधर्ता *सर सय्यद अहमद खां* (Sir Sayyad Ahmad Khan) थे, जो उन्नीसवीं शताब्दी में मुसलमानों के सर्वश्रेष्ठ नेता थे। 1920 ई० में यह महाविद्यालय मुस्लिम विश्वविद्यालय बन गया है।

(४) वर्नेक्यूलर प्रैस ऐक्ट—1878 ई० में लार्ड लिटन ने वर्नेक्यूलर प्रैस ऐक्ट पास किया जिसके द्वारा वर्नेक्यूलर समाचार-पत्रों को ऐसे लेख छापने से रोक दिया गया जिनसे गवर्नमेंट के विरुद्ध घृणा और रोष फैल जाने का भय हो। चूँकि अंग्रेज़ी के समाचार-पत्र द्वारा

नियम से मुक्त थे इस कारण भारतवासियों ने इसे बहुत बुरा माना।

☞ **(५) अफ़ग़ानिस्तान का युद्ध**- लार्ड लिटन के समय की सबसे प्रसिद्ध घटना *अफ़ग़ानिस्तान का दूसरा युद्ध* (Second Afghan War) है।

कारण—अफ़ग़ानिस्तान के मार्ग से भारत पर रूस के *आक्रमण का भय था*, इसलिये ब्रिटिश गवर्नमेंट अफ़ग़ानिस्तान के अमीर **शेर अली** (Sher Ali) से मित्रता का सम्बन्ध गाँठना चाहती थी, परन्तु शेरअली अंग्रेज़ों से विमुख हो चुका था और वह स्वयं रूस के साथ मित्रता बढ़ाना चाहता था। लार्ड लिटन ने काबुल में एक राजदूत भेजना चाहा परन्तु अमीर ने इस बात को स्वीकार न किया। इतने में ब्रिटिश गवर्नमेंट ने क्वेटे (Quetta) पर अधिकार कर लिया जिससे कन्धार के मार्ग से अफ़ग़ानिस्तान पर आक्रमण करना सुगम हो गया। इससे शेर अली को बहुत चिन्ता हुई और उसने रूसी राजदूत को अपने देश में बुला लिया। अब लिटन ने भी एक राजदूत भेजा। परन्तु उसे ख़ैबर के दर्रे से ही वापिस लौटा दिया गया। लार्ड लिटन ने इसे अंग्रेज़ी राज्य का अपमान समझा और युद्ध की घोषणा कर दी।

घटनायें—अङ्गरेज़ी सेना ने तीन मार्गों (ख़ैबर, कुर्रम तथा बोलान) से अफ़ग़ानिस्तान पर आक्रमण कर दिया। *शेरअली* रूस की ओर भाग गया और वहीं मर गया। अङ्गरेज़ों ने शेर अली के सब से बड़े पुत्र *याकूब ख़ाँ* को काबुल का अमीर स्वीकृत कर लिया और उसके साथ 1878 ई० में *गण्डमक* (Gandamak) के स्थान पर एक सन्धि हुई जिसके द्वारा *अमीर ने काबुल मे एक रैज़ीडैंट रखना स्वीकार किया। अफ़ग़ानिस्तान के सब दर्रों तक अङ्गरेज़ों का अधिकार स्वीकार कर लिया और वैदेशिक नीति मे अङ्गरेज़ो की अधीनता स्वीकार कर ली।* अङ्गरेज़ों ने इसके बदले में उसे ६ लाख रुपया वार्षिक देना स्वीकार किया।

परन्तु कुछ समय पश्चात् ही अफ़ग़ानों ने अंग्रेज़ी रैज़ीडैंट *कैवेगनरी* (Cavagnari) और उसके साथियों का वध कर दिया और

युद्ध फिर आरम्भ हो गया। अंग्रेज़ी जनरल राबर्टस (Roberts) ने काबुल पर अधिकार कर लिया। याकूब खां ने अपने आपको अंग्रेज़ों को सौंप दिया और उसे राजबन्दी बनाकर भारत भेज दिया गया और यहाँ ही उसकी मृत्यु हुई। अभी युद्ध हो रहा था कि लार्ड लिटन वापिस चला गया और लार्ड रिपन वाइसराय नियुक्त होकर आया।

याकूब खाँ के पश्चात् उसके भाई अय्यूब खाँ ने युद्ध आरम्भ कर दिया और अङ्गरेज़ी सेनाओं को मैवन्द (Maiwand) के स्थान पर पूर्णतया पराजित किया परन्तु इसके पश्चात् शीघ्र ही जनरल राबर्टस ने उसे भी हरा दिया और युद्ध समाप्त हो गया।

परिणाम—(१) अन्त में शेर अली के भतीजे अब्दुर्रहमान (Abdur Rehman) को काबुल का अमीर स्वीकार किया गया।

(२) उसने वचन दिया कि वह अङ्गरेज़ो के अतिरिक्त किसी अन्य विदेशी राज्य से सम्बन्ध नहीं रखेगा। इससे रूसी भय जाता रहा।

(३) अब्दुर्रहमान का १२ लाख रुपया वार्षिक भत्ता नियत किया गया।

(४) कलात का खान भी अंग्रेज़ों की अधीनता में आ गया और

(५) ब्रिटिश बलोचिस्तान का सूबा अंग्रेज़ी राज्य में मिला लिया गया।

लार्ड रिपन

(LORD RIPON)

1880—1884

Q. Summarise the principal events of the administration of Lord Ripon.

Or

Justify the statement that Lord Ripon's attitude towards the Indians was singularly sympathetic.

(P. U. 1939-1948)

प्रश्न—लार्ड रिपन के शासन-काल की प्रसिद्ध घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन करो।

तथा

सिद्ध करो कि लार्ड रिपन का व्यवहार भारतवासियों के साथ विशेषतया सहानुभूति-पूर्ण था।

लार्ड रिपन

लार्ड रिपन बड़ा उदार नीतिज्ञ था और उसे भारतवासियो की उचित कामनाओं के साथ पूर्ण सहानुभूति थी। वह भारतवासियो को देश के राज्य कार्य में सम्मिलित करना चाहता था। उसने प्रजा के उपकार के लिये कई उपयोगी कार्य किये जिसके कारण वह अत्यंत सर्व-प्रिय बन गया। उसके शासन-काल की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित हैं :—

लार्ड रिपन

घटनाये

(१) अफग़ानिस्तान के युद्ध की समाप्ति—इस काल में अफ़ग़ानिस्तान के द्वितीय युद्ध की समाप्ति हुई और अब्दुर्रहमान को काबुल का अमीर स्वीकार कर लिया गया।

(२) मैसूर की वापसी—1881 ई० में मैसूर की हिन्दू रियासत जो विलियम बैंटिक के शासन-काल से अंग्रेजी अधिकारियो के प्रबन्ध के अधीन चली आती थी, राजा कृष्ण के दत्तक पुत्र को सौंप दी गई। उससे रिपन का मान बहुत बढ़ गया।

(३) वर्नैक्यूलर प्रैस एक्ट का रद्द होना—वर्नैक्यूलर प्रैस ऐक्ट को जिसे लार्ड लिटन ने पास किया था 1882 ई० में हटा दिया गया और सब समाचार-पत्रों को एक जैसी स्वतन्त्रता दे दी गई।

(४) जन-संख्या की गणना — 1881 ई० में भारतवर्ष की

पहली जन-संख्या की गई। उस वर्ष से लेकर प्रत्येक १० वर्ष के पश्चात् जन-संख्या की जाती है।

(५) **फैक्ट्री ऐक्ट**—1881 ई० में एक फैक्ट्री ऐक्ट (Factory Act) पास किया गया जिसके आधार पर यह निश्चय हुआ कि बारह वर्ष से छोटी आयु के बालकों से शिल्पालयों में प्रतिदिन ९ घण्टे से अधिक काम न लिया जाय और भयंकर कलों से मजदूरों को सुरक्षित रखने के लिये उनके गिर्द जंगले लगवाये जायें। इन बातों के अनुसार कार्य चलाने के लिये गवर्नमेंट की ओर से फैक्ट्री इन्सपैक्टर (Factory Inspector) नियुक्त किये गये।

(६) **शिक्षा-सम्बन्धी कमीशन**—1882 ई० में वाइसराय ने सर *विलियम हण्टर* (Sir William Hunter) के नेतृत्व में एक शिक्षा-सम्बन्धी कमीशन नियुक्त किया जिसकी सिफारशों के अनुकूल शिक्षा को विस्तृत करने का अत्यन्त प्रयत्न किया गया और विद्यालयों की संख्या में बढ़ती कर दी गई।

(७) **पंजाब विश्वविद्यालय**—1882 ई० में पंजाब यूनिवर्सिटी स्थापित हुई जो आजकल पाकिस्तान पंजाब यूनिवर्सिटी है।

(८) **फ्री ट्रेड नीति**—लार्ड रिपन खुले व्यापार की नीति (Free Trade Policy) के पक्ष में था। इसलिये उसने कई विदेशी वस्तुओं पर विशेषतया लंकाशायर के सूती वस्त्र पर से कर हटा दिया। *नमक का महसूल भी कम कर दिया गया।*

(९) **लोकल सेल्फ गवर्नमेंट**—लार्ड रिपन के समय की सबसे प्रसिद्ध घटना यह है कि उसने *स्वराज्य* (Local Self Government) के सम्बन्ध में कुछ *नियम पास किये, जिनके द्वारा डिस्ट्रिक्ट* बोर्ड और *म्यूनिसिपल कमेटियां स्थापित की गईं।* इन बोर्डों और कमेटियों के अधीन शिक्षा, स्वास्थ्य रक्षा और सड़कों आदि का प्रबन्ध सौंप दिया गया। म्यूनिसिपल कमेटियों में चुनाव की रीति प्रचलित की गई। इससे लार्ड रिपन का उद्देश्य यह था कि भारत-

वासियों को स्वराज्य की शिक्षा दी जाये।

(१०) इलबर्ट बिल (Ilbert Bill)—उस समय तक भारतीय मजिस्ट्रेटों को अंग्रेज़ अपराधियों के मुकद्दमें सुनने का अधिकार नहीं था। भारतवासियों को प्रसन्न करने के लिये मि० इलबर्ट (Mr. Ilbert) ने जो वाइसराय की ऐग्ज़ैक्टिव कौंसिल का कानूनी मेम्बर था, एक बिल पेश किया जो *'इलबर्ट बिल'* के नाम से प्रसिद्ध है। इस *बिल का उद्देश्य यह था कि भारतीय मजिस्ट्रेटों को भी अङ्गरेज़ अपराधियों के अभियोग सुनने का अधिकार दे दिया जाये।* रिपन ने भी इस बिल की प्रबल पुष्टि की परन्तु भारतवर्ष में सब अंग्रेज़ों ने इस बिल का अत्यन्त विरोध किया। इसलिये उसे यह बिल वापिस लेना पड़ा, परन्तु यह समझौता हुआ कि *अंग्रेज अपराधियों के अभियोगों का निर्णय ज्यूरी* (Jury) *द्वारा हुआ करे, जिन में से कम से कम आधे सभासद यूरोपियन अथवा अमरीकन हों।*

पूर्वलिखित कार्यों से प्रकट है कि रिपन का व्यवहार भारतवासियो के साथ विशेषतया सहानुभूति पूर्ण था और उसकी नीति का उद्देश्य यह था कि *भारतवासियो को स्वराज्य की शिक्षा दी जाय और उन्हें देश के राज्य कार्य मे सम्मिलित किया जाय।*

1884 ई० में लार्ड रिपन त्याग-पत्र देकर वापिस चला गया। वह भारत का सबसे अधिक सर्वप्रिय वाइसराय था।

लार्ड डफ़रिन
(LORD DUFFERIN)
1884—1888

लार्ड डफ़रिन के शासन-काल की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित थीं :-

(१) पञ्जदेह का झगड़ा 1885

1885 ई० में रूस और अफगानिस्तान की मध्यवर्ती सीमा नियत हो रही थी। इस समय एक ग्राम पञ्जदेह (Panjdeh) के सम्बन्ध में साधारण-सी लड़ाई हो गई जिसमें अफ़ग़ान पराजित

हुये। चूँकि अफग़ानिस्तान अंग्रेज़ों का मित्र था, इसलिये इंगलैंड में रोष की तरंग फैल गई और यह सम्भव ही था कि दोनों देशों में युद्ध छिड़ जाय, परन्तु अफग़ानिस्तान के अमीर ने इस विचार से कि युद्ध आरम्भ हो गया तो उसका देश युद्ध-क्षेत्र बनाया जायगा, पञ्जदेह पर से अपने अधिकार को हटा लिया और यह झगड़ा समाप्त हो गया।

(१) ब्रह्मा का तीसरा युद्ध

कारण—(१) इस युद्ध का बड़ा कारण यह था कि ब्रह्मा नरेश *थीबा* (Theebaw) ने फ्रांसीसियों को विशेष व्यापारिक अधिकार देकर उनकी शरण में आने का प्रयत्न किया और एक फ्रांसीसी राजदूत को भी रहने की आज्ञा दी। परन्तु यह बात अंग्रेज़ों के लिये सर्वथा हानिकारक थी।

(२) ब्रह्मा-नरेश ने एक अंग्रेज़ी व्यापारी कम्पनी (Bombay and Burma Trading Company) पर किसी कारण भारी जुर्माना कर दिया और उसके अधिकारियों की गरिफ्तारियों की आज्ञा दे दी। इस पर डफ्रिन ने युद्ध की घोषणा कर दी।

घटनायें—एक अंग्रेज़ी सेना ईरावती नदी के मार्ग से *मांडले* (Mandalay) तक जा पहुँची और बिना किसी युद्ध के मांडले पर अधिकार कर लिया। ब्रह्मा नरेश ने अधीनता स्वीकार कर ली और उसे राजबंदी बनाकर भारतवर्ष भेज दिया गया।

परिणाम—प्रथम जनवरी 1886 ई० को एक घोषणा द्वारा अपर ब्रह्मा को अंग्रेज़ी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया।

नोट—1826 ई० में ब्रह्मा के प्रथम युद्ध के परिणाम स्वरूप *अराकान* और *तनासरम* के प्रदेश अङ्गरेजों को मिल गये थे। 1852 ई० में द्वितीय युद्ध के परिणाम स्वरूप पीगू का प्रदेश भी अङ्गरेजी राज्य में सम्मिलित हो गया था और तीनों प्रदेशों को सम्मिलित करके लोअर ब्रह्मा का प्रान्त स्थापित हुआ था। 1886 ई० में अपर ब्रह्मा भी सम्मिलित हो गया और इस प्रकार ब्रह्मा

का समस्त देश अङ्गरेज़ी साम्राज्य में सम्मिलित हो गया। जनवरी 1948 ई० से ब्रह्मा का देश स्वतंत्र हो गया है।

(३) इंडियन नैशनल कांग्रेस 1885

लार्ड डफ्रिन के समय की एक प्रसिद्ध घटना कांग्रेस की स्थापना है। *इंडियन नैशनल कांग्रेस* (Indian National Congress) भारतवर्ष की सबसे बड़ी राजनैतिक सभा है जिसमें भारत की सब जातियां सम्मिलित है। इसके संचालक कई एक पढ़े-लिखे भारतीय तथा अंग्रेज़ थे, जिनमें से *मिस्टर ए० ओ० ह्यूम* (Mr. A. O. Hume) का नाम विशेषतया स्मरणीय है। आरम्भ में तो यह सभा केवल भारतीयों के हित की बातों पर ही सोच विचार किया करती थी। परन्तु धीरे-धीरे यह अंग्रेज़ी साम्राज्य के विरुद्ध एक राजनैतिक सभा बन गई। इस कांग्रेस का सम्मेलन प्रति वर्ष भारत के किसी नगर में होता है। इसका प्रथम सम्मेलन 1885 ई० में बम्बई में *मिस्टर डब्लयू० सी० बानरजी* (Mr. W. C. Bonnerjee) के सभापतित्व में हुआ था। मिस्टर बानरजी कलकत्ता हाईकोर्ट के एक प्रसिद्ध बैरिस्टर तथा सच्चे देश भक्त थे।

आरम्भ में तो कांग्रेस की माँगें ये थीं कि *नियम-निर्माण सभाओं को विस्तृत किया जाये और उनमें भारतीय अधिक संख्या मे लिये जायें। भारतवासियों को उच्च पदों पर अधिक संख्या में लिया जाये और सेनाओं के व्यय कम किये जाये*। उस समय गवर्नमेंट का व्यवहार भी कांग्रेस की ओर सहानुभूति पूर्ण था, परन्तु धीरे धीरे गवर्नमेंट का व्यवहार बदलता गया और कांग्रेस का दृष्टिकोण भी बदलता गया। शनै शनै कांग्रेस की बाग डोर *महात्मा गाँधी जी* के हाथों में आ गई और

उन्होंने इसकी शक्ति को बहुत बढ़ा दिया। 1929 ई० में पंडित जवाहर लाल जी के नेतृत्व में लाहौर कांग्रेस ने पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव पास किया। इसके पश्चात् कांग्रेस में कई उतार चढाव आए। अन्ततः कांग्रेस के कार्य कलाप और कई और कारणों से विवश होकर 15 अगस्त 1947 ई० को अंग्रेज़ी सरकार ने भारत को स्वतन्त्र कर दिया और इस तरह कांग्रेस अपने उद्देश्य में सफल हुई। इस की सफलता का सब से बड़ा कारण महात्मा गांधी जी का अस्तित्व था। अब कांग्रेस के सामने देश की आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति का प्रोग्राम है।

विक्टोरिया की जुबली 1887 ई०

1887 ई० में साम्राज्ञी विक्टोरिया के सिंहासनारोहण को ५० वर्ष हो गये थे इसलिये इस वर्ष महारानी की स्वर्ण जयन्ती (Golden Jubilee) सारे देश में बड़ी धूमधाम से मनाई गई।

लार्ड लैन्सडौन

(LORD LANSDOWNE)

1888—1894

लार्ड लैन्सडौन के शासन-काल की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित थीं :—

(१) अफगानिस्तान की सीमा का निर्णय—लार्ड लैन्सडौन ने अफगानिस्तान और भारतवर्ष की मध्यवर्ती सीमा को निश्चित करने के लिये एक डेपुटेशन सर मार्टीमर ड्यूरैंड (Sir Mortimer Durand) के नेतृत्व में काबुल भेजा। इस डैपुटेशन को अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त हुई और 1893 ई० में अफगानिस्तान की दक्षिणी और पूर्वी सीमा का निर्णय सन्तोषजनक हो गया। इसी सीमा का नाम ड्यूरैंड रेखा (Durand line) है। इस सीमा-निश्चय से कुछ ऐसे प्रदेश अङ्गरेज़ी सरकार के अधीन हो गये जो इस सीमानिश्चय से पहले नाम मात्र अफगानिस्तान के अधीन थे, परन्तु वास्तव में वहाँ

स्वतन्त्र पठान कुटुम्ब रहते थे। ये पठान बड़े युद्ध-प्रिय और स्वतन्त्रता के इच्छुक हैं।

(२) मणिपुर में विद्रोह—आसाम की रियासत मणिपुर में सिंहासनारोहण के लिये झगड़ा उठ खड़ा हुआ। आसाम का चीफ़ कमिशनर इस झगड़े को निपटाने के लिये वहाँ भेजा गया, परन्तु रियासत के सेनापति ने उसका छल से वध कर डाला। इसलिये अङ्गरेज़ी सेना भेजी गई जिसने रियासत पर अधिकार कर लिया। सेनापति और उसके साथियों को फाँसी दी गई और एक अल्पवयस्क राजा को गद्दी पर बिठाकर उसके व्यस्क होने तक प्रबन्ध अङ्गरेज़ी रैज़ीडैंट को सौंप दिया गया।

(३) इण्डियन कौंसिल्ज़ ऐक्ट—— 1892 ई० में इण्डियन कौंसिल्ज़ ऐक्ट (Indian Councils Act) पास हुआ, जिसकी प्रसिद्ध धारायें ये थीं।

(१) केन्द्रीय और प्रान्तीय नियम-निर्माण कौंसिलों में सदस्यो की संख्या पहले से बढ़ा दी गई।

(२) प्रान्तीय सभाओं के सदस्यों को चुनने का अधिकार यूनिवर्सिटियों, डिस्ट्रिक्ट बोर्डों, म्युनिसिपल कमेटियों, चेम्बर आफ कामर्स आदि को दिया गया।

(३) नियम-निर्माण कौंसिलों के अधिकार बढ़ा दिये गये। उन मेम्बरों को वार्षिक बजट (Budget) पर वाद-विवाद करने और शासन सम्बन्धी विषयों पर प्रश्न आदि पूछने का कुछ सीमा तक अधिकार भी दिया गया।

लार्ड एल्गिन द्वितीय

(LORD ELGIN II)

1894—1899

लार्ड एल्गिन द्वितीय लार्ड एल्गिन प्रथम का पुत्र था। उसके शासन काल की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित थीं :—

घटनायें—(१) ब्रह्मा, चीन और स्याम की सीमाओं का निर्णय किया गया।

(२) चित्राल की रियासत में सिंहासनारोहण के लिये झगड़ा उठ खड़ा हुआ, परन्तु अङ्गरेज़ी सेना ने शीघ्र ही यह झगड़ा निपटा दिया।

(३) 1896 ई० में बम्बई में प्लेग फूट निकली और धीरे-धीरे सारे देश में फैल गई।

(४) कई एक प्रदेशों में विशेषतया बीकानेर रियासत में घोर अकाल भी पड़ा।

(५) 1897 में साम्राज्ञी विक्टोरिया की साठ वर्षी जुबली (Diamond Jubilee) मनाई गई।

(६) ड्यूरेंड रेखा द्वारा सीमा निश्चित होने के बाद अंग्रेज़ी सरकार ने स्वतन्त्र पठान कुटुम्बों के प्रदेशों में अधिकार जमाने के लिये उनके प्रदेश में सड़कें और पहाड़ों की चोटियों पर सैनिक चौकियाँ बनानी आरम्भ कीं। इस पर पठानों के इलाके में बड़ी गड़-बड़ी मच गई और अफ़रीदी पठानों ने दर्रा ख़ैबर को बन्द कर दिया। परन्तु अंग्रेज़ी सेनाओं ने उन्हें तितर-बितर कर दिया और ख़ैबर के दर्रे पर अपना अधिकार जमा लिया। इस युद्ध में पठान बड़ी वीरता से लड़े और उन्होंने अंग्रेज़ों को बहुत कष्ट दिया।

लार्ड कर्ज़न

(LORD CURZON)

1899—1905

☞ Q. Give a short account of the Viceroyalty of Lord Curzon. (P. U. 1937-43-45-50-51)

(V. Important)

प्रश्न—लार्ड कर्ज़न के शासन काल का संक्षिप्त वर्णन करो।

लार्ड कर्ज़न एक बड़ा योग्य व्यक्ति था, और सम्भवतः सारे

लार्ड कर्ज़न

लार्ड कर्ज़न वाइसरायों से अधिक चतुर था। वाइसराय नियुक्त होने के समय उसकी आयु चालीस वर्ष की थी। वह वाइसराय नियुक्त होने से पहले चार बार भारतवर्ष में हो गया हुआ था। इसलिये वह भारत की दशा से पहले ही भली प्रकार परिचित था। उसने अपने शासन-काल में प्रत्येक विभाग में सुधार किये और साम्राज्य का कार्य अत्यन्त दृढ़ता से निभाया। परन्तु वह साम्राज्यवादी वाइसराय था इसलिये वह बड़ा अप्रिय बन गया।
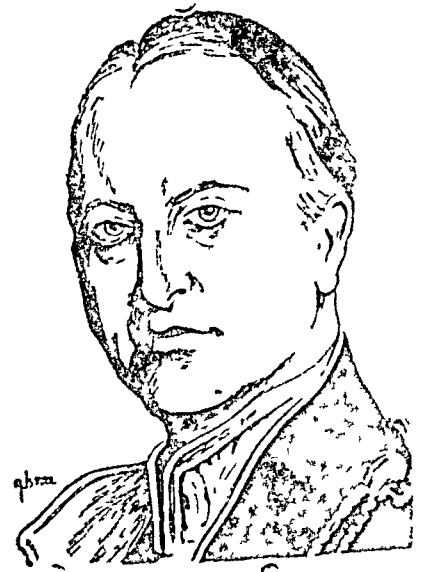
लार्ड कर्ज़न

कर्ज़न के शासन काल का वृत्तान्त तीन भागों में बाँटा जा सकता है—

(i) *बाह्य नीति*; (ii) *सुधार* (iii) *प्रसिद्ध घटनायें*।

बाह्य नीति

लार्ड कर्ज़न की बाह्य नीति यह थी कि भारत साम्राज्य की सीमाओं को सुरक्षित रखा जाय और रूस की शक्ति को अपने पड़ोसी देशों में न बढ़ने दिया जाय। अतः उस का संबंध अधिकतर *(१) उत्तर-पश्चिमी सीमा (२) अफ़ग़ानिस्तान, (३) ईरान और (४) तिब्बत के साथ था।*

(१) उत्तर-पश्चिम सीमा का प्रबन्ध (Frontier Policy)— उत्तर-पश्चिमी सीमा पर स्वतन्त्र पठान कबीले आबाद थे। उन्हों ने वहाँ अशान्ति फैला रखी थी। लार्ड कर्ज़न ने वहाँ शान्ति स्थापित करने के लिये निम्नलिखित कार्यवाहियाँ की :—

(क) उसने स्वतन्त्र प्रदेश की सब चौकियों से बहुत सी अंग्रेज़ी सेना हटा ली और उसके स्थान पर स्थानीय कबीलों से सेना भर्ती करके अंग्रेज़ी अधिकारियों की अधीनता में इन चौकियों पर नियुक्त कर दी। इस सेना को *मिलिशिया* (Militia) कहते थे और यह सेना

अपने देश में शान्ति रखने की जिम्मेदार थी।

(ख) उसने इस सीमा पर दर्रा खैबर तक और कुर्रम की घाटी तक रेलवे लाइनें बना दीं ताकि आवश्यकता के समय वहां सेनायें सुगमता से पहुँचाई जा सकें।

(ग) 1901 ई० में सिन्ध नदी की पश्चिमी ओर के कुछ जिले पंजाब से पृथक् करके पृथक् प्रांत बना दिया गया और उस का नाम *उत्तर-पश्चिमी सीमान्त प्रान्त* (N W. F. P) रखा गया। उस प्रांत का प्रबन्ध एक चीफ कमिश्नर को सौंप दिया गया।

(२) काबुल के अमीर से मित्रता (Friendly Relations with the Amir of Kabul)—1901 ई० में काबुल के अमीर अब्दुर्रहमान की मृत्यु हो गई और उसका पुत्र *हबीबुल्ला* राजसिंहासन पर बैठा। उसके साथ मित्रता का सम्बन्ध स्थापित किया गया और उस की इच्छानुसार उसे *हिज़ मैजेस्टी* (His Majesty) की उपाधि दी गई।

(३) फारस की खाड़ी पर अधिकार (British influence in the Persian Gulf)—इंगलैंड से भारतवर्ष तक सागरी-मार्ग को सुरक्षित रखने के लिये यह अति आवश्यक था कि *अदन से लेकर बलोचिस्तान तक के सारे तट पर अङ्गरेज़ी प्रभाव हो*। परन्तु उन दिनों कई यूरोपियन जातियाँ (फ्रांस, रूस, टर्की, जर्मनी) फारस की खाड़ीमें अपना-अपना प्रभाव बढाने का यत्न कर रही थीं। लार्ड कर्जन यह देखकर 1903 ई० में स्वयं वहाँ गया और उसने अंग्रेजी प्रभाव को अधिक सुरक्षित कर दिया जिससे दूसरी जातियों का प्रयत्न निष्फल हो गया।

(४) तिब्बत पर चढ़ाई (Tibet Expedition) 1903-1904—तिब्बत का देश चीन के अधीन था परन्तु उन दिनों में वह रूस के साथ मित्रता का भाव बढा रहा था। कर्जन यह बात सहन नहीं कर सकता था। अतः 1903 ई० में उसने एक अंग्रेजी सेना (Col. Younghusband) के नेतृत्व में) भेजी जिसने तिब्बत की राजधानी *लासा* (Lhassa) पर अधिकार कर लिया। तिब्बत की सरकार को

कुछ युद्ध की हानि पूर्ति देनी पड़ी और उसे चीन साम्राज्य के अधीन स्वीकार कर लिया गया। इस प्रकार वहाँ रूस के प्रभाव का अन्त हो गया।

सुधार
Reforms

लार्ड कर्ज़न का शासन-काल विशेषतया सुधारों के लिये प्रसिद्ध है। उसके समय के प्रसिद्ध सुधार निम्नलिखित थे :—

(१) आर्थिक सुधार—(i) लवण का कर (महसूल) लगभग आधा कर दिया गया। (ii) एक हज़ार रुपया वार्षिक से कम आय पर इन्कम टैक्स (Income-Tax) हटा दिया गया।

(२) पुलिस का सुधार—(i) पुलिस के वेतन बढ़ा दिये गये। (ii) रंगरूटों की शिक्षा के लिये शिक्षालय खोले गये। (iii) गुप्त पुलिस के विभाग का संशोधन किया गया।

☞**(३) पंजाब में भूमि-विक्रय कानून** (Punjab Land Alienation Act)—लार्ड कर्ज़न ने पंजाब के किसानों की दशा को सुधारने के लिये भी बड़ा उपयोगी काम किया। ये किसान अपनी आवश्यकता के लिये महाजनों से रुपया उधार लिया करते थे परन्तु जब वे इस ऋण को उतारने में असमर्थ होते थे तो महाजन लोग उनकी भूमि पर अपना अधिकार कर लेते थे। इससे किसानों की भूमियाँ उनसे छीनी जा रही थीं और वे निर्धन होते जा रहे थे। इसलिये लार्ड कर्ज़न ने 1900 ई० में पंजाब के लिये *भूमिविक्रय कानून* पास किया, जिसके द्वारा कुछ जातियों को कृषक और कुछ को अकृषक ठहराया गया और यह निश्चित हुआ *कि कोई अकृषक जाति का व्यक्ति किसी कृषक जाति के व्यक्ति से भूमि मोल नहीं ले सकता और न ही बीस वर्ष से अधिक समय के लिये गिरवी रख सकता है, और न ही किसी कृषक जाति के व्यक्ति की भूमि ऋण में कुर्क ही की जा सकती है।* इसका एक परिणाम यह हुआ कि अब साहूकार किसानों को रुपया कर्ज़ देने से कतराने लगे।

(४) **परस्पर सहायक सभाओं की स्थापना** (Co-operative Movement)-किसानो मे कम-खर्ची की आदत डालने और थोड़े दर पर रुपया व्याज पर ले सकने के लिये लार्ड कर्ज़न ने समस्त देश में कोआपरेटिव सोसाइटियाँ स्थापित की और ज़मींदारा बैंक खोले।

(५) **कृषि-विभाग** (Agriculture Department)—भारतवर्ष में कृषि अवस्था को अच्छा बनाने के लिये कर्ज़न ने कृषि विभाग स्थापित किया।

(६) **यूनिवर्सिटीज ऐक्ट** (Universities Act)—उस समय की शिक्षा-प्रणाली में बड़े सुधार की आवश्यकता थी। अतः 1904 ई० में यूनिवर्सिटीज़ ऐक्ट पास किया गया जिसके अनुसार कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन किये गये। एक तो यूनिवर्सिटियो को जिनका काम उस समय तक केवल परीक्षा लेना ही था, उच्च शिक्षा देने का कार्य भी सौंप दिया गया। दूसरे यूनिवर्सिटियों के प्रबन्ध आदि में सरकारी अधिकार बढ़ा दिया गया। तीसरे विज्ञान (Science) की शिक्षा को विशेपतया महत्वपूर्ण बना दिया गया। चौथे, कालिजों का निरीक्षन (Inspection) होने लगा। परन्तु भारतवासियो ने शिक्षा में सरकारी अधिकार को पसन्द न किया। इससे कर्ज़न बड़ा अप्रिय हो गया।

(७) **प्राचीन-स्मारक-रक्षा कानून** (Ancient Monuments Preservation Act)—लार्ड कर्ज़न ने प्राचीन ऐतिहासिक स्थानो की रक्षा के लिये एक कानून पास किया जिसके अनुसार प्राचीन ऐतिहासिक स्थानों को हानि पहुँचाना जुर्म नियत किया गया। इसके अतिरिक्त एक प्राचीन स्मारक रक्षा-विभाग (Archaeological Department) स्थापित किया गया। इसके द्वारा जहाँ पुराने भवन नष्ट होने से बच रहे हैं, वहाँ बहुत से प्राचीन नगर तक्षशिला, पाटलिपुत्र, हड़प्पा, महेंजोदरो (Mohenjo Daro) आदि भूमि से खोदकर निकाले गये हैं जिससे भारत के प्राचीन इतिहास के जानने में अधिक सुविधा हो गई है।

(८) **इम्पीरियल केडिट कोर** (Imperial Cadet Corpse)—राजाओं और नवाबों के पुत्रों को सैनिक शिक्षा देने के लिये लार्ड कर्ज़न

ने इम्पीरियल केडिट कोर की नींव रखी।

(६) व्यापार तथा शिल्प विभाग—लार्ड कर्ज़न ने व्यापार तथा शिल्प की उन्नति के लिये भी एक विभाग स्थापित किया। इस विभाग के कारण रेलों और कारखानों में उन्नति होने लगी।

प्रसिद्ध घटनायें (Events)

(१) प्लेग और दुर्भिक्ष (Plague and Famine)—लार्ड कर्ज़न के शासनकाल के आरम्भ में एक भीषण अकाल पड़ा हुआ था और प्लेग भी फैली हुई थी। यों तो यह अकाल भारत के सारे पश्चिमी भाग में पंजाब से लेकर बम्बई प्रान्त तक था परन्तु गुजरात काठियावाड़ में इसका विशेष जोर था। कई लाख व्यक्ति इससे मर गए। सरकार ने लोगों की बड़ी सहायता की जिससे यह अकाल तो दूर हो गया परन्तु प्लेग कर्ज़न के सारे शासनकाल में रही और इससे बहुत सारे लोग मृत्यु-वश हो गये।

(२) देहली दरबार (Delhi Durbar), 1903—जनवरी 1901 ई० में साम्राज्ञी विक्टोरिया की मृत्यु हो गई और उसका पुत्र ऐडवर्ड सप्तम गद्दी पर बैठा। ऐडवर्ड सप्तम के अभिषेक की घोषणा के लिये प्रथम जनवरी 1903 ई० को देहली में एक बड़ा शानदार दरबार किया गया।

(३) बंग-भंग (Partition of Bengal) 1905—बङ्गाल उन दिनो में बहुत बड़ा प्रान्त था। इसकी जन-संख्या ७ करोड़ ८० लाख और क्षेत्रफल दो लाख वर्गमील के लगभग था। लार्ड कर्ज़न के हृदय में यह विचार समा गया था कि एक लेफ्टिनैन्ट गवर्नर इसका प्रबन्ध भली प्रकार नहीं कर सकता। इसलिये उसने 1905 ई० में बंगाल को दो भागों में विभक्त कर दिया। पूर्वी बंगाल को आसाम के साथ सम्मिलित करके एक नवीन प्रान्त बना दिया जिसका नाम पूर्वी बंगाल और आसाम रखा गया और ढाका (Dacca) उसकी राजधानी नियत हुई। परन्तु बंगालियों ने बंग-भंग के विरुद्ध आंदोलन खड़ा किया, क्योंकि उनका विचार था कि ऐसा करने में लार्ड कर्ज़न

का अभिप्राय बङ्गाली जाति की एकता को दुर्बल करना है। इस आंदोलन के नेता श्री सुरेन्द्रनाथ बैनरजी थे। शीघ्र ही यह आंदोलन सारे देश में फैल गया और विदेशी माल का बायकाट (Boycott) आरम्भ कर दिया गया। अन्त में 1911 ई० में देहली दरबार के समय सम्राट् जार्ज पंचम ने इसको हटा दिया।

लार्ड किचनर

(४) कर्ज़न का त्याग-पत्र— (Resignation of Lord Curzon)—1905 ई० में लार्ड कर्ज़न और भारत की सेनाओं के सेनापति लार्ड किचनर (Kitchener) के मध्य इस प्रश्न पर मतभेद हो गया कि गवर्नर-जनरल की प्रबन्धक कौंसिल (Executive Council) में सैनिक मेम्बर कौन हो। लार्ड किचनर इस विषय के पक्ष में था कि सेनापति ही सैनिक मेम्बर होना चाहिये परन्तु लार्ड कर्ज़न इस बात के पक्ष में था कि इस पदवी पर कोई सिविल विभाग का व्यक्ति होना चाहिये। भारत मन्त्री ने लार्ड किचनर के पक्ष का समर्थन किया। इस सम्बन्ध में लार्ड कर्ज़न ने त्याग-पत्र दे दिया।

लार्ड कर्ज़न का कार्य

लार्ड कर्ज़न निःसंदेह एक महान् शासक था। उसने राज्य-कार्य के प्रत्येक विभाग पर अपनी छाप लगाई। उसने कई सुधार भी किये जिनमें से बहुत से अत्यन्त उपयोगी थे परन्तु उसका शासन-काल बहुत सफल सिद्ध न हुआ। 1904 ई० के *यूनीवर्सिटीज के कानून ने और कई अन्य कार्यवाहियों ने उसे अप्रिय कर दिया। वंग-भंग ने उसको और भी अप्रिय बना दिया।* इसका परिणाम यह हुआ कि देश में बड़ी हलचल मच गई और उसके उत्तराधिकारी लार्ड मिन्टो द्वितीय को बड़ी असंतोष-जनक स्थिति का सामना करना पड़ा।

लार्ड मिन्टो द्वितीय

(LORD MINTO II)

1905—1910

लार्ड मिन्टो द्वितीय

लार्ड मिन्टो उस लार्ड मिन्टो का पड़पोता था, जो 1807 ई० से 1813 ई० तक भारतवर्ष में गवर्नर-जनरल रह चुका था। जब वह भारतवर्ष में आया तो बंग-भग के कारण सारे देश भर में भारी राजनैतिक अशांति फैली हुई थी। लार्ड मिन्टो ने इस आन्दोलन को दबाने के लिये कई कठोर नियम बनाये, परन्तु इसके साथ ही उस ने भारतियो को शान्त करने के लिये भारत-मन्त्री (Secretary of State for India) *लार्ड मार्ले* के साथ विचार करके कुछ सुधार भी किये, जिनको *मिन्टो-मार्ले सुधार* (Minto-Morley Reforms) कहते हैं।

Q. Write a note on the Minto-Morley Reforms. (P.U. 1938-45-49)

प्रश्न—*मिन्टो-मार्ले रिफ़ार्मज़ पर नोट लिखो।*

मिन्टो मार्ले सुधार

भारतवासियों को राज्य के कार्यों में अधिक भाग देने के लिये 1909 ई० में कुछ सुधार स्वीकृत हुये, जो *मिन्टो-मार्ले सुधार* के नाम से प्रसिद्ध हैं। उनके द्वारा निम्नलिखित बड़े-बड़े परिवतन किये गये :—

(१) वाइसराय की एग्ज़ैक्यूटिव कौंसिल तथा प्रान्तीय एग्ज़ैक्यूटिव कौंसिल में एक-एक भारतीय मेम्बर लिया गया। वाइसराय की एग्ज़ेक्यूटिव कौंसिल में प्रथम भारतीय मेम्बर कलकत्ते का प्रसिद्ध वैरिस्टर *सर एस० पी सिनहा* (Sir S. P. Sinha) था जो तत्पश्चात् लार्ड सिनहा आफ़ रायपुर (Lord Sinha of Raipur) बना।

(२) वाइसराय की लैजिस्लेटिव कौंसिल के (जिसे उन दिनों इम्पीरियल लैजिस्लेटिव कौंसिल कहते थे) सदस्यों की संख्या बढ़ा दी गई परन्तु उसमें सरकारी सदस्यों की ही अधिकता रही।

(३) प्रान्तो की लैजिस्लेटिव कौंसिलो में सदस्यों की संख्या बढ़ा

दी गई और असरकारी सदस्यो की संख्या सरकारी सदस्यों से अधिक कर दी गई।

(४) कौंसिलो के अधिकार पहले की अपेक्षा बढ़ा दिये गये।

(५) बहुत से प्रान्तो में मुसलमानो को अपने मेम्बर अलग निर्वाचित करने का अधिकार दिया गया।

नोट—इण्डिया कौंसिल में दो भारतीय सदस्य, एक हिन्दू तथा एक मुसलमान पहले नियुक्त हो चुके थे।

लार्ड हार्डिङ्ग द्वितीय
(LORD HARDINGE II)
1910—1916

Q. Briefly describe the events of the Viceroyalty of Lord Hardinge II.

प्रश्न—*लार्ड हार्डिङ्ग द्वितीय के शासन-काल की प्रसिद्ध घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन करो।*

यह लार्ड हार्डिङ्ग उस लार्ड हार्डिङ्ग का पोता था जिसके शासन-काल में सिक्खों का प्रथम युद्ध हुआ था। इसके शासनकाल की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित थीं।

(१) **देहली दरबार**—1911 ई० में सम्राट् जार्ज पंचम साम्राज्ञी मेरी (Mary) के साथ भारत आया और 12 दिसम्बर 1911 ई० को दिल्ली में एक महान् अभिषेक दरबार (Coronation Durbar) हुआ। उस दरबार में सम्राट् ने निम्नलिखित विशेष घोषणायें कीं :—

(१) लार्ड कर्ज़न के शासन-काल का बंग-भंग हटा दिया गया। आसाम फिर एक पृथक् प्रान्त बना दिया गया और बिहार तथा उड़ीसा को मिला कर एक पृथक् प्रांत बना दिया गया जिसकी राजधानी पटना नियत हुई। (आजकल उड़ीसा एक पृथक राज्य है)।

(२) कलकत्ते के स्थान पर देहली भारतवर्ष की राजधानी नियत हुई।

(३) प्राइमरी शिक्षा-प्रचार के लिये ५० लाख रुपया व्यय करना स्वीकृत हुआ।

(४) यह भी घोषित किया गया कि भविष्य में विक्टोरिया क्रास (Victoria Cross) नामक पदक (Medal) वीर भारतवासियों को भी मिल सकेगा।

(२) वाइसराये पर बम्ब—दिसम्बर 1912 ई० में लार्ड हार्डिङ्ग ने हाथी पर सवार होकर अपनी नई राजधानी देहली में प्रवेश किया तो जलूस के चाँदनी चौक में से गुज़रते समय किसी विप्लवकारी ने वाइसराय पर बम्ब फैंक दिया। वाइसराय को साधारण सा घाव आया जो शीघ्र ही ठीक हो गया। आक्रमण-कर्त्ता घटनास्थल से शीघ्र ही भाग गया और उसका पता न लग सका। वाइसराय ने इस अवसर पर अत्यन्त सहनशीलता से काम लिया।

(२) प्रथम महायुद्ध

लार्ड हार्डिङ्ग द्वितीय के शासन-काल की सर्व प्रसिद्ध घटना प्रथम महायुद्ध का आरम्भ होना है। यह युद्ध योरुप में 1914 ई० में आरम्भ हुआ और चार वर्ष चलता रहा। इसमें एक ओर *जर्मनी* और उसके साथी *आस्ट्रिया, बलगेरिया* और *टर्की* थे और दूसरी ओर *इंगलैंड* और उसके साथी *फ्राँस, रूस, अमरीका, जापान* इत्यादि थे।

कारण–इस युद्ध का कारण योरुप के बड़े-बड़े देशो की पारस्परिक ईर्ष्या द्वेष तथा देश हथियाने की चेष्टा थी। जर्मनी विशेषकर बड़ा लोभी था। अन्य देशों की अपेक्षा जर्मनी उन्नति के क्षेत्र में बहुत पीछे आया था, परन्तु तीस चालीस वर्ष के थोड़े से काल में ही उसने विस्मयजनक उन्नति कर ली थी। इस उन्नति और सफलता से जर्मनी बड़ा इतरा रहा था और अन्य देशो से बाज़ी ले जाना चाहता था। इस कार्य में जर्मनी का कैसर *विलियम द्वितीय* बहुत बढ़-चढ़ कर भाग ले रहा था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये उसने अपनी सैनिक तथा जलशक्ति को भी बड़ा सुदृढ़ कर लिया था। इंगलैंड, जर्मनी की इस उन्नति को अपने लिये बड़ा हानिकारक समझता था। इसके अतिरिक्त

जर्मनी और फ्रांस मे भी शत्रुता थी और अन्य देशो में भी डाह थी। युद्ध का भय प्रतिदिन बढ़ रहा था। अतः बीसवी शताब्दी के आरम्भ में योरुप के शक्तिशाली देश अपने-अपने बचाव के लिये दो सैनिक दलों में बँट गये हुये थे। एक ओर *जर्मनी, आस्ट्रिया और इटली थे*, (यद्यपि युद्ध में इटली जर्मनी के विरोधी पक्ष के साथ हो गया) और दूसरी ओर इंगलैंड, *फ्रांस और रूस थे*। सभी देश अपने आपको सशस्त्र कर रहे थे। युद्ध के लिये केवल कोई बहाना ही चाहिये था।

28 जून 1914 ई० को बहाना भी मिल गया। उस दिन *आस्ट्रिया* के युवराज का वध हो गया। आस्ट्रिया ने इस वध में अपने पड़ोसी देश *सरविया* पर सन्देह किया। कोई एक महीने बाद दोनो में युद्ध छिड़ गया। रूस और जर्मनी भी युद्ध में कूद पड़े। जर्मनी ने बेलजियम की राह अब फ्रांस पर आक्रमण करने के लिये अपनी सेना बेलजियम भेज दी। परन्तु बहुत समय पहले योरुप के बड़े-बड़े देशों ने बेलजियम के निष्पक्ष रहने का सन्धि-पत्र मान रखा था। इंगलैंड ने जर्मनी को जब यह सन्धि-पत्र भंग करते देखा तो 4 *अगस्त* 1914 ई० को उसके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी।

भारतवर्ष की सहायता—इस युद्ध में भारतवर्ष ने इंगलैंड की पर्याप्त सहायता की।

(१) भारतीय सैनिक फ्रांस, अफ्रीका, गैलीपोली, फिलस्तीन, इराक, आदि प्रत्येक मोरचे के स्थान पर भेजे गये और उन्होंने प्रत्येक स्थान पर वीरता का परिचय देकर भारत का नाम भली प्रकार सुविख्यात किया। फ्रांस में भारतीय सेना उस समय भेजी गई जब कि जर्मन शक्ति की बाढ़ उमड़ी चली आती थी। इस बाढ़ को रोकने में भारतीयों ने विशेष भाग लिया। इराक, फलस्तीन और जर्मन ईस्ट अफ्रीका की विजय का श्रेय तो अधिकतर भारतीय सेनाओं को ही है।

(२) भारतीयों ने उदारतापूर्वक इस युद्ध के लिये चंदा दिया और लोगों को सेना में भरती कराने का यत्न किया। महात्मा गांधी ने भी भर्ती में सहायता की और उन्हे अंग्रेज़ी सरकार की ओर से कैसर-ए-हिन्द

का चाँदी का पदक (Medal) प्रदान किया गया था।

(३) रियासतों के शासकों ने भी इस युद्ध में धन तथा सेना की सहायता देकर अपनी राज-भक्ति का पूर्ण परिचय दिया। *महाराजा प्रतापसिंह* (जोधपुराधीश), *महाराजा गंगासिंह* (बीकानेराधीश) और कई और भारतीय राजाओं और नवाबों ने युद्ध में स्वयं भाग लिया। 1918 ई० में यह युद्ध समाप्त हो गया और शान्ति सम्मेलन (Peace Conference) में भारतवर्ष की ओर से *महाराजा बीकानेर तथा सर एस० पी० सिनहा* (Sir S P. Sinha) प्रतिनिधि बनकर सम्मिलित हुए।

(४) **बनारस यूनिवर्सिटी**—1916 ई० में लार्ड हार्डिंग ने बनारस में हिन्दू यूनिवर्सिटी की नींव शिला रखी। इस यूनिवर्सिटी के संस्थापक तथा कर्ता-धर्ता *स्वर्गीय पंडित मदन मोहन मालवीय जी थे*।

लार्ड चेम्सफोर्ड

(LORD CHELMSFORD)

1916—1921

Q. Summarise the leading events of the Viceroyalty of Lord Chelmsford. (P. U. 1943)

प्रश्न—*लार्ड चैम्सफोर्ड के शासन-काल की प्रसिद्ध घटनाओं का वर्णन करो।*

महायुद्ध में भारत की अत्यन्त वीरता तथा राज्य भक्ति से अंग्रेजी सरकार बहुत प्रसन्न हुई

(१) 1917 ई० की घोषणा

इसलिये इन सेवाओं के पुरस्कार स्वरूप 20 अगस्त 1917 ई० को मि० मांटेग्यू (Mr. Montagu) *भारत मन्त्री* ने अंग्रेजी राज्य की ओर से पार्लियामेंट में यह प्रसिद्ध *ऐतिहासिक घोषणा* की कि *अङ्गरेज़ी राज्य का उद्देश्य भारतवासियो*

लार्ड चेम्सफोर्ड

को *अपने देश के प्रबन्ध में अधिक भाग देना तथा धीरे-धीरे उन्हें जिम्मेदार राज्य* (Responsible Government) *देना है।*

इस घोषणा को सफल बनाने के लिये मि० मांटेग्यू स्वय भारत में आया और उसने यहाँ की राजनैतिक अवस्था का निरीक्षण करके चैम्सफोर्ड के परामर्श से एक रिपोर्ट तैयार की जिसके आधार पर भारतवासियों को अपने देश के शासन में अधिक भाग दिया गया। परन्तु कई लोग इन सुधारो से प्रसन्न नहीं हुये और देश में षड्यन्त्र होने लगे।

(२) रौलट ऐक्ट 1919 (Rowlatt Act)

1918 ई० में गवर्नमेंट ने यहाँ पर होने वाले षड्यन्त्रो के कारणो पर विचार करने तथा इन षड्यन्त्रो को दमन करने के उपायों पर सोच विचार करने के लिये एक कमेटी नियुक्त की जिसका प्रधान Mr. Justice Rowlatt था। इस कमेटी की सिफारिशों पर 1919 ई० में **रौलट ऐक्ट** पास किया गया जिसके द्वारा पुलिस और मजिस्ट्रेटों *को इस प्रकार के षड्न्त्रों और विप्लवकारियों को दबाने के लिये विशेष अधिकार मिल गये।* उन्हे यह भी अधिकार मिल गया कि जिस पुरुष पर विप्लवकारी होने का सन्देह हो उसे बिना अभियोग चलाये कैद कर दिया जाय। परन्तु इस ऐक्ट के कारण सारे देश में अप्रसन्नता फैल गई।

(३) सत्याग्रह आन्दोलन

रौलट ऐक्ट को निष्फल बनाने के लिये *महात्मा गांधी* ने **सत्याग्रह आन्दोलन** आरम्भ किया जिसका अभिप्राय यह था कि शांतिमय रहकर रौलट ऐक्ट का इस दृढ़ता से विरोध किया जाय कि सरकार को उसे वापिस ही लेना पड़े, परन्तु जनता शान्तिमय न रह सकी। सारे देश में हल चल मच गई। विशेषतया अहमदाबाद, देहली और पजाब में कई स्थानों पर विद्रोह हुये। 13 अप्रैल 1919 ई० को अमृतसर में *जलियाँवाला बाग़* की दुर्घटना हुई जहाँ

जैनरल डायर (General Dyer) ने एक जलसे में आये हुये व्यक्तियो पर बिना सूचना दिये हुये गोली चला दी जिससे बहुत से व्यक्ति मर गये। इसके पश्चात् गवर्नमेंट ने कई ज़िलों लाहौर, अमृतसर, गुजराँवाला, आदि में मार्शल-ला (Martial-Law) चालू कर दिया और जनता पर अत्याचार किये।

(४) असहयोग आंदोलन (Non Co-operation Movement)

यूरोप के युद्ध की समाप्ति पर टर्की से जो शर्तें स्वीकार करवाई गई थीं, उनसे ख़लीफ़ा* का प्रभाव बहुत घट गया इसलिये भारत के मुसलमान अंग्रेज़ी-साम्राज्य के बहुत विमुख हो गये और उन्होंने ख़लीफ़ा के प्रभाव को ज्यो का त्यों बनाये रखना चाहा। उधर पंजाब में किये गये अत्याचारों के कारण भी जनता गवर्नमेंट से अप्रसन्न थी। इसलिये महात्मा गाँधी ने हिन्दुओं तथा मुसलमानो को सम्मिलित करके सरकार से **असहयोग आन्दोलन** (Non Co-operation Movement) प्रारम्भ किया। उसके कार्य-क्रम में निम्नलिखित बातें सम्मिलित थीं:—

(१) विदेशी वस्त्रों का बायकाट (२) सरकारी नौकरियो का बायकाट (३) कौंसिलों का बायकाट (४) न्यायालयों का बायकाट (५) स्कूलो तथा कालिजो का बायकाट (६) उपाधियो का बायकाट।

कुछ समय के लिये तो इस आन्दोलन को बड़ी सफलता प्राप्त हुई, परन्तु लार्ड रैडिंग के शासनकाल में यह आन्दोलन दब गया।

(५) अफ़ग़ानिस्तान का तृतीय युद्ध, 1919

कारण—1919 ई० में अफ़ग़ानिस्तान के अमीर हबीबुल्ला का किसी ने वध कर दिया और उसका पुत्र *अमानुल्ला* राज सिंहासन पर बैठा। वह अपनी विदेशी नीति में अंग्रेज़ों से स्वतन्त्र होना चाहता था। उन दिनो रौलट ऐक्ट के कारण भारत में

*टर्की का सुल्तान सारे संसार के मुसलमानों का ख़लीफ़ा (शिरोमणि) था। आजकल ख़लीफ़ा का पद हटा दिया गया है।

वडी अशांति फैली हुई थी। अमीर ने समझा कि सम्भवतः भारत बागी हो गया है, इसलिये अवसर को उचित समझ कर अमीर की सेना ने अंग्रेजी प्रदेशों पर आक्रमण कर दिया।

घटनायें—अंग्रेजी सेनायें खैबर के दर्रे के मार्ग से मुकाबले के लिये बढ़ीं और उन्होंने डक्का पर अधिकार कर लिया। इसके साथ ही *जलालाबाद* और *काबुल* पर वम्ब फैंके गये, जिस से उत्तर में अंग्रेजो को शीघ्र ही पर्याप्त सफलता हो गई, परन्तु दक्षिण में अफगानिस्तान के प्रसिद्ध जनरल *नादिरखाँ* ने (जो तत्पश्चात कुछ समय अफगानिस्तान का बादशाह भी रहा) *थल* पर अधिकार कर लिया। अन्त में 8 अगस्त 1919 ई० को रावलपिंडी के स्थान पर सन्धि हो गई और युद्ध समाप्त हुआ।

परिणाम—रावलपिंडी के सन्धि-पत्र द्वारा निम्नलिखित शर्तें निश्चित हुई :—

(१) अफगानिस्तान पूर्णतया स्वाधीन राज्य माना गया और काबुल के अमीर को अपनी वैदेशिक नीति में पूरी स्वतन्त्रता मिल गई।

(२) अमीर को जो शुल्क (Subsidy) अंग्रेजी राज्य की ओर से मिला करता था वन्द कर दिया गया और उसे भारत के मार्ग से युद्ध सामग्री मँगवाने का अधिकार न रहा।

नोट—कुछ समय बाद अमीर को युद्ध सामग्री मँगाने का अधिकार दे दिया गया।

☞ Government of India Act, 1919

1919 ई० में पार्लियामेंट ने भारत के राज्य-प्रबन्ध के लिये एक नवीन नियम पास किया, जिसे **गवर्नमेंट आफ इण्डिया ऐक्ट** कहते हैं। इस ऐक्ट के द्वारा जो सुधार किये गये वे *मैन्टेग्यू चैम्सफोर्ड* (Montagu-Chelmsford Reforms) या *माण्टफोर्ड सुधार* के नाम से प्रसिद्ध हैं। बड़े-बड़े परिवर्तन निम्नलिखित थे:—

(i) *प्रांतीय शासन में जो सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन किया गया* वह

डायर्की (Dyarchy) के *नाम से विख्यात है।*

(१) प्रांतीय शासन डायर्की का अर्थ है कि सब प्रांतीय विभागों को दो भागों में विभक्त कर दिया गया। एक भाग का प्रबन्ध तो सीधा गवर्नर और उसकी प्रबन्धक कौंसिल के अधीन किया गया। इस भाग को *रक्षक भाग* (Reserved Part) कहते थे, दूसरे भाग का प्रबन्ध प्रांतीय मन्त्रियों को सौंपा गया जो कि लैजिस्लेटिव कौंसिल के सम्मुख उत्तरदायी होते थे। इस भाग को *प्रदत्त भाग* (Transferred Part) कहते थे।

(ii) प्रांतीय लैजिस्लेटिव कौंसिलों में सदस्यों की संख्या बढ़ा दी गई और उनमें निर्वाचित सदस्यों की संख्या अधिक नियत की गई। वोटरों की संख्या भी बढा दी गई।

(२) केन्द्रीय सरकार (i) *केन्द्रीय शासन में जो सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन किया गया वह यह था कि नियम निर्माण सभा* के दो भाग कर दिये गये—एक का नाम *कौंसिल आफ स्टेट* (Council of State) रखा गया और दूसरे का नाम *लैजिस्लेटिव असैम्बली* (Legislative Assembly) रखा गया। कौंसिल आफ स्टेट में बड़े-बड़े ज़मींदार और धनाढ्य पुरुष होते थे परन्तु लैजिस्लेटिव असैम्बली में जन साधारण के प्रतिनिधि होते थे। इन दोनों भागों (Houses) में निर्वाचित सदस्यों की बहु संख्या होती थी और इनके अधिकार भी पहिले की अपेक्षा अधिक थे।

(ii) गवर्नर जनरल की *एग्जैक्टिव कौंसिल* (Executive Council) में भारतीय सदस्यों की संख्या एक से बढा कर कम से कम तीन कर दी गई। *परन्तु यह सभा नियम निर्माण सभा के सम्मुख उत्तरदायी न थी।*

(३) इंडिया कौंसिल (i) इंडिया कौंसिल में भारतीय सदस्यों की संख्या बढ़ा दी गई और (ii) भारत-मन्त्री तथा उसके कर्मचारियों के वेतन इङ्गलैंड से दिये जाने का निश्चय हुआ।

(i) लंडन में एक *हाई कमिश्नर फार इंडिया*

(High Commissioner for India) नियुक्त किया गया जिसका काम भारतीय व्यापार की देख-भाल, भारतवर्ष के लिये ऋण एकत्र करना, इङ्गलैंड में रहने वाले भारतीय विद्यार्थियों के सुख-दुःख का ध्यान रखना और भारतीय शासन के लिये सामग्री मोल लेना था। उसको वेतन भारतीय कोष से मिलता था।

अन्य परिवर्तन

(ii) यह भी निश्चित हुआ कि दस वर्ष के पश्चात् इंगलैंड से एक कमीशन भारत में आयेगा जो इस बात की छानबीन करेगा कि भारतीयों ने सुधारों को कहाँ तक सफल बनाया है और उन्हें अन्य क्या सुधार (Reforms) देने चाहिएँ।

लार्ड रैडिंग

(LORD READING)

1921—1926

Q. Briefly describe the events of the Viceroyalty of Lord Reading.

प्रश्न—*लार्ड रैडिंग के शासनकाल की प्रसिद्ध घटनाओं का वर्णन करो।*

लार्ड रैडिंग वाइसराय नियुक्त हो कर आया तो असहयोग आन्दोलन बहुत जोरों पर था, किन्तु कई स्थानों पर जनता अहिंसा की नीति को न अपना सकी। उत्तर प्रदेश के एक ग्राम *चौरी चौरा* (Chauri Chaura) में जनता ने पुलिस की चौकी को आग लगाकर वहाँ के सिपाहियों को जला दिया। इस घटना से प्रभावित होकर महात्मा गाँधी ने असहयोग आंदोलन को कुछ समय के लिये रोक दिया। लार्ड रैडिङ्ग ने इस अवसर से लाभ उठा कर महात्मा गाँधी तथा दूसरे राजनैतिक नेताओं को बंदी बना लिया। उधर खलीफा के साथ नरम शर्तें निश्चित हो जाने के कारण मुसलमानों का जोश भी ठंडा हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि असहयोग आंदोलन

१. असहयोग आंदोलन की समाप्ति

का अन्त हो गया।

२. प्रिंस आफ वेल्ज़ का आगमन 1921 ई०

1921 ई० में प्रिंस आफ वेल्ज़ जो बाद में कुछ समय के लिये ऐडवर्ड अष्टम के नाम से राजा भी रहा, भारत में आया। परन्तु चूँकि असहयोग आन्दोलन जोरों पर था इसलिये जनता ने उसके स्वागत में कोई भाग न लिया।

३. मोपला विद्रोह 1921

मोपला मालाबार में मुसलमानों की एक जाति का नाम है। 1921 ई० में उन लोगों ने धार्मिक जोश में आकर विद्रोह कर दिया और वहाँ के हिन्दुओं पर असीम अत्याचार किये। 1922 ई० में इस विद्रोह को बलपूर्वक दबा दिया गया और बहुत से मोपलों को शिक्षाप्रद दण्ड दिये गये।

४. गुरुद्वारा ऐक्ट

1920-1921 ई० में सिक्खों के गुरुद्वारों के सुधार के लिये एक आन्दोलन आरम्भ हुआ जो प्रायः *अकाली आन्दोलन* के नाम से प्रसिद्ध है। गुरुद्वारो के महन्त आचरण से बहुत गिरे हुये थे और सिक्खों के विचारानुसार वे सिक्ख नहीं थे, इसलिये सिक्खों ने गुरुद्वारो पर बलपूर्वक अधिकार करना चाहा परन्तु महन्तो ने इसका अत्यन्त विरोध किया। 1921 ई० में ननकाना साहिब के महन्त (नारायण दास) ने एक सौ से अधिक अकालियो का जो उस गुरुद्वारे में गये थे वध करवा दिया। इस पर सिक्ख बहुत भड़क उठे। उन्होंने कई गुरुद्वारो पर बलपूर्वक अधिकार कर लिया। अन्त में गवर्नमेंट ने *गुरुद्वारा ऐक्ट* (Gurdwara Act) पास किया, जिसके अनुसार एक न्यायालय बनाया गया जिसका कर्तव्य यह निश्चित करना था कि *क्या कोई गुरुद्वारा सिक्खो की जायदाद है या किसी व्यक्ति की निजी जायदाद है।*

लार्ड अरविन

(LORD IRWIN)

1926—1931

Q Describe the events of the Viceroyalty of Lord Irwin.

प्रश्न—*लार्ड अरविन के शासन-काल की प्रसिद्ध घटनाओ का वर्णन करो।*

लार्ड अरविन बड़ा योग्य तथा धार्मिक वृत्ति का पुरुष था। उसको कृषि-सम्बन्धी विषयो से विशेष प्रेम था। उसने कृषि-सम्बन्धी विषयो की खोज के लिये एक कमीशन नियुक्त किया जिसका सभापति *लार्ड लिनलिथगो* था जो बाद में भारतवर्ष का वायसराय भी रहा। इस कमीशन की सिफारशो पर यथाशक्ति आचरण किया गया।

(१) कृषि सम्बन्धी कमीशन

1919 ई० के गवर्नमेंट आफ इण्डिया ऐक्ट में एक धारा (Provision) यह भी थी कि दस वर्ष के पश्चात् एक कमीशन नियुक्त किया जायेगा जो इस बात की खोज करेगा कि सुधार किस सीमा तक सफल हुए हैं और अन्य सुधार किये जायें या नहीं। अतः 1928 ई० में सात सदस्यो का एक कमीशन भारत में आया। इस कमीशन का सभापति इगलैंड का प्रसिद्ध नीतिज्ञ *सर जान साईमन* (Sir John Simon) था और चूंकि *कमीशन के सदस्यों में एक भी भारतीय न था*, इस लिये *कांग्रेस तथा कई अन्य राजनैतिक संस्थाओ ने उसका बाइकाट* किया और उसके विरुद्ध प्रदर्शन किये गये। तथापि कुछ व्यक्तियो ने इस कमीशन के सम्मुख गवाहियाँ दीं। इस रिपोर्ट में सिफारश की गई थी कि *प्रान्तो में द्वायर्की के स्थान पर पूर्ण-स्वतन्त्रता दी जाय*। परन्तु केन्द्रीय शासन में कोई परिवर्तन न करने की सिफारिश की गई। इस रिपोर्ट को भारत

(२) साइमन कमीशन (Simon Commission)

की किसी संस्था ने संतोष जनक न समझा।

1929 ई० की लाहौर कांग्रेस में जिसके सभापति *पंडित जवाहर लाल नेहरू* थे, पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव पास हुआ और आज्ञा-भंग आंदोलन (Civil Disobedience) आरम्भ करने का निश्चय हुआ। इस लिये मार्च 1930 ई० में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में *लवण कानून* का उल्लंघन किया गया और देश में कई स्थानों पर लवण का नियम भङ्ग करके लवण तैयार किया गया। शीघ्र ही इस आन्दोलन ने बहुत जोर पकड़ लिया और सहस्रों की संख्या में व्यक्ति बन्दी बनाये गये।

(३) Civil Disobedience Movement

ब्रिटिश गवर्नमेंट ने यह देखकर कि साइमन कमीशन की रिपोर्ट को किसी भी राजनैतिक संस्था ने पसन्द नहीं किया और देश में अशान्ति फैल गई है लण्डन में एक गोलमेज़ कान्फ्रेंस (First Round Table Conference) बुलाई ताकि भारत के विधान (Constitution) पर विचार किया जाय। परन्तु चूँकि सत्याग्रह का आन्दोलन प्रचलित था इसलिये कॉंग्रेस के प्रतिनिधि उसमें सम्मिलित न हुये। इस कान्फ्रेंस ने जो सिफारिशें कीं वे साइमन कमीशन की सिफारशों से अच्छी थीं, परन्तु उन्हें भी प्रसन्नता की दृष्टि से न देखा गया।

(४) प्रथम गोलमेज़ कान्फ्रेंस, 1930

मार्च 1931 ई० में महात्मा गाँधी तथा लार्ड अरविन के मध्य एक समझौता हुआ जिसे *गांधी-अरविन पैक्ट* (Gandhi-Irwin Pact) कहते है। उसके अनुसार महात्मा गांधी ने सत्याग्रह आन्दोलन को बन्द कर दिया। गवर्नमेंट ने आज्ञा भङ्ग (Civil-Disobedience) के बन्दियों को मुक्त कर दिया तथा लवण के नियम में भी संशोधन किया गया। महात्मा गांधी ने द्वितीय गोलमेज़ कान्फ्रेंस में सम्मिलित होना स्वीकार कर लिया।

(५) गांधी-अरविन समझौता, 1931

यह कानून राय बहादुर हरिविलास शारदा ने 1930 ई० में पास कराया। इसके द्वारा १८ वर्ष से कम आयु के बालक तथा १४ वर्ष से कम आयु की कन्या का विवाह राज नियम के प्रतिकूल माना गया।

६ शारदा ऐक्ट

1931 ई० में लार्ड अरविन वापिस इंगलैंड चला गया।

लार्ड विलिंगडन

(LORD WILLINGDON)

1931—1936

Q Briefly describe the important events of the administration of Lord Willingdon.

प्रश्न—लार्ड विलिंगडन के शासन काल की प्रसिद्ध घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन करो।

दूसरी गोलमेज कान्फ्रेंस 1931

प्रथम गोलमेज़ कान्फ्रेंस में कांग्रेस पार्टी सम्मिलित नहीं हुई थी और चूँकि काँग्रेस भारत में सर्वाधिक शक्तिशाली राजनैतिक संस्था थी, इसलिये उचित समझा गया कि दूसरी गोलमेज़ कान्फ्रेंस बुलाई जाय। इसलिये 1931 ई० में काँग्रेस की ओर से महात्मा गाँधी दूसरी गोलमेज़ कान्फ्रेंस में सम्मिलित हुए। परन्तु यह कान्फ्रेंस साम्प्रदायिक प्रश्न को सुलझा न सकी अर्थात् न तो यह निश्चित हो सका कि चुनाव पृथक्* हो या सम्मिलित और न यह निश्चित हो सका कि केन्द्रीय तथा प्रान्तीय कौंसिलों में भिन्न-भिन्न जातियों की कितनी सीटें (Seats) हों। अन्त में इस प्रश्न का निर्णय प्रधान मन्त्री रैमजे (मैकडानल्ड) Mr Ramsay Macdonald) पर छोड़ दिया गया।

अगस्त 1932 ई० को प्रधान-मन्त्री रैमजे मैकडानल्ड ने अपना

---

* Separate Electorates

कम्यूनल आवर्ड अगस्त 1932 ई० (Communal Award)

साम्प्रदायिक निर्णय दे दिया अर्थात् केन्द्रीय तथा प्रांतीय कौंसिलों में भिन्न-भिन्न जातियों की सीटें नियत कर दी। अछूतों को हिन्दुओं से पृथक् प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया गया और चुनाव की साधारण रीति भिन्न नियत कर दी गई। इस निर्णय को अंग्रेजी में Communal Award कहते हैं। इस निर्णय से हिन्दू तथा सिक्ख अप्रसन्न थे।

पूना पैक्ट (Poona Pact)

कम्यूनल अवार्ड के अनुसार हिन्दू अछूतों को उच्च जाति के हिन्दुओं से पृथक् प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया गया था। महात्मा गाँधी ने इस निर्णय के विरुद्ध कठोर प्रौटैस्ट किया, क्योंकि उनका विचार यह था कि यह अछूतों को हिन्दू जाति पृथक् करने का एक ढंग है। इसलिये उन्होंने कम्यूनल अवार्ड के इस भाग को उड़ा देने के लिये प्राण त्याग व्रत धारण किया। अन्त में पूना के स्थान पर अछूत नेताओं तथा हिन्दू नेताओं में परस्पर समझौता हो गया, जिसके द्वारा अछूतों ने कुछ सीमा तक हिन्दुओं के साथ सम्मिलित प्रतिनिधि भेजने का नियम स्वीकार किया और ब्रिटिश गवर्नमेंट ने भी इस समझौते के अनुसार कम्यूनल अवार्ड में सशोधन कर दिया।

तीसरी गोलमेज़ कांफ्रेन्स 1935

1932 ई० में तीसरी गोलमेज़ कान्फ्रेंस हुई जिसमें भारत की आगामी शासन-प्रणाली के सम्बन्ध में फिर विचार किया गया।

1935 ई० में पार्लियामेंट ने एक नवीन **गवर्नमेंट आफ इण्डिया ऐक्ट** पास किया। इस ऐक्ट के अनुसार प्रांतीय तथा केन्द्रीय शासन में कई महत्वशाली परिवर्तन किये गये।

Government of India Act, 1935

(i) *प्रान्तीय शासन में सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन यह किया गया कि 1919 ई० की*

डायर्की (Dyarchy) को उडा कर प्रान्तों को स्वराज्य (Autonomy) दे दिया गया, अर्थात् सारे विभाग जनता के प्रतिनिधि मन्त्रियों के अधीन कर दिये गये जो

(१) प्रांतीय शासन — नियम निर्माण सभा के सम्मुख अपनी पालसी के लिये उत्तरदायी थे।

(ii) भारतवर्ष के ११ सूबो में से ६ सूबो बङ्गाल, बम्बई, मद्रास, सयुक्त प्रांत, बिहार तथा आसाम में नियम निर्माण सभा के दो भाग किये गये जिनके नाम लेजिस्लेटिव कौंसिल (Legislative Council) और लेजिस्लेटिव असेम्बली (Legislative Assembly) थे। शेष पाँच प्रांतों में केवल एक सभा थी जिसका नाम लेजिस्लेटिव असेम्बली था।

(iii) नियम निर्माण सभाओं के सदस्यों की सख्या बढ़ा दी गयी और यह भी निश्चय हुआ कि लेजिस्लेटिव असेम्बलियो के सारे सदस्य निर्वाचित हुआ करेंगे।

(२) केन्द्रीय शासन — (i) केन्द्रीय शासन मे सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन यह निश्चित किया गया कि एक अखिल भारतीय फ़ेडरेशन (All India Federation) स्थापित की जाय जिस में ब्रिटिश इन्डिया तथा देशी रियासतें सम्मिलित हों।

(ii) केन्द्रीय शासन में डायर्की (Dyarchy) प्रचलित किये जाने का निर्णय हुआ अर्थात् यह निर्णय हुआ कि कुछ विभाग जैसे सेना, वाह्य नीति, ईसाई गिरजो का प्रबन्ध आदि गवर्नर जनरल और उसके तीन सदस्यो की एग्जिक्यूटिव कौंसिल के अधीन हो और शेष विभाग मन्त्रियों के अधीन हो जिनकी सख्या अधिक से अधिक दस हो। ये मन्त्री केन्द्रीय नियम निर्माण सभा के सम्मुख उत्तरदायी होते थे।

(iii) केन्द्रीय नियम-निर्माण सभा के दो भाग किये जाने का निश्चय किया गया जिनके नाम कौंसिल आफ़ स्टेट (Council of State) और फ़ेडरल असेम्बली (Federal Assembly) हो।

(३) भारत मन्त्री

इस नवीन ऐक्ट के द्वारा भारत मन्त्री की इण्डिया कौंसिल उड़ा दी गई। परन्तु उसको परामर्श देने के लिये कम से कम तीन और अधिक से अधिक छः *परामर्शदाता* नियुक्त किये गये, जिन्हें भारत मन्त्री स्वयं नियुक्त करता था।

(४) अन्य परिवर्तन

(i) *फ़ैडरल कोर्ट* (Federal Court) देहली में स्थापित की गई जो कि हाईकोर्टों के विरुद्ध अपील सुनती थी और 1935 ई० के ऐक्ट के अर्थों के बारे में यदि कोई मतभेद हो तो उसका निर्णय करती थी।

(ii) *ब्रह्मा* भारतवर्ष से पृथक् कर दिया गया तथा *सिंध* और *उड़ीसा* दो नवीन प्रांत बना दिये गये।

भूकम्प

15 जनवरी, 1934 ई० को बिहार में एक भयानक भूचाल आया, जिससे जनता की बहुत हानि हुई। कई ग्राम तथा नगर नष्ट हो गये।

31 मई 1935 ई० को क्वेटा में प्रलयकारी भूकम्प आया। क्षण भर में क्वेटा का सुन्दर नगर नष्ट हो गया तथा कई सहस्र व्यक्ति मृत्यु की भेंट हो गये।

ऐडवर्ड अष्टम

जनवरी 1936 ई० को जार्ज पंचम की मृत्यु हो गई और उसके स्थान उसका ज्येष्ठ पुत्र प्रिंस आफ वेल्ज़ एडवर्ड अष्टम के नाम से सम्राट बना। सिंहासनारोहण के समय वह कुँवारा था।

लार्ड लिनलिथगो

(LORD LINLITHGOW)

1936— 1943

लार्ड लिनलिथगो 1936 ई० में वायसराय नियुक्त होकर आया। उसके समय की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित थीं।

अपने सिंहासनारोहण से कुछ ही मास पश्चात् ऐडवर्ड अष्टम ने

अष्टम ऐडवर्ड का राज्य त्याग

एक अमेरिकन स्त्री *मिसिज सिम्पसन* (Mrs. Simpson) से विवाह करने का दृढ़ निश्चय किया, परन्तु इस सम्बन्ध में उसका अपने मंत्री-मण्डल से मतभेद हो गया। इसलिये उसने सिंहासन त्याग दिया और उसके स्थान पर उसका छोटा भाई जार्ज अष्टम के नाम से इङ्गलैंड का राजा बना। अष्टम ऐडवर्ड को 'ड्यूक आफ विंज़र' (Duke of Windsor) की उपाधि दी गई। कुछ समय पश्चात् उसका विवाह मिसिज़ सिम्पसन से हो गया।

सुधारों का प्रचलन

पहली अप्रैल 1937 ई० से नवीन सुधार प्रचलित कर दिये गये। प्रान्तों को तो स्वराज्य (Autonomy) प्राप्त हो गया परन्तु केन्द्र में फैडरेशन स्थापित न हुई और वहाँ पुरानी प्रणाली ही चालू रही।

नवीन मन्त्री मण्डल

नवीन ऐक्ट के अनुसार भारत के ग्यारह प्रान्तों में मन्त्री-मण्डल नियुक्त हो गये। उनमें से आठ प्रान्तों (यू० पी०, बिहार, आसाम, उड़ीसा, मद्रास, बम्बई, मध्य प्रदेश तथा सीमा प्रान्त) में काँग्रेसी मन्त्री मंडल थे और शेष तीन प्रान्तो (सिन्ध, पंजाब, बङ्गाल) में गैर काँग्रसी।

कोई दो ढाई वर्ष तो ये मन्त्री मण्डल भली प्रकार अपना काम करते रहे। परन्तु 1939 ई० में योरुप में दूसरा महायुद्ध आरम्भ हो गया। इस युद्ध में एक ओर इङ्गलैंड भी सम्मिलित हुआ। अब काँग्रेसी मन्त्री-मण्डलों का अंग्रेज़ी सरकार से युद्ध में सहायता देने के बारे में मतभेद हो गया इस पर आठों काँग्रेसी प्रांतों के मन्त्री-मंडलो ने त्याग-पत्र दे दिया। इसलिए उनमें से बहुत से प्रान्तों में गवर्नर ही सारा राज्य प्रबन्ध चलाते रहे। इस भाँति देश में पोलीटिकल डैडलाक उत्पन्न हो गया।

मुक्ति दिवस

मि० मुहम्मद अली जिन्नाह, मुसलिम लीग के प्रधान, काँग्रेसी हुकूमतों से प्रसन्न न थे। उनका विचार था कि काँग्रेसी राज्य में मुसलमानों से न्याय नहीं हुआ। अतः जब काँग्रेसी हुकूमतों ने त्याग-पत्र दे दिये

तो वह प्रसन्न हुये और उन्होने 22 दिसम्बर 1939 को मुक्ति दिवस (Day of Deliverance) मनाया। साथ ही उन्होने प्रचार करना आरम्भ कर दिया कि *भारतवर्ष के मुसलमान हिन्दुओ से एक भिन्न जाति हैं और उन्हे अपने लिये पृथक् देश मिलना चाहिये।*

पाकिस्तान

1940 ई० में लाहौर में जब मुसलिम लीग का अधिवेशन हुआ तो वहाँ एक रैज़ोल्यूशन पास किया गया जिसे *पाकिस्तान स्कीम* कहते थे। इसका अभिप्राय यह था कि *भारतवर्ष के जिन प्रान्तो और रियास्तों मे मुसलमान अधिकता में है, उन्हे पृथक् स्वतन्त्र राज्य दे दिया जाय और उस देश का नाम पाकिस्तान रखा जाय।* मि० जिन्नाह का विचार था कि इस भान्ति मुसलमानों के अधिकार सुरक्षित रह सकते हैं। परन्तु कॉग्रेस और कई मुसलमान नीतिज्ञ भी इस स्कीम का विरोध करते रहे। उनका कहना था कि भारतवर्ष के दो खण्ड हो जाने से पारस्परिक संगठन असम्भव हो जायगा और देश निर्बल हो जायगा परन्तु बाद में ऐसे कारण बन गये कि पाकिस्तान बन ही गया।

क्रिप्स का आगमन

1941 ई० के अन्त में जापान ने इंगलैंड तथा अमेरिका के विरुद्ध युद्ध आरम्भ कर दिया था और कई विजयें भी प्राप्त की थीं। शनैः शनैः वह भारतवर्ष की ओर बढ़ रहा था। उसकी विजयों ने अंग्रेज़ी गवर्नमेंट को इस बात पर विवश कर दिया कि वह भारतवर्ष की सहानुभूति प्राप्त करे। अतः मार्च 1942 ई० में इङ्गलैंड का एक प्रसिद्ध नीतिज्ञ *सर स्टैफर्ड क्रिप्स* (Sir Stafford Cripps) भारत में आया और उसने भारत की शासन प्रणाली के सम्बन्ध में कॉग्रेस, मुस्लिम लीग, इत्यादि से बातचीत की और भारतवर्ष को युद्ध की *समाप्ति* पर कुछ अधिकार देने की पेशकश भी की, परन्तु उसे कोई सफलता न हुई और बातचीत टूट गई।

क्रिप्स की असफलता के पश्चात् कॉग्रेस अंग्रेज़ी सरकार से

भारत त्याग आन्दोलन

और भी रुष्ट हो गई और यह वह समय था जब जापानी भारतवर्ष के द्वार पर खटखटा रहे थे। महात्मा गाँधी जी का विचार था कि *अंग्रेजो का भारतवर्ष मे होना जापानी आक्रमण के लिये एक बड़ा आकर्षन है।* यदि अङ्गरेज़ भारत छोड़ जाये तो जापानी आक्रमण का भय समाप्त हो जायगा। इस पर महात्मा जी ने अंग्रेज़ों को कहा कि वे भारत को उसके भाग्य पर छोड़ कर भारत से चले जायें। थोड़े से काल के लिये इस "Quit India" *'भारत त्याग जाओ'* आन्दोलन ने पर्याप्त ज़ोर पकड़ा। परन्तु अङ्गरेज़ो ने भारत त्यागना स्वीकार न किया।

अगस्त 1942 की गड़बड़

8 अगस्त, 1942 ई० को बम्बई में आल इंडिया कांग्रेस कमेटी ने यह प्रस्ताव पास किया कि *अंगरेज़ो के भारत त्याग जाने मे ही भारत की भलाई है और अगरेज़ों के यहां रहने से भारत अपनी रक्षा के लिये कमजोर हो रहा है।* इससे अगले दिन महात्मा गान्धी तथा काँग्रेस के दूसरे बड़े-बड़े नेता पकड़ लिये गये। आल इंडिया कांग्रेस कमेटी तथा प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियों को कानून विरुद्ध ठहराया गया, और अंग्रेज़ी हुकूमत ने बड़ी कठोरता से काम लिया। इससे देश भर में बड़ी हलचल मच गई और बड़े उपद्रव हुये। कई रेलवे स्टेशन, थाने, डाकखाने इत्यादि तबाह कर दिये गये। सरकार ने साठ हज़ार से अधिक लोगों को बन्दी बना लिया और महात्मा गान्धी तथा अन्य काँग्रेसी नेताओ को इन घटनाओं के लिये ज़िम्मेदार ठहराया। महात्मा जी ने जो उस समय पूना जेल में थे अपने ऊपर तनिक ज़िम्मेदारी लेने से भी इन्कार किया और 10 फरवरी, 1943 ई० को तीन सप्ताह का व्रत रखा और उसे सफलता पूर्वक निभाया।

बगाल में अकाल

1943 ई० में बंगाल में एक भीषण अकाल पड़ा। गवर्नमेंट तथा अन्य सभाओ ने इस अकाल को रोकने का पूरा पूरा प्रयत्न किया। पजाब की आर्य समाज

ने इस काम में विशेष भाग लिया और उसने कई अकाल-पीड़ित बच्चों को बचाया।

दूसरा महायुद्ध

लार्ड लिनलिथगो के समय की एक प्रसिद्ध घटना दूसरे महायुद्ध का आरम्भ होना है। यह युद्ध प्रथम सितम्बर, 1939 ई० को आरम्भ हुआ और लगभग छः वर्ष पश्चात् अगस्त 1945 ई० को समाप्त हुआ। इस युद्ध में एक ओर *जर्मनी* तथा उसके साथी और दूसरी ओर *इंगलैंड* और उसके साथी थे। बड़े-बड़े देशों में से जापान और इटली जर्मनी की ओर थे और फ्रांस और अमेरिका इंगलैंड की ओर। आरम्भ में रूस जर्मनी का साथी था परन्तु बाद में जर्मनी ने उस पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में अन्ततः इंग्लैंड और उसके साथियों को विजय प्राप्त हुई।

कारण—पहले महायुद्ध के पश्चात् जर्मनी की अवस्था बड़ी दुर्बल और शोचनीय हो गई थी। इस दुर्व्यवस्था से प्रभावित होकर जर्मनी के एक व्यक्ति *हिटलर* (Hitler) के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि जर्मनी को इस अधोगति से उठाकर फिर उन्नति के शिखर पर ले जाना चाहिये। इस उद्देश्य के लिये उसने एक पार्टी की नीव रखी जिसे *नाज़ी* (Nazi) पार्टी कहते थे। कुछ ही वर्षों में इस पार्टी ने बहुत प्रभाव प्राप्त कर लिया और 1934 ई० में हिटलर अपनी योग्यता तथा अपनी पार्टी की सहायता से देश का डिक्टेटर (Dictator) या कर्ताधर्ता बन गया। इस उच्च पदवी को प्राप्त करने के पश्चात् हिटलर ने अपनी सैनिक शक्ति बढाने का भरपूर यत्न किया। फिर उसने इटली के डिक्टेटर *म्यूसोलिनी* (Mussolini) के साथ मित्रता का सम्बन्ध स्थापित किया। इस प्रकार जर्मनी फिर संसार की प्रसिद्ध और शक्तिशाली शक्तियों में गिना जाने लगा। अब हिटलर ने यूरोप में जर्मन प्रभाव को बढ़ाना आरम्भ किया। उसने पहले *आस्ट्रिया* (Austria) और उसके बाद *चैकोस्लोवाकिया* (Czecho-slovakia) पर अधिकार कर लिया। इससे उसका उत्साह और भी बढ़ गया और उसने पोलैंड से कुछ प्रदेश की जिसे *कारीडोर* (Corridor)

कहते थे माँग की और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही प्रथम सितम्बर 1939 ई० को उसके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। इस प्रकार जर्मनी और पोलैंड में युद्ध आरम्भ हो गया। इंगलैंड इस समय तक युद्ध को टालता रहा था। परन्तु हिटलर की इस लूट-खसोट ने उसको युद्ध के लिये वाधित कर दिया। प्रथम सितम्बर 1939 ई० को इगलैंड और फ्रांस ने पोलैंड की सहायतार्थ जर्मनी के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी। इसके पश्चात् समय-समय पर कई और देश भी युद्ध में सम्मिलित हो गये।

भारत की सहायता

इस युद्ध में भारतवर्ष ने अंग्रेज़ी सरकार की दिल खोल कर सहायता की। लाखो सैनिक युद्ध के भिन्न-भिन्न मोर्चों पर भेजे गये, जहाँ उन्होंने खूब वीरता दिखाई और अपनी वीरता का सिक्का बिठा दिया। कई एक ने तो विक्टोरिया क्रास पदक प्राप्त किया। रुपये पैसे से भी सरकार की भरसक सहायता की गई। राजाओं और नवाबो ने भी एक दूसरे से बढ़-चढ़कर सरकार के प्रति अपनी राजभक्ति का प्रमाण दिया। सत्य तो यह है कि इस युद्ध मे इगलैंड की सफलता एक सीमा तक भारतवर्ष की सहायता से ही थी।

लार्ड वेवल

(LORD WAVELL)

1943—1947

1943 ई० में लार्ड लिनलिथगो वापिस इगलैंड चला गया और उसके स्थान पर लार्ड वेवल जो कुछ समय तक भारत का सेनापति रह चुका था, वाइसराय नियुक्त हुआ। वाइसराय बनने के बाद उसका सबसे प्रथम कार्य यह था कि उसने बगाल की अवस्था को स्वयं जाकर देखा और अकाल को दूर करने के साधनों पर विचार किया। उसने युद्ध में सफलता प्राप्त करने के लिये भी भरसक प्रयत्न किया। उसके समय की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित थीं:—

जून 1945 ई० में लार्ड वेवल ने शिमला में कांग्रेस, मुस्लिम लीग

शिमला कान्फ्रेंस

सिक्खों और अछूतों के प्रतिनिधियों तथा भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न प्रान्तों के महामन्त्रियों की एक कान्फ्रेंस बुलाई ताकि राज्य प्रबन्ध के सुधारों के सम्बन्ध में बातचीत की जाय। परन्तु यह कान्फ्रेंस असफल रही।

महायुद्ध का अंत

मई 1945 ई० में जर्मनी ने और अगस्त 1945 ई० में जापान ने हथियार डाल दिये और युद्ध समाप्त हो गया। इस अवसर पर भारतवर्ष तथा ब्रिटिश साम्राज्य के दूसरे भागों में बड़ा हर्ष मनाया गया।

आजाद हिंद सेना

भारतवर्ष के प्रसिद्ध लीडर श्रीयुत सुभाषचन्द्र बोस जिन्हें अब *'नेता जी'* के नाम से याद किया जाता है, 26 जनवरी 1941 ई० को अपने घर कलकत्ता से गुप्त रूप से चले गये और कुछ समय बाद बर्लिन जा पहुँचे। वहाँ से वह मलाया गये जहाँ उन दिनों जापान का राज्य था। वहाँ रह कर उन्होंने *आजाद हिंद सेना* (I.N.A.) स्थापित की। यह सेना भारतवर्ष को स्वतन्त्र कराने के उद्देश्य से आसाम में अंग्रेज़ी सरकार के विरुद्ध लड़ी। परन्तु उसे अपने उद्देश्य में सफलता न हुई। जापानियों की हार के पश्चात् इस सेना के बहुत से सैनिक पकड़े गये और उन्हें भारतवर्ष में बन्दी बनाया गया। इनमें से कई एक पर अभियोग भी चलाये गये। कई लोगों का विचार है कि नेताजी अगस्त 1945 ई० में हवाई जहाज़ की दुर्घटना में परलोक सिधार गये।

कैबीनैट मिशन का आगमन

मार्च 1946 ई० में इंगलैंड की सरकार ने कैबीनेट के तीन मैम्बरों (पैथिक लारेंस, स्टैफर्ड क्रिप्स, और ए० वी० ऐलैग्ज़ैंडर) का एक मिशन भारतवर्ष में भेजा। इस मिशन के भेजे जाने का उद्देश्य यह था कि *भारतवर्ष को शीघ्र से शीघ्र पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करने में सहायता दे, और ऐसी सभा की स्थापना करायें जो आगामी शासन प्रणाली का निर्णय करे।* इस मिशन ने मई 1946 ई० में

शिमला में काँग्रेस और मुस्लिम लीग के प्रतिनिधियों के साथ एक कान्फ्रेंस की, परन्तु आपस में कोई समझौता न हो सका। इस असफलता के पश्चात् 16 मई, 1946 ई० को मिशन ने स्वयं देश की आगामी शासन प्रणाली के बारे में कुछ एक सिफारशें कीं। बड़ी बड़ी सिफारशें ये थीं कि एक तो वर्तानवी भारत और रियासतों की एक सांझी गवर्नमेंट (Union of India) हो जिसके अधीन बाह्यनीति, देश-रक्षा, और आवागमन के साधन हों और दूसरे एक वैधानिक असेम्बली चुनी जाय जो देश के लिये नवीन विधान का निर्णय करे और तीसरे यह कि जब तक नवीन विधान चालू न हो सके तब तक केन्द्र में भिन्न-भिन्न राजनैतिक पार्टियों का एक अन्तर्कालीन शासन (Interim Government) स्थापित किया जाय।

वैधानिक असैम्बली

जुलाई 1946 ई० में वैधानिक असैम्बली (Constituent Assembly) का चुनाव हुआ परन्तु उसमें बहुत सारी सीटें काँग्रेस के हाथ आयीं। इस पर मुसलिम लीग ने कैबीनेट मिशन की सिफारिशों को मानने से इन्कार कर दिया और निश्चय किया कि पाकिस्तान प्राप्ति के लिये डाइरैक्ट ऐक्शन (Direct Action) अपनाया जाय।

डाइरैक्ट ऐक्शन दिवस मनाना

16 अगस्त, 1946 ई० को लीग ने डाइरैक्ट ऐक्शन दिवस मनाया। कलकत्ते में उस दिन बड़ा रक्तपात हुआ। अक्तूबर 1946 ई० में पूर्वी बङ्गाल के दो ज़िलों नोआखाली और टिपरा में मुसलमानों ने हिन्दुओं पर घोर अत्याचार किये। इसके बाद बिहार, यू० पी० और बम्बई में भी उपद्रव हुये।

बंगाल विभाजन का विचार

बंगाल के हिन्दुओं का अब यह विचार हो गया कि बंगाल में लीग की हुकूमत स्थापित हो जाने से उनका जीवन और सम्पत्ति सुरक्षित नहीं रहेंगे। अतः वहाँ बंगाल विभाजन के आन्दोलन ने बड़ा ज़ोर पकड़ा और यह विचार प्रकट किया जाने लगा

कि बंगाल को हिन्दू और मुसलिम जन-संख्या की अधिकता के अनुसार दो भागों में विभक्त कर दिया जाय।

इंटरिम गवर्नमेंट

सितम्बर 1946 ई० में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अन्तर्कालीन शासन (Interim Government) स्थापित कर लिया। मि० जिन्नाह को सम्मिलित होने का निमन्त्रण दिया गया। उस समय तो उसने इन्कार कर दिया, परन्तु अक्तूबर में लीग भी इंटरिम गवर्नमेंट में सम्मिलित हो गई लेकिन कांग्रेस और लीग के प्रतिनिधियों में परस्पर विरोध ही रहा।

फरवरी की घोषणा

20 फ़रवरी 1947 ई० को अंग्रेज़ी सरकार ने घोषणा की कि वह जून 1948 ई० तक भारतवर्ष को छोड़ देगी और यदि लीग ने वैधानिक असैम्बली मे शामिल होने से इन्कार किया तो अंग्रेज़ी सरकार इस बात पर विचार करेगी *कि भारत को छोडते समय भारत के राज्य की बागडोर किसको सौपी जाय। क्या यह राज्य किसी केन्द्रीय गवर्नमेंट को सौपा जाय, या कुछ प्रांतो मे उस समय राज्य करने वाले शासनों को सौपा जाय, या किसी और रीति से जो भारतवासियो के हित के लिए उचित हो निपटारा किया जाय।* यह भी कहा गया कि लार्ड वेवल के स्थान पर शीघ्र ही लार्ड मौन्टबैटन को गवर्नर-जनरल नियत किया जायेगा। यह घोषणा कुछ इस प्रकार की थी कि जिससे देश में झगड़े फसाद का होना कुछ स्वाभाविक बात थी।

देश में झगड़े

20 फ़रवरी की घोषणा के पश्चात् कलकत्ता, आसाम, उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत तथा पंजाब में बहुत गड़-बड़ आरम्भ हो गई। ग़ैर मुसलमानों को प्रत्येक स्थान पर बड़े कष्ट सहन करने पडे, विशेष-कर पश्चिमी पंजाब मे तो सहस्रों मनुष्यों का घात हुआ। इस समस्त गड़बड़ का परिणाम यह हुआ कि बङ्गाल के हिन्दुओ ने बङ्गाल विभाजन का दृढ निश्चय कर लिया और पंजाब के हिन्दूओं और सिक्खों ने भी

यही निश्चय किया कि पंजाब का भी विभाजन अवश्य किया जाय।

मार्च 1947 ई० में अंग्रेज़ी सरकार ने लार्ड वेवल को वापिस बुला लिया और उसके स्थान पर लार्ड मौंटबैटन को वाइसराय नियुक्त किया गया।

लार्ड मौंटबैटन
(LORD MOUNTBATTEN)
मार्च 1947 से अगस्त 1947

लार्ड मौंटबेटन इंगलैंड के राज्य वंश का निकट का सम्बन्धी था और दूसरे महायुद्ध में दक्षिण पूर्वी एशियाई कमान्ड का बड़ा अफसर था। वह भारतवर्ष में अन्तिम वाइसराय था इसने आते ही भारतवर्ष को छोड़ जाने के कार्यक्रम पर चलना आरम्भ कर दिया।

3 जून की घोषणा

3 जून को वाइसराय ने घोषणा की कि देश में राजनैतिक डैडलाक को दूर करने का एक मात्र मार्ग देश विभाजन है। अतः उसने देश के बटवारे की घोषणा कर दी। इसके साथ ही बंगाल और पंजाब के विभाजन की भी घोषणा कर दी। उत्तर-पश्चिमी सीमा-प्रान्त और आसाम के जिले सिलहट के बारे में निश्चय हुआ कि वहाँ लोगों की राय ली जाय कि वे हिन्दुस्तान का अंग बनेंगे या पाकिस्तान का। यह भी कहा गया कि बङ्गाल और पंजाब की नियम निर्माण सभाएँ यह निर्णय करेंगी कि इन प्रान्तों का विभाजन किया जाय या नहीं। देशी रियासतों को अधिकार दिया गया कि वे हिन्दुस्तान या पाकिस्तान जिसके साथ चाहें सम्मिलित हो जायें। सब राजनैतिक पार्टियों ने इस घोषणा को स्वीकार कर लिया और तुरन्त इस पर अमल होना आरम्भ हो गया।

बङ्गाल और पंजाब का विभाजन

बङ्गाल और पंजाब की असैम्बलियों ने विभाजन के पक्ष में निर्णय किया। पूर्वी बङ्गाल तथा पश्चिमी पंजाब पाकिस्तान के साथ और पश्चिमी बङ्गाल तथा पूर्वी पंजाब हिन्दुस्तान के साथ रहे। सिलहट

और सीमाप्रान्त भी पाकिस्तान के साथ सम्मिलित हुए।

भारत की स्वतन्त्रता का नियम

जुलाई 1947 ई० को अंग्रेज़ी पार्लियामेंट ने भारत की स्वतन्त्रता का कानून (Indian Independence Act) पास किया जिससे निश्चय हुआ कि 15 अगस्त 1947 ई० *को भारत से अङ्गरेजी राज्य समाप्त हो जायगा और उस दिन हिन्दुस्तान में दो स्वतन्त्र डोमिनियन स्थापित हो जायेंगे, जिसका नाम* India और Pakistan *होगा।*

स्वतन्त्र भारत

लार्ड मौंटबैटन

(LORD MOUNTBATTEN)

August 1947—June 1948

स्वतन्त्र भारत तथा पाकिस्तान की स्थापना

15 अगस्त 1947 ई० को भारतवर्ष से अङ्गरेजी राज्य समाप्त हो गया और इस देश के दो भाग हो गये। एक भाग का नाम *पाकिस्तान* (Pakistan) रखा गया और दूसरे भाग का नाम *भारत* (India) ही रहा। पाकिस्तान में सिंध, ब्रिटिश बलोचिस्तान, पश्चिमी पंजाब, उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त, पूर्वी बंगाल और सूबा आसाम का ज़िला सिलहट सम्मिलित किये गये और शेष सारे सूबे

लाट मौण्टबैटन

BHARAT & PAKISTAN
1947 A.D.
BALUCHISTAN
SIND
PUNJAB
EAST
PUNJAB
DELHI
RAJASTHAN
AJMER
UTTAR
PRADESH
BIHAR
ASSAM
SE
BENGAL
CENTRAL
PROVINCES
HYDERABAD
ORISSA
MYSORE
COORG
TRAVINCORE
ARABIAN
BAY OF
BENGAL
ANDAMAN
NICOBAR

भारत में सम्मिलित रहे। इन दो भागों को *डोमिनियन* (Dominion) का दर्जा मिल गया अर्थात् ये दोनों भाग बर्तानवी साम्राज्य में बराबर के भागी बन गये। *लार्ड मौंटबैटन* स्वतंत्र भारतवर्ष के पहिले गवर्नर जनरल नियुक्त हुये और *कायदे-इ आज़म मुहम्मद अली जिन्नाह* पाकिस्तान के गवर्नर जनरल बनाए गए।

भारतवर्ष की पुरानी केन्द्रीय नियम निर्माण सभा को तोड़ दिया गया और नवीन विधान को तैयार होने तक वैधानिक असैम्बली (Constituent Assembly) को ही भारत की पार्लियामेंट नियत किया गया।

रियासतों से बर्तानवी प्रभुत्व का अन्त

3 जून 1947 ई० को बर्तानवी सरकार ने यह घोषणा की थी कि 15 अगस्त 1947 ई० से देशी रियासतों से अंग्रेज़ी प्रभुत्व समाप्त हो जायगा और उन्हे इस बात का अधिकार होगा कि वे भारत या पाकिस्तान जिसके साथ चाहें सम्मिलित हो जाएँ या वे स्वतंत्र रहे परन्तु उन्हे यह परामर्श दिया गया था कि वे अपनी स्थिति और लाभ देखते हुये भारत या पाकिस्तान से सम्बन्ध जोड़ लें अर्थात् अपनी *वैदेशिक नीति, रक्षा विभाग और आने जाने के साधनों का* प्रबन्ध भारत या पाकिस्तान को सौंप दें। 15 अगस्त 1947 ई० को बर्तानवी राज्य के समाप्त होते ही भारतवर्ष की ये लगभग ६ सौ (५६२) रियासतें भी स्वतन्त्र हो गयीं।

Q. Describe briefly the events of the time of Lord Mountbatten as the first Governor General of Free India.

प्रश्न—*स्वतन्त्र भारतवर्ष के प्रथम गवर्नर जनरल लार्ड मौंएटबैटन के समय की प्रसिद्ध घटनायें वर्णन करो।*

लार्ड मौंएटबैटन स्वतन्त्र भारत का पहिला गवर्नर जनरल था। उसके समय की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित थीं :—

15 अगस्त 1947 इ० के पश्चात् भी पश्चिमी तथा पूर्वी पंजाब में उपद्रव मचा रहा। रक्तपात, लूट मार और झाड़ फूँक का काण्ड जारी रहा। परिणाम यह हुआ कि पश्चिमी पजाब से लगभग सारे हिन्दू तथा सिक्ख भारत में आ गये और पूर्वी पजाब मुसलमानों से खाली हो गया। इसके पश्चात् यह उपद्रव सीमा प्रांत, क्वेटा और सिन्ध में भी आरम्भ हो गये और वहां से भी हिन्दू तथा सिक्ख निकलने लग गये। कई शरणार्थी देहली में भी आये और उनकी दुर्दशा को देखकर देहली में भी बड़ा उपद्रव हुआ और हज़ारो लोग वध किये गये।

(१) उपद्रव

पाकिस्तान से लाखो हिन्दू और सिक्ख भारत में आ गये। उनमें से अधिकांश ऐसे लोग थे जो बहुत दीन अवस्था में वहाँ पहुँचे। सरकार ने इन पीड़ितो को फिर से बसाने और उनके दुःख निवारण करने का भरसक प्रयत्न किया और असख्य धन इस कार्य पर व्यय किया। परन्तु यह कार्य इतना महान् सिद्ध हुआ कि अभी तक इतने प्रयत्न के पश्चात् भी अधूरा पड़ा है।

(२) पुरुषार्थियों को बसाने का काम

भारत में रियासती विभाग स्वर्गीय *सरदार वल्लभ भाई पटेल* के अधीन था। वह बड़े योग्य राजनीतिज्ञ थे। उनके प्रयत्नो से *काश्मीर* और *हैदराबाद* की रियासतो के अतिरिक्त शेष लगभग समस्त हिन्दुस्तानी रियासतें भारत की सरकार के साथ मिल गयीं अर्थात् उन्होंने अपनी *वैदेशिक नीति, रक्षा विभाग* और *यातायात* के साधनो का प्रबन्ध भारतीय सरकार को सौंप दिया। छोटी-छोटी रियासतें या तो अपने पड़ोसी सूबो के साथ मिल गयी या उन्होने परस्पर मिलकर यूनियन बना लिये जिनके नेता को *राज प्रमुख* कहते हैं। बड़ी बड़ी रियासतें भिन्न-भिन्न रहीं, परन्तु सब की सब भारत सरकार के साथ हैं।

(३) रियासतो का हिंदुस्तान मे मिलना

काश्मीर भारत के उत्तर में एक बहुत बड़ी रियासत है। इसकी

(४) काश्मीर की समस्या

अधिकतर जन-संख्या मुसलमान है और इसकी सीमा भी पर्याप्त दूरी तक पाकिस्तान की सीमा से मिली हुई है। यह रियासत स्वतन्त्र रहना चाहती थी परन्तु पाकिस्तान इसे अपने साथ मिलाने का बड़ा इच्छुक था। अतः देश के विभाजन के शीघ्र ही बाद कबायली लोगों ने पाकिस्तान सरकार की सहायता से काश्मीर पर आक्रमण करने आरम्भ कर दिये और जेहलम नदी के साथ-साथ बढ़ते हुए *श्रीनगर* के बहुत निकट आ पहुँचे। यह देखकर काश्मीर सरकार ने भारत से सहायता की प्रार्थना की। 26 अकतूबर 1947 ई० को काश्मीर के महाराजा ने अपनी रियासत भारत के साथ सम्मिलित कर दी। रियासत की सब से बड़ी पोलीटीकल पार्टी के नेता *शेख अबदुल्ला* ने भी इसका अनुमोदन किया। भारत सरकार ने सहायता देना स्वीकार कर लिया परन्तु यह बात कह दी कि काश्मीर का यह मेल आर्ज़ी है और इसके भविष्य का पक्का निर्णय लोक-मत से किया जायगा। इसके अगले ही दिन भारतीय सेनायें काश्मीर पहुँचनी आरम्भ हो गई और उन्होंने आक्रमणकर्ताओं को पीछे धकेल दिया। काश्मीर में शेख अबदुल्ला के अधीन एक आर्ज़ी हुकूमत स्थापित की गई।

(५) यू० एन० ओ० में काश्मीर का मामला

जनवरी, 1948 ई० में भारत सरकार ने यू० एन० ओ० से शिकायत की कि पाकिस्तान सरकार अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का उलंघन करके आक्रमणकारियों की सहायता कर रही है। इस पर यू० एन० ओ० ने कई महीनों के बाद निश्चय किया कि इस सारे मामले की छान बीन करने तथा काश्मीर में शान्तिमय तथा स्वतन्त्र लोकमत का प्रबन्ध करने के लिये एक कमीशन भेजा जाय।

(६) हैदराबाद का मामला

हैदराबाद भारत के ठीक मध्य में एक बहुत बड़ी रियासत है। यहाँ के शासक को जो मुसलमान है, *निज़ाम* कहते हैं। नवम्बर, 1947 में निज़ाम ने भारत सरकार के साथ एक वर्ष के लिये 'जूँ दूँ' के

समझौता (Standstill Agreement) पर हस्ताक्षर कर दिये अर्थात् भारत सरकार के साथ वही सम्बन्ध रखा जैसा कि अंग्रेज़ी सरकार के साथ था। परन्तु यह रियासत अपने आप को स्वतन्त्र रखना चाहती थी और यह बात भारत के लिये हानिकर थी। इसके अतिरिक्त रज़ाकारों ने जिनका नेता *कासिम रिजवी* था रियासत में अन्धेरगर्दी मचा रखी थी। वे रियासत की सीमाओं के पास के भारती प्रदेश पर भी छापे मारते थे। इससे बड़ी अशान्ति फैली हुई थी। भारत सरकार ने हैदराबाद रियासत को भारत में शामिल हो जाने के लिये कहा परन्तु हैदराबाद सरकार ने इस प्रस्ताव को न माना।

(८) महात्मा गाँधी की हत्या

30 जनवरी 1948 ई० को देहली मे एक व्यक्ति ने महात्मा गाँधी की हत्या कर दी। सारे ससार में उनकी मृत्यु पर घोर शोक प्रकट किया गया और उनकी राख भारतवर्ष के प्रत्येक पवित्र-स्थान पर नदी, झील अथवा समुद्र में प्रवाही गई। राख के कुछ भाग अन्य देशो में भी जल प्रवाह के लिये भेजे गये।

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

SHRI CHAKRAVARTI RAJGOPALACHARYA

1948 ई० से जनवरी 1950

21 जून, 1948 ई० को लार्ड मौण्टबैटन भारत से *इंगलैंड* चला गया और उसके स्थान पर *श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य* गवर्नर जनरल नियुक्त हुये। आप स्वतन्त्र भारत के प्रथम तथा अन्तिम भारतीय गवर्नर जनरल थे।

(१) काश्मीर कमीशन का आगमन

जुलाई, 1948 ई० में यू० एन० ओ० का काश्मीर कमीशन भारत पहुँचा और उसने दोनों देशो में लड़ाई बन्द कराने का पूरा-पूरा यत्न किया। अन्ततः पहली जनवरी, 1949 ई० को दोनो देशो ने युद्ध बन्द कर दिया और निश्चय हुआ कि काश्मीर के

भविष्य का निर्णय वहाँ के लोगों के स्वतन्त्र तथा निष्पक्ष वोटों द्वारा किया जायगा।

हैदराबाद के अंदर रज़ाकारों के अत्याचार प्रतिदिन बढ़ते जा रहे थे और निज़ाम इस बात की पूरी तैयारी कर रहा था कि वह अपनी रियासत को स्वतन्त्र रख सके। अन्ततः भारत सरकार ने निज़ाम को कहा कि वह *भारतीय सेना को शान्ति स्थापित रखने के लिये सिकन्दराबाद मे रहने की आज्ञा दे और रज़ाकारो की संस्था को नियम विरुद्ध* ठहराये। परन्तु निज़ाम ने इस बात को न माना। इस पर 13 सितम्बर 1948 ई० को भारत सरकार ने रियासत पर 'पोलीस ऐक्शन' (Police Action) के लिये सेनायें भेज दीं और साढ़े चार दिन में ही निज़ाम की सेनाओं ने हार मान ली। निज़ाम ने अपनी वैदेशिक *नीति, रक्षा विभाग* तथा *आने-जाने के साधनों* का प्रबन्ध हिंद सरकार को सौंप दिया।

(२) हैदराबाद की विजय

15 अगस्त, 1948 ई० को भारत सरकार को स्वतन्त्र हुये पूरा एक वर्ष हो गया था अतः इस दिन सारे भारतवर्ष में स्वतन्त्रता का दिवस बड़े समारोह के साथ मनाया गया। इसके पश्चात् स्वतन्त्रता *दिवस प्रत्येक वर्ष मनाया जाता* रहा है।

(३) वार्षिक स्वतंत्रता का मनाना

भारत रिपब्लिक

(REPUBLIC OF INDIA)

श्री डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद—प्रधान

Shri Dr. RAJENDRA PRASAD
President (1950—)

26 जनवरी, 1950 ई० को भारत एक *स्वतन्त्र प्रजातन्त्र राज्य* घोषित किया गया और वैधानिक असैम्बली (Constituent Assembly) के पास किये

भारत रिपब्लिक

विधान को अपनाया गया। उस दिन सारे देश में बड़ा हर्ष मनाया गया।

श्री डा० राजेन्द्र प्रसाद भारत रिपब्लिक के प्रथम प्रधान चुने गये।

श्री डा० राजेन्द्र प्रसाद भारत के सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों में से हैं। आप एक उच्च-कोटि के राज-नीतिज्ञ, बड़े विद्वान् तथा सच्चे गाँधी भक्त हैं। आप का जीवन बड़ा सादा और विचार बड़े ऊंचे हैं। आप जन-साधारण में *'राजन् बाबू'* के नाम से प्रसिद्ध हैं। आप की आयु इस समय ६६ वर्ष से कुछ अधिक है।

डा० राजेन्द्र प्रसाद

डा० राजेन्द्र प्रसाद

आपका जन्म 3 दिसम्बर 1884 ई० को विहार प्रांत के *सारन* नामक ज़िले में एक उच्च कायस्थ वंश में हुआ। आप का विद्यार्थी जीवन बड़ा शानदार था। आप ने एम० ए० की परीक्षा पास की और फिर ला (Law) की परीक्षा पास करके प्रैक्टिस आरम्भ की और बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त की। रौलट ऐक्ट (Rowlatt Act) के पश्चात् अपनी प्रैक्टस को त्याग असहयोग आन्दोलन में शामिल हो गये और उस समय से लेकर विहार प्रांत में कॉंग्रेस के सब से बड़े नेता माने जाने लगे। शनैः शनैः आपकी गणना भारत के उच्च कोटि के काँग्रेसी नेताओं में होने लगी। 1934 ई० में जब विहार में एक भयानक भूकम्प से बड़ी भारी हानि हुई तो आपने पीड़ितों की सहायता के लिये बड़ा प्रशंसनीय काम किया। आप कई बार कॉंग्रेस के प्रधान रह चुके हैं और देश सेवा के लिये कई बार जेल-यात्रा भी कर चुके हैं। वैधानिक असैम्बली के प्रधान भी आप ही थे। नवीन विधान आप ही की प्रधानता में पास हुआ। 26 जनवरी, 1950 को आप भारत रिपब्लिक के प्रथम प्रधान चुने गये। भारत को आप पर बड़ा गौरव है। 1952 ई० में आप दोबारा प्रधान चुने गये।

भारत के नवीन विधान के बनने में लगभग तीन वर्ष लगे। इस विधान के अनुसार 26 जनवरी 1950 से भारतवर्ष एक स्वतन्त्र प्रजातंत्र राज्य बन गया है। अब इस देश का नाम *भारत या* India रखा गया है।

नवीन विधान

इस नवीन विधान की विशेषतायें ये हैं कि इससे छूतछात और *धार्मिक मतभेद का अन्त कर दिया गया है, प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार दिये गये हैं और उसे लेख तथा भाषण की स्वतन्त्रता है। हर युवक को वोट देने का अधिकार प्राप्त है और यूनियन की सरकारी भाषा देवनागरी लिपि में हिन्दी निश्चित की गई है, परन्तु १५ वर्ष तक अभी अङ्गरेज़ी भाषा मे काम-काज किया जायगा। रियासतों की निरंकुशता का अन्त करके उन्हे भारत यूनयिन मे मिला लिया गया है।*

नवीन विधान के अनुसार भारत में फ़ैडेरल (Federal) प्रकार का राज्य स्थापित किया गया है अर्थात् भारत कई राजकीय भागों की एक यूनियन (संघ) है। इस राज्य के भागों को स्टेट्स (States) कहते हैं। *यह यूनियन अटूट है अर्थात् न तो कोई स्टेट यूनियन से पृथक् हो सकेगी और न अपना पृथक् विधान बना सकेगी।* यूनियन और स्टेट्स के अपने-अपने पृथक्-पृथक् अधिकार हैं। साधारणतया यूनियन और स्टेट्स अपने-अपने भिन्न-भिन्न कार्य करेगी परन्तु *आवश्यकता होने पर यूनियन को अधिकार होगा कि वह सारे देश की बागडोर अपने हाथों में ले ले।* यूनियन और स्टेट्स के पारस्परिक झगड़ो को निपटाने के लिये *एक प्रमुख न्यायालय* (Supreme Court) स्थापित किया गया है।

१. यूनियन गवर्नमेंट

भारत यूनियन का एक *प्रधान* (President) है जिसकी अवधि पाँच वर्ष होती है, परन्तु दूसरी बार भी चुना जा सकता है। सारा राज्य-प्रबन्ध उसके हाथ में होता है। उसकी सहायता तथा परामर्श के लिये एक *मन्त्रि-मडल* (Council of Ministers) होता है जो वास्तव में राज्य का प्रबन्ध करता है। इसके अतिरिक्त भारत यूनियन का एक *उप प्रधान* भी होता है जो प्रधान की अनुपस्थिति में उसके

स्थान पर काम करता है।

यूनियन की नियम-निर्माण सभा का नाम *पार्लियामेंट* (Parliament) है। इसके दो भाग हैं। एक का नाम *कौंसिल आफ़ स्टेट्स* (Council of States) और दूसरे का नाम *हौऊस आफ़ दी पीपल* (House of the People) है। कौंसिल आफ़ स्टेट्स में अधिक से अधिक २५० सदस्य हो सकते हैं जिनमें से १२ को प्रधान नियत करता है और शेष स्टेट्स के प्रतिनिधि होते हैं। यह कौंसिल एक स्थायी सभा है, परन्तु इसके एक-तिहाई सदस्यों को प्रत्येक दूसरे वर्ष हट जाना होता है। हाऊस आफ दी पीपल (लोक सभा) में अधिक से अधिक सदस्य ५०० हो सकते हैं और इस हाऊस की अवधि पाँच वर्ष होती है।

२. स्टेट्स गवर्नमेंट

कुछ स्टेट्स के बड़े अफसर गवर्नर और कुछ स्टेट्स के *राज्य प्रमुख* होते हैं। उनकी सहायता तथा परामर्श के लिये प्रत्येक स्टेट में एक *मत्री-मंडल* (Council of Ministers) होता है जो वास्तव में राज्य का प्रबन्ध करता है। गवर्नरो की अवधि पाँच वर्ष होती है। कुछ स्टेट्स ऐसी हैं जिनका प्रबन्ध चीफ *कमिश्नर* करते हैं।

प्रत्येक स्टेट में एक *नियम निर्माण* सभा होती है परन्तु कई स्टेट्स में इस सभा का एक ही भाग होता है, और कई में दो भाग होते हैं। जिन स्टेट्स में एक ही भाग होता है उस भाग का नाम *लेजिस्लेटिव असैम्बली* (Legislative Assembly) होता है और जहाँ दो भाग हैं वहाँ एक का नाम *लेजिस्लेटिव असैम्बली* (Legislative Assembly) और दूसरे का नाम *लेजिस्लेटिव कौंसिल* (Legislative Council) है। लेजिस्लेटिव असैम्बली की अवधि पाँच वर्ष होती है और उसमें अधिक से अधिक ५०० सदस्य और कम से कम ६० सदस्य हो सकते हैं। लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्यों की सख्या उस स्टेट की असैम्बली के सदस्यों की सख्या की एक चौथाई से अधिक नहीं होती और न ४० से कम ही होती है। कौंसिल एक स्थायी सभा होती है परन्तु इसके एक तिहाई सदस्य प्रत्येक दूसरे वर्ष के पश्चात

हट जाने होते है । मद्रास, बम्बई, यू० पी० पंजाब, पश्चिमी बंगाल, बिहार और मैसूर में नियम-निर्माण सभा के दो भाग हैं और शेष स्टेट्स में एक भाग है ।

यूनियन का सबसे बड़ा न्यायालय Supreme Court है। इसके अधीन हाईकोर्ट और अन्य छोटी कोर्टें हैं। इस कोर्ट के न्यायाधीशों को यूनियन का प्रधान नियत करता है और इस न्यायलय को बड़े विस्तृत अधिकार हैं। यह न्यायालय यूनियन तथा स्टेट्स के पारस्परिक झगड़ों को निपटाता है और हाईकोर्टों के विरुद्ध अपीलें सुनता है।

(३) प्रमुख न्यायालय

14 अगस्त 1950 ई०को आसाम में एक प्रलयकारी भूकम्प आया जिसके झटके बाद में कई दिन आते रहे। इसके बाद वहाँ नदियों मे बाढ़ आ गयी। इस भूकम्प से जन और धन की बड़ी हानि हुई। सहस्रों मनुष्य मृत्यु का ग्रास बन गये। हमारी सरकार ने इन पीड़ितों की सहायता के लिये प्रत्येक यत्न किया।

आसाम में भूकम्प

यू० एन० ओ० ने काश्मीर की समस्या को सुलझाने के लिये पहले एक व्यक्ति Sir Owen Dixon को और उस के बाद Dr. Frank Graham को मध्यस्थ बना कर काश्मीर भेजा परन्तु उन्हे कोई विशेष सफलता न हुई।

डिक्सन और ग्राहम का आगमन

1952 ई० के आरम्भ में भारत में पहिली बार असैम्बलियों और कौंसिलों के चुनाव हुये। कई पार्टियों ने इस चुनाव में भाग लिया। परन्तु अधिकतर काँग्रेस की ही जीत रही। इस चुनाव में काँग्रेस की सफलता अधिकतर श्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के कारण हुई है। डा० राजेन्द्र प्रसाद दोबारा भारत रिपब्लिक के प्रधान चुने गये।

भारत में नवीन चुनाव

परिशिष्ट (१)

प्रसिद्ध व्यक्तियों पर नोट

(P. U 1936—43) **टीपू सुल्तान** हैदरअली का शूरवीर पुत्र था और उसकी मृत्यु पर

टीपू सुल्तान

वह मैसूर का सुल्तान बना। वह कट्टर मुसलमान था और अंग्रेज़ों का घोर शत्रु था। यद्यपि वह अपने पिता की भांति सुयोग्य न था तो भी उसने साम्राज्य का प्रबन्ध बड़ी योग्यता से किया। उसने मैसूर के दूसरे युद्ध में भाग लिया और फिर तीसरे तथा चौथे मैसूर के युद्ध लड़े। चौथे युद्ध में 1799 ई० में वह श्रृङ्गापट्टम के स्थान पर वीरतापूर्वक लड़ता हुआ मारा गया और अंग्रेज़ों को एक प्रबल शत्रु से मुक्ति मिली।

टीपू सुल्तान

(P.U 1933-37-40) **नाना फर्नवीस** अठारहवीं शताब्दी के अन्त में मराठों का

नाना फ़र्नवीस

सबसे बड़ा सुयोग्य नीतिज्ञ था। वह चिरकाल तक पेशवाओं का मंत्री रहा उसने पेशवा नारायण राव के वध के पश्चात राघोबा को पेशवा स्वीकार न किया, परन्तु नारायण राव के पुत्र माधव राव नारायण को पेशवा बनाया। 1795 ई० में उसी के कारण निज़ाम को खारदा के स्थान पर पराजय हुई। नाना

नाना फर्नवीस

फ़र्नवीस अति सुयोग्य व दूरदर्शी नीतिज्ञ था। जब तक वह जीवित रहा उस ने मराठों में संगठन रखा। 1800 ई० में उसकी मृत्यु हो गई और *उसकी मृत्यु के साथ ही मराठा राज्य की योग्यता तथा नीतिज्ञता का अन्त हो गया।*

(P. U. 1935) **अहिल्याबाई** एक बड़ी धर्मात्मा मराठा स्त्री थी और होल्कर वंश के प्रवर्तक मल्हार राव होल्कर की पुत्र-बधू थी। कोई तीस वर्ष तक अर्थात् 1765 ई० से 1795 ई० तक उसने अत्यन्त सफलता के साथ इन्दौर में राज्य किया। रियासत को बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित रखा तथा रियासत में दुर्ग, सड़कें और मन्दिर बनवाये। उसके शासन काल में जनता सुखी और समृद्धिशाली थी। मराठा लोग उसकी सच्चरित्रता के कारण उसे अवतार के समान मानते थे। 1795 ई० में साठ वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई।

अहिल्याबाई

(P. U. 1925-27-32-36)

राजा राममोहन राय बंगाल में हिन्दुओं के एक प्रसिद्ध सुधारक हो चुके हैं। वह 1774 ई० में ज़िला हुगली में उत्पन्न हुये थे। उन्होने हिन्दुओ की सामाजिक त्रुटियों के विरुद्ध प्रचार किया। भारत में अंग्रेज़ी शिक्षा के प्रचार के लिये अत्यन्त प्रयत्न

राजा राममोहन राय

किया और इस उद्देश्य के लिये कलकत्ते में एक स्कूल स्थापित किया। सती प्रथा हटाये जाने में उन्होंने विलियम बैंटिक की सहायता की। उन्होंने ब्रह्म समाज की नींव डाली।

1830 ई० में देहली में मुग़ल सम्राट् अकबर द्वितीय ने उन्हें अपना वकील बनाकर इङ्गलैंड भेजा कि उसकी पदवी न्यून न की जाय और उसके एलाऊँस में बढ़ती कराई जाये परन्तु उसमें उन्हें सफलता न हुई और (1833 ई० में) उनका ब्रिस्टल (Bristol) के स्थान पर इङ्गलैंड में ही देहांत हो गया।

(P. U. 1925-33-48) **स्वामी दयानन्द** उन्नीसवीं शताब्दी में हिन्दू समाज के बहुत प्रसिद्ध सुधारक हुये हैं। वह आर्य समाज के प्रवर्तक थे। स्वामी जी का जन्म 1824 ई० में काठियावाड़ की मौरवी रियासत में हुआ था। उन्होंने छोटी अवस्था में ही सन्यास धारण कर लिया और जीवन पर्यन्त ब्रह्मचारी रहे। वह संस्कृत भाषा तथा वेदों में उच्चकोटि के विद्वान थे और वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानते थे। उन्होंने अपना सारा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार तथा हिन्दू धर्म की त्रुटियों को दूर करने में व्यतीत किया। स्वामी जी जाति को कर्म से मानते थे, न कि जन्म से और वे मूर्ति पूजा तथा बाल-विवाह के अत्यन्त विरोधी थे, वे अछूतोद्धार, विवाह और स्वदेशी के पक्ष में थे। वह स्वराज्य आन्दोलन के प्रवर्तकों में से थे। उनका कहना था कि सुराज से स्वराज्य कहीं अच्छा है। 1875 ई० में उन्होंने बम्बई और

स्वामी दयानन्द

स्वामी दयानन्द

1877 ई० में लाहौर में आर्य समाज की स्थापना की। 1883 ई० में उनकी अजमेर में मृत्यु हो गई। उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ-प्रकाश है।

(P. U. 1925-34-38) सर सय्यद अहमद खाँ उन्नीसवीं शताब्दी में मुसलमानों के सबसे प्रसिद्ध नेता हो गुज़रे हैं। उनका जन्म 1817 ई० में देहली के एक धनवान घराने में हुआ। फारसी तथा अरबी की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने अंग्रेज़ी गवर्नमेंट की नौकरी कर ली। 1857 ई० के विद्रोह के समय वे बिजनौर में मुन्सिफ थे और उस समय उन्होंने गवर्नमेंट की बहुत सहायता की। उनकी यह प्रबल इच्छा थी कि उसके सहधर्मी यूरोप के विचारों तथा पश्चिमी शिक्षा से लाभ उठाए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये उन्होंने 1877 ई० में अलीगढ़ में मुहम्मेडन ऐंगलो ओरियन्टल कालिज (Muhammadan Anglo-Oriental College) की स्थापना की जो 1920 ई० से यूनीवर्सिटी बन चुका है। उन्होंने मुसलमानों को उन्नति के मार्ग पर चलाया। वह गवर्नर जनरल की नियम-निर्माण कौंसिल के सदस्य भी रहे। सरकार ने उनको "सर" की उपाधि दे रखी थी। 1898 ई० में उनकी मृत्यु हो गई और अलीगढ़ कालिज में दफना दिये गये।

सर सय्यद अहमद ख़ाँ

सर सय्यद अहमद ख़ाँ

परिशिष्ट (२)

कुछ प्रसिद्ध व्यक्ति

(Some Noted Personages)

गोपाल कृष्ण गोखले भारत के एक सच्चे देशभक्त तथा कांग्रेस

गोपाल कृष्ण गोखले

के प्रसिद्ध नेता थे। उनका जन्म 1866 ई० में एक ब्राह्मण मराठा घराने में हुआ। कुछ समय तक वे फरगुसन कालिज पूना में प्रोफेसर रहे। वे अपने समय के बड़े योग्य नीतिज्ञ थे। गोखले गवर्नर-जनरल की नियम निर्माण कौंसिल के सदस्य भी रहे और वहाँ उन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा को अनिवार्य (Compulsory) स्वीकृत किये जाने के लिये एक बिल पेश किया, परन्तु यह बिल पास न हो सका। गोखले उच्च कोटि के वक्ता थे और उनके भाषणों में जादू का-सा प्रभाव था। 1905 ई० में उन्होंने पूना में सर्वेण्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी (Servants of India Society) की स्थापना की जो आज तक भी है। 1915 ई० में उनकी मृत्यु हो गई।

पाल कृष्ण गोखले

(P U. 1926-29-48-52) **महात्मा गाँधी** जिन्हे लोग श्रद्धा से

महात्मा गाँधी

'बापू' के नाम से याद करते हैं जगत्-विख्यात व्यक्तियों में से थे। आप भारतवर्ष के स्वतन्त्र कराने वाले तथा सत्यता और अहिंसा के पुजारी थे। आपका जन्म 2 अक्तूबर 1869 ई० को काठियावाड़ के एक नगर पोरबन्दर में एक प्रतिष्ठित बनिया घराने में हुआ था। आपका पूरा नाम मोहनदास कर्मचन्द गाँधी था। आपके पिता और दादा काठियावाड़ की एक छोटी सी रियासत के दीवान थे। मैट्रीकुलेशन की परीक्षा पास करने के पश्चात् आप शिक्षा के लिये इंगलैंड चले गये और वहाँ से बैरिस्टर बन कर आप बम्बई हाईकोर्ट में प्रैक्टिस करने के लिये वापस आए, परन्तु आप को कोई विशेष सफलता प्राप्त न हुई।

1893 ई० में एक अभियोग के लिये आपको दक्षिणी अफ्रीका

जाना पड़ा। आप गये तो वहाँ एक वर्ष के लिये थे परन्तु वहाँ बीस वर्ष रहे। आप ने वहीं प्रैक्टिस आरम्भ कर दी और जब आपने वहाँ भारतवासियों के साथ दुर्व्यवहार होते देखा तो आप ने सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। आप वहाँ तीन बार कैद भी हुये और आपने बड़ी ख्याति प्राप्त की।
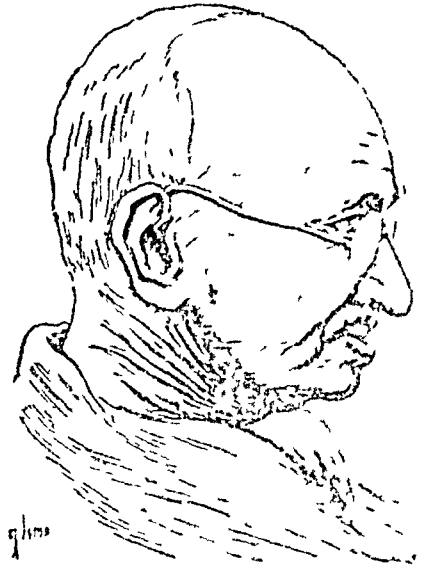
महात्मा गाँधी

1914 ई० में आप भारतवर्ष लौट आये। उन दिनों प्रथम महायुद्ध हो रहा था। आपने इस युद्ध में अंग्रेजी सरकार की बड़ी सहायता की परन्तु जब युद्ध की समाप्ति पर रौलेट ऐक्ट पास हुआ तो आपने भारतवर्ष में सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ कर दिया। फिर पंजाब के अत्याचारों तथा खिलाफ़त के प्रश्न के कारण असहयोग आंदोलन प्रचलित किया और थोड़े से वर्षों में आप लोक प्रसिद्ध हो गये।

इस के पश्चात् लगभग ३० वर्ष का काल महात्मा गाँधी का ही युग था। आप सारे देश की राजनीति पर छाये हुये थे। आप ने केवल अहिंसा और सत्यता के बल पर अपने देश को स्वतन्त्र कराने के लिये संसार की सबसे बड़ी शक्ति बर्तानवी साम्राज्य के साथ निशस्त्र युद्ध किया और कई उतार चढ़ाओ के पश्चात् 15 अगस्त 1947 ई० को अपने देश को स्वतन्त्र कराने में सफल हो गये। आप ऐसा भारतवर्ष देखना चाहते थे *जिसमें धनी और निर्धन में कोई भेद न हो, जिसमें सब मत-मतांतरों के अनुयायी शांतिपूर्वक रह सकें, जिसमें पुरुषों तथा स्त्रियों के अधिकार समान हों, जिसमें छूतछात का चिह्न तक न हो, जिसमें नशीली वस्तुओं का प्रयोग वर्जित हो,* परन्तु आयु ने साथ न दिया। 30 जनवरी 1948 ई० को देहली में आपका वध कर दिया गया। आपके वध पर सारे संसार में घोर शोक मनाया गया। लार्ड माउण्टबैटन ने आप की मृत्यु पर कहा था :—

"India, indeed the world, will not see the like of him again perhaps for centuries."

पण्डित जवाहरलाल नेहरू

पण्डित जवाहरलाल नेहरू आजकल स्वतंत्र भारत के महान मन्त्री और एक उच्चकोटि के माननीय व्यक्ति हैं। आप स्वर्गीय पंडित मोतीलाल नेहरू के सुपुत्र हैं। आपका जन्म 1889 ई० में इलाहाबाद में हुआ। इंगलैंड से आपने बैरिस्ट्री की परीक्षा पास की। इंगलैंड में रहते हुये ही आप के दिल में देश की स्वतन्त्रता की तड़प उत्पन्न हो गई थी अतः वहाँ से लौटने के शीघ्र पश्चात आपने राजनैतिक कार्य में भाग लेना आरम्भ किया और थोडे से समय में ही आप बहुत प्रसिद्ध हो गये। 1929 ई० में आप लाहौर कांग्रेस के सभापति बने जिसमें 'सम्पूर्ण स्वराज्य' का प्रस्ताव पास हुआ। आपकी बुद्धि अनुपम है और बलिदान अद्वितीय है। आप कांग्रेस के चोटी के नेता हैं और जनता की आप में अत्यन्त श्रद्धा है। आप कई बार कांग्रेस के प्रेजीडेंट रहे हैं। आप एक लोक प्रसिद्ध लेखक भी हैं। आज कल स्वतन्त्र भारत के प्रधान मन्त्री हैं और आपकी गणना संसार के उच्च कोटि के राजनीतिज्ञों में की जाती है। 1952 ई० में आप दोबारा भारत के महामन्त्री चुने गये हैं। आजकल कांग्रेस की बाग डोर आप के हाथों में है।

रवीन्द्रनाथ टाकुर (टैगोर)

(P. U. 1934) **रवीन्द्रनाथ ठाकुर** (टैगोर) बंगाली भाषा के सब से प्रसिद्ध कवि तथा नाटककार थे। आप 1861 ई० में कलकत्ते में उत्पन्न हुये और आपने अपनी शिक्षा अधिकतर प्राइवेट तौर पर प्राप्त की। आपने कई पुस्तकें लिखीं। 1913 ई०

में आपको गीताँजली पुस्तक के उपलक्ष्य में नोबल प्राइज़ (Nobel Prize) प्रदान हुआ। आप बोलपुर में स्थापित विश्वभारती यूनिवर्सिटी के संस्थापक थे। आपने संसार के बहुत से देशों की यात्रा की। सरकार ने आपको "सर" की उपाधि दे रखी थी, परन्तु 1919 ई० के पंजाब में किये गये अत्याचारों के विरुद्ध प्रोटैस्ट के तौर पर आपने यह उपाधि लौटा दी थी। 1941 ई० में आप का देहान्त हो गया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर

सरदार पटेल भारत के एक श्रेष्ठ और अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्ति थे। आप का जन्म 1875 ई० में गुजरात के एक माननीय किसान वंश में हुआ था आप उच्च कोटि के वकील थे परन्तु कुछ वर्षों के बाद आप वकालत छोड़कर कांग्रेस में शामिल हो गये और काँग्रेस के प्रधान भी बने। आपने देश सेवा के लिये कई बार जेल-यात्रा की। आप स्वतन्त्र भारत के डिप्टी महामन्त्री तथा रियासती विभाग के वज़ीर थे। भारत की रियासतों को भारत सरकार के साथ सम्बन्धित करके भारत की एकता को सुदृढ़ करना आपकी योग्यता का स्पष्ट प्रमाण है। आपका यह कार्य अद्वितीय था। दिसम्बर, 1950 ई० में आपकी मृत्यु हो गई। आप बड़े वीर, साहसी तथा दृढ़ निश्चय पुरुष थे। इसी कारण आप भारत के लौह पुरुष (Iron Man) के नाम से प्रसिद्ध थे।
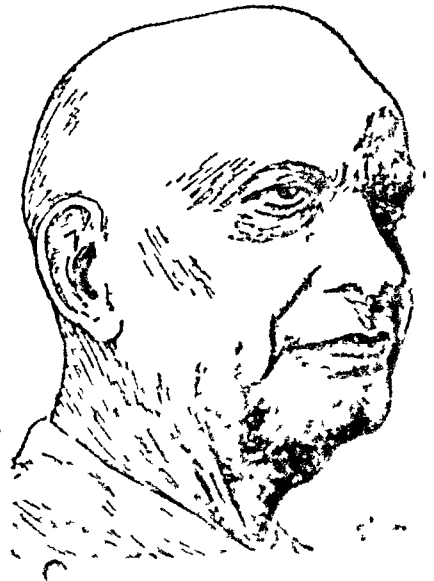
सरदार पटेल

सरदार पटेल

(P U 1934-48) **मि० मुहम्मद अली जिन्नाह** पाकिस्तान के पहले गवर्नर जनरल थे। आप 1876 ई० में करांची में उत्पन्न हुये। वैरिस्ट्री पास करने के पश्चात् आपने बम्बई हाईकोर्ट में प्रैक्टिस करनी आरम्भ कर दी। आप एक अत्यन्त सफल वैरिस्टर तथा असाधारण योग्यता के राजनीतिज्ञ थे। मुसलमानों के आप एक उच्च कोटि के नेता थे और कायद-इ-आजम की उपाधि से विख्यात थे। आप पहले काँग्रेस के एक प्रसिद्ध सदस्य थे परन्तु बाद में काँग्रेस को त्याग कर मुसलिम लीग में सम्मिलित हो गये। आप आल-इंडिया मुसलिम लीग (All-India Muslim League) के प्रधान थे और आप पाकिस्तान की जान थे। सितम्बर 1948 ई० को आपकी मृत्यु हो गई।

मिस्टर जिन्नाह

मिस्टर जिन्नाह

मौलाना अबुल कलाम आजाद बङ्गाल निवासी हैं और काँग्रेस के प्रसिद्ध नेताओं में से हैं। आप का जन्म 1888 ई० में मक्का शरीफ में हुआ था। आपने अपना बचपन अरब देश में बिताया। मिश्र के अलअजहर विश्वविद्यालय में आपने अरबी की शिक्षा प्राप्त की। खिलाफत आन्दोलन में आपने नेता का भाग लिया और काँग्रेस के भी आप मैम्बर बन गये। आप कई बार काँग्रेस

मोलाना अबुल कलाम आज़ाद

के सभापति बने। आप देश के लिये कैद भी हुये। आप उच्चकोटि के वक्ता और लेखक हैं। आजकल आप भारत सरकार के शिक्षा विभाग के मन्त्री हैं।

श्री सुभाषचन्द्रबोस 'आज़ाद हिंद सेना' के बानी और सच्चे देशभक्त थे। आपकी जन्मभूमि बङ्गाल प्रांत है। आप 1897 ई० में उत्पन्न हुए। आपने I C. S. की परीक्षा भी पास की परन्तु आप लन्दन में ही थे कि आपने I. C. S. से त्याग-पत्र दे दिया और आपने अपने आपको देश-सेवा के लिए अर्पण कर दिया। इस देश सेवा के कारण आप कई बार कैद भी हुए। आप कलकत्ते के मेयर (Mayor) भी रहे और आप काँग्रेस के सभापति भी रहे। 1941 ई० में आप गुप्त रूप से भारत से बाहर चले गये। मलाया में आपने *आजाद हिंद सेना* (I. N. A.) की रचना की जो सेना अंग्रेजों के विरुद्ध देश की स्वतन्त्रता के लिये लड़ती रही। कहते हैं कि 1945 ई० में हवाई जहाज़ की दुर्घटना में आपकी मृत्यु हो गई (यद्यपि कई लोगों का विचार है कि आप अभी तक जीवित हैं)। आपकी गणना संसार भर के उच्चकोटि के वक्ताओं में की जाती है। आज़ाद हिंद सेना के सैनिक आपका ऐसा मान करते थे जैसे नैपोलियन के सैनिक नैपोलियन का। वे उन्हें नाम लेकर याद नहीं करते बल्कि "*नेता जी*" कहकर पुकारते हैं। आशा है कि इतिहास में आपकी गणना वीरों (heroes) में होगी।

श्री सुभाष चंद्र बोस

श्री सुभाष चंद्र बोस

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जी जो लोगों में 'राजा जी' के नाम से प्रसिद्ध हैं स्वतन्त्र भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल थे

आपकी आयु इस समय 74 वर्ष की है और गत ३० वर्षों से आप कांग्रेस के उच्चकोटि के नेताओं में से हैं। आपने कई बार जेल-यात्रा की है। आप महात्मा गान्धी के अनन्य भक्त और अपनी धुन के बड़े पक्के हैं। जब कभी आपको कॉंग्रेस की नीति से मतभेद हुआ है, आप अपने विचारों पर डटे रहे हैं।

राजगोपालाचारी

राजगोपालाचारी

आपका जन्म सूबा मद्रास के ज़िला सेलम में 1879 ई० में हुआ और आप एक सफल वकील बने परन्तु कुछ वर्ष पश्चात् आप वकालत छोड़कर असहयोग आन्दोलन में शामिल हुए। 1937 ई० में आप सूबा मद्रास के महामन्त्री बने। परन्तु दो ही वर्ष बाद दूसरे महायुद्ध के आरम्भ हो जाने पर आपने काँग्रेस के आदेशानुसार त्याग पत्र दे दिया। लार्ड मौंटबेटन के बाद आप स्वतन्त्र भारत के गवर्नर जनरल बने परन्तु 26 जनवरी 1950 को आप इस पद से हट गये। इसके पश्चात् कुछ समय तक आप भारत के मन्त्री-मण्डल में सम्मिलित रहे। तत्पश्चात् आप मद्रास के महामन्त्रि भी रहे। आपका जीवन बड़ा सरल और बुद्धि अनुपम है। आप बड़े अच्छे लेखक भी हैं।

—समाप्तम—